राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रंथों का सर्वेक्षण, भाग–१

राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण

भाग-१

डॉ० नारायणसिंह भाटी
निदेशक
राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर

राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

प्रकाशक :
राजस्थानी ग्रन्थागार,
सोजती गेट के बाहर, जोधपुर

[redacted]

सस्करण : जून, १९८९

मूल्य : चार सौ रुपये (तीन खण्डों के)

मुद्रक :
भारत प्रिण्टर्स,
जोधपुर

प्रस्तावना

राजस्थान के ऐतिहासिक स्रोतों सम्बन्धी सामग्री का बहुत बड़ा भाग यहां के विभिन्न ग्रंथागारों में बिखरा हुआ मिलता है। राजस्थान के भूतपूर्व रजवाड़ों के पास प्रायः उनका निजी संग्रह हुआ करता था जिनमें उस वंश से सम्बन्धित ख्यातें, वातें तथा काव्यग्रंथ आदि रखे जाते थे। इसके अलावा राजकार्य से सम्बन्धित रेकार्ड भी हुआ करता था जिसकी अलग व्यवस्था होती थी। स्वाधीनता के पश्चात राजकार्य से सम्बन्धित अधिकांश रेकार्ड राजस्थान पुरालेखागार बीकानेर में राज्य-सरकार ने संग्रहीत करवा दिया। परन्तु विभिन्न रियासतों के अलावा बड़े ठिकानों में भी यह रेकार्ड बड़ी तादाद में सुरक्षित था, उसका कुछ ही भाग बीकानेर अभिलेखागार में पहुंच पाया। जहां तक राजघरानों के निजी संग्रहों का प्रश्न है जयपुर के पोथीखाने, जोधपुर के महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, बीकानेर की अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, उदयपुर का सरस्वती भण्डार आदि से इतिहासज्ञ परिचित हैं। क्योंकि इनका आंशिक उपयोग कर्नल टाड, कर्नल पाउलेट, डा० एल० पी० टेसीटरी तथा गौरीशंकर हीराचंद जैसे कुछ विद्वानों ने किया था। परन्तु इसके अलावा निजी संग्रहों में भी बड़ी महत्वपूर्ण सामग्री विद्यमान है। राजस्थान सरकार ने इस सामग्री को नष्ट होने से बचाने के लिए जोधपुर में राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान की स्थापना की तथा कलान्तर में उसकी कई शाखाएँ भी विभिन्न स्थानों पर खोली जिनमें कुल मिलाकर करीब दो लाख साहित्यिक व ऐतिहासिक कृतियां संग्रहीत की जा चुकी है। इसके अलावा स्वाधीनता के पश्चात राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी, साहित्य

उदयपुर, अभय जैन ग्रंथालय बीकानेर, विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान बीकानेर, हाड़ौती शोध संस्थान कोटा, प्रताप शोध प्रतिष्ठान उदयपुर जैसी कुछ महत्वपूर्ण निजी संस्थायें भी स्थापित हुई, जिनमें अच्छी संख्या में इतिहास की उपयोगी सामग्री संग्रहीत की गयी है। इन संग्रहों का केटलागिग का कार्य अभी अधूरा ही है तथा जो भी केटलाग बने हैं उससे उन कृतियों की उपयोगिता का पूरा पता लगाना कठिन है। ऐसी स्थिति में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और उसके निदेशक ने मुझे बुलाकर राजस्थान के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों के सर्वेक्षण के बारे में विचार-विमर्श किया तथा मेरे निर्देशन में एक प्रोजेक्ट स्वीकृत किया गया जिसके अन्तर्गत सब से पहले जोधपुर स्थित संग्रहों का सर्वेक्षण करना अभीष्ट था। यह कार्य जितना महत्वपूर्ण था उतना ही दुष्कर भी, क्योंकि इस कार्य को सम्पन्न करने हेतु हजारों ग्रंथों में से कुछ ग्रंथों को छांटना और फिर उनका अध्ययन करने के बाद सार रूप मे ऐतिहासिक सामग्री को प्रस्तुत करना बड़ा श्रम-साध्य और सूझ-बूझ का कार्य है।

इस कार्य को सम्पन्न करने हेतु सबसे पहले सर्वेक्षकों की नियुक्ति की गयी और उनको प्राचीन ग्रंथों को पढने एवं उसमें से इच्छित सामग्री नोट करने की ट्रेनिंग देने मे भी काफी समय लगा। इस सर्वेक्षण में सबसे पहले राजस्थानी शोध संस्थान के संग्रह का कार्य हाथ में लिया गया, तत्पश्चात राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश फोर्ट जोधपुर और फिर निजी संग्रहों को भी हाथ में लिया गया।

सर्वेक्षण के प्रथम भाग में ख्यात, बात, वंशावली, वचनिका जैसे गद्यात्मक ग्रंथों के अलावा कुछ रासो, रुपक, विलास आदि काव्य भी लिये गये हैं। अलग-अलग ढंग से लिखी गई मारवाड़ से सम्बन्धित अनेक ख्यातें मिलती हैं। प्रत्येक ख्यात में सामान्य जानकारी के अलावा कुछ न कुछ नई सामग्री भी देखने में आती है क्योंकि उनमें ख्यातकार का निजी दृष्टिकोण भी परिलक्षित है। ख्यातों की तरह वंशावलियां भी इतिहास की महत्वपूर्ण साधन-सामग्री हैं। कुछ वंशावलियां ख्यात की ही तरह विस्तृत हैं तो कुछ संक्षेप मे वंश विशेष का विवरण प्रस्तुत करती हैं। राठौड़ों की वंशावली के अतिरिक्त हाडो, गौड़ो, कछवाहों चंद्रवंशियों, चौहानों, नाथों, जैनियों आदि की वंशावलिया इस दृष्टि से उपयोगी हैं। इनके अतिरिक्त कुछ ऐतिहासिक बातें व ठिकानों की ख्यातों को भी लिया

गया है। ऐतिहासिक बातों में तत्कालीन समाज और मान्यताओं का भी बड़ा जीवन्त चित्रण मिलता है।

दूसरे अध्याय में विगत, हाल, हकीकत से सम्बधित ग्रंथ है। यह अपने ढंग की विशिष्ट सामग्री है जो अनेक प्रकार की स्फुट परन्तु उपयोगी सामग्री से अवगत कराती है। इसमें जैनियों के गछ व गोत्र, ओहदेदारो की विगत, जोधपुर रै नीवाणों री विगत, कायस्थों की खांपों तथा कुछ वीर काव्यों जैसी अछूती सामग्री को पहली बार प्रकाश मे लाया गया है।

तीसरे अध्याय में कुछ विशिष्ट काव्य-ग्रंथो का परिचय है जो तत्कालीन इतिहास की जानकारी के प्रमुख श्रोत हैं और जिनका अध्ययन संस्कृति की जानकारी के लिये भी अपेक्षित है।

इस प्रकार प्रथम भाग मे कुल १३३ ग्रंथो का विवरण महत्वपूर्ण उदाहरणो सहित प्रस्तुत किया गया है। उदाहरण छांटते समय उनकी उपयोगिता को ध्यान में रखा गया है। पूरा प्रयास किया गया है कि तथ्य व उदाहरण शुद्ध रूप में प्रस्तुत किये जावें फिर भी त्रुटि होना असंभव नही है। अत. ऐसी भूलो के लिये विज्ञ पाठक हमें क्षमा करेंगे।

इस भाग के सर्वेक्षण कार्य को सम्पन्न करने मे प्रोजेक्ट के गवेषक हुकमसिंह भाटी ने विशेष योगदान दिया है। हजारों ग्रंथो मे से उपयोगी ग्रंथों को छांटने तथा उनमे से महत्वपूर्ण सामग्री निकालने का कार्य उसने बड़ी दिलचस्पी से सीखा जिसके फलस्वरूप दुरुह तथा अस्पष्ट पांडुलिपियो सम्बन्धी जानकारी भी उसने सीमित समय में ही प्राप्त करली और ख्यात तथा वंशावलियो जैसे विशाल ग्रंथों का सारांश भी वह बड़ी योग्यता के साथ ग्रहण कर सका। अत: उसे मैं आशीर्वाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य मे ऐतिहासिक ग्रंथो के सम्पादन व लेखन में भी उसे कुशलता प्राप्त होगी।

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद से इस प्रोजेक्ट को स्वीकृत कराने तथा उसकी रूपरेखा बनाने में प्रसिद्ध इतिहासविद् प्रो० शतीशचन्द्रजी (पूर्व अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) का विशेष सहयोग रहा है, साथ ही उनसे समय समय पर प्रोत्साहन भी मिलता रहा है, जिसके लिये मैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ। परिषद के तत्कालीन निदेशक प्रोफेसर बी० आर० ग्रोवर तथा अन्य

अधिकारियों के सहयोग के लिये भी मैं आभारी हूँ। यह सर्वेक्षण कार्य तीन भागों में कई वर्षों पहले सम्पन्न करके मैंने परिषद को भेज दिया था परन्तु इनके प्रकाशन की व्यवस्था परिषद के स्तर पर तत्काल सम्भव नहीं हो सकी थी।

परिषद के वर्तमान अध्यक्ष प्रोफेसर इरफान हबीब तथा निदेशक डा० टी० आर० सरीन ने इस कार्य के महत्व को समझते हुए सर्वेक्षण के तीनो भागों के लिये परिषद से आर्थिक अनुदान स्वीकृत कराया जिससे यह सामग्री अनुसन्धानकर्ताओं तक पहुँच रही है, अतः मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

—नारायणसिंह भाटी

विषय सूची

पहला अध्याय

ख्यात, बात, वंशावली व वचनिका आदि

दूसरा अध्याय

विगत, हाल, हकीकत

तीसरा अध्याय

ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ

संकेताक्षर-सूची

रा० शो० सं०	—	राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर
रा० प्रा० वि० प्र०	—	राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
पु० प्र०	—	महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश (शोध-केन्द्र) फोर्ट, जोधपुर
सेमी०	—	सेंटीमीटर
वि० सं०	—	विक्रम संवत्
ई० सन्	—	ईस्वी सन्
सं०	—	सम्पादक, संवत् (वाक्यानुसार)
ले०	—	लेखक
पृ०	—	पृष्ठ संख्या
मा०	—	महाराजा
भ०	—	भण्डारी
मु०	—	मुहता
सि०	—	सरदार
प्रो०	—	प्रोहित
पं०	—	पण्डित
रा०	—	राव
पां०	—	खांप
ठा०	—	ठाकुर

पहला अध्याय

ख्यात, बात, वंशावली व वचनिका आदि

१. महाराजा अभयसिंह री ख्यात

१. ग्रन्थ का नाम व कर्ता—महाराजा अभयसिंह री ख्यात, २. प्राप्ति स्थान—रा. शो. सं., ३. ग्रन्थांक—६४, ४. माप—२०.५ × १६.५ सेमी. ५. पत्र संख्या—१५६, ६. पंक्ति संख्या—१४, ७ लिपि समय व लिपि स्थान—वि. सं. १८५८, ई. सन् १८०१, ८. लिपिकार—अज्ञात, ९. भाषा व लिपि—राजस्थानी, देवनागरी, १०. विशेष विवरण—ख्यात में अंकित घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है :—

(क) महाराजा अभयसिंह, बखतसिंह, रामसिंह, विजयसिंह तथा भीमसिंह का वृत्तान्त :—

१. ग्रन्थ के प्रारम्भ में केवल एक पत्र में अभयसिंह का वृत्तान्त है, तत्पश्चात् हाथियों की लड़ाई को लेकर काका भतीज बखतसिंह व रामसिंह में मनमुटाव व रामसिंह के रीयां ठाकुर शेरसिंह के पास जाने का उल्लेख।

२. महाराजा रामसिंह द्वारा आसोप और आउवा दोनों ठिकाने खींवजी को देने पर आउवा ठाकुर कुशालसिंह व पोकरन ठाकुर देवीसिंह के रूष्ट होने का उल्लेख।

३. बखतसिंह द्वारा जोधपुर गढ़ पर अधिकार व रामसिंह का मराठों से मिलकर अजमेर पर अधिकार करने का वृत्तान्त।

४. मराठों से लोहा लेने हेतु बखतसिंह की आमेर नरेश माधोसिंह से भेंट व महारानी अँजनकुंवर के विषाक्त स्पर्श से ३ दिन पश्चात् बखतसिंह का देहान्त व विजयसिंह के उत्तराधिकारी होने का उल्लेख।

५. जयपा की मदद से रामसिंह द्वारा अजमेर इत्यादि लूटने का षड़यन्त्र व महाराजा विजयसिंह द्वारा जयपा को छल से मरवाने का उल्लेख।

६. मराठों के बार-बार आक्रमण से मारवाड़ की स्थिति कमजोर व मुख्य सरदारों का महाराजा से विरोध तथा महाराजा द्वारा पोकरण ठाकुर देवीसिंह, रास ठाकुर केशरीसिंह, आसोप ठाकुर छतरसिंह को बन्दी बनाने का उल्लेख।

७. विजयसिंह की भरतपुर के जाट शासक जवाहरसिंह से भेंट तथा दक्षिणियों (मराठों) को मारवाड़ से खदेड़ने के लिए असफल प्रयत्न, जयपुर नरेश माधोसिंह व जवाहरसिंह के युद्ध में महाराजा द्वारा जाट शासक को मदद देने का सविस्तार वृत्तान्त है।

८. वि. सं. १८२६ मे रामसिंह का देहान्त। विजयसिंह की अनुपस्थिति मे उनके पौत्र भीमसिंह का अधिकार, कुछ सरदारों के आग्रह पर भीमसिंह का पोकरन जाना तथा वि. सं. १८४६ के आषाढ़ के महीने मे भीमसिंह का राज्याभिषेक होने का उल्लेख।

९. भीमसिंह के चचेरे भाई मानसिंह का जालोर के किले में असेराज द्वारा घेराव का वृत्तान्त।

१०. महाराजा की जयपुर नरेश प्रतापसिंह की बहिन के साथ शादी, बरात में शामिल सरदारों की सूची अंकित है।

११. कुछ सरदारों द्वारा दीवान जोधराज को मरवाने पर महाराजा द्वारा उनकी जागीरें जब्त करने का उल्लेख।

१२. वि. सं. १८६० में भीमसिंह का देहान्त, महाराजा के उमरावों, चाकरों की रेख इत्यादि का वृत्तान्त। अन्त में उस समय अच्छी वर्षा, अच्छी फसलें व रुपये का एक मन धान मिलने का उल्लेख है।

(ख) राठौड़ों की खांप :–

राठौड़ों की दो शाखाओं डावी मिसल (जोधाजी के वंशज) तथा जिवणी मिसल (रिड़मलजी के आगे की पीढ़ी) में आने वाले राठौड़ों का उल्लेख है।

(ग) कूंपावतों री खांप :–

केवल दो पत्रों में कूंपा से कूंपावतों की वंशावली दी गई है।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। ग्रन्थ पर गत्ता मंढ़ा हुआ है। लिखावट सुवाच्य है। मुगल साम्राज्य के पतन व मराठा शक्ति के उदय के अध्ययन के लिए भी उपयोगी है।

२. मारवाड़ री ख्यात

१. मारवाड़ री ख्यात, २. रा. शो. सं., ३. १५५४०, ४. ३३×२४ सेमी., ५. १४५, ६. २६-२६, ७. वि. सं. १८७१-७२, ई. सन् -१५'१८१४

८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ख्यात में विवरण-क्रम इस प्रकार है :—

ख्यात की प्रतिलिपि कहां से की गई है इसके बारे में सर्वप्रथम लिखा है—

"आ हकीकत जोसी तिलोकचंद रै थी सो जोसी तिलोकचंद कना सूं ग्यानमलजी लिपाई सं. १८७१ वैसाख सुद १० शुक्रे।"

ख्यात के प्रारम्भ में जोधपुर के शासकों द्वारा बनवाये गये भवन-निर्माण कार्य इत्यादि का वृत्तान्त है।

प्रारम्भ—

"॥अथ गढ रा कमठा री विधा॥ ठेट सूं गढ़ री नीव रावजोधोजी दीवी .... वैसाष वद ४ बुधवार मूल नक्षत्र रो जन्म मंडोवर सू आय नै सं. १५१.... शनीसर वार नै चांवड बुरज कांनी नीव दीनी.... ।"

जोधपुर राज्य में दीवान कब कौन नियुक्त हुए उसके बारे में इस प्रकार जानकारी दी है :—

"दीवांणगी महाराज वषतसिंहजी नागौर में पंचोली लालजी नै दीनी, पछै सिंघवी सहमलजी नै दीनी पछै बेटै अमरचंदजी नै दीनी पछै सिंघवी फतैचंदजी नै दीनी, सिंघवी फतैचंदजी नै कैद हुइ पछै पालसै राप मंडारी नृसिंघनादजी नै दीनी पछै मुहणोत सूत्तंरांमजी नै देण रै वासतै बूंदी विहाव १८२१ वैसाप सुद ३ रो हुवौ, बुधसिंघ रो बेटी सूं, धाय माइ जगजी रो उठै अपमान हुवौ, आसाढ में मेड़तै धायभाई काळ कीनौ। महाराज जसवंतसिंहजी दोय तलाक काढ़ी थी १ तौ हाडां रै परजीजण री, १ मुहणोतां रै दीवांणगी री, सौ बूंदी परणाय नै दीवांणगी सूत्तंरामजी नै दिराई। पछै १८२३ आसोज में सूत्तंरामजी सूं रूह पंची तद १८२३ चैत्र वद ४ सिंघवी फतैचंदजी नै दीवांणगी हुई। सिंघवी ग्यांनमलजी हाकम हुवा सो १८२६ फागण में हाकमी मुहणोत सवाईरांम जी नै हुई १८३० फागण सुद ३ सूत्तंरांम नै राव पदवी हुई, १८३१ .... वैसाप सुद १ सूत्तंरांमजी काल कीनौ, महाराज कांण पासे विराजियां कराई, १८३७ आसोज सुद १० रात पहर गयो फतैचंदजी काल कीनौ। पछै सिंघवी ग्यांनमलजी भारी कारज कीनौ। सिरपाव नहीं हुवौ। चैनमलजी ग्यांनमलजी .... मिती करवौ कीनौ। जठा पछै १८४७ मिगसर सुद २ .... ग्यांनमलजी नै मुजरो दीवांणगी रो करायो। पछै मंडारी भांनीदासजी वात ठैराई दिपणियां। तद १८४७ माह सुद ५ प्रभाते सिरपाव भांनीदासजी नै। १८५१ वैसाप में भांनीदासजी नै कैद कीना, दीवांणगी मं......... वचंदजी नै हुई सोभाचंदजी नै हाथी हुवौ।"

प्रस्तुत ख्यात मे जोधपुर के शासक गजसिंह से महाराज मानसिंह तक का वृत्तान्त है। ओसवाल जाति के लोगों व अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रशासनिक कार्य आदि में भूमिका अदा की गई उसका वृत्तान्त दिया गया है। यथा—

"मुंहणोत सूरतरांम दीपणियां कनै पकड़ीज गयो। हाथी उपर चढाय लीनो तद मावत नुं सुंक में कड़ो १ देनै कूद नै नागोर आयो। तोपखानै सारो डेरा सारा लूटीज गया। श्री हजूर (विजयसिंह) नागोर पधारिया तद सिंघवी परतापमल फतैचंदोत हाकम थो सो सोमेलो लायो मुजरो कीनो। श्री हजूर कोट दाखल हुवा प्रतापमल नु बुलाय पूछियो कांई सरभरा छै सांमान री। प्रतापमलजी इसी अरज कीनी वरस २ रो सारो सामांन कीनो छै, श्री हजूर नै साथि पधाराय सारी जिनस निजर गुदराई-धान, घृत, तेल, मूंग, घणो, घास री बागरां, लूंण, सोर, सीसो, पिछेवड़ी अमल और ही पंसारी जिनस चाहीजै जिति सारी घणीज दीठी, बोहोत राजी हुवा, वड़ी दाद फुरमाई—तू फतैचंद रै भलै हुवो छै .... फतैचंद नै फुरमायो---थांरा पिंड नै म्हांरो लेणियो घणो, परतापमल उपर लूंण करायो, आप वडा राजी हुवा।"

"सुद ६ रो दसरावो थो, भूंजाइ दरवार हुवो नही। हाथी घोड़ा सस्त्र पूजिया होम हुवो, सुद १० भंडारी चुतरभुजजी मुहणोत जीतमलजी छूटा, सुद ११ कोटवाली प्रोहित रांमसाजी रै हुई। गोढ़वाड़ री हाकमी प्रोहित रांमसाजी रै हुई। फलोधी मुंहता साहिबचंदजी रै हुई। दौलतपुरो कोलीयो भंडारी अगरचंदजी लीनो। परबतसर व्यास विनोदीरामजी रै हुई। कातो वद १ डीडवांणो मारोठ राव तेजमलजी रै हुई, पाली, सोजत, सिवांणो, शिव, जालोर, सांचोर, भीनमाल सिंघवी शिभूमलजी रै हुई .... ।"

अन्तिम भाग—

"भंडारी हिन्दूमलजी नै इंद्राजजी कैद कीनो सो छूटो नहीं। सिंघवी ग्यांनमलजी जोसी तिलोकचंद कना लिपाई मिगसर सुद १० सोमे १८७२ रा।"

यह ग्रन्थ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। प्रारम्भ के कुछ पत्र खंडित व पानी से भीगे हुए हैं। सब पत्र खुले हैं। जोधपुर, बीकानेर, कोटा, बूंदी, जयपुर, उदयपुर और दिल्ली के बादशाहों के पीढ़ियों से सम्बन्धित एक-एक कवित्त लिपिबद्ध है।

५. राठौड़ों की वंशावली तथा ख्यात

१. राठौड़ो की वंशावली तथा ख्यात, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. २०१३०, ४. ५७×२१ से० मि०, ५. ५०४, ६. २७—३६,

७. १९वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. बृहदाकार बहीनुमा।

ग्रन्थ में आदिनारायण से कन्नोज के राजा जयचन्द तक वंशावली दी है फिर महाराजा मानसिंह तक के राठौड़ राजाओं का विस्तार से वर्णन दिया है।

प्रारम्भ—

"अथ राठोड़ों री वंशावली लिखते—ईश्वर अरूप है जिनके ज्या० बनाने को मनसा हुई जब जमीन, पांणी, आग, हवा, आसमान वगैरे पैदा हुवा पछै ईश्वर का आदमी जसा रूप बना वो पानी में सो गया, उसकी नाभी में कंवळ पैदा हुवा, उस कंवळ में ब्रह्मा पैदा हुवा, ब्रह्मा के सरीर में से देवता रणेश्वर, जक्ष, राषस पैदा हुवे—।"

वंशावली का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) राव सीहा से राव रिड़मल तक का वर्णन—

राव सीहा से राव रिड़मल तक की घटनाएँ जोधपुर की ख्यात से मिलती-जुलती हैं। इसमें विविध राजाओं द्वारा लड़े गये युद्धों और राजलोक संतति आदि का हाल दिया है।

(२) राव जोधा, सातल १, सूजा का वृत्तांत—

वर्णित है कि राव जोधा ने किस प्रकार अपना पैत्रिक राज्य पुनः प्राप्त किया, फिर मेवाड़ पर चढ़ाई कर अपने पिता का बदला किस प्रकार लिया। जोधा के कुंवरों को गांव आदि जागीर में मिले उसका विवरण वगैरा भी दिया है। भीम चूंडावत के पुत्र वरजांग का वृत्तांत अलग से दिया है। जिसमें अचलदास खीची की लड़की से विवाह करने, राव जोधा और सातल की उसके द्वारा की गई सेवाओं का वृत्तांत है। इसी प्रकार सेखा सूजावत और वीरमदे वाघावत का विवरण अलग से दिया है।

(३) मालदेव का वर्णन—

मालदेव द्वारा लड़े गये युद्धों का वृत्तांत है। शेरशाह के मालदेव पर आक्रमण करने व जोधपुर छीनने का वृत्तांत इस प्रकार दिया है—

"रावजी री फोज रा असवार हजार दोयसौक काम आया ने पातसाही लोक पीण घणो कांम आयो—राव मालदेजी नीसरीया पीपलोद रा मापरों गया—पछै सूर पतसाह मैंड़ते आयो पछै वीरमदै नु मैंड़तो दीयो, राव कील्यांणमल नु बीकानेर दीयो। पछै पातसाह जोधपुर आयो राव वीरमदे दूदावत नुं पीण साथे ले आयो—गढ़ भीळीयो तरै मालदेजी रा चाकर कांम आया—पातसा वरस येक गढ़

उपर रहो। समत १६०१ रा पोस वद ५ देवरो पड़ा नै मसीत कराई—किसी कांम वासतै पासता मंडोवर बाग मां सुं ग्रांबा कटाया था तरै चारण दूहो कह्यो—"

काय बावळ कांब माल वडाही मैड़तै
उण ग्रहणैसै ग्रांब वीरमदै वढाड़ीयो ॥१॥

मालदेव के भवन-निर्माण ग्रादि कार्यों का विवरण देकर राजलोकों (रानियों ग्रादि) की विगत बहुत विस्तार से दी है।

(४) राव चन्द्रसेन का वर्णन—

रावजी व मुगलों के बीच हुए युद्ध, वीरगति प्राप्त होने वाले वीरों की सूची ग्रादि दी है। घटनायें ग्रन्य ख्यातों से मिलती जुलती ही हैं। एक स्थान पर राणा उदयसिंह के जैसलमेर शादी करने हेतु जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

"समत १६२६ रा मिगसर सुद ३ रांणो उदैसिंघ गांव नवसरा माहै हौय नै जैसलमेर परणीजण नु गया था, राव चद्रसैन साथै जांनिया हुग्रा (चद्रसैन बरात में सामिल हुए)—रावल हरराज गढ़ री पोळा जड़ाय नै कैयो वींगर बुलायां ग्राया सो म्हैं परणावों नही, तरै—राव चद्रसैन ग्रापरी बेटी करमेती पो वद ६ परणाय नै वीदा कीग्रा।"

राव चन्द्रसेन ने ग्रकबर की ग्राधीनता स्वीकार नही की उस भाव का एक गीत ग्रंकित है—

ग्रदगो तुरी ऊजळा ग्रसमर, चाकर हौण न डिगियो चीत
सारा हिन्दुकार तणै सिर······· ·········· ॥१॥

(५) मोटाराजा उदयसिंह का वर्णन—

इनके राज्यकाल की कुछ घटनाग्रों का विवरण ग्रंकित है। तत्पश्चात् फिर मालदेव राव राम तथा चद्रसेन का विवरण दिया है। राम के पुत्र भोपत के बारे में लिखा है—

"भोपत रांमोत माया री भांणेज, समत १६१२ फागुण सुद ६ बुधवार रौ जन्म समंत १६४० रा मोटे राजा नवसरा रो पटो दीयो थो नें ग्रकबर पातसाह ग्राधी ग्रासोप भोपत नै दीवी नै ग्राधी ग्रासोप राघोदासजी नु दीवी।"

(६) महाराजा सूरसिंह तथा गजसिंह का वर्णन—

कुंवर गजसिंह ने वि० सं० १६६४ में ग्राश्विन सुदि ५ को नडूल का थांणा लिया तब वहां पर रखे गये सरदारों की विस्तृत सूची दी हैं। फिर राणा ग्रमरसिंह की धरती के गाव बादसाह से सूरसिंह के नाम गोयंददास (भाटी) ने लिखवाये उसकी विगत दी है।

एक स्थान पर वैर आदि समाप्त करने का विवरण इस प्रकार दिया है—

"सीरोही सुं रायसिघजी रो वेर थो सो भागो, राव सूरसिंघ सारणश्रे र वीचे दे कंवरजो ने परणावण बीजा गुणतीस रजपूतां ने नालेर झलाया, दतांणी मुवा जीग्रा रा भाई तथा बेटां ने नालेर झलाया। गुणतीस रजपूतां ने कंवर गजसिंघजी परणीजसी तिण साथे परणाय देणा....।"

भाटी गोयंददास द्वारा राजकीय प्रबंध इत्यादि करने का उल्लेख है। रीति रिवाज संबंधी एक उदाहरण प्रस्तुत हैं—

"संवत १६४८ रा महा सुदि ३ महाराज श्री सूरसिंघजी कंवर पदे डाढी छंटाई तरे मंडोवर गोठ सवळी हुई तरे इतरो दीश्रो—वागा, घोड़ा, तरवारां,
७४, २०, २७,
रुपिया टका उमरावां रा पवासां हजुरीग्रां नु दीश्रा।"
३३२ ४०

सूरसिंह द्वारा बादशाह की ओर से अनेक युद्धों में भाग लेने का वृत्तांत है फिरअधिनस्थ परगनों की सूची देकर राजलोक की विगत दी है।

गजसिंह द्वारा की गई शाही सेवाओं का वृत्तांत है, फिर गजसिंह द्वारा चारणों आदि को लाख पसाव, हाथी दिये उसकी विगत दी है, आगे तुलादान की विगत भी अंकित है।

गजसिंह के व्यक्तित्व के बारे में लिखा है—

"महाराज गजसिंह—दातार जुंझार हुवो एक करोड़ ने बारे लाख रुपिया पाघा दीधा। रुपिया ६६००००१ सूरसिंघजी रा पाटीश्रोड़ा खजानां सूं काढ़ पाघा ने पवाया। रुपिया १३००००१ वोहोरों रा माथे कीधा तिण में जालोर अडांणो म्हेली थी सु मारज जसवंतसिंहजी छुड़ाई, करज रा रुपिया ११२००००१ देने छुड़ाई।

(७) महाराजा जसवंतसिंह का वृत्तांत—

वर्णित है कि महाराजा जसवंतसिंह ने बादशाह की आज्ञानुसार किस प्रकार युद्ध कर (जैसलमेर की राजगद्दी से) रामचंद भाटी को हटाकर सबलसिंह को बैठाया।

वि० सं० १६६८ में महाराजा ने उमरावों चारणों को घोड़े आदि इनायत किये उसकी एक सूची दी है। फिर धरमाट के युद्ध का विवरण व उसमें मारे गये वीरों की विस्तृत सूची अंकित है। जसवंतसिंह के प्रधान कामदारों की नामावली और राठोड़ अमरसिंह का अलग से वृत्तांत दिया है।

(८) महाराजा अजीतसिंह का वर्णन—

दुर्गादास आदि सरदारों के द्वारा मारवाड़ पर अधिकार करने हेतु किये गये प्रयत्नों का वृत्तांत दिया है। महाराजा अजीतसिंह द्वारा विखे में चाकरी करने वाले लोगों को ईनाम आदि देने तथा विरोधीयों को दण्ड देने, मरवाने का उल्लेख है। वि० सं० १७६४ में राजकीय पदों पर नियुक्त लोगों की सूची दी है। घटनाएं अन्य ख्यातो वातों से मिलती जुलती हैं। महाराजा को चूक से मरवाने का उल्लेख इस प्रकार है—

"पातसाहजी फुरमावण सू जैसिंघजी कंवरजी अभेसिंघजी सु समंजास कीवी के सइदां ने महाराज अजीतसिंघजी पातसाह फरूकसीयर ने मारीयो सु सइदां ने तो पातसाजी मराया ने पातसाजी रे मन में महाराज अजीतसिंघजी री घणी पटके छै... जोधपुर लेसी... ने जमी जावसी सो आप अजीतसिंहजी ने चूक कर काढो सो पातसाह रो गुसो मिट जावे ने आप सूं राजी रैवे ने भंडारी रूघनाथ पण आहीज सला दीवी—महाराज ने चूक करण रो भाई वखतसिंहजी ने जोधपुर लीघीयो, सो समत १७८० रा असाड़ सुद ६ सांचोर रा चीतलावण रा चहुणी रो डोळो आयो थो सो महाराज व्याव कीयो थो ने असाढ़ सुद १३ अगरहण रा महल मे पौढीया था सो रातरा कंवर बपतसिंहजी आपरा हात सूं चूक कीयो ने सिणगार चौकी पधार करणोत अभैकरण दुरगदासोत ने फुरमायो महाराज नु ने महासतीयां नुं मंडोवर पधरावण री त्यारी करावे..।

अन्त में राजलोक की विगत दी है।

(९) महाराजा अभयसिंह व वखतसिंह का वर्णन :—

अभयसिंह द्वारा अपने भाई वखतसिंह को नागोर देने का उल्लेख है तथा दीवान, मुत्सद्दी, वगसी इत्यादि की सूची दी है। वि० सं० १७८२ कार्तिक महीने में विभिन्न पदों पर की गई नियुक्तयों का व्योरा दिया गया है। वि० सं० १७८५ मे केरु, नाधड़ा, डोहावास, रोहलो, पोपावास, बुटेलाव आदि गांगा (धाधलों के) पेसकसी के रुपये ठहरे उसकी विगत दी है।

अहमदाबाद पर लगाये गये मोर्चो (वि० सं० १७८७ आश्विन सुदि ७ का हाल व मारे गये वीरों की सूची अंकित है। अभयसिंह द्वारा बीकानेर, जयपुर पर की गई चढ़ाईयां, दक्षिणियों के खिलाफ शाही सेना में जाने इत्यादि सैनिक अभियानों का वृत्तांत दिया है। अन्त में उनके द्वारा करवाये गये भवन-निर्माण कार्य का विवरण दिया है।

(१०) महाराजा रामसिंह व वखतसिंह का वर्णन :—

महाराजा रामसिंह द्वारा धाभाइयो, मुत्सद्दियों को पट्टे, सिरोपाव इत्यादि

इनायत किये उसकी विगत दी है। महाराजा रामसिंह और ग्राउवा के ठाकुर कुशालसिंह के बीच मनमुटाव होने का उल्लेख इस प्रकार है—

"कुसलसिंघजी हजूर में गया ने अरज करी–काम रो मोमर छै राजधिराज बखतसिंहजी सु लड़ाई छै सु हुमार कनीरामजी ने वैराजी मती करो, तरे हजूर फुरमायो–आसोप तो में पीवजी ने परी दीवी, तरे कुसलसिंघजी अरज कीवी–चाकरा रा मुलायजा सुं अेक बरस ताही तो आसोप कनीरामजी रे रखाईजे"" महाराज फुरमायो—एक दिन ही नहीं, आसोप आउवो दोनु ही पीवजी ने दीराजजे। तरे महाराज फुरमायो आप ही पधारो नव री तेरे करजो""।"

महाराजा रामसिंह द्वारा पोकरन ठाकुर देवीसिंह को अपमानित करने का उल्लेख इस प्रकार है—

"महाराजा रामसिंहजी सेखावटी रै गाव हुंमपुर कोटडी जैपुर राजा ईसरीसिंघजी सूं मिलिया जरां राठोड़ उमराव ईसरीसिंघजी सुं मुजरो करण लागा सु पेली परधान देवीसिंघजी मुजरो करण ने मिलण ने आधा हुवा तरे महाराज रामसिंघजी देवीसिंघजी रै छाती में हात दे ने पाछा धकेलिया ने ईसरीसिंघजी ने कयो ठाकर पोवकरण सु पैला मीळो, तरे देवीसिंघजी तो पाछा हुवा नै डेरे उरा आया। पछे आपातीज री मुंजाई हुई, जरां सिरे दरवार हुवो हजूर रे थाळ आया तरे""देवीसिंघजी रा मुड़ा आगे थाळी मेली तरे महाराजा रामसिंघजी कयो, थाळी उठाय लै ने ठाकुरां पोवकरणजी आगे मेल दे""पछे देवीसिंघजी रै थाळी आई,""जीमिया नही।"

पोकरन ठाकुर देवीसिंघजी के प्रयत्नों से जोधपुर गढ पर बखतसिंह का अधिकार होने का उल्लेख इस प्रकार है :—

"पोकरन ठाकुर देवीसिंघजी, भाटी सुजांणसिंघजी सूं वात करण नु मीलाया सुजांणसिंघजी देवीसिंघजी रा सुसरा था"""""""""""""" रामसिंघजी सवारे थांने ही काढ़ देसी""सो गढ़ सूंप देवो नही तो हु थांरे माथे मरसूं। तरे सुजांणसिंघजी कयो—हूं अेकलो गढ़ में मालक नही छुं, तरे चवाण मोपमसिंघजी, महेचो सीरदारसिंघजी, धायभाई देवकरणजी यां ने फेर बुलाया नै"" कयो मे गंनीमो ने लावसां जोधपुर विजेसिंघजी ने बैठांणसां""नही तो गढ सूंप दो मुसायदी धायमाई जी। """"था तीनु सिरदारा ने लाप रो पटो देसी""सिरदारां हांकारो भरियो...दूजे दिन च्यारूं सिरदारों ने राजधिराज कने लाया, राजधिराज तीनुं सरदारो सूं छाती भीड़ मिळिया""।"

(११) महाराजा विजयसिंह का वर्णन :–

महाराजा विजयसिंह की ख्यात में महाराजा के मराठों से संघर्ष का विस्तारपूर्ण वर्णन दिया है। जिसमें उक्त महाराजा के स्वामीभक्त सरदारों व अन्य कर्मचारियों द्वारा की गई सेवाओं का वृत्तांत है। अन्त में उनके राजलोक की विगत है, तथा वि० सं० १८३२ में सिंघवी भींवराज ने विभिन्न आसामियों से रूपये लिये उसका ब्यौरा दिया है।

(१२) महाराजा भीमसिंह व मानसिंह का वर्णन :–

ग्रंथ के अन्त में महाराजा भीमसिंह और मानसिंह के राज्यकाल की घटनाये लिपिबद्ध है। महाराजा मानसिंह से संबंधित घटनायें ग्रथांक १०७०६ रा० शो० सं० से मिलती जुलती है। इनके रानियां, कुंवर, कुंवरियों व पड़दायतो की सूची के साथ ख्यात समाप्त हो जाती है।

यह वृहदाकार ग्रंथ दो व्यक्तियो के हाथ से लिखा गया है। लिखावट ठीक-ठीक है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मढ़ा हुआ है। पत्र कुछ मोटे, हाथ के बने हुए है। राठौड़ राजाओं के इतिहास के अध्ययन हेतु ख्यात उपयोगी है। क्योंकि इसमें इन नरेशों व कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध होती है तथा अनेक घटनाओं पर भी विशेष प्रकाश है।

४. राठौड़ों री ख्यात वंशावली आदि

१. राठोड़ों री ख्यात वंशावली आदि २. रा० शो० सं० ३. ६७२१ ४. ६५ × २५ से० मि० (वहीनुमा) ५. ६६ ६. ४५-५२ ७. १६ वी शताब्दी का मध्य ८. अज्ञात ९. राजस्थानी, देवनागरी १०. प्रस्तुत ग्रंथ में सन्निविष्ट कृतियों का विवरण क्रम इस प्रकार है :—

(१) ईडर राठोंड़ों री पीढ़ियां :–

सबसे पहले ग्रंथ में ईडर के राठोड़ शासकों राव सीहाजो के पुत्र राव सोनग से महाराजा वखतसिंह तक का हाल है।

प्रारंभ :—

"ईडर रा धणी राठोड़ कहीजे राव सिहोजी कनवज सु आया तिणरं बेटो सोनगजी ईडर जाय राज कीयो....।" (पत्र–१/२)

(२) बीकानेर राठौड़ों री पीढ़ियां :–

राव बीका से महाराजा जोरावरसिंह तक के राजाओं का संक्षेप में वृत्तात है।

प्रारंभ :—

"बीकानेर टीकायत राव बीकोजी जोधाजी रो, राव लूणकरण बीकावत.... आदि।"

(३) जोधपुर राठोड़ों री वंशावली :–

राव सीहा से मालदेव तक शासकों के नाम व संतति का उल्लेख है फिर मालदेव, चन्द्रसेन, उदयसिंह, गजसिंह के राज्यकाल की कुछ घटनाओं पर प्रकाश डाला गया है, आगे गजसिंह के ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह को राज्य के हक से वंचित किये जाने पर अमरसिंह को बादशाह द्वारा नागोर की जागीर देने, बादशाह की ओर से कई युद्धों में भाग लेने और अन्त में उसे धोके से मरवाने का उल्लेख है। (पत्र–१½)

(४) चौहान पृथ्वीराज :–

यकायक चौहान पृथ्वीराज का वृत्तांत प्रारंभ हो जाता है। पहले उससे संबंधित एक कवित दिया है—

ईग्यारे से ईकावने चेत तीज रविवार

कनवज दपल कारणे चलियो तस भर भार।

आगे पृथ्वीराज और जयचंद के बीच युद्ध का वृत्तांत है, फिर पृथ्वीराज का सोरम में संजोगता से विवाह होने का उल्लेख इस प्रकार दिया है—

"पृथ्वीराज नै में (जयचंद) राजी हुव ने वरीयो तरे परथीराज ने सोनम में परणावण री तयारी करी तरे परथीराज कई हूं परणु नहीं, मारा सांवत घणा काम आया है तरे जचंद केयो थारा काम आया सुतो थे मांनु दुगांणीया मारा कांम आया सु में दायजा में दीया तरे संजोगता नै परणीया नै इतरो हतलेवो दियो ....आदि।" (पत्र–१)

(५) राठौड़ों री ख्यात :–

इसमें राव सीहा से महाराजा अभयसिंह तक का इतिहास है।

महत्वपूर्ण घटनाओं का यहां उल्लेख किया जा रहा है—

(क) राव सीहा का वृत्तांत :–

राव सीहा द्वारा मूलराज सोलंकी के कहने पर लापा फूलाणी को मारने की घटना वर्णित है।

"बड़ो जगड़ो हुवो सीहाजी रे बुरछी लापे रे लागी ने पेतरपाल रो वरदान हो....लाया ने मारियो तरे ईतरा रजपूत कांम आया भाटी ५००, सोलंखी ६००, चावड़ा ४००, काती सुद १ सनवार झगड़ो हुवो। ....पछे सिहोजी

पाटण परणीजीया ···जसोदर वरमाण रूपीया एक लाप पेसकसी रा दीया··· (सीहाजी) वरस १७ तांई राज कीयो····।"

(ख) राव आस्थान का वृत्तांत :–

आस्थान द्वारा अपने भाई को सोनग के ईडर राज्य का अधिकार दिला कर खेड़ के गोहिलों को डाभीयों की मदद से प्राप्त करने का वृत्तांत है। गोहिलों के खेड़ से भागकर जैसलमेर जाना लिखा है। यथा—

"पछे गोयल अेक वार छड जैसलमेर गया भाटी पाउ सगाई करी, जैसलमेर रा गढ़ उपर अेक ठोड़ गोयल टुक कहीजै है··· आदि।"

आगे आस्थान की रानियों, संतति आदि का उल्लेख है।

(ग) राव धुहड़ का वृत्तांत :–

आस्थान का उत्तराधिकारी होने व नागणेचियों की मूर्ति कनोज से लाने का वृत्तांत इस प्रकार दिया है—

"आस्थानजी रे टीके धूहड़जी बैठा, ईंदा रा भांणेज धुहड़ गांव बालेसर ईदा रे गयो·········मामा मिलिया·······धूहड़ केयो म्हारा देवता कीसा ? तरे कयो थारी मां नै पूछ तरे मां कयो—धूहड़ थारे देवी करणाटक छे। धूहड़ करनाटक ने चडियो, पडीयार एक साथे····कुळ देवी करणानट सुं चोर नै लया····देवी कयो—पेड तो हू रहूं नही नै मारे मुंढ़ा आगे पाजरू दुवण लागो नै····चलरवरी सुपना में कयो हमे हूं थारा सू जाउं ···पछै उण मढ़ मे नागणेची मुरती पथर री हुई जिण दिन सु नागणेचिया ने राठोड़ पूजण लागा ···।"

अन्त मे धूहड़ की रानियां, लड़को का उल्लेख है। (पत्र–१)

(घ) राव रायपाल का वृत्तांत :–

रायपाल के बडे दानी और वीर होने का उल्लेख है तथा बाड़मेर ५६० गावों के साथ जीतने का वृत्तांत है तत्पश्चात् रानियों, तथा १३ पुत्रों के नाम दिये है। राज्याभिषेक वि० सं० १२८५ और देहान्त १३०१ में होना लिखा है।

(ङ) राव कन्हपाल का वृत्तात :–

इनके जन्म वि० सं० १२६१, सिंहासनारोहण सं० १३०१ और मृत्यु वि० सं० १३३२ के दिये हैं।

(च) राव जालणसी का वृत्तांत :–

अमर वृक्ष के फल को सोढ़ों द्वारा तोड़ने पर उनको दण्ड देने का वृत्तांत है। उसके ६ पुत्रों, राज्यारोहण वि० सं० १६३२ और मृत्यु वि० सं० १३८४ होना लिखा है।

(छ) राव छाडा, टीडा का वृत्तांत :–

इनके केवल संतति का उल्लेख है।

(ज) राव सलखा, मलीनाथ और वीरम का वृत्तांत :–

इसमे पहले कुछ राव टीडा के पुत्र सलखा का हाल है, फिर मल्लीनाथ के पुत्रों का और वीरम के झगड़ों का वृत्तात है। फिर वीरम द्वारा जोहियो से युद्ध करने उसमे काम आये कुछ प्रमुख राठौड़ों, जोइयां के नाम और वि० सं० १४४० में मारे जाने का उल्लेख है। (पत्र–२)

(झ) राव चूंड़ा का वृत्तांत :–

वीरम की स्त्री मांगलीयाणी की कोख से चूंडा का जन्म होने व एक चारण द्वारा उसे मल्लीनाथ के पास ले जाने का वृत्तांत है, यथा——

"चूंडा ने नवा कपड़ा कराय ………………… नै साथे लेने महवे राव मालदेजी कने ले जाय नै कैयो—वीरमजी रो तो बेटो है ने थारो भतीजो है···· वीरमजी मालदेजी ने घणो दुप दीयो थो तिण सु घणो प्रादर (चूंडाका) कीयो नही·····।"

चूंडा को सालोड़ी थाने भेजने, वहां उसके द्वारा उत्पात किये जाने पर मलीनाथ स्वयं के सालोड़ी जाने का उल्लेख है।

"चूंडा ने सालोड़ी रे थाणै मेलियो दिन दिन बात रस भावती गई.... रूपा री नदी वहण लागी, चूंडा नू वीभो जुड़तो गयो, घोड़ो रजपूतां री जोड़ होती गई····रावल माला ने खवर हुई तरे माले भोपा नु ं मोलमो दीयो, कयो एक वार सालोड़ी जायसां, तरे भोपे चूंडा नै कहाड़ीयो रावल माला उठे प्रावे छै तू ं कीणी वात रो डफाण राखजे मती सादी भांत मां रहे····माला भाप दीठो तो कु ंही नही··· श्रादि।

भागे चूंडा द्वारा मंडोर हस्तगत करने और नागौर में रहते हुए राव केलण तथा सलेमखान द्वारा २ योद्धाओं सहित वि० सं० १४४८ में काल कवलित होने का वृत्तांत है। फिर राव चूंडा के ४ पुत्रों के नाम अंकित हैं।

(न) राव कान्हा, सता का वृत्तांत :–

राव कान्हा के उत्तराधिकारी न होने व उसके बाद उसके भाई सता को राजगद्दी मिलने का उल्लेख है। (पत्र–१)

(त) राव रिड़मल का वृत्तांत :–

रिड़मल के मेवाड़ रहते हुए उसके भानजे मोकल के द्वारा एक हजार सेना की मदद से मंडोर हस्तगत करने का उल्लेख है। फिर चाचा मेरा द्वारा मोकल

[illegible] का मेवाड़ में उत्तराधिकारी होना तथा रिड़मल के वहां [illegible] द्वारा मारे जाने का उल्लेख है। (पत्र-१½)

[illegible] जोधा का वृत्तांत :-

[illegible] ने किस प्रकार अपने पैत्रिक राज्य मंडोर पर अधिकार [illegible] लिखा है, फिर जोधे द्वारा मेवाड़ पर आक्रमण करने का [illegible] के २४ पुत्रों के नाम दिये हैं जिसमें जोधा का सबसे [illegible] है। जोधे ने अपने भाईयों तथा पुत्रों को गांव आदि [illegible] है। अन्त में जोधा की रानियों का वृत्तांत है। (पत्र-२)

३. [illegible] व सूजा का वृत्तांत :-

[illegible] के बारे में केवल इतना लिखा है—"राव सातल सूजो जसमादे [illegible] रा नु जोधपुर दीवी।" सूजा के जन्म और राज्यरोहण व [illegible] दिये हैं। राव सूजे रो जन्म सं० १५०४ रा चैत सुदी १ बुध [illegible] १४ दीन घड़ीयां, संवत १५४८ रा पाट बैठो, संवत १५७२ का काती [illegible] देवलोक हुवो।" (पत्र-१)

(४) राव गांगा का वृत्तांत :-

राव गांगा के वृत्तांत का आधा पत्र फटा हुआ है। इसमें केवल इतना [illegible] है कि गांगा को ईडर से लाकर जोधपुर की गद्दी पर बैठाया और इसने [illegible] पांच महीने और २ दिन राज्य किया इस प्रकार उसका संवत् १५८८ [illegible] को देहान्त होना लिखा है। (पत्र-१)

(५) राव मालदेव का वृत्तांत :-

मालदेव के जन्म, राज्यरोहण और मृत्यु के [illegible]

[illegible]

[illegible] संवत १५६८ पोस बदी १ सुकरवार रो [illegible]

[illegible] संवत १६१६ [illegible] १

[illegible]

राव मालदेव द्वारा हस्तगत [illegible] का

(६) राव चंद्रसेन का वृत्तांत :-

राव चंद्रसेन के उत्तराधिकारी [illegible]

[illegible] द्वारा किये

[illegible] और राम पर की

[illegible] मालदेव मोटा राजा उपर

हुई मोटा राजा रे हात री बरछी चद्रसेन रे लागी।"

वि० सं० १६२१ में राम के प्रयत्नों से अकबर की सेना का जोधपुर गढ़ पर आक्रमण....इसमें दोनों ओर काम आये योद्धाओं का वृत्तांत और चन्द्रसेन का भाद्राजूण जाने का उल्लेख है, फिर वि० सं० १६२३ में चन्द्रसेन का अकबर से मिलने का उल्लेख, फिर अन्त में चन्द्रसेन के पुत्रों रायसिंह आसकरन और उग्रसेन संबंधी वृत्तांत है। (पत्र–१½)

(फ) मोटा राजा उदयसिंह का वृत्तांत :–

मोटा राजा उदयसिंह के जन्म, राज्यरोहण और मृत्यु के संवत आदि दिये है। इसमें जन्म वि० सं० १४६४ में होना लिखा है। यहां १५६४ होना चाहिये। वि० सं० १६४०-४१ में अकबर बादशाह द्वारा इन्हें जोधपुर, सोजत दिये जाने का उल्लेख है। मोटा राजा द्वारा की गई बादशाह की सेवाओं का वृतांत है। संवत १६४३ में जोधपुर के गांव जब्त हुए उनकी विगत दी गई है। फिर सोजत परगने के गांव दान दिये, जब्त किये उनकी विगत दी गई है। जो बात परगने के जोधपुर की से मिलती जुलती है। कही कही घटनायें आगे पीछे लिख दी गई है और संवतों में हेर फेर अवश्य है। अन्त में उदयसिंह के रानियों संतति आदि का वृत्तांत है जो कि मारवाड़ के परगनों की विगत में नहीं दिया है। (पत्र–६)

(ब) सूरसिंह का वृत्तांत :–

सूरसिंह के जन्म, राज्यारोहण और मृत्यु के संवत दिये हैं। बादशाद की इच्छानुसार सूरसिंह को उत्तराधिकारी बनाने फिर जालोर के शासक पहाड़खांन को मार वि० सं० १६७४ भाद्रपद सुद ६ को गढ़ पर अधिकार करने और ५ परगने जहांगीर द्वारा और देने का लल्लेख है। इस प्रकार अन्य घटनायें विगत से मिलती जुलती हैं।

(भ) गजसिंह का वृत्तांत :–

प्रारम्भ में बादशाह द्वारा मिले परगनों का वृत्तात है, फिर दक्षिणियों से महाराजा के विजयी होने आदि घटनायें विगत से मिलती जुलती है। अन्त में पुत्रियों का उल्लेख है। (पत्र–६)

(म) अमरसिंह का वृत्तांत :–

अमरसिंह का बादशाह की हाजरी में जाना, नागौर में रहते हुए बीकानेर नृप करणसिंह से युद्ध होने का वृत्तांत इस प्रकार है—

"अमरसिंघ रै साथ नागौर नै बीकानेर रै राजा करण रै साथ गाव जायणियो बीकानेर नागोर रै काकड़ छै तीण उपर वेढ हुई सीव रै वासतै, नै अमरसिंघजी री फौज मांहै सिरदार सीघवी सीहमल भैरव पदमावत रौ मांणस हजार ३००० चढीयो.......।" इस युद्ध में काम आये योद्धाओं के नाम दिये हैं। फिर चूक से अमरसिंह के मारे जाने पर लड़े तया मारे गये योद्धाओ की सूची अंकित है। अन्त मे रानियों व पुत्रों की विगत लिपिबद्ध है।

(य) जसवंतसिंह का वृत्तांत :–

महाराजा के जन्म (वि० सं० १६८३) राज्यारोहण (वि० सं० १६६४) के संवत दिये है। परगने जागीर मे पाये उसका उल्लेख है। अन्य घटनाओं का वृत्तांत विगत से मिलता जुलता है। संवत १७१४ को उजैन के युद्ध में काम आये करीव १५४ योद्धाओ के नाम दिये है। (पत्र–७)

(र) मेड़ते परगने की बात :–

परगना मेडता किसने बसाया, कब कब किसके अधिकार में रहा, फिर मेड़ता के कुछ गावो की विगत दी है यह सारा वृत्तात वात परगनै मेडतै री[1] से मिलता जुलता ही है, पर यह वार्ता संक्षेप में है।

प्रारम्भ :—

"मेड़तौ आद सैर राजा मानधाता बसायोडौ छै, आगै राव कोनड़ रो अमल हुवौ हौ पछै आ धरती सुनी रेही.......पछै राव जोधोजी जोधपुर बसायौ.......तरै भायो बेटां नै धरती देवण रौ वीचार कीयौ..... "वरसिंघ दूदौ सगा भाई था तिण नु राव कहौ—म्हे थानु मेडतौ दा छां।" (पत्र–८)

(ल) महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) रो ख्यात :–

इसमें वि० सं० १७१८ से महाराजा के अन्तिम काल तक की घटनायें क्रमबद्ध वर्णित हैं, कुछ महत्वपूर्ण घटनायें इस प्रकार लिपिबद्ध है—

१. संवत् १७१८ महेसदास सुरजमलोत आउवा रो पटौ दियो।

२. संवत् १७२० मारवाड़ में काळ पडियौ दाव घणा मुवा, रु १ रो धान सवा सात (सेर) विकीयौ। संवत् १७२० कांमदारो उपर पेसकसी ठहरी।

३. संवत् १७२१ दीपण सांमा सु पतसाहजी महाराज नै हजूर बुलाया। दीपण रै सामा राजा जैसिंघजी नै नवाव दलेलषा नै मेलियो।

---

1. प्रकाशित, सं० नारायणसिंह भाटी, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर (मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग २, पृष्ठ ३७)

४. संवत् १७२२ कुंजीयो रो परगनो मंडेवो मू० उदेकरण आसकरणोत नै हाकम मेलीयो मु रा० आसकरण मथुरादासोत मेड़तीया सु काजियो हुवो मु काम आया।

५. संवत् १७२३ साहजादा.......आजम नै महाराज रै पातसाह पोळै घालीया....... ।

६. संवत् १७२३ कवर पीरथीसींघजी नै पातसाह दोय हजारी मुनसब दीयो.......नै मालवा रो परगनो मु जाबलपुर मुनसब में दीयो लाप ३५००००० दाम, पछै.......काळ परापत हुवा।

७. सवत् १७२३ मोहणोत नैणसी मु दरदास दोनु भाइयों नै कैद कीया, १७२५ डड कर छोडीया.......पछै दोनु भाई औरगाबाद मु आवना पेट मार मुवा....... ।

८. संवत् १७२६ कामदारों रो रोजगार वधायो ... ... ।

९. सवत् १७२४ मे पातसाह गुजरात रा परगना ईजाफे में दीया....... ।

१०. संवत् १७२४ में औरंगाबाद रै पागनी तलाव सवळो बंधायो नै ऊपर बाग बड़ो करायो।

११. सवत् १७२५ रा आसकरण वावत पांप करणोत नै.......केसरीसिघ रामचदोत मुणोतों नै कैद कीया पछै (२) चाकरों नै मारिया।

१२. संवत् १७२६ मे वीरामण सीवदान कोडीयो थो सु श्री जनाथजी री घणी पूजा कीवी तरै अग्या सुपना में हुई मारवाड़ रा राजा जसवतसिंघ म्हारो अस है सु उणा रा पान रा बीड़ा रो पीक पावै जद कोड जाता रैसी, तरै वीरामण श्रीजी नै आण सारी हकीकत कही.......मा० जसवंतसिंघजी पान रो वीड़ो दीयो हात मु तरै पाय गयो सु कोड जातो रही।

१३. संवत् १७३५ श्री न्याय थो रीघपुरी श्री होगलाजजी.......पीसोर आय नै श्रीजी कनै स्माद (समाधी) लेणा री दयाती मांगी नै दुरगादासजी नै केयो मांनु तपस्या सु होगलाजी अग्या हुई तु महाराज रै राणी जादमदे रै गरभ आव अवतार लेसी....... ।

अन्त मे जसवंतसिंह के रानियों आदि का हाल है। (पत्र–६)

(ब) महाराजा अजीतसिंह :–

अजीतसिंह और दलथंभन के जन्म होने, भाटी रूघनाय लवेरा केशरीसिंघ आदि के बादशाह से मिलने, बादशाह द्वारा उनको सिरोपाव इत्यादि देने और महाराजा की सम्पत्ति हवाले करने का वृत्तांत है। इस समय इन्दरसिंह ने ३६

लाख रुपये में जोधपुर पाने की इच्छा प्रकट की। उमरावों द्वारा राजगद्दी के लिए बादशाह से किये युद्ध तथा उसमें काम आये विभिन्न जातियों एवं खांपों के योद्धाओं के नाम हैं। फिर उमरावों के इन्दरसिंह से विचार विमर्श करने और उमरावों की इच्छा के विरुद्ध जोधपुर का किला हस्तगत करने का उल्लेख है। यथा—

"इंदरसिंघ गढ़ कोठारा रा ताळा तोड़ सारो माल लीयो·······पछै सोजत री तरफ़ व्यास देवदत्त नै पकड़ण सारू वीका, जैतावत नै मेलियो। व्यास केयो वेड़ियां पैरू नही·······तरै व्यास मुवो।"

आगे वीर दुर्गादास राठौड द्वारा इन्दरसिंह और विरोधी सरदारों एवं मुगल सल्तनत से लोहा लेने का वृत्तांत चलता है। बादशाह औरंगजेब की मृत्यु, तत्पश्चात् अजीतसिंह के व उनके सहयोगी सरदारों द्वारा पैत्रिक राज्य पर अधिकार करने का वृत्तांत है।

कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ इस प्रकार वर्णित है—

१. संवत् १७७६ में महाराज मेडतै पदारिया तरै भंडारी वीठलदास, गीरधरदास, भगवानदासोत कैद में साथ था सु पातसाह कनी री नै कंवर मोहकमसिंघ सु मांजियो रा भरम पड़ीयो साठोरै जावतो मेडता में मारिया।

२. सवत् १७६८ बादरसाह रो साहजादो मोजद्दीन तखत बैठो।

६. १७६७···· महाराज रूपनगर डेरो कर आगे चालीया पछै राजा राजसिंहजी रूपनगर जावता कर नाळ २ दीवी रूपया १००००० नै हाथी १ नीजर कीयो।

४. १७६८ मे नागोर रा राव इन्दरसिंघ रै कंवर मोहकमसिंघ नै मारा नै ईनरा जीणा नै दीली मैलीया········।

(१) जोधो दुरजनसीघ, (२) महकरण, (३) धवेचो अमरसिंघ, (४) भाटी अमरसीघ······मोहकमसिंघ नासने वाड रा पेत में बड़ीयो ए पीण लारै चेत मे बैठा सु तुररी पाग मे थो सु तावड़ा सुं चीळकीयो सु देखनै जाय पोता मु मार दीयो·······महाराज च्यारो नै ही पटो नै सिरोपाव नै धवेचो अमरसिंह नै भाटी अमरसिंघ नै हतणी २ ईनायत कीवी।

५. सं० १७७१ में कंव[illegible] नै [illegible] सिरपाव हाती १ मोतीयारी माळ [illegible]

६. सं० १७७१ राठोड़ [illegible] नौबत नौबत वाजी।

७. १७७१ परधांनगी मं० पीवसी नै ईनायत हुई नै दीवांणगी मं० रूघनाथ नै हुई ।

८. १७७२ में प्रासोज में वाई इन्दरकंवर री डोळी दिल्ली भेजियौ……… ।

६. १७७३ रा सावण वद ७ नागौर में महाराज अजीतसिहजी रौ ग्रमल हुवौ……… ।

१०. १७७४ जेठ में मा० पीवसीजी री बेटी रौ नै पोती रौ वीवा वडवोत रै महाराज ग्रजीरासिघजी कवरौ सु हुवौ………महाराज रू १०० वडवेड़ी में घालीया नै रू २५००० मा० पीवसिहजी नै नोजर कीया रू १०० नीछरावळ कीया ।

११. सं० १७७६ हकोदर री जाळी जैसा नै भीटक मुरजनोत नै मैल मरायौ……… ।

१२. सं० १७७५ महाराजा दिल्ली पदारीया, सं० १७७६ अजमेर सु जोधपुर पदारीया ।

इसके बाद आगे महाराजा द्वारा बनवाये गये भवन इत्यादि का पल्लेख है फिर अन्त में पुत्रों, पुत्रियों, रानियों का विवरण आदि दिया गया है । घटनाएँ प्रायः 'अजीत विलास'[१] से मिलती जुलती है । (पत्र–१६)

(ग) महाराजा अमर्यसिह का वृत्तांत :–

सरदारों की इच्छा के विरुद्ध अमर्यसिह के जयपुर नरेश जयसिह की पुत्री के साथ विवाह करने पर जिन सरदारों ने महाराजा का साथ छोड़ा उनके नाम दिये गये हैं । भण्डारीयों आदि को कैद करवाने का वृत्तांत है, फिर महाराजा के द्वारा वि० सं० १७८१ में नागौर से इन्दरसिह को हटाकर रामकिसन को वहाँ हाकम नियुक्त करने और कार्तिक मास में बखतसिह को नागौर देने का उल्लेख है । बखतसिह को रकम आभूपण, हाथी ४, घोड़ा १००, ऊँट ४०, तोपें ३० और चाकर आदि दिये उनका ब्यौरा दिया गया है । बखतसिह की जन्मपत्री भी अंकित है ।

महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. सं० १७८४ में भादवा में राजाधिराज बखतसिह अजीतसिहजी महाराज रै कंवर अणदसीघजी नै ईडर री राज दीयौ । श्री अभैसिघजी महाराज रै मुनसब में थो, पछै रा० रीदेरामजी उदावत आसंमी १६ सु पगे राजाधिराज लगाय नै पटा सारा बाल कराय दीया ।

---

१. देखें 'परम्परा' भाग २७, रा० शो० सं०, सं० डा० नारायणसिंह भाटी

२. सं० १७८५ रा काती वद १४ वखतसिंघजी ·······रांणावत प्रीथीसिंघ अगरसिंघोत री बेटी परणीया ।

३. सं० १७८५ रायसिंघजी आणंदसिंघजी जालोर री धरती मे दौड़ीया तरै मा० अनोपसिंघजी जोधपुर सुं फौज लेनै गया तरै पाछा परा गया ।

४. १७८५ ग्रावेर सुं ·······सीप कर कीसोरसंसिघजी अजीतसिंघोत पंडेले परण जैसलमेर आया नै फलोदी रा गांव नै पोकरण रा गांवों में विगाड कीयौ तरै राजा वखतसिंह पोकरण पदारीया तरै किशोरसीघजी जैसलमेर परा गया पछै राजाधिराज पोकरण नरावतां कनै छुडाय नै राठोड़ महासीघ भगवांनदासोत चापावत नै पटे लिप दीवी ।

५. सं० १७८५ धांधलों रै पेसकसी ठहरी (८ धांधलों को गाव दिये उनके नाम दिये है ।)

६. सं० १७८१ रा फा० सुद ६ मा० अनोपसिंघ रुगनाथ रा बेटा नै जोधपुर री हाकमी ।

७. सं० १७८५ मीगसर वद ११ श्री राजधीराज रै माहाराज कंवर विजेसिंघ रौ नागौर मे जन्म हुवो तरै जोधपुर वधाई आई, तरै······ ···सीरपाव नै मोतीया री कंठी इनायत कीवी ।

८. तलाव अमैसागर करायौ पाळ कराई अमैसिघजी रू० तीन लाख लागा नै अधूरौ रेयो । चौखो वाग करायौ । कुत्रो अठै एक करायौ, कोट करायौ, मैलों री नींव दीराई सु अधूरी रही ।

९. मंडोर माहाराजा अजीतसिंघजी री देवल करायौ ।

१०. गढ़ जोधपुर कीला परकोठ पको करायौ ।

आगे अहमदावाद युद्ध का वृत्तांत है। युद्ध में काम आये योद्धाओं के नाम आदि लिपिवद्ध है ।

"१६६ सिरदार तथा रजपूत काम आया ६४० घायल हुवा, २६६ घोड़ा काम आया ५२१ घायल हुवा"

मराठों के बढते हुए प्रभाव को रोकने के लिए हुरड़ा सम्मेलन का वृत्तांत इस प्रकार दिया है—

"पछै महाराजा आ वीचारी हीदसयांन में गनीम आवै सु इणां री वंदोवसत कर देवौ तौ गनीम आ सके नही, तरै महाराज राणाजी रै डेरै पधारीया पछै राणाजी नै राजा जयसीघजी दोनुं ही महाराज रै डेरै पधारिया·······पछै सारा राजा भेळा हुवा तरै मिसल उपर इण तरै वैठा—श्री रांणाजी तो मिसल उपर वीचै वैठा नै श्री

महाराजजी जीवणी बाजू बैठा नै नीचे श्रीजी रै कोटा रा हाडो महारावजी दुरजनसीघजी बैठा नै श्री राजाधीराज बगतसिंघजी बैठा। आ सला करी कै गनीम हीदुसथांन में आवै है जिण रौ जतन वांधणी नै कांकड़ सीवां री जमी महोमाह दाबणी नही नै मांय री रीत सदामंद मुजब रायी।"

आगे सम्मेलन में विचार विमर्श हुए उस पर प्रकाश डाला गया है। फिर दक्षिणियों के खिलाफ महाराजा और समस्त हिन्दू नरेशों का शाही सेना के साथ जाने का वृत्तांत है। अभयसिंह द्वारा बीकानेर की चढ़ाइयों का वृत्तांत है। तत्पश्चात् बखतसिंह का जयपुर पर चढ़ाई करने का वृत्तांत है। महाराजा का अजमेर पर अधिकार करना इत्यादि अनेक घटनाओं का वृत्तांत है। अन्त में महाराजा के पीछे सतियां हुई उनका उल्लेख है। (पत्र-१४)

(घ) महाराजा रामसिंह, बखतसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा ने सिरोपाव आदि दिये उसका उल्लेख है, फिर बखतसिंह का रामसिंह के पास टीका भेजना, रामसिंह का टीका स्वीकार करने से इन्कार करना व जालौर लेने की इच्छा प्रकट करने आदि का उल्लेख है। महाराजा का अपने सरदारों के साथ दुर्व्यवहार करने से सरदारों का बखतसिंह की ओर मिल जाना और बखतसिंह व रामसिंह के बीच युद्ध होने, उसमें मारे गये योद्धाओं के नाम आदि का उल्लेख है। बखतसिंह द्वारा पहले मेड़ता, फिर जोधपुर पर अधिकार करने का उल्लेख है।

"संवत १८०८ रा सावण वद २ श्री राजाजी महाराज बखतसिंहजी नैं गढ़ सूंप दियौ। बखतसिंघजी रात रा गढ़ दाखल हुवा, सिणगार चौकी बीराजिया नैं निजर निछरावळ हुई"

महाराजा द्वारा सिरोपाव पदवियां आदि दी गई उसका वृत्तांत इस प्रकार है—

१. दीवाणगी सींघवी फतैचंद नैं सीरपाव
६. बगसी मुणोत सरतरांम नै सीरपाव,
६. थांनसांमा म० महेसदास सीरोपाव
४. प्रोयत वीजेराज नैं तीवरी ईनायत
५. पींची सुंदर नैं गढ़ री कीलेदारी ईनायत
६. वारठ करनीदान नैं बारठ पदवी ईनायत
७. खीची गोरधन नैं महाराज कंवर वीजैसिंघजी री कामदारी
८. पड़ीयार सीवदांन नैं जोधपुर री कोटवाली ईनायत
९. पड़ीयार जसा नैं तोपखांना री दरोगाई ईनायत

१०. कछवावो जैसा नै कटक री कोटवाळी ईनायत
११. डोढ़ी री दरोगाई सांमावत गोयंदास प्रणदरांम नै
१२. धाय भाई पदवी हरनाथ जगनाथ वट्ठीदासोत नै
१३. साहबखांन नै तोपखानै री दरोगाई ईनायत

मराठों की सहायता से रामसिंह द्वारा अजमेर पर अधिकार करने और मराठों के उत्पात आदि करने का वृत्तांत है। (पत्र–४)

(ख) महाराजा विजयसिंह का वृत्तांत :–

विजयसिंह के रानियों व पुत्रों का उल्लेख किया गया है। रामसिंह द्वारा राज हस्तगत करने के लिये फिर मराठों की सहायता से मारवाड़ में लूट मार मचाने, बीकानेर महाराजा गजसिंह और विजयसिंह द्वारा मराठों से युद्ध करने का उल्लेख है। इसमें विजयसिंह के बहुत से योद्धा काम आये उनके नाम दिये हैं। महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण इस प्रकार है—

१. सं० १८१२ जेठ सुदी १५ मं० दौलतराम, सुरतराम, हीमतरांम, चौथमल, सांवतराम, कैद में था रू० २००००० ठेराय नै सं० १८१३ सांवण वद १६ नै पेसकसी करने....छोडिया।

२. पां० लालजी नै छोडियो रू १५०००० पेसकसी रा लीया........।

३. सं० १८१३ में राजा रामसिहजी जैपर... ...ईसवरसिघजी री बेटी.... परणीया ......।

४. सं० १८१३ में प्रो० जगु रांमसरण हुवो, बहु लारै सत कीनो........।

५. सं० १८१३ आसोज में मेड़तो रामसिंघजी सु दीवांण फतैचंदजी छुडायो........जाळोर रो अमल हुवो।

६. राजा रांमसिघजी मेड़ते रै गांव सु रीयावास डेरो कीयो, महाराज वीजैसिंघजी...... सिंघवी फतैचंद दीवांण फौज लेनै चढीयो सु गांव मेसड़ डेरा कीया नै राड़ हुई तरै भागा........फतैचंद चढ़तै राड़ कीनी भारी, दीपणीयों रा पग छूटा, हाथी घोसीजियो चढ़ण रो।

७. सं० १८१४ रा काती में श्रीजी कूच कर मेड़तै....डेरा कीया, फतैचंद चढीयो सु खांन सु राड़ कीवी सु खांन भागो अजमेर गयो, लारै सु श्रीजी कूच कर पीसांगण डेरो कीयो........इत्यादि।

८. १८१६ ईडर सु बायां २ जोधपुर मेली ईणों रो वीवाह आप करसो.... दोनू बायां रो विवाह कियो........।

९. सं० १८१६ श्री आतमारामजी........रामसरण हुवा।

१०. सं० १८२० रा वैसाप नैं श्रीजी बूंदी परणीजण नैं पदारीया ⋯ ⋯ ।

११. सं० रा काती वद १ दीवांणगी मुणोत सुरतराम नैं हुई नैं थायभाई गनायराम रामसरण हुवो ।

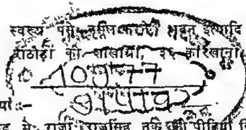
१२. सं० १८२१ रा दीपणी माधजी री फौज⋯⋯मारवाड मे ग्राई तरैं ाेवांण मुणोत सुरतरांम नैं फौज देनैं वीदा कीयो सु रूपनगर री गाव मीटूटी राड़ ई⋯⋯राड़ विगड़ गई⋯ ⋯ पछै दीवांणजी सिंघवी फतैचंद नैं हुई ।

१३. सं० १८२२ वैसाख में श्रीवालकिसनजी रौ मींदर करायौ⋯ ⋯ ।

१४. सं० १८२४ रा काती में जाट जवाहरमल असवार हजार २५००० महाराज सु मितण नैं ग्रायो तरैं श्रीजी जोघपुर सुं कूच कर पोकरजी मिळिया ⋯ । (जाटों ग्रौर जयपुर नरेश माधोसिंह के बीच युद्ध का वृत्तांत है ।)

१५. सं० १८२८ में गोढवाड़ री परगनों महाराजा विजयसिहजी नैं रांणा ़सीजी दीयो ।

महाराजा द्वारा दण्ड स्वरूप पशु-नलिकायें भवन इत्यादि बनाने का ांत है। फिर मिसलों, राठोड़ों की शाखायें, इन कारखानों आदि का ोल्लेख है । (पत्र-७)



किशनगढ़ राजा री पीढ़ियां :–

इसमें राजा किशनसिंह से राजा राजसिंह तक की पीढ़ियां लिपिबद्ध हैं, ो राजसिंह के पुत्रों सामन्तसिंह आदि का वृत्तांत है । (पत्र–१)

राठौड़ों री वंशावली :–

पहले एक कवित में राठौड़ों के कुल १३ कुलों के नाम दिये हैं, फिर प्रत्येक का वृत्तात दिया है—

ग्रभेपुरा, ईणवार, साप, दांनेसर, सुरा, जड़येडीया, जैवंत, कपालीया कुंदरा, बगलण बलवंत ।

महरपारकरा, ग्रापा, पैरादा, चंदेल, बीरबरीया यरभापा, इणभांत साप ग्रभंग राजकुळी रामेड़री, छत्रीवंस सारौ सीरैं, मिणधारी कुल मांड री ।

दांनेसर :–

राठौड़ राव धरमवब सीकार गयौ तठै ग्रणी रा रापेश्वर मीळीया तीण री कीवी तरैं रेपेश्वर कयौ वर मांग तरैं ग्ररज करी सु दांन देऊ सौ हाजर हुवैं ्पेश्वर वर दीयौ⋯⋯राका पुनम केहीजे सु उण दीन तुं चासी सु होसी सु ही पुनम नैं बीरामण नैं दांन घणौ दीयौ, तिणसुं दांनेसर साप केवाई ।

इसी प्रकार ग्रन्य १२ शाखाग्रो का वृत्तांत है ।

यह ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुन्दर नहीं है। ग्रन्थ पर गत्ता नही है। कुछ पत्र पानी से भीगे हुए हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से ग्रन्थ बहुत महत्वपूर्ण है।

५. राठौड़ों री ख्यात वंशावली म्रादि

१. राठौड़ों री ख्यात वंशावली ग्रादि, २. रा० शो० सं०, ३. १३५०७, ४. ४६ × २३ सेमी०, ५. १४२, ६. ३०-३५, ७. १६वी शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ की कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

प्रस्तुत ख्यात का प्रारम्भ कनोज के राजा जयचंद की पुत्री संजोगता की शादी के लिए रचे गये स्वयंवर से होती है।

प्रारम्भ—

वीजेचंद रो राव जैचंद सु ं दळ पागुलो कहायो, तिण री बेटी संजोगता सु ं मोटी हुई तरै बाप था ग्ररज कीवी मेह पिण हाजर हा जात री सोलंकणी नै सरूपदे उण पीण ग्ररज कीवी तरै ग्राप कही—मारा था सबळो हुवै तिण नु चाकर रापां तरै बेटी ग्ररज कीवी राज राजसी जीग रो ग्रारंभ करो म्हारी दाय ग्रावसी सु ं परणासु·········सु चौरासी राजा ग्राया नै एक राजा प्रथीराज चौहाण नै ग्रायो, तरै सपतधात रो मूरत करी·········कितराक दिन प्रथीराज सुणियो जरै प्रथीराज चंद भाट नै पूछीयो ग्रा बात खरी कै खोटी ? तरै चंद भाट कयो खरी, तरै प्रथीराज चंद नु ं कहो—हालो ग्रांपां ही तमासो देपां, तरै सावत नै सुखा सायै लीया तीण रा नांव····कवित—

ईग्यारै सै इकावने चैत तीज रवीवार,
कनवज देखण कारणै चल्यो त सांभर वार········।

ख्यात में वर्णित ग्रन्य घटनाग्रों का विवरण-क्रम इस प्रकार हैं—

१. जयचंद तथा सीहा का वृत्तांत :-

जयचन्द के कुंवरों ग्रादि के नाम दिये हैं फिर राव सीहा के द्वारिका यात्रा सम्बन्धी गीत दिया है।

प्रारम्भ—

सुध मन जात हालियो सीहो, सेत सुत नै लीयै संग
राजा मूलराज नालेर मेलियो, ऊपर करो कनोजा ग्राज ॥१॥

(पत्र-१)

२. राव आस्थांन, धूहड़, रायपाल आदि का वृत्तांत :–

राव आस्थांन, धूहड़, रायपाल, जालणसी, सलखाजी, वीरमजी और चूंडाजी, रिड़मल, जोधाजी, गांगा के कुंवरों के नाम दिये हैं, फिर राव मालदेव ने अपने पुत्रों को गांव आदि दिये उसका उल्लेख है। (पत्र–४)

३. राव जोधा और गांगा का वृत्तांत :–

राव जोधा और गांगा ने ब्राह्मणों और चारणों को गाव दान दिये उनका विवरण अंकित है। (पत्र–३½)

४. शाहजहां के उमरावों के मनसब की विगत :–

बादशाह शाहजहाँ द्वारा उसके पुत्रों उमरावों को दिये जाने वाले मनसब (जात, असवार) की सूची अंकित है। (पत्र–१)

५. राव मालदेव का वृत्तांत :–

राव मालदेव के समय की घटनाओं के संवत् आदि दिये है, इसके अतिरिक्त विभिन्न युद्धों में मारे गये योद्धाओं का नामोल्लेख भी जगह जगह किया गया है। यथा—

"सूरसाह पातसाह धरणी लेण आयो तरै राव मालदेव रजपूत साम्हे जाय नै वेढ की संवत १६०० पोस सुदि ११। राठौड़ जैते कुंपे राव मालदेजी री वेढ में तथा रावजी तथा रावजी रा इतरा रजपूत काम आया, रावजी रा बीस हजार असवार नवलाप घोड़ा सुं वेढ की जोधपुर लीयो, पछै दिने ५२४ जोधपुर राव मालदे फेर लीयो, सूरसाह मुवौ १६०२।" (पत्र–४)

राव मालदेव द्वारा बनाये गये किले कोटड़ियों की सूची दी है। फिर ब्राह्मणों चारणों को गांव सांसण में दिये उसका विवरण दिया गया है। (पत्र–५½)

६. राव चन्द्रसेन का वृत्तांत :–

राव चन्द्रसेन की रानियों, कुंवरों के नाम दिये हैं फिर बादशाह अकबर की जोधपुर पर चढ़ाई, उसमें काम आये योद्धाओं के नाम आदि दिये हैं। चन्द्रसेन के पुत्र रायसिंह के दत्ताणी युद्ध में (वि० सं० १६४० कार्तिक शुक्ला ११) वीर गति प्राप्त होने का उल्लेख है। (पत्र–३½)

७.-मोटा राजा उदयसिंह :–

मोटा राजा उदयसिंह की संतति का उल्लेख है। फिर अकबर बादशाह की ओर से लड़े गये युद्धों का वर्णन है तथा उसके द्वारा गांव सांसण में दिये गये उसकी सूची दी है। (पत्र–३½)

८. महाराजा सूरसिंह का वृत्तांत :–

महाराजा के परगनों के नाम, महाराजा की रानियों, कुंवरों का हाल, गांव सांसण मे दिये उसका वृत्तांत। वि० सं० १६६२ जहांगीर के शासन-काल में सूरसिंह द्वारा अहमदाबाद में उपद्रव दबाने, युद्ध में काम आये योद्धाओं के नाम आदि भी दिये है। महाराजा सूरसिंह द्वारा किये गये अनेक युद्धों का वृत्तांत तथा गांवो की विगत दी गई है। (पत्र–११)

९. महाराजा गजसिंह का वृत्तांत :–

महाराजा गजसिंह की रानियों, पुत्र-पुत्रियों का विवरण, गांव सांसण में दिये उसकी विगत, बादशाह द्वारा लाख पसाव में हाथी आदि दिये गये उसकी विगत, महाराजा का दक्षिणियों से युद्ध करने, महाराजा को हाथी व हथनियां कहां से प्राप्त हुई अथवा खरीदी गई उसका विवरण दिया गया है। बादशाह से प्राप्त हुए परगनों की सूची भी दी है। महाराजा गजसिंह के पुत्र अमरसिंह के परगने गांव जागीर में थे उसका ब्यौरा दिया गया है।

१०. महाराजा जसवंतसिंह का वृत्तांत :–

महाराजा जसवंतसिंह ने घोड़े, हाथी आदि बखसीस किये, पुत्र प्राप्ति के लिए महादेव की पूजा इत्यादि की उसका वृत्तांत इस प्रकार है—

"समत् १७०८ मिगसर वद १ महादेवजी की रोमेश्वर·······पूजा करण री सीरीमाली ब्रामण मदसुदन नु श्री राजाजी हुकम कीयो कंवर रै वासतै······सु बरस १ में हीज कंवर श्री प्रथीसिहजी रो जन्म हुवौ·······पूजा री विगत·······।"

जसवंतसिंह ने कुंवरपदे और राज्यप्राप्ति के बाद शादियें की उसका विवरण, फिर पुत्रियों की शादियों इत्यादि की उसका विवरण, महाराजा को दूसरी बार वि० सं० १७२८ चैत्र वदि ८ को अहमदाबाद का सूबा मिला उसका वृत्तांत, महाराजा की मृत्यु के बाद अजीतसिंह और दलथंभन के जन्म अवसर पर विभिन्न सरदारों द्वारा गुल, घृत, पकवान बनाने हेतु रुपये नजर किये गये उसका ब्यौरा दिया गया है। (पत्र–७)

११. महाराजा अजीतसिंह का वृत्तांत :–

महाराजा अजीतसिंह के राज्य हक के लिये उमरावों द्वारा बादशाह से किये गये युद्धों, उसमे काम आये घायल हुए योद्धाओ का विवरण इत्यादि दिया गया है। इन्द्रसिह द्वारा जोधपुर की राजगद्दी प्राप्त करने हेतु किये गये प्रयत्नों, अजीतसिह की रानियो, संतति आदि अनेकानेक घटनाओं का (संवत सहित) वृत्तात है। अजीतसिंह का वृत्तात इसमें विस्तार से दिया गया है। (पत्र–२८)

१२. राठौड़ ग्रमरसिंह का वृत्तांत :-

फिर राठौड़ ग्रमरसिंह का वृत्तांत दुबारा ग्रा जाता है जिसमें उनके द्वारा लड़े गये युद्धों उनकी संतति व मृत्यु पश्चात् रानियां सती हुई उनके नाम व ग्रमर-सिंह के साथ सरदार मारे गये उनकी सूची ग्रादि दी गई है।

१३. बीकानेर के राजाग्रों का संक्षिप्त विवरण :-

बीकानेर के राजाग्रों (बीका से ग्रनूपसिंह) संतति ग्रादि का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। (पत्र-२½)

१४. राजाग्रों उमरावों का वृत्तांत :-

राठौड़ व गहलोत राजाग्रों ग्रौर उमरावों सम्बन्धी कुछ घटनायें वर्णित हैं ग्रौर ग्रकबर द्वारा जीती गई भूमि की विगत दी गई है। (पत्र-२½)

१५. गहलोतों की वंशावली :-

गहलोतों की वंशावली[1] दी है जिसमें पहले नर्मांग्रों में देव शर्मा से [illegible] तक (५६ नाम), ब्राह्मणों मे गोदसीदित्य से [illegible] तक (१५ नाम), रावळों में भोजराज से करन तक (२६ नाम), राणाग्रों में राहप से ग्रमरसिंह राणा (जयसिंह राणा का पुत्र) तक (२८ नाम) पीढ़ियां अंकित हैं। राणा लखमन-सिंह व उसके वंशजों की संतति ग्रादि का विवरण ग्रागे दिया गया है। इसके ग्रतिरिक्त ग्रकबर की रणथंभौर पर चढ़ाई, युद्ध में काम ग्राये योद्धाग्रों के नाम ग्रादि भी दिये गये हैं। ग्रन्त में राणा जगतसिंह (वि० सं० १६८४-१७०६) के राज्यकाल में विभिन्न सरदारों व भौमों को जागीरों में गांव इत्यादि दिये गये उसकी सूची दी गई है। (पत्र-१५)

१६. कछवाहों री वंशावली :-

कछवाहों की वंशावली दी है, जिसमें राजा [illegible] के वंशजों, उनकी संतति, रानियों ग्रादि का विवरण दिया है। [illegible]

१७. देवड़ों की वंशावली :-

सिरोही के देवड़ों चौहानों की वंशावली दी है जिसमें [illegible] ग्रखेराज (२५ नाम) तक की पीढ़ियां दी हैं फिर ग्रखेराज के [illegible] के कुंवरों के नाम भी दिये हैं।

---

१. विस्तार के लिये देखें—[illegible] जोधपुर.

१८. भाटियों की वंशावली :–

भाटियों की वंशावली में श्री नारायण से रावळ जसवंतसिंह ((रावल अमरसिंह के पुत्र) तक (१३२ नाम) पीढ़ियाँ अंकित है। महारावल जैसिंह देवीदासोत, लुणकरण, मालदेव, हरराज, भीमसिंह, कल्याणदास, मनोहरदास इत्यादि जैसलमेर के राजाओं की रानियाँ, कुंवर-कुंवरियों का विवरण दिया गया है।

(पत्र–२)

१६. हाडा चौहानों की वंशावली :–

हाडा चौहानों की वंशावली में पृथ्वीराज से राजाओं की पीढ़ियों दी है और राव भाखा के पुत्र नारायणदास के वंशजों की संतति का नामोल्लेख है।

२०. बादशाही मनसब इत्यादि की विगत :–

वि० सं० १७४१ में बादशाही मनसब इत्यादि दिया गया उसकी सूची, बादशाह की ओर से जोधपुर के शासक सूरसिंह, गजसिंह और जसवंतसिंह को टीका आदि इनायत हुआ उसका विवरण, फिर राठौड़ों की कुछ खांपों के बारे में जानकारी दी है।

(पत्र–३)

२१. पंडा रा कोस री विगत :–

इसमें जोधपुर से अजमेर, आगरा से लाहौर जाते समय रास्ते में बीच के गांवों, नगरों के नाम, दूरी आदि दी गई है। इस प्रकार जोधपुर से अन्य नगरों के बीच के गांवों के नाम दूरी इत्यादि दी गई है। यथा—

जोधपुर सूं जैतारण :—३ नोहकी वडी, २।। जालेली, १।। जाटीयावास, २ वीसलपुर, २ चांदेलाव, २ कापरड़ो, ३ भावी, २-५ पचीयाक, २ धारीयो, २ गळणीयो, २ जैतारण (कुल २४-५ कोस) साढा पच्चीस। आगे मेड़ता से विभिन्न शहरों, नगरों, गावों की दूरी का हवाला दिया गया है।

(पत्र–३½)

२२. दिल्ली के बादशाहों की वंशावली :–

दिल्ली में राजा सिंहासनासीन हुए (राजा दसरथ तुंवर से जहांगीर तक) व प्रत्येक ने कितने वर्ष राज्य किया उसका ब्योरा दिया गया है।

(पत्र–½)

२३. सिरोही के शासक गजसिंह द्वारा वैर समाप्त करने का हाल :–

सिरोही के शासक गजसिंह (रायसिंह का पुत्र) ने राठौड़ों से मेल स्थापित करने व वैर समाप्त करने हेतु अपनी लड़कियों की शादियाँ की उसका ब्योरा दिया है। यथा—

"गोपालदास कीसनावत रै वैर
भाणा सिवराजोत री बेटी परणाई ... ... ।

(पत्र–½)

२४. कान्हड़दे का वृत्तांत :—

जालोर के शासक कान्हड़दे के उत्सर्ग आदि कुछ घटनाओं का वृत्तांत इस प्रकार है—

"जाळोर ती अलुघां भागो ...... नास नै दीली गयो, पातसाह अलावदीन कनै पुकारो ...... पातसाह उमराव आपरा छोड़ लाख घोड़ा दे बीदा कीयो, सीवाणै कनै वेढ हुई ....अलाउद्दीन आप आयो ......गढ़ कान्हड़दे रो भतीज सातल हुतो तिण नु अलाउद्दीन मार नै सीवाणो लियो सं० १३६४ .... अलाउद्दीन जाळोर रो देस लूटियो सं० १३५८ वैसाख वद ५ बुधवार कानहड़दे मारियो।"

अन्त में घोड़ों की जातियों, रंग, ७२ 'कळाओं' के नाम, ८४ सिधों के नाम आदि अंकित है। (पत्र–१½)

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, लिपि सुवाच्य है। कपड़े का गत्ता लगा हुआ है।

६. जोधपुर राज्य का दस्तूर, फुटकर ख्यात आदि

१. जोधपुर राज्य का दस्तूर, फुटकर ख्यात आदि, २. रा० शो० सं०, ३. १३५०६, ४. ६७ × २१ सेमी०, ५. १४३, ६. ३६-४०, ७. १९वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रन्थ में संकलित कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. अरजी :—

ग्रन्थ के प्रारम्भ में भंडारी अमरसी और पुरोहित बिरदमान की अर्जी (महाराजा अभयसिंह के नाम) की प्रतिलिपि लिपिबद्ध है।[1]

प्रारम्भ—

"माराज श्री अभैसिंघजी रै नांवे अरजी भंडारी अमरसीध नै प्रो: वरदमांन री सं० १७८७ रा मीगसर वद १ रविवार री ...... सिध श्री अनेक सुकल सुभ ओपमान ......।"

२. जोधपुर राज रा दस्तूर :—

इसमें जोधपुर राजघराने के शादी विवाह, राणीपदा, जन्म उत्सव आदि रीति-रिवाज सम्बन्धी सामग्री संकलित है।

---

१. प्रकाशित, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा० शो० सं०, 'परम्परा'—ऐतिहासिक रुक्के परवाने पृ० ७, जोधपुर

प्रारम्भ—

"अथ ख्यात जोधपुर रा राज रा दस्तूर री वही संवत १६१८ रा पोष वद ७ भौम—

संवत १६७६ म्हासुद १३ म्हाराजधिराज गजसिंघजी रो पांहा विवाह, संवत १६७८ रा मगसर वद २ माहाराज श्री गजसिंघजी रो विवाह हुवो कछुवावा रै ……।" (पत्र-४७)

३. जोधपुर रै चाकरों री विगत[1] :-

जोधपुर राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था हेतु भंडारी, सिंघवी, मुहता, पुरोहित, व्यास आदि नियुक्त किये गये उसका वृत्तांत है। (पत्र-२)

४. दिली रा पातसाह मुगलां रा घराणा री ख्यात :-

इसमे मुगल वंश के शासकों (बाबर से फर्रूखसियर) का संक्षिप्त वृत्तांत है।

प्रारम्भ—

"ऐक दिन बाबर कह्यो—अठा री पातसाही तो करां हां पिण तिमरलंक हिंदुस्थांन लीयौ सो एक वपत हिंदुस्थांन री पबर लीजै तरै दरवेस रो रूप कर साथै पांच सो भला सिपाई……हिंदुसयांन नूं वहीर हुवो……नै अठै सिकंदर पातसाही करै……।"

हुमायूं से सम्बन्धित एक रोचक वार्ता इस प्रकार है—

"हमाउ पातसाह बाबरसाह रै पाट…… वडो पातसाह हुवो घणी धरती लीवी……एक दिन पातसाह रै मन में आई हिंदुस्थान रा ठिकाणा देखिजै, तरै दरवेस रो रूप कर पांच सात आदमी……कुत्ता साथै ईण भांत सिकार रमतां निकळियौ। सो केई दिन आंवेर रहो नै केई दिन जोधपुर रयौ। पछै चित्तौड़ गयौ सो उठै घणा दिन रयो, नै राणा सागा री बहू हाडी करमेती नूं बहन कह बोली नै उठा ती वहीर होवण लागो तरै बाई नै केयो—कुछ हमारे पास मागो तरै करमेती बोली—दूजो सह छै पण थांहरा भाणेज विक्रमादित्य नै उदैसिंह म्हांना (छोटे) है नै म्हा सूं गुजरात रौ पातसाह नै मांडवे रो पातसाह अदावदी है सो कोई जड़ी जंत्र देवो……आदमी दोय साथै मेलो आगै भापरां सूं जडी देसूं……आदमियां नै केयो—भापरां मे जडी नही आगै हालो…… सु दिली नेड़ो आयो……पातसाह महलां दाखल हुवो……पातसाह बोलियो—बाई नूं हमारी दवाई कहजो……जद

---

१. प्रकाशित, मारवाड़ रा परगनो री विगत (भाग २ परिशिष्ट ५, पृ० ४७८), रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

कांम पड़ै तद हमकूं समाचार भेजीजो सो मैं आऊंगा। ·······मे समाचार कहजो, हाडी करमेती नैं केयो नैं घणी पुसी हुई।"

पछै संवत् १५८६ गुजरात रो पातसाह बादरसाह चितोड़ आय लागो तरै हुमाउ पातसाह नैं खबर मेली·······उठा सुं तुंरत चढ़ियो जेठ सुद १२ दोपार गढ़ टूटो नै आथण रो हुमायू आयो सो सुण नैं बादर तुरत नाठो·······लूट न होवण पाई·······नैं विक्रमादीत नैं पाछो चितोड़ बैसांणियो·······।"

कुछ घटनाओं के बाद अकबर द्वारा भूमि हस्तगत की गई उसकी सूची दी है। फिर संतति का उल्लेख किया है, अकबर के बारे में लिखा है—

"अकबर पातसाह वडो पातसाह हुवो, श्रो पातसाही करी, वडा वडा गढ़ कोट फतै कीया आप वडो करामाती हुवो संवत १६६२ काती सुद १४ ······ काळ कीयो।"

अन्त में जहांगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब इत्यादि बादशाहों की संतति व कुछ घटनाओं का विवरण दिया गया है। (पत्र–४)

५. फुटकर ख्यात री वातों :–

इसमें मारवाड़ के शासकों की ऐतिहासिक वातें वर्णित हैं।

प्रारम्भ—

"फुटकर पीयात री वातां वहीयां में देपी जीद लीपी। रावजी श्री तीडोजी सीवाणै पातसहा अलावदीन ······ आयो तद सातल सोम चवाण भाणेजो थो त्यांरी मदत कर राव तीडोजी सीवाणै १३६४ काम आया, तिणरै लारै अेकरसुं पाट कानराव टीके बैठो, छोटो भाई थो नैं सलपेजी वीया में गांव गोपड़ी रैता था। पछै राव सलपेजी रै मलीनाथ·······।"

(क) मलीनाथ के पुत्र जगमाल द्वारा अपने चाचा जैतमाल को मारने आदि घटनाओं का वृत्तात इस प्रकार है—

"·······पछै जैतमाल नुं तो कंवर जगमाल मालावत दगो कर काका रै कटारी वाही सु जैतमाल सीवाणै जाय मुवो नैं लारै सुं मलीनाथजी सिवाणै गया। जैतमालजी रै वेटा ४ था उणां दोने रावळ मलीनाथ वर दियो थे आयवणा जावो थांरै भलो होसी। सो पाटवी पीवकरणजी था तो राड़धड़ा रै नगर गया नैं परमारां सुं छोडाय नगर लीयो·······।

मलीनाथजी जैतमाल रै छोटी बाई थी नु सीवांणा सु पेड ले आया····· ···· इण री व्याह म्है करसां सु इसो सकड़ रजपूत हुसी सु म्हारी घोड़ीयां घोड़े कोई गिनायत आय लेसी तीण नुं आ बाई परणांवसां। पछै जाळोर रो गांव डोडीयाळ रो

राव वालोत चुहाण थो ....सीवाणची में गांव काणाएँ श्राय उतरीया उठा सुं हेरो लगाय जाय नै घोड़ीयां घाड़ै लीवी नै लारै बाहर रावळ मलीनाथजी चढ़िया, ...पछै मलीनाथजी ग्रापरी भतीजी डोटीयाळ रा राव नुं परणाई........।"

(ख) वीरम द्वारा जोहिया दला की रक्षा करने के कारण मलिनाथ से मनमुटाव होने तथा वीरम के जोहियों से युद्ध होने पर वीरम व उसके साथियों के मारे जाने का उल्लेख है।

(ग) राव चूंडा द्वारा मंडोर पर अधिकार करने और नागौर में रहते हुए वींजा भाटी को मारने आदि का वृत्तांत इस प्रकार है—

"राव चूंडे मंडोर लियो पछै नागोर लीयो तद भाटी बीजो गांव जालोड़ै फलोघी रै राजसथांन कर रया था सु बीजाजी रै बावड़ी रा पिरोहीत सुं श्रोड़ कोई तरै हुवो थो, सु उण पिरोहित रावजी चूंडाजी नु नागोर सुं सीखाय श्रखाय जालोड़ै साथ लेनै...... चूंडाजी नै उपर ले गयो सुं बीजोजी तो गढी बारै निकळ सामा श्राय वाज नै काम श्राया तिण री छतरियां हनोज जालोड़ा रा कोट श्रागे मोकळी छै। तिण समै री पीरोयत बीजाजी कनै चाकरी करतो थो तिण लूण खाय बीजोजी रो ईसो हरामपोरो कर पीरोयत मराया........लारै सतियां हुई नै ठकरांणी एक महासती थी तिण केयो—रती तो लकड़ा खिड़क राखो नै कंवर....... श्रावसी तरै उण सुं मिळ भळावण दै पछै बलसुं मास ६ ताई ठकरांणी बैठी रेही नै रती लकड़ां री चुणी राखो। पछै कंवर श्रावता सुण.......लकड़ा देख नै बरछी सू श्रेक लकड़ो.........हेटो नांपीयो नै केयो हमै मुंडा दिखावण नै श्रै लकड़ा कीउ षुण रापीया है। पछै कंवर माहे गयो सु महासती कंवर नै केयो—हाथ मुंगो रो छाजलो थो सु चौक में फंक दियो नै केयो—श्रै मूंग भेळा हुवै तो थारो परवार भेळो रेजो नै बरछी लागी महासती मोरां में श्रापरै, वताय दीवी........पछै सती हो गया छै।"

(घ) वात श्रेक रावळ जांम.......रै धणी बारठ ईसर सुरावत नुं कोड पसाव दीयो—

रावल जाम द्वारा बारठ ईसर को करोड़ पसाव दिया गया उससे सम्बन्धित वार्ता है। ईसर ने उस समय एक दूहा कहा जो इस प्रकार है—

श्रर मुणा सांठा पछै, मुज पत्यांणी मन।
जांम कोड़ श्रापी नही, तै दीनी तीकम ॥१॥

(ङ) राव मालदेव द्वारा लडे गये विभिन्न युद्धों, युद्ध में काम आये योद्धाओं की सूची, संतति, रानियाँ इत्यादि का विस्तार से वृत्तात दिया है।

(च) चंद्रसेन व मोटा राजा उदयसिंह के ग्राम लोवावट में युद्ध हुआ (संवत १६१६) उसका वृत्तात है। इसमें दोनों ओर से युद्ध में काम आये योद्धाओं की सूची भी अंकित है।

(छ) मोटा राजा उदयसिंह और सूरसिंह के सम्बन्ध मुगलों से रहे उसका वृत्तांत है।

प्रारम्भ—

"वात ग्रेक मोटाराजा श्री उदेसिंघजी रै वडा कंवर सगतसिंहजी वडौ रजपूत थो तीण बाप जीवतों पातसाही मुनसप जुदौ पायौ हौ पीण मोटा राजा रै रांणी कछवाई मनरंगदेजी कछवाह राजा ग्रासकरण गवालैर रा धणी री बेटी ही......पातसाह उण पर घणा राजी हा ......मोटा राजा कछवाइजी नु सारां सोरै मानता। ......वात ऐक कोई केवै ग्रासकरण ...... पेट रौ थो नव रोजा मुदे सुं ......ग्रासकरण नु पातसाह पूरौ मुकत्यार रापता। इणां रै बेटी होती सु पैला वीहाव चंदरसैनजी सुं तय थो नै ......चंद्रसेन नट गया...... पछै राणी कछवाई मनरंगदेजी रै बेटा सूरतसिंह किसनसिंहजी नै बाई मन भावती...... ।"

आगे महाराजा सूरसिंह को गुजरात का सूबा (१६५२) मिला, इत्यादि अनेक घटनाओं का विवरण दिया गया है।

(ज) परगने फलोधी री वात :—

मुगलखांन के फलोदी पर आक्रमण का विवरण इस प्रकार है—

"संवत १६६० रा चैत वद १२ परगने फलोधी री वात......बलोच मुगलषांन समायलषां. गांव कोरडौ मार नै धणो वीत लियौ, तिण दिन परगनौ मुता जगनाथ रै हवालै छौ सु जगनाथ तो जोधपुर थो नै मुतो रूपसी फलोधी थो नै थांणादार भाटी अचलदास सुरतांणोत भाटी सगतसिंह...... । फलोधी पुकार आई नरै थांणा रौ साथ वार चढीयो कोस ४ आसरै तळाव पर आय पोता, मामलौ हुवौ तठै राव रौ साथ इतरौ काम आयौ ...... । बलोच पछै १६६४ रा काती वद ५ मुणोत नैणसी रै हवालै फलोधी कीवी......मुगलषान ......फलोधी री तरफ आयौ, मुहणोत नैणसी सामौ चढ़ियो ......वेढ हुई बलोच मुगलषान भाया सुं काम आयौ...... ।"

महाराजा जसवन्तसिंह को बादशाह की ओर से मनसब, जागीर इत्यादि प्राप्त हुआ उसका विवरण तथा बादशाह की ओर से महाराजा के विरुद्ध युद्धों में भाग लिया उसका भी काफी विस्तार से वृत्तांत दिया गया है। (पत्र-२५)

६. कमठों नें नीवाणों री विगत[1] :–

जोधपुर के शासकों, अधिकारियों तथा रानियों द्वारा भवन और जलाशय आदि बनाए गये उसका विवरण दिया गया है।

७. सैर वसिया तिण री याद :–

विभिन्न शहर किसने बसाये और उन पर कब किसका अधिकार रहा इत्यादि कुछ बातें संक्षिप्त संकलित है।

प्रारम्भ—

"दीली ग्राद सैर तुरा बसायी सु''' '''पछै ११०६ रा काती सुद ६ तुंवर ग्रनंगपाल जीग करायो, जोतसी जगजीत कीयो थो'''''''।" (पत्र–१२)

८. डावी नें जीवणी मिसलां री विगत[1] :–

जोधाजी द्वारा स्थापित डावी और जीवणी मिसलों का उल्लेख है।

(पत्र–४)

प्रस्तुत वही अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुइ है। इस पर कपड़े का गत्ता मंढा हुआ है।

यह ग्रन्थ न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है अपितु सामाजिक अध्ययन हेतु उपयोगी है क्योंकि इसमें जोधपुर राजघराने के रीति-रिवाज सम्बन्धी अच्छी सामग्री संकलित हैं।

७. बात ख्यात तथा अजीत विलास[2]

१. बात ख्यात तथा अजीत विलास, २. रा० शो० सं०, ३. १०६१३, ४. ३४.५ × २५ सेमी०, ५. ४५०, ६. २३-३१, ७. १९वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रन्थ के आरम्भ में जोधपुर के राजाओं की जन्मपत्रियाँ अंकित है।

ग्रन्थ मे लिपिबद्ध कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है :—

१. सिंध की ख्यात :–

इसमें वर्णित है कि सिंध में पहले ब्राह्मणों का राज्य था वहाँ बाहरी शक्ति का राज्य कैसे स्थापित हुआ फिर कब किसके अधिकार में सिंध रहा उसका वृत्तांत संक्षेप में है।

---

१. प्रकाशित, मारवाड रा परगनां री विगत (भाग १ पृ० परिशिष्ट), रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

२. प्रकाशित, वही, पृ० ४६५, भाग-२

"ग्रहवाळ ग्रवासियों री राज सिंध में हुवौ तिणरी विगत :–पैकंबरसा ग्रब मूवा पछै वाबका ग्रत पायां पछै बरस असी तथा निवं बरस पछै, हुजाज बेटौ जूसप रौ रूम में पातसाह हुवौ जिण समें ग्रवासी महमद कासम रौ राम सु सिंध में ग्रायौ सो तिण समय रा ग्रडाहर विरामण बादसहर में सिंध री मालकी करतौ सु ग्रबासी महमद कासम रौ बेटे, ग्रडाहर नै नीकाळ दीयौ नै राज रौ मालक हुवौ.........ग्रादि ।" (पत्र–६)

२. भुंटत री ख्यात :–

इसमें भुंटत देश के लोगों का खान-पान, रहन-सहन, जन्म-उत्सव, अन्तिम संस्कार, विवाह, वहां की भौगोलिक स्थिति, दर्शनीय तीर्थ-स्थानों आदि का विवरण दिया गया है ।

प्रारम्भ—

"भुंटत के राजा मन्त्री ईष्ट विहनु सिव देवी ग्रादिक पूजे छै, मत हिंदू छै । ग्रोर षान पांन ग्रंगरेजां माफिक कोई मांस को टाळो नही ग्रौर बांको जनम होय जदि राग रंग बहोत होय ग्रौर कोई मृत पावे जदि राग रंग करै.........कोई नै तो सूतौ गाडै ग्रर कोई नै बैठो.........कोई नै ग्रग्नि में बालि करि राष होय.........ग्रादि ।" (पत्र–३)

३. जमी धूजण री बात :–

वि० सं० १६०५ में भूकम्प ग्राया उसमें जालोर, जयपुर, नागौर, भीनमाल, ग्राबू, सिरोही ग्रौर जोधपुर ग्रादि शहरों में इससे मकान गिरे ग्रथवा व्यक्ति मारे गये उसका विवरण दिया गया है ।

प्रारम्भ—

"सं० १६०५ का मीति जेठ बदी ८ नै जमी धूजी सो घणी धूजी, राति ग्राघि के घड़ी १ पहली धूजी सुं जाळोर सुं पवर इण माफक ग्राई जाळोर का गढ़ में विगाड़ घणौ हुवौ.........ग्रादि ।" (पत्र–२)

४. सर्व संग्रहख्याति :–

बद्रीनाथ के ग्रासपास ग्रौर बद्रीनाथ के तीर्थ स्थानों का नामोल्लेख है ग्रौर बाद में भक्ति सम्बन्धी कुछ बातों का वृत्तांत है । यह ग्रन्थ कुचामन ठाकुर रणजीतसिंह के पठनार्थ लिखा गया—

"पठनार्थ राज्य श्री रणजीतसिंहजी स्योनाथसिंघोत, स्योनाथसिंघजी सुरजमलोत, सुरजमल समर्सिंघोत, समर्सिंघ जालमसिंघोत पांप मेड़तिया गोयंदासोत

राजस्थांन कुचांमणि । वद्रीनाथजी जातां तीरथ आवै सो लीपीजै छै, हरद्वार रा तीर्थ प्रथम—हर की पैंडी १ कुसावर्त २ कनपळ ३……… ।" (पत्र-३)

५. अवतार हुवा तीणरी विगत :–

ईश्वर के विभिन्न अवतारों के नाम व अवतार तिथि इस प्रकार अंकित है—

"राम अवतार चैत सुदि ६, मछा अवतार चैत सुद ५, नरसिंघ अवतार वैसाप सुद १४, फुरसा अवतार वैसाप सुद ३, वावन अवतार भादवा सुद १२, कछा अवतार जेठ वद १२, वाराह अवतार चैत सुद ५, कृष्णा अवतार भादवा वद ८, वुधा अवतार जेठ सुद ८, कलकी अवतार जेठ सुद २ ।"

६. अठारै पुराण :–

१८ पुराणों के नाम और उसके आगे कथाओं की संख्या अंकित है ।

७. दादूजी रै सिषां रा नाम :–

इसमे दादू दयालजी के ५५ शिष्यों के नाम दिये हैं इसके साथ ही शिष्यों के निवास स्थान भी छोटे अक्षरो में अंकित है । (पत्र-३)

८. ग्रन्थों री याद :–

इसमे विभिन्न विषयों के करीव ७७ ग्रंथों के नाम उनकी श्लोक संख्या और कही-कही कर्ता का नाम दिया है ।

(अ) *श्री भागवत गीता श्लोक ७५० वेद व्यास कृत*

(व) विसनु सहस्रनाम श्लोक १६३

(स) सूरज प्रकाश श्लोक ६०५० करनीदांन कृत (पत्र-२)

९. उप पुरांण :–

इसमे पुराण और आगे १८ उप पुराणों के नाम अंकित हैं फिर नीचे ४ वेद और ४ ही उप वेदो के नाम दिये है ।

१०. फुटकर ग्रन्थ :–

इसमे पहले ६ संस्कृत के ग्रन्थ ६ ही षट शास्त्रों के नाम और २८७ फुटकर ग्रन्थों के नाम दिये हैं—

(अ) *वसंत राज श्लोक*

(व) सिद्धांत कौमदी श्लोक

(स) चंद्रिका श्लोक

११. दुर्गादास का वृत्तांत :–

इनके वारे मे लिखा है—

"दुर्गादासजी नव वेटीया वहनां रा व्याव सादडी कीया । पैंतीस हजार री

रेख सूं वाघावास महेकरणजी नूं देरीजीयो। तेजकरणजी महेकरणजी तो मेवाड़ मे दुरगादासजी रै साथै गया था नै भमैकरणजी जैपुर जैसिघजी कनै गया…… …… आदि।" (पत्र-१६)

१२. कवित उदावतां री खांप री :-

एक छप्पय उदावतां के खांपों और वतन से सम्बन्धित है।

प्रारम्भ—

उदैराज नीवोल भ्रमर नीवाज भ्रणंकल
रास कमध वसतेस भनौ महड़ास लिया छल……… ।

१३. वंशावलियां :-

इसमें मारवाड़ (पुंज से महाराजा तखतसिंह तक), भाद्राजून (राव मालदेव से इन्द्रभांण), बीकानेर (जोधा से गंगासिंह), ईडर (भ्रणंदसिंह से उम्मेदसिंह), जैसलमेर (वाराह से गजसिंह), बून्दी (राव सुरजन से रावराजा रामसिंह), उदयपुर (राणा भूभ्रणजी से महाराणा फतेसिंह), किशनगढ़ (मोटाराजा उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह से मोखमसिंह), सिरोही (रावळ सोभा से उदैभाण), जयपुर (राजा दूलेराय से रामसिंह), कोटा (राव रतन से रामसिंह) के नरेशों की वंशावलियां लिपिबद्ध है। (पत्र-२)

१४. महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) रिजक पावै तिण री विगत :-

वि० सं० १७२२ में महाराजा जसवन्तसिंह को बादशाह की ओर से रोकड़ रुपये गाव आदि मिले हुए थे उसकी विगत दी गई है।

प्रारम्भ—

"रोकड़ रुपया पावै पीडा का ३५००००, ईनाम २५००००, असवारां रा १२०००० । परगना जागीर रा जोधपुर रा गाव १०८६, पोकरण गांव ७७ …… आदि।" (पत्र-३)

१५. राजवंशों री साखाओं री विगत :-

इसमें गहलोतों, परमारां, चौहान और सोळंकियो की शाखायें इस प्रकार अंकित है—

(क) गहलोत—गेहलोत, मांगलीया, डाहलिया, ढीवाण, चंद्रावत, शिशोदिया, आसायच, मोटसिरा, माहालण, वळा, अहाड़ा, केलवा, गोदरा, लवड़कीया, पीपाड़ा, मगरोपा, मावला, धोरणीया, गोत्तम, हूल, गोहील, मैर, बूटा, बूंटिया।

(ख) परमार—परमार, पांणीसबल, सीकोरा, धीरीया, पूंट, गैलड़ा, सोडा, वहिया, जैपाल, भायी, ढल, कळोकिया, सापला, वालह, कांगुवा, कथोटीया, ढेपल,

कूंकण, भांमा, छाहड़, काळा, जागा, पीथलीया, भायल, मोटसी, उमट, कालूमहा, ठूठा, हूबड़, धंध, पेर, डोड, पेळ, गूंगा, कावा ।

(ग) चौहान—चहुवांण, गीळ, वेळ, हुरड़ा, माळण, सोनगरा, डेडरिया, निरवांण, सेपटा, ढीवडीया, पीची, बगसरीया, गोळवाड़, निरवांण, देवड़ा, हाडा, वेहुण, वोड़ा, वाका, राकसिया, चीवा, चाहिल, सैंळोत, वाळोत ।

(घ) सोलंकी—सोलंषो, मुटा, वागेला, नायचा, डहरा । (पत्र-१/२)

१६. मेवाड़ रैं धणी रैं परगनां री विगत :–

उदयपुर राणा के परगनो और गांवों की विगत दी गई है ।

प्रारम्भ—

"चितोड़ रा गाव ६०१, गोडवाड रा गाव ३६०, जवास रा गांव ३४०, गरवार रा गांव ५२.........आदि ।" (पत्र-१/२)

१७. राव रत्नसिंह री वीको[1] :–

वि० सं० १६१४ में अजमेर का सूबादार कासिमखा ने जैतारण पर आक्रमण किया इस समय मालदेव ने राठौड रत्नसिंह की मदद नही की तब राठौड़ रतनसिंह उदावत ने बडी वीरता से मुकाबला किया इसमें रतनसिंह वीरगति को प्राप्त हुआ और उसके साथ योद्धा मारे गये उन ३५ योद्धाओ के नाम दिये हैं ।

प्रारम्भ—

"सं० १६१४ रा चैत बदी ६ अकबर पातसाह री फौज जैतारण उपरि आई कासिमपां फौज ल्यायो.........मालदेजी रतनसींगजी री मदत न कीवी......... आदि ।" (पत्र-१/२)

१८. गढ़ सहर बसायों री विगत :–

विभिन्न दुर्ग, शहर आदि किसने कब बनवाये अथवा बसाये, उसकी विगत दी गई है ।

प्रारम्भ—

"संमत् ६०२ वरष चित्रंगदे मोरी चीतोड़ वसायो, पहला परमारा करायो छो.........आदि ।" (पत्र-२)

१६. राजकुलां रा उतन :–

परमार, गहलोत, चौहान, सोलंकी, कछवाहा, भाटियों आदि राजकुलों का निवास स्थान कहाँ-कहाँ रहा यह अंकित है ।

---

१. प्रकाशित, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, राठौड रतनसिंह री वेलि, रा० शो० सं०, जोधपुर

प्रारम्भ—

धार, उजिरण, आबु, परमारां रा उतन
आहड़, वैराटगढ़, परनालो गहलोतों रौ उतन ·····आदि । (पत्र-२)

२०. महाराजा जसवंतसिंह का गीत बारठ सांमो गांव रेपड़ावास रो कहे :-

प्रारम्भ—

प्रथम पांच पकवान घृत धांन मांडै पृथी,
उमंडी नह छडी आडी वडै गढ़ जोधपुर दसां
देसां विचै हेक वळ हुवो जसवास हाडी ॥१॥

२१. महाराजा जसवंतसिंह व हाडी रानी :-

गीत आढो प्रथीराज गांव हीगोला रौ कहै—

प्रारम्भ—

रचिया भ्रम जिगत प्रथी सिर रांणी
राषण घर मोटी कुळ रीत
हाथ सदा मोटा हाडी रा······· ॥१॥

जसवन्तसिंह से सम्बन्धित इसी प्रकार के गीत कवित्त बारट नरहरदास लखावत, भोजग जगा तेजावत (जोधपुर निवासी), बारठ धनराज, बारठ जगनाथ सांवलदासोत (मथानिया निवासी), चारण नगराज, आसीया बाघोराज, लाळस वाघो, चारण कचरा, बारठ भैरूंदान चांवडदांनोत आदि कवियों के संकलित हैं।

२२. महाराज अभयसिंह सरबुलंदखां रै राड़ रौ वर्णन :-

महाराजा अभयसिंह ने सूबेदार सरबुलंदखां पर चढ़ाई की और युद्ध हुआ उसका वृत्तांत बखतसिंह ने ईडर के नरेश आनन्दसिंह को लिख भेजा उसका विवरण है।

प्रारम्भ—

"स्व सुथां श्री भाई श्री अणंदसिंघजी जोग्य अहमंदावाद रा डेरां थां राजाधिराज श्री वषतसिंघजी लिषावतं जुहार बंचावजो, अठारा समाचार श्रीजी री कृपा सु भला है·······थे लिषियो थो मीयां सु बेढ हुई तिण री फिकर हुई सो श्री ईस्वर रै प्रताप फतै हुई·· ···आदि।" (पत्र-२½)

२३. कुरब इनायत री याददास्त[1] :-

जागीरदारों तथा मुत्सद्दियों आदि को जोधपुर के राजा की ओर से सम्मान

१. प्रकाशित, विगत भाग २ (परिशिष्ट पृ० ४८४)

हेतु इनायत किये जाने वाले विभिन्न कुरबों का उल्लेख है।

२४. जोधपुर श्रोदादारां री याददास्त[1] :-

जोधपुर राज्य के ६० ओहदों के नाम दिये हैं। यथा—परधांन, मुसायब, दीवांण...... ...आदि। (पत्र-१)

२५. राठौड़ों री यांपों री याददास्त :-

इसमें राठौडो की शाखायें अंकित हैं। यथा—धूहड़ीया, धांधिल, मुहु, वेगडा, बूला.........आदि। (पत्र-$\frac{1}{2}$)

२६. गढ़ जोधपुर निवांणों री याददास्त[2] :-

जोधपुर दुर्ग मे शहर के अन्दर तथा वाहर के जलाशयों की सूची अंकित है।

"प्रथम गढ उपरला निवांण री याद दासत—

दौलतपांना का मांणिक चौक में टांको

आयसजी देवनाथजी री समाधि में टांको ...आदि।"

२७. राठौड़ों री पांपों री याददास्त :-

राठौडों की खांपो और उप शाखाओं की सूची के साथ-साथ गांव के नाम भी अंकित है।

प्रथम जोधां री यांपां

(अ) भारमलोत (जोधा) राघोगढ रा, मालवा में छै

(ब) सिवराजोत जोधा गांव रामासडी में

(स) जोगावत जोधा गांव डेधाणा रा

इसी प्रकार उदावतों, मेडतियो की खांपें अंकित हैं।

२८. पातसाही चाकर मा० जसवंतसिंह रा चाकर काम आया तिण री विगत :-

वि० सं० १७१४ में औरंगजेब और मुराद के वीच युद्ध हुआ उसमें वादशाह और महाराजा जसवंतसिंह के योद्धा काम आये उनकी सूची दी है।

"सं० १७१४ रा वैसाप वदी ६ शाहजादा औरंगजेब मुराद बगस रै राडि हुई जिण कनै जिवणी वाजु कोस ४ गाव चोरनारायण जठै कांम आया पातस्याही चाकर—

(अ) राव रतन महेसदासोत दलपतोत उदैसिंघोत...... (पत्र-६)

---

१. प्रकाशित, विगत भाग २ (परिशिष्ट पृ० ४८२)

२. प्रकाशित, विगत भाग १ (परिशिष्ट पृ० ५६६)

२९. पातसाहों री ख्यात :–

पहले बाबर से अकबर (द्वितीय) तक वंशावली दी है फिर औरंगजेब के उमरावों की सूची, फिर शाहजहाँ की दिनचर्या और कुछ उपदेश सम्बन्धी बातें वर्णित हैं। इसके आगे मुगल बादशाहों की बातें, खुदा पैगम्बर आदि अनेक धार्मिक बातें लिपिबद्ध हैं।

३०. दिल्ली राजा पातसाह हुवा जिए री ख्यात :–

प्रारम्भ—

"दिल्ली प्रथम विदुमु राज कीनु पछै ईंद्र राज कीनो·······आदि।"

इस प्रकार मुहम्मदशाह तक राजाओं व बादशाहों के नाम किसने कितने समय राज्य किया आदि लिखा है।

३१. बात परगने जोधपुर री :–

यह वार्ता मुहता नैणसी कृत 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' में बात परगने जोधपुर री के समरूप है। इसमें वि० सं० १७२४ तक की घटनायें लिपिबद्ध हैं। आगे गांवों की विगत इत्यादि नहीं दी गई है जो कि विगत में है। (पत्र–६१)

३२. अजीत विलास[१] :–

इस कृति का प्रारम्भ राव सीहा से होता है मालदेव, मोटाराजा उदयसिंह, जसवन्तसिंह और अजीतसिंह का वृत्तांत विस्तार पूर्ण दिया है।

प्रारम्भ—

"राव सीहोजी सेतराम रो राव सीहोजी कनवज सु आय सं० १२१२ रा काती सुद २ लाखो फुलांणी नु मार ·····आदि।"

इस ग्रन्थ मे दुर्गादास और उसके साथियों का सल्तनत के विरुद्ध संघर्ष विस्तार के साथ दिया गया है। (पत्र–४७½)

३३. महाराजा अमर्रासह वखतसिहजी रै राज री बात :–

महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(अ) अमर्रासह द्वारा बादशाह से ईडर राज्य प्राप्त करना।

(ब) अमर्रासह का राज्याभिषेक और नागौर से इन्द्रसिंह को निकाल कर वखतसिंह को वहां रखना।

(स) भंडारी रघुनाथ को कैद में डालना।

---

१. प्रकाशित, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, 'परम्परा' भाग २७, अजीत विलास, रा० शो० सं०, जोधपुर

(ब) अहमदाबाद के आक्रमण का हाल

अहमदाबाद के सूबेदार सरबुलंदखां के मराठों से मिलने और गुजरात दबा बैठने पर बादशाह द्वारा महाराजा अभयसिंह को अहमदाबाद का सूबा देने का उल्लेख इस प्रकार है- -

"पछै सेर विलंद हीं दीषणीयां सुं मिळ गयो गुजरात दबा बैठो, पतस्याह चाकर था त्यानै काढण लागो नै फुरमांण हुकम कोई मानै नहीं.......नै गुजरात में अनीत घणी करणी मांडी.......पछै पातसाह महाराजा (अभयसिंह) नै दरगाह बुलाया...... ...तरै श्री महाराज बीड़ो लियो। अरज करी—आप कृत बपती रपावै ....पातसाह घणो राजी हुवो सिरपाव जुहार पजानो नै गुजरात रो सोवो दियो।

दिल्ली सुं पातसाह रा फुरमांण उपरा उपरी घणा तागीद रा आवै हमै जोधपुर सुं गुजरात नै डेरा वारै किया सु फौज एक तो बडी श्री महाराज री, नै फौज दूजी नागोर सुं राजाधिराज (बखतसिंह) पदारिया नै तीजी फौज मारोठ री, सु मेड़तीया वीजैसिंघजी वगैरे चौरासी रो साथ। तीन फौजों सुं कूच कर रेवाड़ै सीरोही हुय.......पालणपुर डेरा हुवा नै मियां नै षत मेलियो.......थे सैर खाली कियो नही, नै लोग नै जादा पोसता जावो छो सु थो कोसो पातसाही चाकरी रो इरादो छै.. .....तरै विचारीयो अैमदावाद सहर नुं लागीजै तो मीयां सहैर रो उपर करसी, सु पाच मोरचा सहर नै लगाया.......नै राड़ कीवी सु गोळा जाय नै मह्र में मीयां रो कवीलो थो जठै पड़ण लागा ....।"

दोनों ओर युद्ध में काम आये और घायल हुए योद्धाओं के नाम दिये हैं तथा वि० सं० १७८७ आश्विन सुदि १२ महाराजा का वहाँ अधिकार होने का उल्लेख है।

"मिया नै कोल वचन दिराया। अमरसिंघजी री मारफत बात हुई। सरबुलंदषांन तोपषांनो सारो उभो मेलनै जातो रयो नै आसोज सुद १२ सोम श्री दरबार रो झंडो रूपीयो....... ।"

(घ) महाराजा अभयसिंह की बीकानेर पर चढ़ाई

दोनों भाइयों के बीच मनमुटाव होने और जोधपुर जयपुर के बीच हुए युद्ध का हाल है।

"जैपुर वाळा इसा कायला पड़ीया सु राजपाट में इसड़ी ताप आगै कदैई दीठी नहीं। श्री राजधिराज (बखतसिंह) रै तीर १ नाक नजीक लागो, महाराज सुं मिलिया...... ...भाई बषता घणी ताकीद कीवी। अंगोछा सुं रंज झाटकी। फुरमायो—भगतीया नै म्है समझाय देवां छां, नै जैसिंघजी तो इसा धूजीया सु पाछो

कूच कर जयपुर पधारिया सु फेर बारै नीसरीया नहीं। देवलोक हुवा जद बारै आया। इण भाव कजिया रौ गीत लिपंते—

डुंता गढ़ां आंगवै। बजाड़ै विपम गत नाद बाजा
सवाई दळां नै बपतसी म्हाबळी, रोळीया पाग चौदिस राजा॥

(न) अभयसिंह द्वारा फिर बीकानेर पर चढ़ाई करना

महाराजाधिराज बखतसिंह और उमरावों, फतैचंद, अनोपचंद आदि का वृत्तांत है।

(प) बादशाह द्वारा बखतसिंह विजैसिंह को सिरोपाव

वि० सं० १८०४ में बादशाह की ओर से बखतसिंह, विजैसिंह को सिरोपाव इत्यादि दिया गया उसका वृत्तांत है।

(फ) रामसिंह व बखतसिंह में उत्तराधिकार के लिए झगड़ा

वि० सं० १८०६ में अभयसिंह के देहान्त होने पर रामसिंह के उत्तराधिकारी होने फिर बखतसिंह द्वारा रामसिंह से जोधपुर की राजगद्दी हस्तगत करने का उल्लेख इस प्रकार है—

"पेहला तौ मेड़तै राड़ हुई, सेरसिंघजी रीयां नै कुसलसिंघजी आउवो आमा सामा काम आया। महाराज बखतसिंहजी री फतै हुई.......पछै जगु छाती में मुकी री दै उठा सु' श्री रामसिंघजी नै सेर नीकळया.... ...देवीसिंघजी (पोकरण) री सला बात सुं जोधपुर रौ गढ सूंप दीयौ (बखतसिंह को), कजियौ कारौ न हुवौ ..। रामसिंघजी रा झगड़ा में पचास लाप परच पड़ीया सुं छव महिनां में पचास लाप पाछा पैदास कर पजांनै में मेलिया.......आदि।"

(ब) महाराजा द्वारा जगनाथ पुरोहित को खास रूका

महाराजा द्वारा खास रूक्का जगनाथ को लिखा गया उसकी प्रतिलिपि दी गई है।

प्रारम्भ—

"प्रोहित जगनाथ सुं म्हारौ नीमसकार बांचजौ तथा थ्हानु कोइ वीरदाव लीपां सु तौ हमे थांहरौ वीरदाव लीपीजसी। नै थे तौ भीयम पीतामह हो .... ।"

(भ) बखतसिंह की फलोधी पर चढ़ाई

महाराजा बखतसिंह द्वारा फलोधी पर चढ़ाई करने का उल्लेख है।

(पत्र–५६)

३४. ओसवालों में लोढ़ा हुवा जां की ख्यात :–

यहाँ एक दन्तकथा मे वतलाया गया है कि ओसवालों में लोढा गोत्र की उत्पत्ति कैसे हुई।

प्रारम्भ—

"नागोर की पटी में गाव भडाएा, छै जठै आगै वडो सहर छो जठै माता बड़वासणि को थान छो, सो माता वड़ी प्रतेष्ठावांन हो सो माता की जाति देवा वासतै लुगाया दस वीस जाय थी ......।" (पत्र–½)

आगे ग्रंथ में महाराजा तखतसिंह की संतति की सूची, विभिन्न राज्यों के राजाओं को अलग-अलग किस उपाधि के साथ पुकारा जाता था उसका उल्लेख (यथा—जोधपुर के राजराजेश्वर महाराजाधिराज, जयपुर के राजेन्द्र, बून्दी के रावराजा आदि), तखतसिंह द्वारा नाहर की शिकार की वात, लाहौर के जाट रणजीतसिंह और अंग्रेजों के बीच ई० सन् १८३८ नवम्बर २७ को वार्ता हुई उसका वृत्तात।

सिरढा ग्राम के ठाकुर प्रतापसिंह भाटी का वृत्तात, मारोठ बसा और उस पर किन-किन सरदारों का अधिकार रहा, कुचामन के ठाकुरों की याददास्त, रघुनाथसिंह मेड़तिया की संतति का हाल, वि० सं० १६०५ में विभिन्न ठिकानों के ठाकुरों के नाम रेख इत्यादि का उल्लेख किया गया है।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध हुआ है। कृतियाँ क्रमवद्ध नहीं है। अनेक पत्र ग्रंथ में खाली पडे हैं। ग्रंथ पर गत्ता नही है।

८. ख्यात वात संग्रह

१. ख्यात वात संग्रह, २. रा० शो० सं०, ३. १३५००, ४. ३३×२५ सेमी०, ५. २३३, ६. २३-३०, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ की कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. पटीयाला रा जाट कौम सिधु तिण री ख्यात[1] :–

पटियाला के संस्थापक अलासिंह और उसके वंशजों का संक्षेप मे उल्लेख किया है।

---

[1] भारत के देशी राज्य, ले० सुखसम्पतराय भंडारी (पटियाला राज्य का इतिहास, पृ० ३) के अनुसार— ...

इस राजवश के मूल पुरुष की उत्पति जैसलमेर के राजवश से हुई, उनके खेवा नामक एक वंशज ने नाडूली के जाट जमीदार की पुत्री के साथ विवाह कर लिया। इस जोड़े से सिधु नामक एक पुत्र की उत्पत्ति हुई......और सिधु जाट नामक जाति खडी हो गई, इस जाति में फूल नामक एक व्यक्ति हुआ और फूल के वंश में अलासिंह उत्पन्न हुआ।

प्रारम्भ—

"पहला तो उतन गाव लुणवाल भोगी चाराजु रहता नै पछै इण रै माह ग्रलासिघ हुवो तिण घोड़ा राप नैं खूट सोत मरू कीवो......."

ग्रहमदशाह ग्रब्दाली द्वारा ग्रलासिंह से एक लाख रुपये वसूल करने ग्रौर जब ग्रब्दाली दूसरी बार हिंदुस्तान में ग्राया तब ग्रलासिंह के पौत्र ग्रमरसिंह को राजा की पदवी देने, उससे मित्रता ग्रादि करने का उल्लेख है। फिर उसके वंशजों साहबसिंह, करमसिंह, नरेन्द्रसिंह ग्रौर महेन्द्रसिंह का नामोल्लेख है। (पत्र–१)

२. राठौड़ों री ख्यात :–

राजा भरत के पुत्र पुंज के १३ पुत्रों का विवरण दिया है, फिर सीहाजी की द्वारिका यात्रा ग्रादि का वृत्तात दिया है।

प्रारम्भ—

"राजा भरत करनाटक सुं गयाजी ग्राया नैं गयाजी सुं कासी ग्राया सं० १००० में नै कासी में श्री वीश्वनाथजी री देवरौ करायो नै वारा नैं मार नै कनोज लीवी न वंगाले गढ करायो तिण रै वेटो पुंज हुवो तिण रै बेटा तेरै हुवा ... ...।"

प्रस्तुत ख्यात में महाराजा विजयसिंह (जोधपुर) तक के राजाग्रों का विवरण दिया गया है। इन राजाग्रों की संतति, विभिन्न युद्धों का वृत्तांत, युद्ध में काम ग्राये योद्धाग्रों की सूची इत्यादि ग्रनेक घटनाग्रों का विवरण दिया गया है। यह प्रायः ग्रन्य ख्यातों मे मिलता है। (पत्र–१२८)

३. पोकरणा बीरामण री उतपत :–

पोकरणा ब्राह्मणों की उत्पत्ति कैसे हुई उससे सम्बन्धित एक काल्पनिक वार्ता दी हुई है फिर ब्राह्मणों की २२ शाखाग्रों ग्रौर गोत्रों की सूची दी है।

प्रारम्भ—

"श्री सकंद पुराण मांय सुं नीकाळ पुलासौ कीयौ तिणरी श्री सकंद ३ वाच म्याम कारतिक पुछै देवता रा देव मानै वाकव हुय फुरमायो ....।" (पत्र–६)

४. परगने जालोर रौ हाल[1] :–

जालोर की स्थापना, ग्रलाउद्दीन द्वारा जालोर हस्तगत करने, कान्हड़दे चौहान के मारे जाने इत्यादि घटनाग्रों का संक्षेप में वृत्तांत है।

---

१. प्रकाशित, मारवाड़ रा परगनां री विगत, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, परिशिष्ट, पृ० ४१३, भाग २, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

प्रारम्भ—

"प्रगनै जाळोर री जूंनी विगत कांनूगां री वही सूं उतरी, संमत १३१२ रा चैत सुद ३ लगन माहे श्री जाळोर थापना कीनी······ ।"

५. परगने डीडवाने रौ हाल :–

वर्णित है कि डीडवाना प्रारम्भ में बादशाह के अधीनस्थ रहा है फिर वि० सं० १४४४ में राणा लाखा ने अधिकार कर लिया। इस प्रकार डीडवाना कब किसके अधिकार में रहा इसका बहुत संक्षेप में उल्लेख है।

"डीडवाणौ थेट्र पातसाही सहर छै नै समत् १४४४ रा आसरै तो राणा लाखे डीडवाणां सांभर रौ कबजो कर लियौ······ ।" (पत्र–½)

६. परगने भीनमाल रौ हाल[1] :–

भीनमाल पर कब किसका अधिकार रहा बहुत संक्षेप मे वर्णित है।

प्रारम्भ—

"१ प्रथम जुग में पुपमाल । कोस ८४ कहीजै ।" (पत्र–२½)

७. परगने मेड़ते रौ हाल[2] :–

विभिन्न राजाओं द्वारा बनाये हुए कुछ स्मारक, जलाशय और मन्दिरों आदि का ब्यौरा दिया गया है।

प्रारम्भ—

"मेड़तौ वसीयौ १५४५ रा वैसाख वद १३······ ।" (पत्र–१½)

८. परगने सिवांणे रौ हाल[3] :–

विभिन्न राजाओं द्वारा बनाये स्मारकों, जलाशयों तथा सीमा सम्बन्धी वृत्तांत दिया गया है।

प्रारम्भ—

"सीवांणां रौ किलौ आगै सं० १०१० पंवार
सिवनारायण नै वीर नारायण राज कीयौ······ ।" (पत्र–६)

९. परगने मरोठ रौ हाल[4] :–

मरोठ की स्थापना कब हुई और कब किसके अधिकार मे रहा आदि वर्णित है।

---

१. प्रकाशित, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, मारवाड़ रा परगनां री विगत (भाग २, परिशिष्ट, पृ० ४१७) रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

२. वही, पृ० ४३६

३. वही, पृ० ४३८

४. वही, पृ० ४२५

प्रारम्भ—

"ग्रो परगनो संवत १११४ गौड़ बछराज माठा गूजर रै नाव सूं मरोठ वसायो। पैंला गुजर री ढांणी थी ......।" (पत्र–३)

१०. परगने सांचोर री वात[1] :–

परगने का नाम सांचोर कैसे पड़ा और कब किसके अधिकार में रहा, विभिन्न गांव जागीरदारों के अधीनस्थ रहे आदि जानकारी दी गई है। यह विगत काफी विस्तार से दी गई है जो सांचोरा चौहानों के इतिहास के लिये उपयोगी है।

प्रारम्भ—

"कदीम तो सगतीपुर सैंर थो वसीया री ख्यात नही। उपर राज श्री सिवजी माराज रौ थो, नै नदी सरसती वैती थी.... ..।" (पत्र४५३/२)

११. राठौड़ों रै परवार री वंशावली :–

आदि नारायण से राव चूंडा तक वंशावली दी है, फिर राव चूंडा व उसके वंशजों (महाराजा भीमसिंह तक) के संतति, कुछ घटनाओं इत्यादि का वृत्तांत दिया गया है। (पत्र–२१)

१२. पंवारों रै वंश री ख्यात :–

राजा मुंग से पंवारों की ३५ शाखाओं का निर्माण होने व उदयाजीत के पुत्रों आदि का विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

"पंवार में राजा मुंग हुवौ तीण रै बेटा ३५ हुवा तीण सुं पैंतीस साप पंवार ही हुई........।" (पत्र–२)

१३. खीचियां री ख्यात :–

इसमें गागरोन के खीची शासकों, उनकी संतति आदि घटनाओ का वृत्तांत दिया गया है।

प्रारम्भ—

"राज प्रथीराज चहुवाण दिली में राज करता था जीणां रा भाई प्रसंगराजजी जायल में राज करता था नै सांवत हुवा नै प्रसंगराजजी रा राव देवणसी मालवा में गया। नै गढ़ गागराण राज कीयो........।" (पत्र–५३/२)

---

१. प्रकाशित, मारवाड़ रा परगनां री विगत (भाग २, परिशिष्ट, पृ० ३५९) जोधपुर

अन्तिम भाग—

"·········पछै १८६५ रा साल मे डर गया जद भोपालसिंघजी रा बेटा वीजैसिंघजी नैं गादी वैठाया १८६६ मे।"

मूल ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। ग्रंथ में अनेक पत्र खाली पडे है। पत्र मटमैले रंग के हैं। ग्रंथ पर गत्ता नही है। यह ग्रंथ विविध जानकारी के लिये उपयोगी है।

६. ख्यात ठिकाना रायपुर

१. ख्यात ठिकाना रायपुर (उदावत राठौड़), २. रा० शो० सं०, ३. १२२७५, ४. २५.३×१६ सेमी०, ५. १४, ६. १३-१८ ७. १६वीं शताब्दी मध्य, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रारम्भ मे जोधपुर के शासक राव सूजा की सतति का नामोल्लेख करते हुए इनके पुत्र उदाजी के रानियों, कुंवरो के नाम दिये हैं।

प्रारम्भ—

१. राव सूजा के कंवरों की विगत आदि :–

"राव सूजाजी रै कंवर[1]—बागाजी, नगोजी, उदोजी, गांगांजी, प्रागदासजी, प्रथीराजजी, नापोजी, सेपोजी, देईदासली।

राज श्री राव उदाजी रैं राणी उलणजी—जीणां रै कंवर डुंगरसिंघजी, लुणकरणजी, दूजा सांपलीजी रैं कंवर पीवकरणजी, जैतसिंघजी······ "आदि।"

प्रस्तुत ख्यात की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

२. राव ऊदा का वृत्तांत :–

(क) ऊदा द्वारा सीघल खीदा को मार जैतारण हस्तगत[2] करने, किला इत्यादि वनाने का उल्लेख इस प्रकार है—

"राव ऊदाजी उदैपुर पधारतां समत् १५३६ साल वैसाप सुद ३ नैं सीदल पींदा नैं मार जैतारण लीनी नैं १५४१ री साल महासुद नैं जैतारण में राव उदेजी कीला री नीव दीराई नैं १५४२ रा काती सुद १५ नैं कमठौ संमपुरण हुवौ जिणरा रूपया ८१००० लागा·········।"

---

१. रेउ (मारवाड़ का इतिहास, प्रथम भाग, पृ ११०) ने राव सूजा के १० पुत्रो के नाम दिये हैं जिनमें कुछ नाम इनसे भिन्न हैं।

२. विस्तार के लिये देखें, आसोपा—इतिहास निंवाज, पृ० १२ से।

(ख) राव बीका जोधपुर में झगड़ा करके आये तब मार्ग में उदा का पुत्र डूंगरसिंह आदि के साथ लोटोती में युद्ध किये जाने का उल्लेख है।

(ग) ऊदा का निधन और पीछे सतियाँ हुई उनका नामोल्लेख।

(घ) ऊदा ने अपने पुत्रों को गांव आदि दिये उसका उल्लेख है।

"समत १५५६ रा वैसाख सुद १० राव ऊदोजी वैकुंठ पधारिया[1] दाग बाडीयां मांय दीयो नैं लारै सतिया ४ हुई......।"

३. ऊदा के पुत्र खींवकरण का वृत्तांत :-

(क) ऊदा के पुत्र खींवकरण को जैतारण मिलने की घटना इस प्रकार वर्णित है—

"राव मालदेजी दूजो वीहाव करण नैं भाटीयां रै बीकमकोर पधारिया जिण वखत राव खीवकरणजी ईणा रै भाई गीररी राज करता हा वीणा नै जैतसिहजी छीपीयें हा, तीकें क्ही—भाई जैतारण री गादी तो आपणी है फुरमावो तो अमल जाय करां......खीवकरणजी बोलिया—आ बात ठीक है। पाट तो आपणो है डूंगरसिंहजी हा सो काम आ गया। जरै धींवकरणजी गीररी सुं घोड़ा १००० ले चढ़िया सो जैतारण जाय अमल कीयो......लोग रजपूत सरब आण मुजरो कीनो......आदि।"

(ख) राणा सांगा द्वारा खीवकरण को बदनोर प्राप्त होने का उल्लेख इस प्रकार है—

"समत १५७४ रा महा सुद ५ नै राणा सांगो बदनोर दीवी......तरै उमरावों......अरज कीवी कै उदावत खीबकरणजी नै बदनोर दीवी सु आछी बात करी नहीं, वे आपनैं टलो देसी......बरस ७ राज कीनो नै पछै बदनोर छोड दीवी। जैतारण राज कीयो।"

४. मालदेव का शेरशाह से युद्ध :-

खींवकरण का मालदेव की ओर से शेरशाह से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त होने का उल्लेख इस प्रकार है—

"समत् १६०० री साल चैत वदि ५ खींवकरणजी काम आया, पातसा सूरसा लारै नव लाप घोड़ा हा नै मालदेवजी लारै असी हजार घोड़ा हा जिण में फौज

---

१. आसोपा के अनुसार (इतिहास निबाज, पृ० २३) वि. सं. १५६७ वैशाख सुदि १५ में ऊदा का स्वर्गवास हुआ।

मुसाहव ....खींवकरणजी हा ......पातसा सूरसा रा हाती रा दांत उपर पग दें सूरसा री ढाल पाड़ी नैं पुद काम भ्राया ... ... ।"

५. राव रत्नसिंह खींवकरणोत का वृत्तांत :–

राव खींवकरण के पुत्र रतनसिंह के उत्तराधिकारी होने, उसकी ठकुरानियों, संतति आदि का हाल है, फिर वह किस प्रकार एक गुदड़ी बावा के श्राप से मारा गया वर्णित है—

"पीरनड़ी उपर गुदड़जी री मंडी बीराजीया था.........अरज कीवी (रतनसिंह नैं) महाराज पीरनडी री जागां 'रतनसर' हुसी तरै गुदड़जी कयौ—अं पीरां रा मकान सो पीरनडी बाजै जिण माथै गुदड़जी सराप दीयौ—थारै तीसरै दिन सर लगेला ईतरो सराप ओर दीयौ कै उदा री तो गढ़ी नहीं नैं अतीत री मडी नही... पछै तीजै दिन बादसा री फौज ....आई जिण सुं झगड़ो कीनो.........रतनसिंघ रै काळजा बीचै तीर लागो तरै देवलोक हुवौ १६१७ समत[1] तीणरी छतरी गोपालदासजी कराई।"

६. कल्यांणसिंघ रतनसिंघोत का वृत्तांत :–

राव रतनसिंह के पुत्र कल्याणसिंह को अकबर द्वारा रायपुर मिलने आदि का वृत्तांत इस प्रकार है—

"कल्यांणदासजी दीली पधारिया सो बादसा अकबर कल्यांणदासजी नैं देष बोत पुसी हुवौ नैं पजानौ अेक कीरोड़ रो बषसीयो नैं आधी जैतारण रौ राज गांव ७० बषसीया जद राजथांन रायपुर ठहरायौ समत् १६२५ रा माहा में पुष नषत्र में आधी बसी ....१४० गाडा बसी रा ले नैं रायपुर पधारीया।"

कल्याणसिंह के रानियों कुंवरों के नाम दिये हैं, फिर रावजी के निधन पश्चात् वि० सं० १६८४ में दयालदास के उत्तराधिकारी होने का उल्लेख है तथा दयालदासजी के उत्तराधिकारी बलरांम वि० सं० १७०४ में होने का उल्लेख है।

७. रायपुर के स्वामी राजसिंह का वृत्तांत :–

फिर राजसिंह के रायपुर राजगद्दी पर बैठने तथा जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह के साथ उजैन के युद्ध में (वि० सं० १७१५) बलरांम के मारे जाने का उल्लेख है।

---

१. आसोपा (इतिहास नींबाज, पृ० ४८) के अनुसार रत्नसिंह अजमेर के सूबेदार कासिमखाँ से लड़ते हुए वि० सं० १६१४ चैत वदि १० को मारा गया।

मुसाहब ······खींवकरणजी हा ·······पातसा सूरसा रा हाती रा दांत उपर पग दे सूरसा री ढाल पाड़ी नै युद काम भ्राया ··· ··· ।"

५. राव रत्नसिंह खींवकरणोत का वृत्तांत :–

राव खीवकरण के पुत्र रतनसिंह के उत्तराधिकारी होने, उसकी ठकुरानियों, संतति आदि का हाल है, फिर वह किस प्रकार एक गुदड़ी बाबा के श्राप से मारा गया वर्णित है—

"पीरनड़ी उपर गुदड़जी री मंडी बीराजीया था·········अरज कीवी (रतनसिंह नै) महाराज पीरनडी री जागा 'रतनसर' हुसी तरै गुदड़जी कयौ—श्रै पीरां रा मकान सो पीरनडी वाजै जिण माथै गुदड़जी सराप दीयौ—थारै तीसरै दिन सर लगेला ईतरौ सराप श्रोर दीयौ कै उदा री तो गढ़ी नहीं नै अतीत री मडी नही···· पछै तीजै दिन वादसा री फौज ·······आई जिए सुं झगड़ौ कीनौ········रतनसिंघ रै काळजा बीचै तीर लागौ तरै देवलोक हुवौ १६१७ समत[1] तीणरी छतरी गोपालदासजी कराई।"

६. कल्यांणसिंघ रतनसिंघोत का वृत्तांत :–

राव रतनसिंह के पुत्र कल्याणसिंह को अकबर द्वारा रायपुर मिलने आदि का वृत्तांत इस प्रकार है—

"कल्यांणदासजी दीली पधारिया सो बादसा अकबर कल्यांणदासजी नै देख बोत षुसी हुवौ नै षजानौ श्रेक कौरोड़ रौ बपसीयौ नै आधी जैतारण रौ राज गांव ७० बपसीया जद राजथान रायपुर ठहरायौ समत् १६२५ रा माहा में पुष नषत्र मे आधी बसी ····· "१४० गाडा बसी रा ले नै रायपुर पधारीया।"

कल्याणसिंह के रानियों कुंवरों के नाम दिये हैं, फिर रावजी के निधन पश्चात् वि० सं० १६८४ में दयालदास के उत्तराधिकारी होने का उल्लेख है तथा दयालदासजी के उत्तराधिकारी बलराम वि० सं० १७०४ में होने का उल्लेख है।

७. रायपुर के स्वामी राजसिंह का वृत्तांत :–

फिर राजसिंह के रायपुर राजगद्दी पर बैठने तथा जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह के साथ उर्जन के युद्ध में (वि० सं० १७१५) बलरांम के मारे जाने का उल्लेख है।

---

१. आसोपा (इतिहास नीबाज, पृ० ४८) के अनुसार रतनसिंह अजमेर के सुबेदार कासिमखां से लड़ते हुए वि० सं० १६१४ चैत्र वदि १० को मारा गया।

मुसाहब ...... "खीवकरणजी हा ...... पातसा सूरसा रा हाती रा दांत उपर पग दै सूरसा री ढाल पाड़ी नै पुद काम आया ...... ।"

५. राव रत्नसिंह खींवकरणोत का वृत्तांत :–

राव खीवकरण के पुत्र रतनसिंह के उत्तराधिकारी होने, उसकी ठकुरानियों, संतति आदि का हाल है, फिर वह किस प्रकार एक गुदड़ी बाबा के श्राप से मारा गया वर्णित है—

"पीरनडी उपर गुदड़जी री मंडी वीराजीया था......अरज कीवी (रतनसिंह नै) महाराज पीरनडी री जागां 'रतनसर' हुसी तरै गुदड़जी कयौ—अै पीरां रा मकान सो पीरनडी वाजै जिण मार्थ गुदड़जी सराप दीयौ—थारै तीसरै दिन सर लगेला ईतरो सराप और दीयो कै उदा री तो गढ़ी नहीं नै अतीत री मडी नही... पछै तीजै दिन बादसा री फौज ......आई जिण सुं झगड़ो कीनो......रतनसिंघ रै काळजा बीचै तीर लागो तरै देवलोक हुवो १६१७ समत[1] तीणरी छतरी गोपालदासजी कराई।"

६. कल्याणसिंघ रतनसिंघोत का वृत्तांत :–

राव रतनसिंह के पुत्र कल्याणसिंह को अकबर द्वारा रायपुर मिलने आदि का वृत्तांत इस प्रकार है—

"कल्यांणदासजी दीली पधारिया सो बादसा अकबर कल्यांणदासजी नै देष बोत पुसी हुवो नै पजानो अेक कीरोड रो बपसीयो नै आधी जैतारण रो राज गांव ७० बपसीया जद राजयांन रायपुर ठहरायो समत् १६२५ रा माहा मे पुष नषत्र में आधी बसी ...... १४० गाडा बसी रा ले नै रायपुर पधारीया।"

कल्यांणसिंह के रानियों कुंवरों के नाम दिये हैं, फिर रावजी के निधन पश्चात् वि० सं० १६८४ में दयालदास के उत्तराधिकारी होने का उल्लेख है तथा दयालदासजी के उत्तराधिकारी बलराम वि० सं० १७०४ में होने का उल्लेख है।

७. रायपुर के स्वामी राजसिंह का वृत्तांत :–

फिर राजसिंह के रायपुर राजगद्दी पर बैठने तथा जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह के साथ उजैन के युद्ध में (वि० सं० १७१५) बलरांम के मारे जाने का उल्लेख है।

---

१. आसोपा (इतिहास नीवाज, पृ० ४८) के अनुसार रतनसिंह अजमेर के सुबेदार कासिमखां से लड़ते हुए वि० सं० १६१४ चैत्र वदि १० को मारा गया।

कर मेवाड़ में पधारीया ··· ···राणाजी भीमसिंघजी नै खबर हुई·······पटौ प्रेक लाप रो देणो फुरमायो पण ठाकरसा लियो नहो ······पछै संमत १८३६ रा महा सुद ८ केसरीसिंघजी देवलोक हुवा तीणरी छतरी गुदली में··· ··· ···है।"

(ग) केसरीसिंह के पुत्र फतेसिंह और फतेसिंह के पुत्र भीवसिंह मेवाड़ के गांव में उत्तराधिकारी हुए उसका उल्लेख है। महाराजा विजयसिंह द्वारा भीवसिंह उदावत को मारवाड़ बुलाने का हाल इस प्रकार है—

"पछै वीजेसिंघजी बडा मुरातवा सु मनाय नै मेवाड़ मांय सु रायपुर बुलाया ·········नै पटौ इनायत कीनो ··· ···रूपीया प्रेक लाप हुकमनावां रा ठहरीया ···।"

(घ) ठाकुर भीवसिंह के नि.सन्तान मरने पर उनके भाई उरजनसिंह के १८५४ में उत्तराधिकारी होने और महाराजा मानसिंह के साथ बरात में रूपनगर जाने, वहाँ १८७० आश्विन सुदि १५ में देवलोक होना लिखा है।

(ङ) उरजनसिंह के निःसन्तान मरने पर रामपुरा से नाहरसिंह के पुत्र रूपसिंह का उत्तराधिकारी होना, वि० सं० १८७० कार्तिक सुदि १० शनिवार लिखा है।

(च) महाराजा मानसिंह द्वारा मीरखा को कहला कर रायपुर वि० सं० १८७३ मार्गशीर्ष वदि १३ को आक्रमण कराने फिर वहाँ महाराजा द्वारा ही बन्दोबस्त आदि करने का उल्लेख है। अन्त में लिखा है—

"ठाकुर राज श्री रूपसिंघजी राज रायपुर में बीस बरस कीनौ सो बरस ३ तो रायपुर रया नैं बरस १७ जोधपुर श्री हजूर री वंदगी में रैया, ठाकर······· जोधपुर देवलोक हुवा नैं रायपुर पाट श्री माधोसिंघजी बीराजीया ··· ··· ।"

प्रस्तुत ग्रंथ अपूर्ण है, इसके कुछ अन्तिम पत्र गायब हैं। ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया हुआ है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

मारवाड़ के इतिहास और स्थानीय सामंतों का योगदान के अध्ययन के लिये ग्रंथ बड़ा उपयोगी है।

१०. भाटियां तुवरां री ख्यात अर जोधपुर रा रीत किरियावर

१. भाटियां तुवरां री ख्यात अर जोधपुर रा रीत करियावर, २. रा० शो० सं०, ३. १२८७५, . ४. ७२ × १६ सेमी० (बहीनुमा), ५. ३२, ६. ४५-५२, ७. १६वी शताब्दी, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में ग्राम देरयारी, जाखण, बीकमकोर, गाजू तथा प्रोसिया के भाटियों की विगत दी गई है फिर जोधपुर राजघराने के कुछ रीत किरियावर

कर मेवाड़ में पधारीया ··· ···राणाजी भीमसिंघजी नै खबर हुई·········पटौ ग्रेक लाष री देणो फुरमायो पण ठाकरसा लियो नहीं ·· ···पछै संमत १८३६ रा महा सुद ८ केसरीसिंघजी देवलोक हुवा तीणरी छतरी गुदली में··· ··· ··है।"

(ग) केसरीसिंह के पुत्र फतेसिंह और फतेसिंह के पुत्र भीवसिंह मेवाड़ के गांव में उत्तराधिकारी हुए उसका उल्लेख है। महाराजा विजयसिंह द्वारा भीवसिंह उदावत को मारवाड़ बुलाने का हाल इस प्रकार है—

"पछै वीजेसिंघजी बडा मुरातबा सु मनाय नै मेवाड़ मांय सु रायपुर बुलाया ·········नै पटो इनायत कीनो ··· ···रूपीया ग्रेक लाष हुकमनावां रा ठहरीया·· ·।"

(घ) ठाकुर भीवसिंह के निःसन्तान मरने पर उनके भाई उरजनसिंह के १८५४ में उत्तराधिकारी होने और महाराजा मानसिंह के साथ बरात में रूपनगर जाने, वहाँ १८७० आश्विन सुदि १५ में देवलोक होना लिखा है।

(ड़) उरजनसिंह के निःसन्तान मरने पर रामपुरा से नाहरसिंह के पुत्र रूपसिंह का उत्तराधिकारी होना, वि० सं० १८७० कार्तिक सुदि १० शनिवार लिखा है।

(च) महाराजा मानसिंह द्वारा मीरखां को कहला कर रायपुर वि० सं० १८७३ मार्गशीर्ष वदि १३ को आक्रमण कराने फिर वहाँ महाराजा द्वारा ही बन्दोबस्त आदि करने का उल्लेख है। अन्त में लिखा है—

"ठाकुर राज श्री रूपसिंघजी राज रायपुर में बीस बरस कीनो सो बरस ३ तो रायपुर रया नै बरस १७ जोधपुर श्री हजूर री बंदगी में रैया, ठाकर········ जोधपुर देवलोक हुवा नै रायपुर पाट श्री माधोसिंघजी वीराजीया ··· ··· ।"

प्रस्तुत ग्रंथ अपूर्ण है, इसके कुछ अन्तिम पत्र गायब हैं। ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया हुआ है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

मारवाड़ के इतिहास और स्थानीय सामंतों का योगदान के अध्ययन के लिये ग्रंथ बड़ा उपयोगी है।

१०. भाटियां तुवरां री ख्यात अर जोधपुर रा रीत किरियावर

१. भाटियां तुवरां री ख्यात अर जोधपुर रा रीत करियावर, २. रा० शो० सं०, ३. १२८७५, ४. ७२ × १६ सेमी० (बहीनुमा), ५. ३२, ६. ४५-५२, ७. १९वीं शताब्दी, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में ग्राम देरयारी, जाखण, बीकमकोर, गाजू तथा ओसियां के भाटियों की विगत दी गई है फिर जोधपुर राजघराने के कुछ रीत किरियावर

४. ग्रोसा रा भाटीयों री ख्यात :–

इसमें वर्णित है कि भाटियों को ग्रोसा ग्राम फिर ग्रोसियां किस प्रकार प्राप्त हुआ।

प्रारम्भ—

"महाराज श्री ग्रजीतसिंघजी जैसलमेर रावळ ग्रमरसिंघ री बेटी परणीया था तिण परसंग सुं ग्रमरसिंघ रो बेटो महाराज रै साळो लागतो थो—बेटा तीन सायवसिंघ, उमेदसिंघ तीजो सेरसिंघ सुं उमेदसिंघ १७६६ रा महाराजा ग्रभयसिंघजी ग्रोसा (ग्राम) लीप दीवी थी नै उमेदसिंघ रै बेटो सरुपसिंघ तिण री बेटी महाराज ग्रभयसिंघजी परणीया था। नै सरूपसिंघ रै बेटो भवानीसिंघ हुवो नै भवानसिंघ रा सरदारसिंघ हुवा सरदारसिंघ री बेटी माहाराज भीवसिंघजी परणिया था तीण परसंग सूं ग्रोसा पाट्ट गई सु सीरदारसिंघ रा परवार रतलाम परा गया नै सेरसंघोतों रै ग्रोसियां लीपीजी, सेरसिंघ रै बेटा दो भाटी जालमसिंघ.........ग्रादि।"

ग्रागे भाटी सेरसिंह के पुत्रों ग्रादि के नाम दिये हैं। (पत्र–$\frac{1}{2}$)

५. ठीकाणा कलांणपुर, चोहान :–

चतरभुज के पुत्र को कल्यांणपुर किस प्रकार कब मिला ग्रौर उसके ग्रागे उसके वंशजों का विवरण दिया गया है।

यथा—

"७, चुतरभुज, नं लालसिंघ रै बेटा ३ ग्रेहमदावाद रा झगड़ा में काम ग्राया महासिंघ, ग्रमरावसिंघ, गुमानसिंघ लारै रय्या तीण रा ईण तरै ठीकाणा छा। ८, लालसिंघ चुतभुज तीण नै कीलाणपुर १८०८ में महाराज बखतसिंघ दीयो नै ग्रागै ग्रजीतसिंघजी इणा री बेन परणीया था बखतसिंघजी ग्रभयसिंघजी यारा भाणेज या तीण परसंग सुं कीलाणपुर वांदीग्रो......... ग्रादि।" (पत्र–$\frac{1}{2}$)

६. महाराजा गजसिंह रै समै रा रीत किरियावर :–

रांणी प्रतापदे नै रांणी पदो :–

प्रारम्भ—

"म्हाराज श्री गजसिंघ रै पटराणी प्रतापदेजी ना सीसोदीया भांण सगतावत री बेटी संमत १६६४ परणीया नै १६६६ राणी पदो दीयो तरै पटो लिप दीयो तिण री विगत—

३५०० वीलावास	२५०० वरणो
१५०० धाकड़ी	२००० वासणां
१००० हीगावास	५००० पालड़ी मेड़ता री

४. ओसा रा भाटीयों री ख्यात :–

इसमें वर्णित है कि भाटियों को ओसा ग्राम फिर ओसिया किस प्रकार प्राप्त हुआ।

प्रारम्भ—

"महाराज श्री अजीतसिंघजी जैसलमेर रावळ अमरसिंघ री बेटी परणीया था तिण परसंग सुं अमरसिंघ री बेटी महाराज रै साळो लागतो थो—बेटा तीन सायबसिंघ, उमेदसिंघ तीजो सेरसिंघ सुं उमेदसिंघ १७६६ रा महाराजा अभयसिंघजी ओसा (ग्राम) सोप दीयो थी नै उमेदसिंघ रै बेटो सरुपसिंघ तिण री बेटी महाराज अभयसिंघजी परणीया था। नै सरूपसिंघ रै बेटो भवानीसिंघ हुवो नै भवानसिंघ रा सरदारसिंघ हुवा सरदारसिंघ री बेटी माहाराज भीवसिंघजी परणिया था तीण परसग सूं ओसा पाहट गई सु सीरदारसिंघ रा परवार रतलाम परा गया नै सेरसंघोतों रै ओसिया लोपीजी, सेरसिंघ रै बेटा दो भाटी जालमसिंघ⋯⋯आदि।" (पत्र–$\frac{1}{2}$)

आगे भाटी सेरसिंह के पुत्रों आदि के नाम दिये हैं।

५. ठीकाणा कलांणपुर, चौहान :–

चतरभुज के पुत्र को कल्यांणपुर किस प्रकार कब मिला और उसके आगे उसके वंशजों का विवरण दिया गया है।

यथा—

"७, चुतरभुज, नं लालसिंघ रै बेटा ३ अेहमदाबाद रा झगड़ा में काम आया महासिंघ, अमरावसिंघ, गुमानसिंघ लारै रव्या तीण रा ईण तरै ठीकांणा छा। ८, लालसिंघ चुतभुज तीण नै कीलांणपुर १८०८ में महाराज बखतसिंघ दीयो नै आगै अजीतसिंघजी इणां री बेन परणीया था बखतसिंघजी अभयसिंघजी थारा भाणेज था तीण परसंग सुं कीलाणपुर बांदीओ⋯⋯ आदि।" (पत्र–$\frac{1}{2}$)

६. महाराजा गजसिंह रै समै रा रीत किरियावर :–

रांणी प्रतापदे नै रांणी पदो :–

प्रारम्भ—

"म्हाराज श्री गजसिंघ रै पटराणी प्रतापदेजी ना सीसोदीया भांण सगतावत री बेटी संमत १६६४ परणीया नै १६६६ रांणी पदो दीयो तरै पटो लिष दीयो तिण री विगत—

३५०० वीलावास	२५०० वरणो
१५०० धाकड़ी	२००० वासणां
१००० हीगावास	५००० पालड़ी मेड़ता री

२००० थवूकड़ी   १७५०० गांव सात सोजत रा

गांव ५ मेड़ता रा, गांव १ जोधपुर रो

रू० १०५६ रोकड़ पावै, नै दिहानगीर रा रोज रूपया २, वाहीयांमड़ी रा १३६, होळी, दीवाळी रा रूपया २००, नै सिघोडा मए ८४ ''' '''आदि।"

इसी प्रकार कुंवरपदे में गजसिंह और अमरसिंह को हाथ खर्च के लिये गांव इत्यादि मिले हुए थे वर्णित है।

७. महाराजा सूरसिंह रै समै रा रीत किरियावर :-

इसमें महाराजा के रानी सौभागदे को राणीपदा दिया गया वर्णित है इस समय राज्य-कर्मचारियो आदि को ईनाम इत्यादि दिया गया उसका भी वृत्तांत है। यथा—

"वडा उमरावां री बहुवां नै भारी वागा नै मोर १, अतलस १, परकाळो २, नाळेर दीजै।

उणां सूं छोटा उमरावां री बहुवां नै वागो पाच रो ''' '''परकाळो १, नै नाळेर १।

मोटा कामदारां नै दुसाला ''' '''दरीजै नै बीजा सगळा मुसदी, पवास पासवांनै २ साड़ी दीजै ''''''पोळीयां नूं साडी पाघ दीजै, ढोल दमांम दरआई सुं ओढाड़ीजै''' '''आदि।"

८. महाराजा जसवंतसिंह की रानी जसवंत हाडो नै राणी पदो दियां री विगत :-

महाराजा जसवन्तसिंह की रानी जसवन्तदे हाडी रानी का पद दिया उस समय खुशियें मनाई गई, देवताओं की पूजा इत्यादि की गई उसका ब्योरा दिया गया है। यथा—

"राणी पदा रा महूरत रै दिन जलुसी हुय श्री हजुर नै राणीजी और दूजा सगळा महल पवांसा मांणसां उमराव''''''कामदार'''''"सगळा वणाय करै। श्रीजी री तरफ सूं वागो चूंदड़ी सुधो आवै राणीजी रा वणाव नै वागा २ आवै नै फेर गहणों री डबो देरीजै''''''आदि।"

आगे राजाओं के कुंवर कुंवरियों के जन्म के अवसर पर रीत दस्तूर आदि किये जाते थे उसका भी वृत्तांत दिया है।   (पत्र-१)

९. महाराजा विजैसिंघजी रै राजलोकों री विगत :-

महाराजा विजयसिंह के रानियाँ संतति आदि का हाल दिया है। यथा—

"''''''पासवांन गुलाबरायजी रै कंवर तेजसिंघजी रौ जन्म सं० १८२५ रा काती सुद ६ रौ नै संमत १८३६ जाळोर तेजसिंघजी रै पटे हुई, तेजसिंघजी री

पालपी सिणगार चौकी ताई आयती माधोसिंघजी री बेटी ...... जयपुर जाय परणीया ...... ।

कंवरजी भोमसिंघजी सेपावतजी रै दूजा कंवर ...... मीमसिंघजी १८२३ आसाढ सुद १२ रो जन्म थो ...... मोमसिंघजी सीतला सूं चालिया भटियांणी सत कियो ... आदि ।" (पत्र-१½)

१०. तुंवरों री ख्यात :–

तुंवरों की उत्पति मूल पुरुषों का वृत्तात इस प्रकार दिया है —

"भार्गव गोत्र मारधनी सापा........भागवत में पीढी ८४ तो हतणापुर राज कीना री लेपे छै पछै सतालीक सुं दीली राज बांधीयौ तीए मुं कीतीक पीढीयां पछै परीपत जनमेजै हुवा न पछै जनमेजै रा वंस में राजा तुंग हुवो जठा सुं तुंवर बाजीया नै उणा रा वंस में पडेग राजा हुवो तीणां सुं पंडेलवाळ वीरांमण नै महाजन फंटीया ......तुंग राजा सुं पीढी पनरमी कनपालजी हुवा तिणां रै पुत्र नहीं छै, सीध नेमीनाथ री दया सुं पुत्र २४ हुवा तिणांरा ठीकांणा बांधीया उठा सुं सापां फंटी सू पाटवी अनंगपालजी" ......कंवर ३ वडो अमजी रै बेटा रैणसी हुवा नै रैणसीजी रै अजमालजी, अजमालजी रै रांमदेवजी हुवा सीघ पुरस हुवा ... वीहाव तीन बेटा ७ हुवा—सादोजी, देवराजजी, गीरराजजी, नेहराजजी, भीवजी, वीकोजी, जैतोजी नै बाई चंदु सेतरावै-देवराज नै परणाई । हमें इणां रा वंस रा रामदेवरै है ...... ।"

अनंगपाल के वंशज कनपाल के पुत्रों से तुंवरों की १३ शाखाओं का निर्माण होना लिखा है—

१. जावळौ तुंवर, २. सपळ तुंवर, ३. सुठके तुंवर, ४. सुणीयल तुंवर, ५. तुयल तुंवर, ६. वैलीमनु तुंवर, ७. नवोळ तुंवर, ८. जगोरौ तुंवर, ९. पना तुंवर, १०. बोडाणी तुंवर, ११. मोरी तुंवर, १२. कलाणी तुंवर, १३. दवैंत तुंवर ।

आगे लिखा है—

"नै राजा जैरत सुं पाच नप फटीया तिणरी विगत—राघो तुंवर, कळीया तुंवर, जादु तुंवर, जरावता तुंवर, सतरावळा तुंवर ऐ तुंवर वाजे...... अनंगपाल रै बेटै तुणपालजी राज गुवालेर बांधीयौ थो सु पीढी ११ तांई राज रहौ........ पीढी ११ वीं मांनसाजी......तीकणा कनां सुं सं० १३५० में पातसाह अलावदीन गुवालेर छोड़ाय दीयौ.......।

गोपीनाथ केसोदासोत रै बेटा दो-कीरतसिंघ, रूपसिंघ। किरतसिंघ रै ····· बेटियां दोनु जोधपुर मा० अजीतसिंघजी नै तो बाई राजकंवर परणाया नै दूजी बाई रतनकंवर कंवरपदे वषतसिंघ नै परणाया, तिण परसग सु बीकानेर सु कीरतसिंघ·······१७७५ रै जोधपुर आया नै महाराज अजीतसिंघ मेरबांन होय गांव केलावो, मुजासर दीया ·····।"

आगे कीरतसिंह गोपीनाथोत के वंशजों का वृत्तांत चलता है, फिर केलावे के ठाकुरों की वंशावली तेजसिंह तक दी है। (पत्र–६)

११. फुटकर ख्यात (संत) पुरसों री :–

संत हरीदास, कबीर, दादू, संत नगजी, संत रामराय, बाबा मस्तनाथ, संत दरियावदासजी आदि संतों की जीवन घटनायें वर्णित हैं। स्वामी नारायण पंथ का प्रचलन गुजरात में हुआ उसका भी वृत्तांत दिया है। (पत्र–४)

बीकानेर और जोधपुर के राजाओं की जन्म तिथियाँ आदि दी गई हैं फिर उमरकोट के सोढ़ा जसहड़ द्वारा देथा चारण झांपा को खारड़ा ग्राम दिये जाने व उसके वंशजों का हाल है।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। ग्रंथ के अन्तिम पत्र बीच से कीट भक्षित हैं पढ़ने में नहीं आते। ग्रंथ पर गत्ता मढ़ा हुआ है। ग्रंथ संवरों के प्राचीन इतिहास और विविध जानकारी के लिए बड़ा उपयोगी है।

११. बीकानेर री ख्यात

१. बीकानेर री ख्यात, २. रा० शो० सं०, ३. १३४६७, ४. ३२ × २४.५ सेमी०, ५. १५२, ६. १८-३३, ७. १९वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में बीकानेर के राजा सुजानसिंह, जोरावरसिंह, सूरतसिंह आदि का इतिहास वर्णित है।

(क) राजा सुजानसिंह :–

प्रारम्भ—

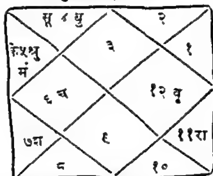
"अथ वात सुजांणसिंघजी री लिष्यते—

समत १७५५ वैसाष सुद ५ नै सुजाणसिंघजी गादी विराजिया सं० १७४५ सावण सुद ३ सोमवार[1]·······जन्म

---

१. ओझा (बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग १, पृ० २६४) ने दयालदास की ख्यात के अनुसार सुजानसिंह का जन्म वि० सं० १७४७ श्रावण सुदि ३ सोमवार और गद्दीनशीन वि० सं० १७५७ में होना लिखा है।

राजा सुजानसिंह की जन्म पत्री



(१) जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह के बीकानेर पर चढ़ाई करने का वृत्तांत है। सुजानसिंह के पुत्र अभयसिंह की जन्मपत्री अंकित है, जो अस्पष्ट है।

(२) वि० सं० १७७६ आषाढ़ वदि ८ को सुजानसिंह का डूंगरपुर जाने, वहां महारावळ रामसिंह सिवसिंघोत की पुत्री रूपकंवर के साथ शादी करने, लौटते समय सलूबर के रावत केसरीसिंह और उदयपुर महाराणा संग्रामसिंह के वहां एक मास ठहरने फिर बीकानेर आने का उल्लेख है।

(३) विद्रोही भाटियों को दबाने का उल्लेख है—

"पछै भाटियों जोइयों देश में फिसाद कीयौ जिण पर श्रीजी फौज कर नै ....नोर (ग्राम) पधारिया व लोक हजार १६००० सूं सं० १७८७ सुं उठै भाटियां भटनेर वगैरा श्री हजूर रै कुंच्या (तालियां) निजर करी तथा पायानामी हुवा........ पछै पेसकसी रा रूपीया हजार २०००० ठैरीया........सं० १७८५ काधल दौलतसिंघ आसकरणोत देस में घणो फिसाद कीयौ सु इण नै सुजाणसिंघजी चूक कराय मारीया........।"

(४) जोधपुर महाराजा अभयसिंह और बख्तसिंह द्वारा बीकानेर पर चढ़ाई करने का वृत्तांत है, फिर उदयपुर राणा द्वारा दोनों के बीच सुलह कराने का उल्लेख है। सुलह कराने वाले व्यक्तियों को सीरोपाव आदि देने और अभैसिंह ने होली का त्यौंहार नागौर में मनाया उससे सम्बन्धित गीत इस प्रकार है—

"पछै माराज चडावत, भाटी (सुरताणसिंह) तथा पंचोली नै घोड़ा सिरपाव देय विदा किया। अभैसिंघजी होळी नागौर री करी तिण भाव रो गीत—

हुवौ ताव सूजां ईसो राव बीकां हथै,
झाट पग अजावत नव क्यूं झाली
सीस गाडौ तणै एकण समै
होळका कोस पैंतीस हाली ॥१॥

सुजानसिंह व उसके पुत्र जोरावरसिंह के बीच मनमुटाव होने पर नौहर से उदासर ग्राम जाने, फिर दोनों में मेल होने व जोरावरसिंह द्वारा जैसलमेर के राव उदयसिंह को दबाने का वृत्तांत है ।

(६) बख्तसिंह ने बीकानेर पर अधिकार करने का विफल प्रयत्न किया उसका वृत्तांत दिया है । फिर सुजानसिंह के रायसिंहपुरे रहते हुए देहावसान होने, रानियां सती हुई उनका उल्लेख है । (पत्र–८)

(ख) जोरावरसिंह :—

(१) जोरावरसिंह द्वारा यहा के जोधपुर के थाने उठाने चूरू के ठाकुर को निकालने आदि का वृत्तांत इस प्रकार है—

"अभैसिंघजी री तरफ सू थांणा बैठा हा तिण सू फौज कर श्रीजी थांणा उपर चढ़ीया, सु थाणा सारा उठाया········१७८२ ठाकर संग्रामसिंह इंदरसिंघोत वना सूं चूरू, छुड़ाय नै भूंझारसिंह इंदरसिघांत नै दीवी········संग्रामसिंहजी चूरू छोड़ जोधपुर गया········ ।

(२) अभयसिंह द्वारा बीकानेर पर चढ़ाई करने और बख्तसिंह का जोरावरसिंह का पक्ष लेने जालोर गढ़ आदि की मरम्मत के लिये २ लाख बखतसिंह को देने का उल्लेख है ।

"अभैसिंघजी रा डेरा बीसलपुर हुवा जठै झगड़ा री तजवीज हुई, पछै अभयसिंघजी परधांन मेलीया अरू बात ठहरी बिण में बषतसिंघजी रो परच लागो तो जाळोर रै मरमत नूं तिकै रा रूपीया लाष २ दीया, मर मेड़तो छोड़ायो, पछै राजा अभैसिंघ रो कूच जोधपुर हुवो······ ।"

(३) अभयसिंह का बीकानेर पर चढ़ाई का वृतांत विस्तार से दिया है । जयपुर नरेश सवाई जयसिंह के जोधपुर पर आक्रमण करने पर अभयसिंह की सेना बीकानेर से हटने और उदयपुर राणा के प्रयत्नों से दोनों के बीच सुलह होने का वृत्तांत है ।

(४) अभयसिंह और जयसिंह के बीच गगराने में युद्ध होने का उल्लेख है ।

(५) जोरावरसिंह द्वारा ग्राम सिरडा और चुरू पर अधिकार करने और अनूपपुर में देहांत होने का उल्लेख इस प्रकार है—

"पछै श्रीजी कूच कर अनूपपुरै डेरा हुवा, अठै श्रीजी रै दिन ४ मांदगी घणी रही स० १८०२ जेठ सुद ८ नै जोरावरसिंघजी अनूपपुरै में धाम पधारिया ········इतरी सतियों हुई—पवास सदा पातर गुलाब·········आदि ।"

(७) जोरावरसिंह के निःसन्तान मरने पर गजसिंह कैसे उत्तराधिकारी बना वर्णित है।

(ग) राजा सूरतसिंह :–

(१) सूरतसिंह के जन्म (१८२२ पौष सुद ६) और गद्दीनशीनी (१८४४ आश्विन सुदि १०) की तिथियाँ और जन्मपत्री दी है।

(२) विद्रोहियों को दण्ड देने, पैसे वसूल करने का वृत्तांत इस प्रकार है—

"गांव काळू मांयकर डेरा चुरू हुवा, ठाकरां सीवसिंघजी पावा लागा, पेसकसी रू० १२५००० ठैरीया तिण में ९५००० तो भराया अरू ३०००० छोड दीना, पछै राजपुर भटीपांन बाहादुर उपर गई तद पांन ...... चाकरी में आय हाजर हुवौ पेसकसी रू० २०००० लीया पिछै हाथी वगैरा पेत पांन बहादुर नैं ईनायत हुवौ, पछै कूच कर नंर (नोहर) पदारिया........ ।"

(३) जोधपुर के महाराजा विजयसिंह और जयपुर नरेश प्रतापसिंह से मेल स्थापित करने और भटनेर में भाटियों के उपद्रव रोकने हेतु राठौड़ सेना दो बार भेजने का वर्णन है।

(४) खुदाबख्श के आग्रह से मोजगढ़ पर १८५६ में चढाई कर वहाँ बहावलखां को हटा कर खुदाबख्श को थानेदार नियुक्त करने का उल्लेख है।

(५) चांपावत सवाईसिंह के प्रपंच द्वारा जयपुर नरेश जगतसिंह और बीकानेर राजा सूरतसिंह की सम्मिलित सेना का जोधपुर (मानसिंह) पर चढाई का वृत्तांत है।

जयपुर बीकानेर नरेश खाटू में मिले उसका वृत्तांत इस प्रकार है—

"पछै डेरा पाटू हुवा, अर राजा जगतसिंघजी श्रीजी रा डेरां पधारीया श्रीजी सरायचां ताई सामी पधारीया, वा दोनुं साहब बराबर वीराजीया. सोपीन बात हुई........राजा जगतसिंहजी रै सागै अमराव मुतसदी हुता तिकां सारां श्रीजी री नीजर निछरावळ करी, पाछै अंतरपांन री मनवार हुई वा हाथी १ घोड़ा २ मोरां ४ जड़ाउ रकम दीराया........ ।"

"जोधपुर बीकानेर के बीच मेल होने, सूरतसिंह द्वारा अमरचंद की मदद से विद्रोहियों को दबाने, चूरू पर अधिकार करने, राज्य के प्रतिष्ठित सरदारों के बहकाने पर अमरचंद सुराणा को मारने का उल्लेख इस प्रकार है—

"अमरचंद केयौ—रू० २००००> लाप पेसकसी रा देसूं...... मनैं मारीयों कांही हात आवसी...... पीण दुसमणां रै डंड सूं कांही कांम, वांरै तो जांन सुं कांम तो सु अमरचंदजी नै मरायो।"

(७) चूरू के ठाकुर पृथ्वीसिंह और उसके सहायकों द्वारा उत्पात आदि करने तथा मीरखां का बीकानेर पर आक्रमण करने का वृत्तांत है।

(८) सूरतसिंह और अंग्रेजों के बीच (वि० सं० १८७४) संधि स्थापित हुई उसकी शर्तें दी हैं, यथा—

"पहली (शर्त) मूतल दोस्ती मेलप आपस में सिरकार कंपनी अंगरेज बहादुर की, महाराज श्री सूरतसिंघजी बाहादुर की, औलाद उनकी हमेसा बेटैं पोतैं पड़पोतैं सर पोतैं, कायम रहेगी, दोस्त दुसमण अेक तरफ दोसत दुसमण दोनों तरफ होगे।" आदि आदि……।

(९) अंग्रेजों की मदद से विद्रोहियों को दबाने, सूरतसिंह की संतति का उल्लेख और अन्त में एक कवित्त दिया है। (पत्र–५१)

(घ) राजा रत्नसिंह :–

(१) रत्नसिंह के अंग्रेजी सरकार से कुछ नये गांव बसाने एवं भूमि संबंधी बातचीत होने वि० सं० १८९८ आश्विन वद १४ में श्रीजी (रत्नसिंह) के देसणोक देवी के रुपये आदि भेंट करने का उल्लेख है।

(२) विद्रोहियों को दबाने, पेसकसी के रुपये आदि लेने और दिवान इत्यादि नियुक्त करने का उल्लेख इस प्रकार है—

"समत् १८९९ वैसाष वद साह लषमीचंद, हुकमचंद नैं अटक हुई सो पेसकसी ठेंहराय दीवांणगी दीवी। जेठ सुद १३ नैं मोहते लीलाधर सोमदत्त नैं दीवांणगी री पिजमत इनायत हुई, हाथी पालकी सीरपाव बगसीया।"

(३) वि० सं० १८९९ आश्विन सुदि १० श्रीजी के दिल्ली यात्रा के लिये रवाना होने, बीच में कहाँ-कहाँ डेरे हुए आदि का वृत्तांत इस प्रकार है—

"श्री माहाराज साहब महाराजकुंवर लक्ष्मीसिंघजी गणपतसिंघजी के गवरनर साहब अंतर लगायो, अर पांन दीना……।

महाराज साहब की पेसवाई में करनेल सदरलेन साहब आया सो उठै कांनी कोस ३ तक आया था श्री दरबार गवरनर साहब रै डेरै पधारिया…… महा सुद १५ तिण री याद तारीष १९ फरवरी सन् १८४३ किस्तां २५ सिरपेच, १ कीलंगी, २ मोतीयां री माल, १ दुसालां रा जोडा, २ रूमाल, लेहरौ १, दुपट्टी १, दिपणी, केस मुलतांनी १, मुलमुल थांन २, पाघ १, सफेद पेसकवज अंग्रेजी १, तरवार नग १, हाथी चांदी रै होदा रौ, ……घोड़ा २, चांदी रै संभारा, गुलबहन २, लांगी २, ढाल १, महाराज कंवर रै किस्तां री पाद १, किसतां ५, राजासाही सिरपेच १, मोतीयां री माळा १, दुसालां री जोड़ी १,

जांमेवार १, रूमाल १, ...दुपटो बनारसी १, मुळवदन १, केस १, मुलमुल थांन २, पाघ सफेद १, तरवार १, घोड़ो १, चांदी रै साजवाद सुदो, पालपी झालरीदार, ढाल नग १, पड़दले सुदो........पछै श्री महाराज साहब रै डेरै आया........।"

(४) अंग्रेजी सरकार से डाकुओं के प्रबन्ध के बारे में निश्चय कर सुराणा हुकमचन्द को डाकुओं के प्रबन्ध हेतु नियुक्त करना और विद्रोही ठाकुरों को दबाने आदि का वृत्तांत है।

(५) रत्नसिंह का जन्म १८४७ पौष वद ६ मंगलवार को होना लिखा है। जन्म पत्री अंकित है।

(६) ग्रंथ के अन्त में अनेक मरसीया कवित्त (विठू भोमा कृत) उद्धृत है इसके साथ ही ख्यात समाप्त हो जाती है।

कवित्त—

सरवण आठं सुकल अर्धे गुरवार
वार ईगीयारस हुवो, ईला हाहाकार (पत्र-७२)

ख्यात में जोरावरसिंह के बाद गजसिंह और राजसिंह का वृत्तात नहीं है। बीकानेर इतिहास के अध्ययन हेतु ग्रंथ उपयोगी है। साथ ही अंग्रेजों के साथ सम्बन्धों पर भी प्रकाश पड़ता है।

यह ग्रंथ दो व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। लिपि घसीट है कहीं-कही पढ़ने में असुविधा होती है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मढ़ा हुआ है।

१२. ख्यात वात संग्रह

१. ख्यात वात संग्रह, मुहता नैणसी आदि, २. रा० शो० सं०, ३. १३४६६ ४. ३५ × २७ सेमी०, ५. १३६, ६. ३०-३३, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रारम्भ में राव जोधा ने मोहिल से छापर द्रोणपुर लिया की ख्यात (भाग ३, पृ० १५८) से मिलती जुलती है।

मूल ख्यात का प्रारम्भ 'ख्यात भाटियों री' से होता है।

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनमः ख्यात भाटीयां री। अे जदुवंसी कहीजै तिणरै याद अे सोमवंशी कहीजै श्री भागवत रै एकादश संकध ४ में तस में अल्याय में इतरा जादवां रा वंस कह्या विगत छै १ सार्कै, २ विम, ३ आंधक, ४ भोज........।"

इसके अतिरिक्त ग्रन्थ में निम्नलिखित बातें संकलित हैं जो कि मुहता नैणसी की ख्यात[1] में वर्णित बातों के बिल्कुल समरूप नहीं है। कहीं-कहीं पाठ-भेद है।

देस गुजरात री याद, सरवरहीयां री पीढ़ीयां, बात जाड़ेचां री, बात झालां री, कछवाहां री ख्यात, पंवारां री उतपत, सांखलों री बात, सोढ़ां री ख्यात, सिसोदियों री ख्यात, हाडों री ख्यात, बूंदेलों री बात, बात गढ़ मंडियां री, बात सिरोही रै देवड़ों री, भायलां राजपूतां री ख्यात, बात सोनगरां चौहांणा री, बात खीचियां री बांडी सोळंकियों री श्रादि।

प्रारम्भ व अन्त के कुछ पत्र आकार में छोटे हैं तथा इन पर लिखावट भी अन्य व्यक्ति के हाथ की है, मूल ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ पर कपडे का गत्ता मढ़ा हुआ है।

१३. ख्यात बात संग्रह

१. ख्यात बात संग्रह, मुहता नैणसी आदि, २. रा० शो० सं०, ३. १३५०५, ४. ३५ × २१.५ सेमी०, ५. १६०, ६. २२-२५, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रन्थ के प्रारम्भ में कुछ राजाओं, उमरावों की वंशावलियां इस प्रकार अंकित है—

१. बापा रावल से राणा शम्भूसिंह (उदयपुर)
२. आदिनारायण से महारावळ वैरीशालसिंह (जैसलमेर)
३. राव बीका से डूंगरसिंह (बीकानेर)
४. महाराजा उदयसिंह से रार्जासह (किशनगढ़)
५. राव सोढदेव से सवाई रार्मासह (जयपुर)

इसके अतिरिक्त उदयपुर के कुछ उमरावों की वंशावली भी है। आगे जोधपुर के महाराजा अभयसिंह और विजैसिंह के सम्बन्धित कुछ पत्रों की प्रतिलिपियां लिपिबद्ध है। प्रारम्भ के पत्रों में दीमक लग जाने से यह कृतियां पूर्णतया पढ़ी नहीं जा सकती है। मूल ग्रन्थ का प्रारम्भ 'सीसोदियां री ख्यात' से होता है—

प्रारम्भ—

"अथ सीसोदियां री ख्यात री वारता लीपते—आदि सीसोदीया गैहलोत कहीजे। अेक वात यूं सुणी इणी.........राई पहेली दीपण नूं नासंक अंबक हुती।"

---

[1] प्रकाशित, सं० बदरीप्रसाद साकरिया, मुहता नैणसी री ख्यात, भाग १, २ और ३, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में बूंदी रै धणियां री ख्यात, वागड़िया चहुवाणां री पीढी, वात दहियां री, बूंदेलों री वात, वात गढ़बंध रा धणियां री, वात सिरोही रा धणियां री, भायलां राजपूतों री ख्यात, बात चहुवांण सोनगरां री, वात बोड़ां रै खीचीयां री, पंवारों री उतपत, वात पंवारां री, सांखला सोढों री ख्यात, झालां री ख्यात, सिहोजी री वात आदि बातें लिपिबद्ध हैं।

मूल ग्रंथ की कृतियाँ मुहता नैणसी की ख्यात में आई हुई बातों के समरूप हैं। ग्रंथ अपूर्ण है इसके अन्त के कुछ पत्र लुप्त हैं और प्रारम्भ व अन्त के अधिकांश पत्र कीट भक्षित हैं। ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध हुआ है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

१४. राठोड़ों री तवारीख

१. राठोड़ो री तवारीख (मुहता नैणसी री ख्यात) (प्रतिलिपि) मुहता नैणसी, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६३७ ४. ३४.२ × २० सेमी०, ५. २६१, ६. ३३, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत रजिस्टर में अनेकानेक ऐतिहासिक बातें संग्रहीत हैं जो मुहता नैणसी की ख्यात से ली गई हैं। इन बातों की प्रतिलिपि कहाँ से की गई, इसके बारे में लिखा है—

"कविराजा सा श्री गणेशदानजीसा रै हवेली सुं पुस्तक री नकल........।"

इसमें निम्नलिखित बातें, ख्यातें अंकित हैं—

सीसोदीयां री ख्यात, बूंदी रा धणियां री ख्यात, वात सिरोही रा धणियां री, भायलां राजपूतों री ख्यात, वात चहुवाण सोनगरां री, वात सोनगरां री, वात षीचीयां री, वात सोलंकियों री, पाटण आयां री वात रुद्र प्रासाद सिद्धराव करायौ तिणरी, कछवाहां री ख्यात, वात खेड़ रा गोहिलां री, पंवारां री उत्पति, वात सांखला जांगळू गया जद री, पंवारां री साखां, भाटियां री ख्यात, वात झालां री, राव सीहा री वात, आस्थांन री, कान्हड़दे री, मल्लीनाथ री, वीरम री, चूंडे री, अरड़कमल चूंडावत री, राव रिणमलजी, राव जोधा, बीका री, भटनेर री, कांधल री, राव सलखा री, गोगादेजी री, जैसलमेर री वार्ता, पाबू री बातों, गोगा वीरमदोत री वार्ता, वार्ता जयमल वीरमदे नै मालदेव री, वार्ता नरवद सत्तावत री, वार्ता राव जोधा री द्वापर द्रोणपुर लीधौ तिणरी, वात मोहिलां री, परमारां री री वंशावली, राठोड़ों री वंशावली, बीकानेर री पीढ़ियां, दिल्ली राजा हुवा तिकां री विगत, वार्ता राठोड़ों री तिण में सेतराम वरदाईसेनोत री, छतीस राजवंश

राजपूतां री तवारीख, वार्ता चंद्राउतां री, वात भाई उदा उगमणउत री, बूंदी री वार्ता, वात क्यामखांनियां री उतपति, संगम राव राठौड़ री वार्ता इत्यादि ।

अन्तिम भाग—

"········मूलू रै पुत्र कांधल पिण स्याम रौ लूंण उजाळियौ, सांम धरमां में पातसाही फौज सूं लड़नैं कांम आयौ । इती राठौड़ां री तवारिख संपूरणम् पुस्तकम रामकरणजी री सूं नकल ।। इति ।"

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है, लिखावट साफ है, पत्रों पर लाइनें खीची है, ऊपर कागज का गत्ता मढ़ा हुआ है ।

१५. नैणसी री ख्यात री नकल

१. नैणसी री ख्यात री नकल, नैणसी, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४७, ४. ३४ × २१ सेमी०, ५. १८४, ६. ३२, ७. वि० सं० १६७१ (प्रतिलिपि समय), ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इस रजिस्टर के प्रारम्भ मे संयमराय के पुत्र मूलराज की वार्ता अंकित है, प्रतिलिपि अपूर्ण है ।

प्रारम्भ—

"········घोड़ों नै मांहे बांधियौ घास न्हाकियौ पणौ दाणौ दियौ मूलू रै सिगड़ी कर ठार उडाई । तेल मसलियौ ऊंनी रोटी तरकारी कर मूलू नूं घणी प्रीत सूं जीमायौ । रात रात माळी मूलू नूं घर मांहे राखियौ········ ।"

इसके अतिरिक्त भाटियों, राठौड़ों व अन्य राजपूत राजाओं एवं योद्धाओं की अनेक ऐतिहासिक बातों की प्रतिलिपियां दी गई है ।

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा की गई है ।

१६. राजपूतों री ख्यात

१. राजपूतों री ख्यात, बांकीदास, २. रा० शो० सं०, ३. १३५०१, ४. ३२.५ × २५ सेमी०, ५. १८० ६. १६-२३, ७. १६वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में राजस्थान के विभिन्न राजाओं, उमरावों सम्बन्धी अनेक बातें फुटकर नोट के रूप में लिपिबद्ध हैं । यह बांकीदास की ही ख्यात है ।

प्रारम्भ—

"अथ राजपूतों री ख्यात लिपते—परमारराज श्री हूरक जिण रौ वडो बेटौ मुंज छोटौ बेटौ सिधु राव २ भोज १ बात करणाटक रौ राजा तेलपदेव ······ ।"

इसमें राठौड़, गहलोत, भाटी, कछवाह, चौहान, पड़िहार राजाओं का वृत्तात दिया गया है इसके साथ मुसलमानों, मराठों, चारणों की भी बातें वर्णित हैं। इसमें लिपिबद्ध की गई बातों का शृंखलाबद्ध वृत्तांत नहीं बनता व कुछ बातों की पुनरावृत्ति भी हो गई है। राजपूताना के इतिहास के विस्तृत अध्ययन हेतु उपयोगी है।

अन्तिम भाग—

"वेळो १, अमरो २, रांणो ३, सूरा ४, करमसी ५, कांघल ६, भीमराज ७, अपेराज ८, उदैभाण ९, हररांम १०, जीतावस हुवो १३०३।"

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ पर गत्ता चढ़ा हुआ है। पत्र मटमैले रंग के है।

१७. बांकीदास री ख्यात

१. बांकीदास की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर) हिन्दी रूपान्तर कर्त्ता श्यामकरण आसोपा, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६७१, ४. २४.४ × २२.४ सेमी०, ५. ४२०, ६. १७-१८, ७. (वि० सं० १९४९ में हिन्दी रूपान्तर) ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ख्यात में (बांकीदास द्वारा) राजपूत राजाओं से सम्बन्धी फुटकर लघु वार्ताएँ दी हुई हैं। जिसके आगे पृष्ठ संख्या भी अंकित है। इसका हिन्दी रूपान्तर पण्डित श्यामकरण आसोपा ने किया, जैसा कि ख्यात के प्रारम्भ उद्धृत है—

"कविराजा श्री मुरारदानजी के यहाँ से आई ख्यात की पुस्तक का तर्जुमा लिखा पंडित श्यामकरण ने संवत १९४९ चैत्र सुदी ४।

॥ अथ राजपूतो की ख्यात ॥

परमार राजा श्री हर्ष जिसका बड़ा बेटा मुंज और छोटा पुत्र सिंधुराज उसका भोज कर्णाटक के राजा तेलपदेव ने मृणालवती बहिन के कहने से घर-घर भीख मंगा कर राजा मुंज को शूली दी········।

उदाहरणों के लिए कुछ बातं प्रस्तुत है—

१. ७२१—घड़सी ने अपनी बसी वीकमपुर रखी और सिंध के बादशाह का नौकर रहा, सिंध के बादशाह का दूसरे बादशाह से जंग हुआ········घड़सी ने सफेद हाथी की सूंड काटी तब सिंध का बादशाह बहुत खुश हुआ और घड़सी को जैसलमेर दिया।

२. ७२३—फिर घड़सी ने जैसलमेर से अपने मनुष्य भेज कर थाट से केहर, हमीर को बुलाये, आप तलेटी में था जसा भाटी आसकरण के पुत्र जो घोडे सवार थे घड़सी को तलवार गर्दन पर मारी जिससे घड़सी का सिर कट कर अलग पड़ा।

३. ७२४—घोड़ा घड़सी का धड़ लेकर गढ़ पर गया, घड़सी के पुत्र नहीं था इसलिये रावल माला की बहिन विवली ने केहर को टीका दिया और घड़सी को चूक होने के बाद नवमें दिन इसने सत किया।

४. ७६८—पहले भाटियों की राजधानी लौद्रवे थी, भाटी सालवाण के टीकें भोजदेव बैठा जब भाटी जैसल दिल्ली से फौज लाया और भोजदेव को मार कर आप मालिक हुआ।

५. ७६६—फिर जैसल लौद्रवे कोट कराने लगा जब ब्राह्मण ईसा जो करीब १२० वर्ष का था जिसने आकर जैसल को कहा कि मेरे खेत के पास एक रड़ा (मगरा) है वहाँ श्री कृष्ण ने गदा की चोट जमीन पर देकर पानी प्रकट किया और पांडवों को पिलाया और कहा कि कलयुग में मेरे वंश के इस जगह रहेंगे सो तुम उस जगह कोट करा। फिर जैसल ने इसकी बात मानी और जहाँ कृष्ण ने गदा से कूप किया उस पर से पत्थर की सिला अलग करके कुए को दुरस्त बंधाया और नाम जैसला कूआ रखा, फिर इसी जगह गढ़ कराया और नाम जैसलमेर दिया।

६. ८५६—राठौड़ ठाकुरसी जैतसी लूणकरणोत का जैतपुरे से भटनेर तेली से मिलावट कर तिसरनी लगा कर भटनेर का किला राठौड़ों से छीन लिया, ठाकुरसी का बेटा बाघा अकबर के सामने कुत्ते की तरह पकड़ा गया।

७. ५४—कर्णाटक के मुसलमान रसोई बड़ी चतुराई के साथ पकवान और मांस भी एक अद्भुत प्रकार का बनाया करते हैं।

८. ५३—गांव हैदराबाद की सरहद में 'वाके' है उनमें उच्चश्रेणिस्थ मनुष्यों में पड़दे का रिवाज है और वे लोग पैरों में पावड़ियाँ पहन कर दौड़ा करते हैं।

९. ६०—बड़े गुसाईंजी विठलरायजी संवत् १५८८ में चौरागनी में आकर बसे········ ।

१०. ६२—चांपे गेहलोत ने चौरागनी बसाई।

११. ७५—महेचा अपनी चिट्ठी में श्रीलक्ष्मीनारायणजी के तेज प्रताप सूँ ऐसा लिखा करते हैं। महादेवजी के तेज प्रताप सूँ ऐसे हाड़ा और लक्ष्मीनारायणजी के प्रताप से ऐसा भाटी लिखा करते हैं।

सिनवाड़े पुष्करणे शिवदान का दोहा—

सिवायो वैरी सालतो, छुरियां भीड़ै तंग,
जैसाणो जरका करै, जोधांणा सूं जंग ॥१॥

ग्रन्थ में राजाओं से सम्बन्धी प्रशस्ति गीत, दोहे, कवित्त और बांकीदास कृत दोहों की प्रतिलिपियाँ दी हैं।

अन्तिम भाग—

बोगनि आई बापड़ी, बैताला री बैर,
बीजा गांवा बाजरी, बोगनि आई कैर।
॥ इति ॥

मुगल बादशाहों, अंग्रेजों सम्बन्धी बातें, औषधियों के नुस्खे इत्यादि भी दिये गये हैं। प्रस्तुत ख्यात पर शीर्षक गलती से मुरारदान की ख्यात लिखा है परन्तु इसके संकलनकर्त्ता मुरारीदान नही है यह ख्यात उनके यहाँ से मिली है जैसा कि प्रारम्भ में लिखा है यह बांकीदास द्वारा संकलित ख्यात है।

१८. फुटकर वातों री विगत

१. फुटकर बातों री विगत (प्रतिलिपि) बांकीदास, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६२, ४. ३३ × २५.५ सेमी०, ५. ५४, ६. १८-२०, ७. २०वीं शताब्दी का आरंभ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, महाजनी देवनगरी, १०. इसमें करीब ७४२ फुटकर ऐतिहासिक बातें नोट के रूप में लिखी गई हैं, यह बातें किसी संग्रहालय की फाईल से ली गई है। इसमे अधिकांश बातें जोधपुर महाराजाओं से संबंधित है। प्रारंभ का पत्र लुप्त है अतः प्रारंभ की ८ बातें इसमें नहीं है। बांकीदास री ख्यात के समरूप है।

प्रारंभ—

"९. चापावत देवीसिंघ महासिंघोत नैं पकड़ियो जद बोलीयो—मैं गढ मे कीवी जौसी गढ़ म्हामे कीवी लं० ५८।

१०. कीसोरसिंघजी ईक········उदैपुर परणाई रामसिंघजी बखतसिंघजी रै जंग हुवौ जद रामसिंघजी रै सामल रह, महाराज कीसोरसिंघजी लंवर ६०

११. फरकसेर माराज अजीतसिंघजी नूं गुजरात सोबौ दीयो जद भंडारी बीजै रै सूबो रैयो पछै मेमदसाह अजीतसिंघजी नूं गुजरात रो सूबौ दीयो जद रूघनाथ भंडारी आडो बैठो अनोपसिंघ सूबे रैयो········लंवर ६१"

अन्तिम—

"७४६ संमत १७३८ डीडवाणे री पेसकसी ले चांपावत अजबसिंघ बीठलदासोत मकराणो लूटियो, काती वद १४ सैर मेड़तो लूटीयो' "ईत्यारपांन पातसाही फौज ले आया, लड़ाई कीताईक अजबसिंघ बीठलदासोत कांम आयो काती वद १ वार सोम" "लंबर ६२६

७५० जगड़ा में तीन चारण कांम आया, मेड़तिया सिरदार कांम आया, पांच चांपावत काम आया "लं० ६२७"

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। लिखावट साफ नहीं है।

१६. बीकानेर री ख्यात

१. बीकानेर री ख्यात रौ हिन्दी में अनुवाद (राव बीका से अनूपसिंह तक) २, रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४२, ४. २७ ५ × २२ सेमी०, ५. ३०२, ६. १५-१६, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारंभ, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी मिश्रित राजस्थानी, १०. इसमें दयालदास की ख्यात[1] का हिन्दी में अनुवाद दिया है। प्रारंभ में राव जोधा से संबंधित विवरण देकर राव बीका से राजा अनूपसिंह तक बीकानेर के विविध राजाओं का विस्तृत इतिहास दिया गया है।

प्रारंभ—

"जोधाजी री ख्यात—जोधाजी नैं मोयलों से छापर द्रोणपुर लिया जिसकी विगत (हाल)

मोयल सुरजणोत जात चौहान जो छापर द्रोणपुर का मालिक था जिसका हाल मोयलों के बीच इती पुस्तें हैं— १. चौहान, २. चाहा, ३. घणसू राणा चाहा का बेटा गंवण केहलाया, ४. रांणा इंद्रवीर, ५, अर्जन, ६. सुरजन, ७. मोयल, इस मोयल की औलाद के ऐल मोयल केहलाये, इन मोहलों के नाम से यह इलाका मोयलावाटी कहलाता था, पहले इस परगने को छापर का परगना कहते थे.... ।"

इस प्रकार इसमें राव जोधा द्वारा मोयलों से छापर द्रोणपुर हस्तगत करने का वृत्तांत दिया है और फिर जोधा के कुंवरों की नामावली दी है।

(पत्र—४)

---

१. मूल ग्रन्थ अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर में है।

(१) बीका जोधावत की वार्ता :–

बीकानेर की ख्यात का प्रारंभ राव जोधा के पुत्र "राव बीका की वार्ता" से होता है—

"कुंवर श्री बीकाजी का जन्म संवत १४९५ के श्रावण सुदि १५ को हुआ सांखली नौरंगदे के पेट के श्री बीकाजी २ बीदाजी। बीकाजी की जन्म पत्री। ऐक प्रस्ताव राव जोधाजी दरबार कीये हुवे विराजे थे और सब भाई, वो अमराव व कुंवर हाजर थे जिस समय कुंवर बीकाजी·········काका कांधलजी के पास विराजे रावजी से मुजरा करके और कांधलजी के कान में बीकाजी कुछ बात करने लगे, इतने में राव जोधाजी ने देख कर फरमाया ····· आज तो काका भतीज रै सला होती है सो ऐसा मालूम होता कै कि कोई नई जमीन पर कब्जा करेंगे····।"

राव बीका की जन्म कुण्डली भी अंकित है।

अन्तिम भाग—

"सुजाणसिंघ का जन्म सम्वत १७४७ के श्रावण सुदि ३ सोमवार शाके १६२३ ५२/३० सुजाणसिंघजी की जन्म पत्री।" (जन्म पत्री अंकित नही है)

इसमें दयालदास की ख्यात के अनेक गीत, कवित्त तथा बीकानेर के विविध राजाओं की जन्म पत्रियां इत्यादि अंकित है। प्रतिलिपि एक ही. व्यक्ति के हाथ से की गई है।

प्रारंभ के कुछ पत्र खण्डित है, कागज मटमेले रंग के है, लिखावट साफ है, प्रतिलिपि का समय (ई० सन् १८९२-९३) कही-कहीं पर हाशिये में अंकित है।

बीकानेर के इतिहास के अध्ययन हेतु उपयोगी है।

२०. फतैपुर का इतिहास

१. फतैपुर का इतिहास (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३७०७५ ४. ३०.७×२०.२ सेमी०, ५. ८, ६. २२, ७. १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में क्यामखां मुसलमानों का इतिवृत्त है। क्यामखां मुसलमानों की उत्पति से लेकर वंशावली दी है तथा कुछ विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा बसाये गये गांवों इत्यादि का वृत्तांत भी दिया गया है।

प्रारम्भ—

"यादिदास्ती फतैपुर का नवाबां की . चवांण दद्रेरो बारा गांवां सूं छो, जैको राव मोटो, रावजी जांके बेटा छै (६) हुवा, बडो तो जसवंतजी १, छोटो करमसिंघ २, तीजो जबरदी ३, चोथो जगमाल ४, पांच उजैसिंघजी ५, छटो भोजराजजी ६, जामें तीन मुसलमान हुवा, समत १३६३ वें की साल दीली में हुवा....

जसवंतजी छा जे कों तो नाम मुसलमांन मे जयदापां जैका तो झाड़ोद की पटी का क्यांमपांनी ।

करमसी को नाम मुसलमानी में क्यांमपांजी, तीसरा को नाम जबरदीपां को बारा गांवा सूं कडे राज करयो, क्यांमपाजी हूंसार राज करयो बावन पड़गना सूं''''।

इसमें मुख्य घटनायें इस क्रम से लिपिबद्ध है—

१. जवाव जलालपांजी तो''''''''समत १४७५ का साल जलालसर गांव बसायो, कुवो करायो ।

२. दिवाण अमदपांजी का अमदाणि क्यांमपांनी बाज्या, दिवाण अमघपांजी दिपणाई कोटरी वांद, गढ़ करायो, बावड़ी पुदाई, जोड़ो पुदवायो, संवत १५२६ के साल बादशाह अकबर गाव ५२ दीया (५० गांवों के नाम अंकित हैं) ।

३. नवाब दरड़े दौलतपांजी दौलतावाद गांव बसायो, कूवो करायो, समत १५२२ का साल ।

४. नवाव फदनपाजी तो फदनपरे गांव बसायो, कुवो करायो समत १५७० साल दीली बादस्या जांगीर । नवाब फदनखांजी के येक बेटो हुवो....ताजपां, ताजसर बसायो, कुवो करायो समत १५६६ की साल ।

५. "जलालपां तो गांव आठ सूं दांतारू कोटड़ी बांदी''''''''जलालपां जी तीसरो भाई मधूकर जको मिरड़ कोटड़ी बांधी गांव २५ सूं । (गांवों के नाम दिये है)

६. नवाब अलफपांजी अलफसर गांव बसायो, कुवो करायो समत १६५२ को साल बघनोर को परगनो पायो'''''''' ।

७. फकरुलापां कोटड़ी बिकमसर बांधी, चारूं भायों की औलादि का अलफपांनी क्यांमपांनी बाज्या ।

८. नवाब दौलतपांजी तो दौलतपरो बसायो किलो करायो समत १६८२ '''।

६. नवाब तारपांजी '''वड़ो तारपरो बसायो कुवो करायो संमत १७५० साल'''''' '' ।

१०. नवाब दीनदारपाजी······· गांव बसायो भाड़ोद की पटी में दीदारपरी, कुवौ करायौ समत १७३० की साल।

११. नवाब सीदपांजी····सीदपरी बसायौ, कुवौ करायौ समत १७५२ साल, बेटा दोय·····। नवाब सिरदारपांजी कै ठाकर सेवस्यंघजी के फतेसर माडोली बीचि भगड़ो हुवौ ग्रसरकपा गाड़ौदा को ठाकर कामि ग्रायौ।

१२. क्यांमपांजे दिली नूं समत १७८८ से फतैपुर सेवसंघजी लीनू।

ग्रन्तिम—

"...जरणा सेवसींघजी तो फतैपुर राज कीयौ ग्रर सादूलसिंघजी भूंभरण राज कीयौ।"

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है। लिपि सुवाच्य है। बहुत से पत्र ग्रंत में रिक्त पडे हैं। कागज हाथ के बने हुए हैं। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मंढ़ा हुग्रा है। यह किसी मूल ग्रंथ की प्रतिलिपि है जो ग्रपूर्ण है।

२१. ख्यात बात संग्रह

१. ख्यात वात संग्रह, २. रा० शो० सं०, ३. १३५०४, ४. ७० × २६.५ सेमी०, ५. १३०, ६. ४०-५२, ७. १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें निम्नलिखित विभिन्न कृतियां वर्णित हैं—

१. राव उदौ सूजावत रिणमलोत रा परवार री विगत :-

इसमें राव सूजा के पुत्र उदा (जिससे उदावत शाखा का निर्माण हुआ) व उसके वंशजों का वृत्तांत दिया गया है। उदावतो के विभिन्न ठिकानों की पीढ़ियों इत्यादि का ब्यौरा भी दिया गया है।

प्रारंभ—

"राव उदो सूजावत सीधलां रै मासीयाई था। सिंघल रै व्याव बेटे रौ थो तरै उदेजी नै ले गया या पछै जांन चढ़तां पेट दुखाय उदोजी घरे रह गया सूं अनंपूरणा देवी रै पूजारी सींघलां नूं चढ़तां वरजीया····· ·····पछै उदोजी सारै सूं बन्दोबस्त कर लियौ नै सिंघलां री जान पाछी जैतारण नहीं आई········।"

२. ईडर री ख्यात :—

महाराजा अजीतसिंह के पुत्र आनंदसिंह ईडर के नरेश किस प्रकार बने और आगे आनंदसिंह के वंशजों का विवरण है। (पत्र-४)

३. बात बुंदेलां री धरती री :–

हाडा चौहानों ने बूंदी किस प्रकार हस्तगत की आदि का वृत्तांत दिया गया है। (पत्र–१)

४. बात मेवाड़ री :–

रावल दलपत और उसके वंशजों का वृत्तांत दिया गया है। फिर राणा लाखा से राणा अमरसिंह तक के राजाओं की संतति आदि का विवरण दिया गया है। (पत्र–५)

५. राठौड़ों री वंशावली :–

कन्नोज के राजा जयचंद से जोधपुर के शासक राव मालदेव तक के राजाओं की संतति आदि का उल्लेख है। (पत्र–६)

ग्रंथ के अन्य पत्रों में विभिन्न राठौड़ सरदारो के वृत्तांत इत्यादि जागीर में थे उसका ब्यौरा दिया गया है। इनका कोई शृंखलाबद्ध वृत्तांत नहीं है।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य नही है। ख्यात अपूर्ण है। इसमें पत्र वेसिले विखरे हुए हैं।

२२. मालदेव की ख्यात

१. मालदेव की ख्यात भाग १ (हिन्दी रूपान्तर), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६७, ४. २७.५×२२.४ सेमी०, ५. ३० ६. १४-१५, ७. वि० सं० १६४६, ई० सन् १८६२, ८. अज्ञात, ६. हिन्दी, देवनागरी, १०. मालदेव द्वारा अपनी रानी (झाली स्वरूपदे) की बहिन से शादी की इच्छा व्यक्त करने से ख्यात का प्रारम्भ होती है।

प्रारम्भ—

"राव मालदेवजी झाला तेजसिंघ की बेटी व्याही थी और रावजी झाली के वस में थे और गांव खैरवा झाली सरूपदे को पट्टै दिया था·········कोई समय रावजी झालों के यहां महमान गये थे और झाली सरूपदे सब रनवास संग था········ झाली के एक छोटी बहन और थी वो अति रूपवती थी········।"

इसमें मालदेव द्वारा लड़े गये युद्धों व उनके पुत्र राव राम सम्बन्धी कुछ घटनायें अंकित हैं। वृत्तांत जोधपुर की ख्यात से मिलता जुलता है।

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा की गई है।

२३. राव रायपाल से राव गांगा तक की ख्यात

१. राव रायपाल से राव गांगा तक की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर), २. राव प्रा० वि० वि० प्र०, ३. १५६६०, ४. २७.४×२३ सेमी०, ५. १३६, ६. १५-२०, ७. वि० सं० १६४६ (ई० सन् १८६२), ८, अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. इसमें मारवाड़ के शासक राव रायपाल से राव गांगा तक के राठौड़ राजाओं का वृत्तांत है। जो जोधपुर की ख्यात से मिलता जुलता है।

प्रारम्भ—

राव रायपालजी री ख्यात :—

"राव रायपाली नै देव वंशी भाटी राजपूत मांगे को सर्वस्व धन देकर अपना भिक्षुक बनाया। मांगा का बेटा चंद के वंश के रोहड़िया चारण कहलाते हैं क्योंकि भाटी बुध को रोहड़ यानी जबर्दस्ती कैद करके चारण किया जिससे इस वंश के चारण रोहड़िये कहलाये·········। रायपालजी संवत १३०१ में देवलोक हुए रायपालजी के राजलोगों की विगत ······।"

इसमें प्रत्येक शासक की कुछ जीवन-घटनाओं व संतति आदि का हाल दिया है तथा राव चूंडा के पौत्र व भीम के पुत्र वरजांग और नरबद सतावत एवं जोधा के पुत्रों का वृत्तांत अलग से दिया है।

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है। प्रारम्भ व अन्त के कुछ पत्र खंडित है। पत्र मटमेले रंग के हैं।

२४. राव मालदेव री ख्यात

१. राव मालदेव की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६८, ४, २७.३×२२.२ सेमी०, ५. ५६, ६. १४, ७. वि० सं० १६४६, ई० सन् १८६२, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. इसमें मालदेव द्वारा की गई चढ़ाइयों का वृत्तांत हैं। मालदेव के अधीनस्थ परगनों (४२) की सूची, भवन-निर्माण आदि कार्य, संतति व सतियों की नामावली के साथ ख्यात समाप्त हो जाती है।

प्रारम्भ—

"राव मालदेवजी के घोड़े और पैदल मिलकर असी हजार ८०००० फौज तैयार रहती थी और जबर इनकी ठकुराई थी।

प्रथम जो जमीन भाई बेटों के नीचे विभाजित करके दी गई थी वही जमीन बादशाही के तौर पर राव मालदेवजी ने की।"

इसमें मालदेव के शासनकाल का वृत्तांत, जोधपुर की ख्यात से मिलता जुलता है।

२५. राव चंद्रसेन की ख्यात

१. राव चन्द्रसेन की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६६, ४. २७.४×२२.३ सेमी०, ५. ४४, ६. १३-१५, ७. वि० सं० १६४६, ई० सन् १८६२, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी. १०. जोधपुर के शासक राव चन्द्रसेन के शासनकाल की घटनाओं का संक्षेप में वृत्तांत है।
प्रारम्भ—

"संवत १६१६ के अगहन में राव चंद्रसेन मालदेवजी के पाट बैठा। संवत १६२० में राम ने बादशाह अकबर की फौज लाकर जोधपुर के घेरा लगाया तब राम को सोजत देने से चंद्रसेन के यहाँ से जोधपुर का घेरा उठा........।"

चंद्रसेन द्वारा जोधपुर पर अधिकार करने हेतु मुगलों इत्यादि से किये गये युद्धों का वृत्तांत दिया है, फिर अन्त में उसकी संतति इत्यादि का हाल अंकित है। वृत्तांत जोधपुर की ख्यात से मिलता जुलता है।

२६. महाराजा उदयसिंह की ख्यात

१. महाराजा उदयसिंह की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६७०, ४. २७.४×२२.३ सेमी० (रजिस्टरनुमा), ५. ३६, ६. १३-१५, ७. वि० सं० १९४६, ई० सन् १८६२, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. मोटा राजा उदयसिंह के शासन-काल की प्रमुख घटनाओं में शाही दरबार की ओर से लड़े गये युद्धों और अन्त में उसकी रानियों आदि का हाल संक्षेप में है।
प्रारम्भ—

"महाराजा श्री उदयसिंहजी का जन्म संवत १५९४ के माघ सुदि १३ रविवार के दिन घड़ी २१ और पल ३२ के समय में हुआ........। राव मालदेव के समय इनको फलौधी दी थी सो महाराजा फलौधी में जाकर रहे।"

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है। इस ग्रंथ की घटनाएँ जोधपुर की ख्यात से मिलती जुलती हैं।

२७. गजसिंह की ख्यात

१. गजसिंह की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६६, ४. २७.४×२२.४ सेमी०, ५. १०६, ६. १५, ७. वि० सं०

१६४६, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. यह गजसिंह की ख्यात का हिन्दी रूपान्तर है जिसमें उनके शासन-काल (वि० सं० १६७६-१६६५) घटनाओं का विवरण दिया गया है, जो प्रायः अन्य ख्यातों से मिलता जुलता है।

प्रारम्भ—

"महाराज गजसिंघजी का जनम संवत १६५२ के काति सुदि ८ का और संवत १६७६ के आसोज सुदि ८ बुरांनपुर में गद्दीनशीन हुए। बड़ा महाराज सूरसिंहजी देवलोक हुए तब बादशाह जहांगीर का फुरमान आया कै दखन जावो तद ताकीद से दखन को पधारे……।"

महाराजा द्वारा चारणों को लाख पसाव, हाथी तथा गांव आदि दान दिये गये उसकी सूची दी है। अन्त में उनकी संतति, रानियों का हाल दिया गया है। अत के कुछ पत्र लुप्त होने से ख्यात अपूर्ण है।

२८. जसवन्तसिंह की ख्यात

१. जसवंतसिंह की ख्यात (हिंदी रूपांतर) २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६१, ४. २७.४ × २२.५ सेमी० (रजिस्टरनुमा), ५. १०५, ६. १६-२३, ७. वि० सं० १६४६, ई० सन् १८६२, ८. अज्ञात, ६. हिंदी, देवनागरी, १०. यह किसी राजस्थानी ख्यात का हिंदी रूपांतर है। इसमें जोधपुर के शासक महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के शासनकाल का विस्तृत विवरण है।

प्रारम्भ—

"महाराजधिराज महाराजा जसवंतसिंघजी की ख्यात :-महाराजा जसवंतसिंहजी का जन्म संवत १६८३ के माघ कृष्ण ४ मंगलवार के रोज बुरहांनपुर हवेली में हुआ और महाराजा गजसिंघजी ने बादशाह साहजहां से अरज संवत १६६१ के सावण शुक्ला ६ मुकाम काश्मीर में पाटवी कंवर अमरसिंहजी को गद्दी से अलग करके छोटे कंवर जसवंतसिंहजी को मालक करने की बात जमाई…… ।"

इसमें विशेष रूप से महाराजा के सैनिक अभियानों का वृत्तात दिया गया है। पृष्ठ १६ पर महाराजा द्वारा उमरावों, चारणों को घोड़े, हाथी आदि इनायत किये गये उसकी सूची इस प्रकार दी है—

"संवत् १६६८ के आसोज सुदि ११ मुकाम लाहौर महाराजा जसवंतसिंघजी एक दिन इतनी बखसीस की, तफसील……उमरावों को—

१. राठौड़ महेसदास सूरजमलोत नुं घोड़ो सुरंग

२. राठौड़ नारखान राजसिंहोत नै घोड़ो कुमेत कीमत रु० १००

३. राठौड़ रतनसिंह राजसिंहोत नै घोड़ो सूंजपसाव कीमत रू० १४५०
४. राठौड़ चर्तभुज नरहरदासोत
५. राठौड़ विठलदास किशनसिंहोत को घोडो हरीवज
६. राठौड़ अमरो आसकरणोत नै घोड़ो खांनाजाद
७. राठौड़ रूघनाथ राजसिंहोत नै घोड़ो नगीनो, जैसलमेर का
८. राठौड़ मानसिंह सुरजनोत को मांणक खानाजाद
९. राठौड़ दलपत आसकरणोत को सोवनकलश
१०. राठौड़ सुजानसिंह रायसिंहोत को नीलकंठ
११. देवड़ा अचलदास रावतोत को रंगरंगीलो
१२. राठौड़ बाजखां लिखमणसेन

चारणों को दिये :–

१. बारह चुडराव कलावत
२. बारठ नरूराजसी अखावत नै घोड़ो खांनाजाद
३. बारठ जसा पंचायणोत नै खरीद आगरा रो
४. बारठ गोरधनदास को तोडर खानाजाद
५. खिड़ियो जगमाल को घोड़ो निलो खंडेला को
६. बारठ भीवराज रामदासोत को घोड़ो
७. दधवाड़ीयो सुंदरदास माधवदासोत को हंसलो
८. बारठ काम रांजसिंहोत

हाथ दीया देश में था सो वहां दीराया तफसील :–

१. राठौड़ गोरधन चांदावत को रणजीत
२. राठौड़ गोपालदास सुंदरदास को जयनाग
३. राठौड़ वीठलदासोत को रांमप्रसाद

लाख पसाव चारणों को सिर पाव और रुपिया दिया :–

१५०० आढो किसनो दुरसावत
१५०० लाळस खेतसी

पाघां दीवी :–

१४ बादलाई उमरावों को
१४० कसूंबल बाजे लोकों को

पृ० ८३ पर महाराजा के कामदार, प्रधान व मुकतीयार आदि की सूची दी है। रानियों की सूची के साथ ख्यात समाप्त हो जाती है।

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा की गई है। पत्र मटमेले रंग के हैं। ग्रंथ जसवंतसिंह के समय के अध्ययन के लिये बड़ा उपयोगी है।

२९. महाराजा अजीतसिंह की ख्यात

१. महाराजा अजीतसिंह की ख्यात (प्रथम भाग – हिन्दी रूपान्तर) २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६३, ४. २७ × २२.४ सेमी०, (रजिस्टर नुमा) ५. ६२, ६. १३-१५, ७. वि० सं० १९४९, ई० सन् १८९२, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. इसमें महाराजा जसवंतसिंह की मृत्यु (वि०सं० १७३५) से वि० सं० १७३८ तक की घटनाओं का विवरण दिया गया है।

प्रारंभ—

"महाराजा अजीतसिंहजी री ख्यात :–
महाराजा श्री जसवंतसिंहजी पिसावर देकलोक संवत १७३५ के पौस वदि १० हुमें तब राठौड़ रनछोडदास, सुरजमल, संगरांमसिंह·······सला कीवी·······।"

महाराजा जसवंतसिंह के पेशावर में देहान्त होने के पश्चात् जिन सरदारों अन्य राज्य कर्मचारियों, रानियों आदि ने वहां से लाहौर की ओर कूच किया उनकी सूची तथा जिस मार्ग से वे चले उसका ब्यौरा दिया गया है। लाहौर में अजीतसिंह का जन्म हुआ इसके बारे में लिखा है —

"मिती चैत्र वदि ४ बुधवार संवत १७३५ को पिछली रात घड़ी ७ रही थी जब राणी जामदमजी के कंवर महाराज श्री अजीतसिंघजी सत मासीया जनमा।"

इसके बाद प्रसिद्ध कथा सन्यासी रिघपुरी की वार्ता दी है जिसमें उक्त साधु ने समाधी लेते समय महाराजा जसवंतसिंह को कहा था कि वह उनके रानी की कोख से जन्म लेगा।

अन्तिम—

"संवत १७३९ सरा हुओ और उदावत जगरांमजी मेवाड़ में रांणजी के चाकर·······।"

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा की गई है।

३०. अजीतसिंहजी री ख्यात

१. अजीतसिंहजी री ख्यात, दूसरा भाग (हिन्दी रूपान्तर), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६४, ४. २७ × २२ सेमी० (रजिस्टरनुमा), ५. ६१, ६. १५,

७. वि० सं० १९४६, ई० सन् १८९२, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. इसमें महाराजा अजीतसिंह के समय वि० सं० १७३६ से १७६४ तक की घटनाओं का हिन्दी रूपान्तर है।

प्रारम्भ—

"………रहा था वह भी मुलक में आकर राठोड़ों के सामिल होकर जैतारण में तुरकों का थांणा रहता था उसके उपर चढ़ाई कीवी थी…… …।"

अन्त—

"महाराज अजीतसिंहजी और जेपुर जयसिंहजी का कूच मय अपने उमरावों और खटले के पिछा देवलीयें कि तरफ पधारें। और यह दोनों महाराज पिछा रवाना होकर देवलिया आयें जिसकी खबर बाद ……।"

विशेष रूप से ख्यात में राजपूतों द्वारा मुगलों को तंग करने, युद्ध करने, युद्ध में वीरगति प्राप्त होने वाले व्यक्तियों की सूची, गांव आदि लूटने का वृत्तांत दिया है। दुर्गादास तथा मुकुन्ददास खीची द्वारा राजकुमार अजीत की सुरक्षा हेतु किये गये महत्वपूर्ण कार्यों का विवरण भी दिया है।

३१. अजीतसिंह री ख्यात

१. अजीतसिंह री ख्यात, तीसरा भाग (हिन्दी रूपांतर), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६६५, ४. २७×२२ सेमी० (रजिस्टर नुमा), ५. ११०, ६. १५-१७, ७. वि० सं० १९४६, ई० सन् १८९२, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. इसमें महाराजा के शासन-काल की वि० सं० १७६४ से वि० सं० १७८० तक की घटनायें अंकित है।

प्रारंभ—

"……शाह को पहुचो तब दिवांन खांनखांना से ऐतराज हुवा कि इन दोनों महाराज को क्यों जाने दिया। तब खांनखांना ने अरज कीवी कि हमने तो आपसे पहीले ही अरज की थी कि आप अभी इन दोनो को नाराज मत करावे……।"

अजीतसिंह की पुत्री (सूरजकंवर) का संबंध जयपुर नरेश सवाई जयसिंह के साथ होने पर दस्तूर आदि का उल्लेख इस प्रकार है—

"………सगाई की सो भंडारी विठलदास प्रोहित अखैराज का बेटा जैसिंह और नाथावत व्यास प्रोहोकरनो दीपचंद साथे सूरसागर के महलों इस माफक भीजवाया जिसकी तफसील—

१. नारीयल २ सोने और रूपे से मंढे हुवे जिसमें सोना तोला ५
२. सोपारियां ११ रूपे रो मंढी हुई रूपो तोला २.५
३. नालेर १ रूपे से मंडा हुवा जिसमें रुपा तोला ६
४. सोपारियां सोने से मंढी हुई ११ जिसमें सोना तोला २.५
५. फूल सोना को जिसमें सोनो तोलो १ और रूपो तोला १

रोकड रूपीया १००० और निछरावल ५०० और नेगदारां रा ५०० हाथी १ मेघमाला और वागा ४ उमदा नैं घोड़ा ४ सोना रूपा री सागतां रा……। जैयसिंहजी के टीको प्रोहित जेसिंह ने निकाला और मोतीयों के आखा चेपिये, आरती कीवी और जयसिंहजी नैं आरती की थाली में मोहोरों ४ डाली और रूपिया २५ घालीया जिसमें से मोहरें ३ और रूपिया २० भंडारी विठलदास ने जेयसिंहजी को पाछा दीया और साथ वालां को अमल की मनवार अर खारमंजना करवाई…।

मिती भादवा सुदि १ को महाराज अजीतसिंहजी और अभयसिंहजी तलेटी के महल देखने को पधारे वहां से किले पधारे……और जेयसिंहजी रणवास जुहार कहलाया, मांह से पिछी आसीस केलाई और मांह से खिनखांप के थांन इस माफक भेजे, विगत—

माजी श्री देवड़ीजी ने रोकड़ रूपिया १०० और थान १
देवलीये के सिसोदणीजी ने सरेजन भेजे
भटीयाणीजी जैसलमेर वाला ने सरेजन भेजे
झालीजी को रूपिया ५०० और चहुवांनजी दोनां के रोकड़ थान आये …।"

अजीतसिंह द्वारा विरोधी सरदारों को दण्ड देने अथवा मरवाने, विखे में चाकरी करने वालों को गांव आदि देने, राजकीय नियुक्तियाँ, मुगल बादशाहों से संबंध इत्यादि का विवरण दिया है।

अन्तिम भाग—

"कंवरजी अभैसिंहजी के उपर बादशाह की मरजी बहुत थी और कंवरजी और राजा जयसिंह के आपस में सला घणी इसकी हकीकत महाराज को जोधपुर में लागी सो महाराज जयसिंहजी को चालाक समझता……।"

पत्र लुप्त होने से अपूर्ण है। अजीतसिंह के जीवनकाल की घटनाएं और उस समय की राजनैतिक उथल-पुथल के अध्ययन हेतु यह ख्यात उपयोगी है।

३२. महाराजा अजीतसिंह री ख्यात

१. महाराजा अजीतसिंह री ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र० ३. १५६३८, ४. ३३.२ × २५ सेमी०, ५. २६, ६. २०-२३, ७. २०वी शताब्दी

का प्रारंभ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें महाराजा अजीतसिंह के बाल्यकाल की कुछ घटनाओं की प्रतिलिपि की गई है।

प्रारंभ—

"समत् १७३५ रा पोस वद १० माराज जसवंतसिहजी पेसावर में देवलोक हुवा पौस वद ११ राठौड़ रिड़छोड़दास सुरजमल संगरामसिंघ, उदेसिंघ, दुरगादास, पंचोली अणरूप.......पातसाहजी सु अरज कराई सुलह रायण वासते ... ... ।"

विवरण क्रम इस प्रकार है—

१. जसवंतसिंह के मृत्यु के पश्चात् बादशाह द्वारा जोधपुर राज्य खालसे करने, मुलतान से शाहजादे अकबर, आगरे से शाइस्ताखां, गुजरात से मुहम्मद अमीनखां और उज्जैन से अमयखां तथा दक्षिण से राव अमरसिंह के पुत्र इन्दरसिंह को (जोधपुर राज्य इनायत करने के लिये) बादशाह औरंगजेब द्वारा बुलवाने का उल्लेख है।

२. कुंवर अजीतसिंह के लाहौर में पैदा होने, शुभ समाचार जोधपुर पहुँचने उत्सव इत्यादि मनाने तथा बधाई लाने वाले व्यक्ति को इनाम देने का उल्लेख है।

३. बादशाह द्वारा कुंवरों (अजीतसिंह व दलथंभन) को दिल्ली बुलवाने, सरदारों के दिल्ली पहुंचने, राठोड रूपसिंह भारमलोत की हवेली में वि० सं० १७३६ श्रावण वदि ३ को उपस्थित सरदारों की सूची खांपानुसार दी है।

(पत्र—८)

४. बादशाह द्वारा इंद्रसिंह को जोधपुर राज्य दिये जाने पर सरदारों में संदेह होने व बालकों को दिल्ली से बाहर निकालने, तिस पर शाही सेना का राठोड़ों पर आक्रमण करने का वृत्तांत दिया है—

"राठोड़ां तरवार जाय मोलीया नै राज लोक घोड़ा चढ़ीया उभा हा जिणां रा माथा काट नै चद्रभांणजी.......सांमल हुवा, लड़ाई भारी हुई पातसाही फौज रा पांच सौ तो काम आया नै सातसो आदमी घायल हुवा महाराज जसवंतसिंघजी रा राजपूत दिली रा वाका में कांम आया तिणरी विगत ... ... ।"

५. इसके आगे वर्णित है कि दिल्ली का कोतवाल बादशाह के हजूर में एक बालक पेश करता है और कहता है कि मैं अजीतसिंह को पकड़ लाया हूं बादशाह ने उसे मुसलमान बना कर उसका नाम मुहम्मदी राजा रखा।

६. अजमेर के फौजदार तहव्वरखां के साथ हुई राठौड़ों की लड़ाई का विवरण इस प्रकार है—

"घणा राठौड़ था सु अजमेर रो सोबादार तेवरयां अढ़ाई हजारी तीण रा डेरा पोकरजी था, तिण उपर गया फौज री अणी दोय करी एक तो उदावतां री नै अेक मेड़तियां री, समत १७३६ रा भाद्रवद ११ लड़ाई हुई तेवरयां भागो, मेड़तीया भला लडीया उदावत लूट घरै आया। इण लड़ाई में कांम आयां री विगत ......।"

७. इंद्रसिंह के जोधपुर गढ़ में आने का उल्लेख, इस समय उपस्थित सरदारों की नामावली दी है। नागौर होय जोधपुर आया रातेनाडे डेरा कीया, भाद्र वदि ५ जोधपुर गढ़ में ने सैर में इतरो साथ थो ...उहड़ भगवांनदास, राठौड़ सबलसिंघ ....आदि।"

अन्तिम भाग—

"सारा सीरदार कांमदारों ने रातानाडा ले गया महाराज इंद्रसिंघजी रै पगां लगा दीया।"

यह किसी मूल ग्रंथ की प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है जो अपूर्ण है क्योंकि इसमें महाराजा अजीतसिंह के केवल बाल्यकाल की कुछ घटनायें अंकित हैं।

३३. धांधलों री ख्यात, जैतावतों री खांप तथा सुजाणसिंघ माधोसिंघोत रो विगत

१. धांधलों री ख्यात, जैतावतों री खांप तथा सुजाणसिंघ माधोसिंघोत री विगत (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४६, ४. ३२ × २४.५ समी० ५. २१६, ६. १३-१५, ७. वि० सं० १६५०, ई० सन् १८९३, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें आस्थान के पुत्र धांधल, रिड़मल के प्रपौत्र जैता व मोटा राजा उदयसिंह के प्रपौत्र सुजाणसिंह व इनके वंशजों का विवरण दिया गया है।

(अ) धांधलां री ख्यात :–

इसमें राव आस्थान के पुत्र धाधल और उसके वंशजों का हाल है। इसमें अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का संवत सहित विवरण दिया है। जो नैणसी की ख्यात[1] में नहीं है।

"अेक दिन रावजी आसथांनजी आपरी मजलस कर ने विराजिया था उन वखत में च्यार ही कंवर आय नै मुजरो कियो, कंवरां री विगत—

१. मुहता नैणसी री ख्यात (भाग ३ पृ० २८) 'बात पाबूजी री'

धूहड़जी, धांधलजी, भाचगजी, जोगपसावजी, म्रे च्यार ही भाई भेळा हुवा जद रावजी फुरमायौ कै पेड़ री राज तो म्रेक जणारैं म्रावसी दूसरा म्राप आपरी जमी वगेरे षाव नेक पुन ही प्रबन्ध करो...... ....।"

प्रमुख घटनाओं का विवरण क्रम इस प्रकार है :—

१. धांधल द्वारा बाड़मेर के चौहानों से युद्ध करने, उसमें विजयी होने का उल्लेख इस प्रकार है :—

"रजपूत म्रेक सो पांच-पांच रा साते रयांने हुवा सु उठा सूं पादरा बाड़मेर उपर गया उठे चवाणों सु' जाय झगड़ो कियो।

दूहा—

जुड़ीयो म्रासजथांन रा, भागा भलु चंवाण।
जुध जीतीयो सो धाध रां, रिण सुर दोष सहंस जिण ॥१॥

....समत् १२७६ महा सुद ५ गुरवार चवांण सुं जुद्ध हुवो जठै दु तरफ म्रादमी १०० म्रासरैं कांम म्राया, इण झगड़ा में पेत धाधलजी रैं हात रयौ, तरवार म्राछी वजाई पछे महा सुद २ ने कोलुमंड़ री नींव दीवी नैं म्रापरो राजसथांन वांदीयो।"

२. धांधल के ८ ठकुरानियों व उनसे उत्पन्न हुए कुंवरों कुंवरियों के नाम म्रंकित हैं। उनके पुत्र पाबू के बारे में लिखा है—

"दूसरो व्याव म्रपसरा स्वर्ग लोक री जिण रैं पाबू म्रवतारीक हुवा।"

३. वर्णित है कि गोरखनाथ की कृपा से धांधल को एक अप्सरा प्राप्त हुई, जिसकी कोख से पाबू उत्पन्न हुम्रा, जिसका विवाह उमर कोट के सोढ़े सूरजमल की पुत्री फुलकंवर से हुम्रा........"उमरकोट रा सोढ़ा सूरजमलजी आपरी बेटी फुलकंवर रो टीको पाबूजी रैं मेलीयो टीका इण मुजब था—हाती दोय, घोड़ा सात म्रौर माल हजार ३००००)"

पाबू का बहनोई जींदराव खीची चारणों की गायें चुरा ले गया उसकी बार पाबू म्रौर बूड़ा चढ़े, म्रन्त में लड़ते हुए मारे गये। पाबू की मृत्यु की तिथी वि० सं० १३२३ माघ सुदी १० दी है।

पाबू के पीछे चहुआणजी, गेहलोतजी १४ स्त्रियां चित्ता में प्रविष्ट हुई उससे संबंधित एक गीत दिया है।

प्रारंभ—

चंवांण करी चीत चाव गेलोतण हर बीत मईद।
उपर चढि नेर पाबू संग सती हुई ....॥१॥

४. इसके आगे धांधल के पुत्र बूड़ा का वृत्तांत दिया गया है, प्रारंभ में लिखा है—

"बूड़ाजी कोलुमंड [रहता सां अेक दिन आपरो लोक लेने चढ़िया सो देवड़ा मूलराज सु झगड़ो कर गांव ३०० सू पारीबादर लीनी (वि० सं० १२६५ भादवा वद २ शनीसरवार।"

इसमें मुख्य रूप से बूड़ा की पुत्री की शादी गोगा चौहान के साथ करने, जिंदराव खीची द्वारा बूड़ा व पाबू के मारे जाने पर उसके पुत्र झरड़ा द्वारा उस खीची को मार कर अपने काका व पिता का वैर लिये जाने का वृत्तांत सविस्तार दिया है। यथा—

"जिन्दराव नै समत १३३६ में माह वद १३ नै पोर लारली रात रा मारीयो·······(झरड़ा) माइयों नै केयो हमे थे फौज लेने कोलुमंड जावो सो कोलू मंड ले जाबो, नै इतरी वात याद राखजो के जीदराव रा बेटा नै मारजो मती म्हारो दांन दियोड़ो है, हमें थाने क्यूंही डर नही इतरो कहने झरड़ा अलोप हुवा सो अजेस पूजीजै।"

५. आगे कोलू ग्राम के धांधल करणाजी का वृत्तांत है जो राव मालदेव के समकालीन थे। वर्णित है कि मालदेव का पुत्र उदयसिंह रूठ कर करण के पास गया, करण उदयसिंह को लेकर अकबर के पास गया जहां उसे मोटा राजा की पदवी मिली। उदयसिंह के उत्तराधिकारी होने पर करण को १० हजार का पट्टा इत्यादि दिया गया। "करणाजी रै नावे पटो हजार दस १०००० री दीयो नै कुरब ईनायत कीयो नै रसोड़ा री दरोगाई दीवी·······नै काका पदवी दीवी······· आ वात समत १६४१ री है।"

६. करण के पुत्र नथमल के पुत्रों आदि का विवरण दिया है। फिर नथमल के ज्येष्ठ पुत्र पंचायण जो महाराज गजसिंह के रसोड़े का दरोगा था उसका वृत्तांत दिया है। अमरसिंह ने अपने पिता गजसिंह को पंचायण (धांधलों) द्वारा जहर दिलवाने के प्रयत्न का विवरण इस प्रकार अंकित है—

"अमरसिंघजी महाराज साहब नै चूक करण री [वीचारी ·······आप रसोड़े आयने पंचायणजी नै केयो······· थाल में जहर कर देवो तो थानू घणा वदावसां······· कंवरजी जेर री पुड़ियां इणा नु सूंपी नै आप पाछा पदारिया। पंचाणजी मनमें सोची के मारा हात सु अ वात हुवै तो सात पीढ़ी नरक में जावे नै वचन पलटूं तो छत्रीपणो लाजे सो·······आपरै बेटा भाइया नै बुलाया नै केयो—कै जोधपुर रा धणी री·······चाकरी करो तो रसोड़े री दरोगाई लेजो मती नै कदास लेवो तो

मालक नै हाथ सूं जैर करजो मती.......बेटा भायां नै सीख दीनी नै.... ...केयो थे सालवे कनै जावो, जहर रो प्यालो पीवो (१६८६ फाल्गुन वदि ३)
भाव रो कवित—

कर परमेश्वर याद ग्यांन चित धारिर, सांम कांम सरीर,
जहर तन मह जारे, ...।।१।।

...... मंडोवर दाग दियो।

पछै महाराज साहब पंचाण रो मौसर करायो जोधपुर सहर माठूं मीसल रा उमरावां नु जीमाया..... ..रू० ५०००० लागा।"

७, फिर इसके वंशज ईदरदास व उनके पुत्र मनोहरदास को जसवंतसिंह द्वारा गांव इत्यादि देने का उल्लेख इस प्रकार है—

"महाराज श्री जसवंतसिंघजी मनोहरदासजी नै तो सालवो दियो नै ईसरदासजी नै केरू दीवी इणा स्यांम धरमा सु महाराज साहब री बंदगी कीवी।"

वर्णित है कि मनोहरदास उज्जैन की लड़ाई में मारा गया तब उनका लड़का उदैकरण सालवे का ठाकुर बना, इसका विवाह नारवे के खीचीयों की पुत्री से हुआ जिनके चार पुत्र केसरीसिंह, मोकमसिंह, रांमसिंह, किसनसिंह हुए, जिन्होंने अजीतसिंह के बिखे में साथ दिया।

फिर केसरीसिंह सालवे का ठाकुर बना। आगे केसरीसिंह के पुत्र लालसिंह व उसके वंशजों का भी वृत्तांत है।

इस प्रकार सालवे के धांधल ठाकुरों का वृत्तांत दिया हैं जिसमें उनके शादी विवाह, कुंवरों कुंवरियों के नाम तथा जोधपुर राजघराने में की गई सेवाओं का विशेष रूप से विवरण दिया गया है। (पत्र–३२)

१८. धांधलों के कुछ अन्य गांवों के ठाकुरों व उनके वंशजों का उल्लेख हैं जिसमें उनके वैवाहिक सम्बन्ध कहां-कहां हुए तथा पुत्रों के नाम आदि दिये हैं। गांवों के नाम इस प्रकार है—

(क) केरू—गोयंददास मनोहरदास की पीढ़ियां
(ख) मोकलसर—मेहकरण स्यामसिघोत की पीढ़ियां
(ग) रोयला—बेणीदास सुरतसिघोत की पीढ़ियां
(घ) बुटेलाव—आईदांन की पीढ़ियां
(च) चांदरक—कुंभकरण कलावत री पीढ़ियां

धांधल राठौड़ों के इतिहास तथा सामंतों की मान्यताओं के अध्ययन हेतु यह सामग्री उपयोगी है। (पत्र–६४)

(आ) जैतावतों री खांप :-

इसमें राठोड़ जैता के वंशजों का विवरण दिया गया है। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. प्रारम्भ में राव रिड़मल के पुत्र अखेराज का वृत्तांत है।

प्रारम्भ—

"रावजी श्री रिड़मलजी राज करै, तिणारैं पाटवी कंवर अखैराजजी जिणा रै चितौड़ राणा री बाई री टीकौ आयौ जद रावजी सुं केणी आय गयौ के अखैराज नै हर कोई बेटी परणावे एक तो राज रौ धणी नैं दूजो मोटीयार, सो बूढा नैं परणावे तो म्हाने परणावे सो आ खबर अखैराज सुण पाई ...... ।"

पिता के इस प्रकार के बोल सुन कर अखेराज का चितौड़ राणा की पुत्री से विवाह नहीं करने का उल्लेख है।

२. अखेराज के पुत्रों के नाम दिये हैं जिसमें फिर उनके पुत्र पंचायण, जिन्हें सोजत मिली हुई थी के कुंवरों के नाम दिये हैं। फिर राव सूजा की मृत्यु पश्चात् पंचायण इत्यादि राठोड़ सरदारों द्वारा गांगा को उत्तराधिकारी बनाने की घटना दी है। पंचायण द्वारा सोजत वीरम (राव सूजा का पुत्र) को देने तथा बगड़ी हस्तगत करने का उल्लेख इस प्रकार है—

"वीरमजी पंचायणजी कनैं गया और गोद में बैस नैं कयौ—हुं राज रौ धणी छूं हमे मनैं कहो केवौ हुं कठी जाउं जद पंचायणजी मन में विचारियौ और सोजत पट्टै रीवी, पछै पंचायणजी पाछा जावता हा सो गांव मुरडावे डेरा हुवा वीरमजी नैं सोजत १५७४ रा चैत सुद ३ नै हुई, बगड़ी सींधल नै मारनैं कबजो कीयौ।"

३. आगे राव जैता के वृत्तांत में उसके राजलोक की विगत दी है फिर राव मालदेव की ओर से लड़े गये युद्धों का विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

"राव जैतसी रौ जनम १५५४ रा भादवा रौ, अे वडा दातार सूरवीर हुवा.........राव जैता बगड़ी राज करै......... ।"

४. वि० सं० १६०० में बादशाह शेरशाह से लड़ते हुए जैता, कुंपा के मारे जाने के पश्चात् जैता का पुत्र पृथ्वीराज बगड़ी के ठाकुर बने, उनके कुंवरों की नामावली दी है। पृथ्वीराज के वृत्तांत के बाद नारायणदास, राघोदासोत, शिवनाथसिंह नाथावत (नाथा के पुत्र), सांवतसिंह जगराजोत इत्यादि जैतावत राठोड़ों की पीढ़ियां, उनके शादी विवाह और उनमें से कुछ विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा जोधपुर राजघराने में की गई सेवाओं का विवरण दिया गया है। (पत्र—८८)

(इ) सुजाणसिंघ माधोसिंघोत री विगत :-

इसमें जोधपुर के महाराजा उदयसिंह के पौत्र व माधोसिंह के पुत्र सुजाणसिंह व उसके वंशजों का विवरण दिया गया है। प्रारम्भ में इनसे सम्बन्धी कुछ कवित्त, दोहे (पत्र-३) दिये हैं।

दूहा प्रारंभ—

आद वडौ थरगात बहु अख नर लोय।
बंस छत्तीसां मानली त्यां सीरीखा न कोय ॥१॥

कवत्त—

अयसथांन पाट हुवौ घुहड़ अतुलीबल
महीरैलण रायपाल, कांन जालणसी·······

फिर इनका विवरण इस प्रकार दिया है—

१. "मोटा राजा उदैसिंहजी संमत १६४१ रा जेठ सुद ५ जोधपुर पाट बैठा, महाराजा माधोसिंह उदैसिंघोत 'पीसोगण' वीसनदासोतां कनां सु लीवी, बादशाह अकबर री बखत में समत १६५६ री साल में······· ।"

२. इसके पश्चात् माधोसिंह की ठकुरानियों व कुंवरों के नाम दिये हैं, फिर इनके पुत्र सुजानसिंह की संतति का विवरण दिया गया है।

३. औरंगजेब द्वारा मनसब इत्यादि दिये जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

"सम्वत १७४५ बादशाह ओरंगसाह माहाराजा सुजांणसिंहजी नैं पांच सदी मुनसप दीयो, सोभ्रत जैतारण सिवांणो गढ़ दीना······ ।"

४. सुजानसिंह के पुत्र करणसिंह और जुंझारसिंह[1] पर (वि० सं० १७३६) में राणा अमरसिंह जैतसिहोत की चढ़ाई का उल्लेख है इससे सम्बन्धित अनेक गीत भी दिये हैं।

प्रारम्भ—

कीधा केसरीया भर सीलह कीधी रांणे सुण दरबार आयौ,
माह भीड़ आछै गा भाइ औ जुजारां आयौ······· ॥१॥

५. इसमें यह भी अंकित है कि महाराजा अजीतसिंहजी ने इनको (वि०सं० १७७० सुजानसिंह व करणसिंह) चूक कर मरवाया।

---

१. वीर विनोद (भाग २, पृ० ७५२) के अनुसार ये बड़े वीर थे, बादशाह की तरफ से इन्हें पुरमाडल आदि परगने मिले थे जिनकी वजह से उदयपुर वालों के साथ इनका झगड़ा रहता था।

६. इसके बाद जूंझारसिंह के पुत्र फतेसिंह की संतति का विवरण दिया है, इस प्रकार पीसांगण, जूनीया इत्यादि ठिकानों के राठौड़ सरदारों का वृत्तांत दिया है, जो इन गांवों व माधोसिंह के वंशजों के इतिहास के अध्ययन हेतु उपयोगी है।

अन्तिम भाग—

"........सूरजमलजी रै सांवली रै पु० बिसनसिंह चनदसिंह बसतसिहोत पीढ़ी जुनीयौ, इणां रै मैहल सांवली रै पुत्र जोरजी।" (पत्र-३६)

प्रतिलिपि के बारे में एक स्थान पर लिखा है—

"कुल गुरू हजारीमल री बही री नकल सरू कीवी ता २७ मई जेठ वद १९५०।"

प्रतिलिपि अनेक व्यक्तियों के हाथ से की गई है। पत्र मटमैले रंग के हैं ऊपर गत्ता चढ़ा हुआ है।

यह ग्रंथ मारवाड़ के राठौड़ योद्धाओं, सामन्ती प्रथाओं और प्रांतरिक व्यवस्था की विस्तृत जानकारी के लिये बड़ा उपयोगी है।

३४. राव सीहाजी सूं वीरमदेजी तक री तवारीख

१. राव सीहाजी सूं वीरमदेव री तवारीख (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६५२, ४. ३४.८ × २१.६ सेमी०, ५. १६१, ६. २०-२६, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८, अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. यह ग्रंथ अनेक ख्यातों के आधार पर तैयार किया गया है, स्थान-स्थान पर इन ख्यातों का उल्लेख है, विवरण इस प्रकार है—

इसमें मारवाड़ के संस्थापक राव सीहा से वीरम तक के राठौड़ राजाओं का वृत्तांत विभिन्न ख्यातों के अनुसार दिया है। प्रारम्भ में दिया है कि जब सीहाजी मारवाड़ में आये उस समय आस-पास की भूमि पर किसका अधिकार था। यथा—

"राव सीयोजी महाराज जयचंदजी रा पोता और गुजरात रा राजा भीमदेव सोलंखी रा भांणेज था, महाराज जयचंदजी सुं कनौज रौ राज छूटने पर रावजी कुछ बेलियौं रै साथ अटी उटी कोणी स्वतंत्र राज (ब) सावण री अभीलासा सुं फिरता...... संवत १२६८ में रावजी द्वारका री जात्रा करण सारू आ नीकळीया उण वक्त राजसथान में निचे लिखीया हुवा राजा था—पूरब में बछवा ......।"

१. किन कारणों से भीनमाल के ब्राह्मणों ने सीहा को बुलाया वर्णित है—

"आय पुकार कीवी कै मोरी गांव मुलतांन रौ वादसा आय लुटीयो है और वांध पकड़ीया है नै जजिया मांगै है और कवै है 'राकर लेवों' द्वारका सुदी धरती

ले लीवी है सो द्वारकानाथ री जात्रा कोई करण पावै नहीं। घणा ठाकुरां नै तुरक कर दिया है सारां री बेटियां, लुगायां बुलावै है अनीत घणी चडी है सो आप म्हारी उपर करावो। सीहाजी आ बात सुण कयौ—ये थालो थांरी बार करण आउं हूं...... ।"

फिर दोनों ओर से युद्ध में मारे गये कुछ योद्धाओं के नाम इत्यादि दिये हैं।

२. मुंदियाड़ की ख्यात के अनुसार राव सीहा का वृत्तांत :-

इसमें कुछ घटनाओं के संवत इस प्रकार दिये हैं—

१. सीहो सेतराम रो समत १२१२ रा आसोज सुदि ७ श्री दवारकानाथजी पधारीया।

२. आसथांनजी बडा बेटा रो जनम समत १२१८ रा काती वद १४ वार व्रसपत।

३. सोनगजी......रो जन्म १२२३ पोस वद १ रो।

४. अजजो ......रो जन्म १२२५ असाढ वद १।

३. मुरारदान की ख्यात से राव सीहा का वृत्तांत :-

प्रारम्भ—

"पाली रा डेरां सीहोजी वन में सिकार गया सीहाजी रो बैर सुती थी तिण नुं सुहणो (स्वप्न) लाधो जांणै म्हारो पेट फाटो छै बेळो (दो लड़के) जायो छै तिण नुं नाहर ले जावै छै...... ।"

इस घटना के बाद सीहा के राजलोक की विगत में पांच पुत्रों के नाम—आसथांन, अज, सोनग, भीम और रामसेन के दिये हैं (रामसेन नेनों थको मुवौ तिणरी छत्री गढ़ गोमंदाणे है ......पितर हुवो।) तत्पश्चात् लाखा फूलाणी के मारे जाने व उसके सम्बन्धी कुछ दोहे (लाखै लाख समापियो......१) दिये है। फिर सीहाजी का वृत्तांत हिंदी भाषा में दिया है, घटनायें प्रायः एक जैसी ही है।

(पत्र-११)

४. सीहाजी का विवरण राठौड़ों की वंशावली के अनुसार :-

प्रारम्भ—

"१३५ राव सेतराम को सीहो व गांगो २ सांगो ३ राव सीहा नै जती खरतर गच्छ में श्री जिनदत्तसुरीजी असीस दीधी ते कथा—पाली नगर ब्राह्मण पलीवाल वसै, छतीस हजार घर पालीवालों रा।" (पत्र-४)



५. सीहाजी का वृत्तांत 'कोमी हालतों' की पुस्तक के अनुसार :-
प्रारम्भ—

"राठौड़ मुल्क के मालक हैं दूसरे राजपूत उनकी दी हुई रोटी खाते हैं। १ राठौड़ मारवाड़ में कन्नौज से आये हैं और इसी से इनकी खांप कन्नौजिया है····।"

इसमें राव सीहा से जसवन्तसिंह द्वितीय तक की वंशावली भी दी है।
(पत्र-१)

६. नौंबाज की बही के अनुसार सीहाजी का वृत्तांत :-
प्रारम्भ—

"रावजी सीहोजी वडो ठाकुर हुवो वडा साथ रो धणी हुवो सु सीहोजी अेक समै मास ६ सिकार रमतो नैं भाई अन्ह कन्नौज रहतो········ ।" (पत्र-४)

७. 'नैणसी की ख्यात' के अनुसार सीहाजी का वृत्तांत :-
प्रारम्भ—

"राजा सिंघसेन कनवज सूं द्वारका जात्रा करण नैं पधारीया आप गोत्र कर्दम बहुत कियौ तै मन विरक्त हुवो ······· ।" (पत्र-१/२)

८. 'भंडारी किशनमल की बही' से सीहोजी का विवरण :-
प्रारम्भ—

"सीहोजी १२१२ श्री द्वारकाजी री जात्रा करण पधारिया आसोज सुद ७ जातरा कीवी, पाछा पाटण पधारिया गुजरात रा धणी मूलराज सोलंखी री मदत कर लाखा फूलांणी उपर गया सु ··· ··· ।" (पत्र-१/२)

९. 'मूंदियाड़ व प्रयागदास की ख्यात' से सीहाजी का वृत्तांत :-
प्रारम्भ—

दोहा— राठौड़ रै आदि लग, सिंधां ऐह सुभाव,
धीया पुत्त महेलिया, मुख लज्जा घर चाव ॥२॥

सेतराम से सीहो ३ वाको सीहा री—राव सीहो वडो ठाकुर हुवो वाडा साथ री धणी हुवो मास ६ सिकार रहतो···· ··· । (पत्र-६)

१०. राव आसथान का वृत्तांत :-

इसी प्रकार विभिन्न ख्यातो के अनुसार राव आसथान व अन्य राठौड़ राजाओं का वृत्तांत दिया है। आस्थान द्वारा गोहिलों से खेड हस्तगत करने, ईडर के भीलों को मार कर अपने भाई सोनग को देने तथा आस्थान के संतति का हाल है। (पत्र-२६)

११. राव सीहा का वृत्तांत :–

आगे फिर से सीहाजी का वृत्तांत दिया इया है। एक जगह लिखा है— "सीहोजी किताक दिन पाली रै कन्नौज में गया सो गढ़ गोयंदाणें राज कियो अन्त नै कनोज रो टीको दियो वर्ष १३ गोईनदाणें राज कियो श्री गौड़ वीरामण नै गुर किया ४० सांसण दिया। सीहोजी धांम पधारिया तरै बेटां नैं कयो—ये पाली जाय रहीजो उठारो राज थांरै आवसी········।" (पत्र–१०½)

१२. पाबू तथा धूहड़ का वृत्तांत :–

राठौड़ पाबू के वृत्तांत के पश्चात् धूहड़ का वृत्तांत दिया है।

प्रारम्भ—

"आस्थानजी रै लारै उणो रा बडा कंवर धूहड़ गादी बैठा श्रे बड़ा बहादुर था········कनौज सुं पाछा आवती वगत रावजी आपरी कुळ देवी चक्रेस्वरी करणाटक देस सुं लाया श्रोर गांव नागाणां ·······स्थांन कीवी ·······।" (पत्र–११)

१३. राव रायपाल का वृत्तांत :–

विभिन्न ख्यातों के अनुसार राव रायपाल से सम्बन्धित घटनाओं का उल्लेख किया है।

प्रारम्भ—

"धूहड़जी रै लारै उणों रा वड़ा कंवर रायपालजी गादी बैठा श्रे बड़ा ही दातार श्रोर बहादूर हुवा पहले तो आपरा बाप री बैर लेण सारू सं०········ में मंडोर उपर पड़ीहारां सुं लड़ाई करण वास्ते पधारिया ·······।" (पत्र–६)

१४. कान्हपाल का वृत्तांत :–

कान्हपाल के संतति व भाटियों से युद्ध का वृत्तांत दिया गया है।

प्रारम्भ—

"रावजी श्री कन्नयरायजी वडा अकलवर था नै वहादुर था नै इणरै कंवर ३ था सो भीमकरणजी बड़ा वहादुर था। उण समै में रावजी सारै नै जैसलमेर रा भाटियां रै सरहद बावत तकरार खड़ी हो गई ·······।" (पत्र–४)

१५. राव जालणसी का वृत्तांत :–

इसके बारे में लिखा है—

प्रांरम्भ—

"राव जालणसिंघजी कानड़जी रा पाटवी कंवर गादी वैठा इण वगत जैसलमेर रा भाटी तुरकां री मदत सुं कर खेड़ श्रोर महवे उपर आपरो जोर नौक दियो हो जिणनै दूर कर आपरो दखल जमायो, ········पछै रावजी सिंघ लूटी श्रोर

ठठा मार मुलतान रै हाकीम उजावलसां री फौज सु जंग कीयो ...... फतै हुई, फेर तुरक फौज ले सं० १३३६ मउवे उपर आया ....रावजी कांम आया ...... ।"
(पत्र-४½)

इसी प्रकार राव छाडा, टीडा, कान्हड़देव, सलखा, मल्लीनाथ तथा वीरमजी का वृत्तांत विभिन्न बहियों से उतारा गया है। जिसमें प्रशस्ति गीत, दोहे यथास्थान आये है।

प्रतिलिपि अनेक व्यक्तियों के हाथ से की गई है। मारवाड़ के इतिहास अध्ययन हेतु यह सामग्री उपयोगी है। कई ख्यातों की सूचना इससे मिलती हैं।

३५. महाराजा अभयसिंह री ख्यात

१. *महाराजा अभयसिंह री ख्यात* (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६३२, ४. ३३.५ × २४.५ सेमी०, ५. ५६, ६. २०-२४, ७. २०वीं *शताब्दी का प्रारम्भ*, ८. *अज्ञात*, ९. *राजस्थानी*, देवनागरी, १०. इस ख्यात में जोधपुर के महाराजा अभयसिंह का विस्तार से तथा रामसिंह बखतसिंह का संक्षेप में वृत्तांत है।

ख्यात का प्रारम्भ अभयसिंह के जन्म, राज्यारोहण और मृत्यु इत्यादि के संवतों से किया गया है। दिल्ली में रहते हुए अपने पिता अजीतसिंह के मारे जाने के समाचार सुनने पर बादशाह की सेवा में उपस्थित होने, जब्त किये परगने (नागौर, केकड़ी, घटीयाली, मरोठ, फूलीया, परबतर) मा० अभयसिंह को पुन लौटाने इत्यादि का वृत्तांत आगे दिया है।

प्रारम्भ—

"माराज श्री अभैसिंघजी रा राज री कारवाई री ख्यात—माराज श्री अभैसिंघजी समत १७५९ रा मीगसर वद १४ वार सन रौ जनम जाळोर मे नै समत १७८१ रा सावण वद ८ सुकर राजतीलक वीराजिया दीली मे नै सं० १८०५ रा आसाढ़ सुद १५ सोमवार देवलोक हुवा अजमेर में।"

ख्यात में अंकित घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. महाराजा के आमेर नरेश जयसिंह की पुत्री से विवाह करने, सरदारों की राय नहीं मानने का उल्लेख है, आगे अप्रसन्न हुए सरदारों की सूची (खांपानुसार) अंकित है।

२. सरदारों की राय के अनुसार भंडारियों को कैद करने, फिर मुक्त करने, इन्दरसिंह से नागौर छीनने व बखतसिंह को नागौर इनायत करने का विवरण दिया है। यथा—

"समत १७८२ रा काती में श्री दरबार माराज बखतसिंघजी नै राजधिराज री पीतराव दीयो नैं नागोर ईनायत कीयों नै"..... मुतसदी पवास पासवांन वगैरै चाकर दीया रैं जवाहर री रकमों दीवो जिणरी विगत ...... ।"

३. वि० सं० १७८२ में राजकीय नियुक्तियों का विवरण इस प्रकार उद्धृत है—

"१ परधांनगी चांपावत नरसिंग भगवांनदासोत नै दी, मं० पीवसी सुं तागीर सं० १७८१ रा फागुण सुद ६ हुई ।

१ दीवाणगी भंडारी रूघनाथ नै दी छी नै उठण री कुरब दीयो ।

१ बपसी पंचोळी रामकीसन रैं थी सुं राजाधिराज बखतसिंघजी कनै नागौर गयो नै अठै भाटी बालकीसन काम करतो ।

१ पांनसांम प्रोयोत रीणछोडजी नैं दीवी ।

१ जोधपुर री हाकमी भंडारी अनोपसिंघ रूघनाथोत नै हुई ।

१ मेड़ता री हाकमी मं मानरूप पोमसीराव सांवत रैं हुई ।

१ वारठ गोरधदांन केसरीसिंघोत ।

१ देरासरी व्यास फतैचंद दीपचंदोत रांमसरण हुवो तरै ......फतैचंदोत नुं पछै उदैचंदोत नै व्यास पदवी दीवी ।

१ राजगुर प्रोहीत सूरजमल अपैराजोत नैं तींवरी दीवी ।

१ दोढ़ीदार गूजर विजैराम ।

१ जोधपुर सीकदार सोभावत दयालदास वैणीदासोत पछैं समत १७ ...... में दयालदास कीसनदास रैं रही ।"

४. भंडारी रघुनाथ को हटा कर भंडारी अमरसिंह को दीवान पद पर नियुक्त करने उसे सीरोपाव इत्यादि देने का उल्लेख है ।

५, वि० सं० १७८५ में धांधलों को गाँव इत्यादि दिये गये उसका ब्यौरा दिया गया है ।

६. किशोरसिंह द्वारा पोकरण फलौदी में उत्पात करने, रायसिंह आनंदसिंह द्वारा जालोर के गांवों में लूट-खसोट करने महाराजा द्वारा इस प्रकार के उपद्रवों को दबाने का उल्लेख है ।

७. बादशाह की ओर से अहमदाबाद महाराजा को इनायत करने का उल्लेख इस प्रकार है—

"महाराज अभैसिंघजी दीली हा सो पातसाहजी समत १७८५ रा अहमदाबाद सोबो माराज नै ईनायत कीयौ, इण माफक नीवाजस कीवी सीरपाव कड़ा मोती

कीलंगी जड़ाउ तरवार हाथी रोकड़ा रूपीया १५००००० पनरे लाष दीया नै वीरात रूपीया १२००००० वारे लाष अ्रहमदाबाद उपर कर दीवो नै तोपषांनो नै नवाब अ्रजीमुलाषांन साथे फौज दे माराज री दीली सु ं कूच जैंपुर नवो वसतो थो उठै जैंसिघजी सु ं मिल काती में जोधपुर पधारिया ''''''मं० अ्रमरसिंघ नै दीली राषीयो थो सो रू० १५००००० पनरे लाप कढ़ाय नै मेलीया नै अ्रहमदाबाद नै कूच री त्यारी कीवी '''''' ।''

८. महाराजा अ्रभयसिंह के अ्रहमदाबाद पर आ्राक्रमरण करने तथा अ्रभयसिंह और राजधिराज बखतसिंह के सरदार मारे गये अथवा घायल हुए उनकी सूची दी है। महाराजा का वहाँ अ्रधिकार होने, वहाँ नियुक्तियों इत्यादि करने का उल्लेख है।

९. कवि करणीदान को अ्रहमदाबाद में सिरोपाव इत्यादि देने का विवरण इस प्रकार है—

''चारण कविया करणीदान नै अ्रहमदाबाद में सीरपाव दीयो हाथी कड़ा मोती घोड़ो लाष (पसाव) सीरपाव दीयो परगने सोजत री गांव आ्रलावास दीयो '''''' ।''

१०. पीलुजी गायकवाड़ के चौथ वसूल करने हेतु मारवाड़ में आने, अ्रभयसिंह द्वारा विरोध करने और छल से पीलुजी को मरवाने का उल्लेख इस प्रकार है—

''सु मुसदी तो अ्रजांण था नै वात करण गया सो''''''''चुक करने पीलु नै कटारी सु ं मारियो, आ्रदमी १८ काम आया फौज पीलु री भागी।''

११. स्वर्गीय खंडेराव दामाड़े की पत्नी उमाबाई की जोधपुर पर चढ़ाई करने चौथ इत्यादि का उल्लेख इस प्रकार है—

''समत १७८६ रा फागुण लागता अ्रसवार हजार सीतर ७०००० उमा आई तरै राजाधिराज नु ं बुलाय नै जोधपुर मेड़ता बगेरै प्रगना सु ं फौजां बुलाई सो दोनु ं सायब तो किला दाषल हीज रैया नै सारी फौज रा मुतसदीयां रा डेरा कीलकीला नदी उपर हुवा फौज हजार २०००० बीस श्री दरबार री थी। करणोत दुरगादासजी रै नै पाडेराव रै आई चारो थो तिण सु ं करणोत अ्रमैकरण दुरगादासोत नै उमा कनै मेलीयो सो उमां केयो—मारी गुजरात में चौथ है '''''' तरै दोढ लाष १५०००० रूपीया करणोत अ्रमैकरण देणा ठैराया नै श्री हजूर में अ्ररज कीवी सो कीतराक रै आ वात दाय आई नही नै राड़ करणी ठैराई'''''' मारी फौजां सारां सु उठी सु ं उमां री फौज चढ़ी सो जीवगज री फौज सु ं आ्रडी

हुवौ जीवराज कांम ग्रायौ""""पछै दूजै दिन करणोत ग्रमैकरणजी नै मेल नै वात कराय रुपीया २००००० दोय लाप देणा ठैराया नै उमा रौ पाछौ कूच करायौ।"

१२. बखतसिंह की बीकानेर पर चढ़ाइयों का वृत्तांत दिया गया है।

१३. मराठों के बढ़ते प्रभाव को रोकने हेतु रणथंभौर का किला सवाई जयसिंह को देने का विवरण इस प्रकार है—

"सवाई जैसिंघजी पांनदोला री मारफत ग्ररज कराई कै रीणथंभौर रौ कीलौ मनै इनायव हुवै तो गनीमा नै में ग्रावण देवौ नहीं""""ग्रा षवर भंडारी ग्रमरसिंघ नै हुई तरै पांनदोरा नै केयौ कै रीणथंभौर रौ कीलौ तो इण नै इनायत हुवौ भो ग्रठी रौ तो जावतौ ग्रौ करसी नै बीटली रौ कीलौ मांनू इनायत हुवै सु जाळोर कांनी से जाबतो म्हैं कर लेसां""" तरै रीणथंभौर रौ कीलौ जैसिंघजी नै देणौ मोकुब ठैरीयौ।"

१४. दक्षिणियों का मुकाबला करने के लिए महाराजा और ग्रन्य राजपूत राजाओं का शाही सेना के साथ जाने, गुजरात के हाकीम, रत्नसिंह भंडारी का मराठों से युद्ध, उसके द्वारा गुजरात में जुल्म करने इत्यादि घटनायें वर्णित है।

१५. बखतसिंह द्वारा कुछ अधिकारियों को कैद कर दण्ड स्वरुप रुपये वसूल करने का उल्लेख इस प्रकार है—

"राजधिराज बषतसिंघजी पंचोळी लालजी नु कैद कर २००००० दोय लाष लीया, दीवांणजी सिंघवी साहमल नै दीवी नै साहमल रांमसरण हुय गयौ तरै समत १७९५ रा सांवण सुद १५ सिंग ग्रमरचंद सामलोत नै दीवांणी दीवी""""पछै चैत सुद ७ भंडारी गिरधरदास रतनसिंघ मनरूप दौलतराम वगैरै बोबसतां सु कैद कीया""""नै भंडारी ग्रमरसिंघ दीली थो सु उठै कैद करण नै आदमी सोळै ग्राया""""कांम सोंपीयौ तिणरी विगत—

दीवांणगी पंचोळी लालजी रै नांव।

जोधपुर सोवो पंचोली रामकीसन"""" ।

वगसी रामकीसन रै नांवै थी सो बालकीसन नै दीवी।

जोधपुर कचेड़ी में हाकम पंचोळी पेमकरण लालजी रौ बेटौ।

मेड़तै री हाकमी लालजी रै बेटा रै।"

१६. महाराजा के बीकानेर पर चढ़ाई करने, ग्रामेर नरेश सवाई जयसिंह के जोधपुर पर चढ़ाई करने, फिर मेल होने तथा बखतसिंह और जयसिंह के बीच गगराने में युद्ध होने, राजाधिराज की ओर से मारे गये योद्धाओं की सूची इत्यादि ग्रंकित है।

१७. "भंडारी राम रूपनाथ रायचंदोत रूपीया आठ लाख दरबार में भरीया नैं समत १७९८ में रामसरण हुवो ....। संमत १७९९ रा भादवा सुद ४ पंचोळी लालजी रांमकीसन दीवांण नैं बालकीसन बगसी नैं वोवसतां समेत कैद कीयो....। समत १७९९ रा काती बद १ ग्रोधा दीया तिणां री विगत—

दीवांणगी भंडारी राय ग्रमरसिंघ पींवसींघोत नुं, कुरव वैठण री सदामंद मुजब नै सीरपाव ईण मुजब—

पालपी, हाथी, कड़ा, मोती, मोतीयों की कंठी, सीरपेच। सोवी भंडारी मनरूप ......नैं सीरपाव बैठण री कुरब.......पालपी, कड़ा, मोती, सीरपेच।

भंडारी दौलतराम थांनसिंघ पीवसीघोत नैं जोधपुर री हाकमी बड़ा नैं रूपीया १०००।

१८. बीकानेर राजा जोरावरसिंह के निःसंतान मर जाने पर उनके चाचा आनंदसिंह को उत्तराधिकारी बनाने हेतु जोधपुर की ओर से की गई चढ़ाई आदि का वृत्तांत दिया हैं।

१९, महाराजा द्वारा करवाये गये भवन-निर्माण कार्य आदि का विवरण दिया गया है।

२०. महाराजा की मृत्यु, अन्त में उनकी रानियों व कुंवरों की नामावली अंकित हैं।

आगे महाराजा रामसिंह का वृत्तांत है।

२१. रामसिंह के राज्याभिषेक होने, नियुक्तियों, उमरावों को हाथी इनायत किये उसकी सूची अंकित है।

२२. रामसिंह का उमरावों से झगड़ा इत्यादि होने, बखतसिंह व रामसिंह के बीच युद्ध मे दोनों ओर काम आये योद्धाओं के नाम। बखतसिंह का जोधपुर पर अधिकार करने का उल्लेख है।

२३. लवेरे ठाकुर सुजानसिंह ने गढ़ बखतसिंह को सौंप दिया उनसे सम्बन्धित दूहा उद्धृत है—

"थारो नाव सुजाण थो, ग्रब कै हुवो ग्रजाण,
ग्राश्रम चौथे ग्रावीयो, ग्रो चूको ग्रवसांण ॥१॥"

२४. बखतसिंह और रामसिंह के बीच खटपट आदि प्रायः उन्हीं घटनाओं का वृत्तांत है जो ग्रंथांक २३१, रा० शो० सं० में है। ख्यात के ग्रन्त में महाराजा के पीछे सती हुई रानियों आदि से नाम दिये हैं।

अन्तिम भाग—

"व्यास उदैचंद बेटा सुघो कैद में थो तिण नुं सतीयां छुडाया। संपुरण माराज अभयसिंघजी रामसिंघजी वखतसिंघजी ताई १८०६।"

प्रस्तुत ख्यात की प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है। लिपि सुवाच्य नहीं है। अभैसिंह व वखतसिंह के समय की इसमे विशेष जानकारी है।

३६. महाराजा अभयसिंह की ख्यात

१. महाराजा अभयसिंह की ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६५६, ४. २७.७ × २२.४ सेमी० (रजिस्टरनुमा), ५. १५६, ६. ११-१३, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. यह जोधपुर के शासक महाराजा अभैसिंह की ख्यात का हिन्दी अनुवाद है। जिसमें उनके जीवन सम्बन्धी घटनाओं का सविस्तार वृत्तांत दिया है।

प्रारम्भ—

"महाराजा श्री अभयसिंहजी संवत १७५६ के अगहन वदि १४ शनिवार के दिन गांव जालोर में प्रकट हुए संवत १७८१ के श्रावण वदि शुक्रवार के दिन दहली में महाराज का राजतिलक हुआ...... जोधपुर में महाराजा श्री अजीतसिंहजी देवलोक हुए तब वखतसिंहजी ने आण दुहाई महाराजा अभैसिंहजी की फिराई ...... आदि।"

प्रारम्भ में महाराजा के राजतिलक, बादशाह की ओर से मिले परगनों की विगत तथा जयपुर नरेश जयसिंह की पुत्री से विवाह करने जाने पर रूठे सरदारों की सूची खापानुसार दी है। फिर राजकीय नियुक्तियों का विवरण दिया है। महाराजा के सैनिक अभियानों, भवन-निर्माण कार्य तथा अन्त में रानियों व संतति का उल्लेख है।

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है। अभयसिंह के काल को समझने व तत्कालीन घटनाओं की जानकारी हेतु उपयोगी है।

३७. महाराज विजयसिंह की ख्यात

१. महाराज विजयसिंह की ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६३६, ४. ३३ × २५.६ सेमी०, ५. १००, ६. २२-२३, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ख्यात में जोधपुर के शासक महाराजा विजयसिंह के राज्यकाल की घटनाओं का

विवरण दिया गया है। इसका प्रारम्भ उक्त महाराजा के जन्म, राज्यारोहण आदि संवतों से किया गया है।

प्रारम्भ—

"महाराजा विजयसिंघजी रो जनम समत १७८५ रा मीगसर वद ११ व्रसपतवार रा, समत १८०९ रा भादवा मारोठ में टीके विराजीया संवत १८०९ रा मा वद १२ संगलवार जोधपुर पधार सीणगार चौकी राजतीलक विराजीया समत १८४९ रा असाढ़ वद ७ देवलोक हुवा। मुसायब पीची गोरधन नैं दीवी दीवाण बगसी श्री महाराजधिराज रापीया सु सरू रापीया।

समत १८०९ श्री महाराज मारोठ सुं कूच कर मेड़तै पधारीया, मेहलां दापल हुवा········।"

१. वर्णित है कि राजा किशोरसिंह (महाराजा अजीतसिंह का पुत्र) ने उस समय भिणाय पर कब्जा कर लिया तथा केसरीसिंह उदावत बखतसिंहोत द्वारा वह मारा गया।

२. रामसिंह द्वारा जोधपुर हस्तगत करने हेतु आपाजी सिंधिया की मदद से कृष्णगढ़ अलियावास को लूटने, बीकानेर के राजा गजसिंह द्वारा विजयसिंह की मदद करने, फिर रामसिंह और विजयसिंह के बीच युद्ध होने (वि० सं० १८११ आश्विन वदि १३), युद्ध में विजयसिंह के हारने, विजयसिंह के सरदार काम आये उनकी सूची दी है।

३. रामसिंह द्वारा नागौर, जालोर, फलौदी पर आक्रमण करने (जोधपुर, नागौर, जालोर नैं डीडवांणै तो महाराज रो अमल रयो बाकी जायगा रामसिंघजी नैं आपरो अमल हुवो········) जयअपा को महाराजा द्वारा छल से मरवाने इत्यादि घटनायें वर्णित है।

४. महाराजा के दक्षिणियों से संधि होने का वृत्तांत इस प्रकार दिया है— (वि० सं० १८१२)

"पछै अठै नागौर सिं० फतेचंद देवीसिंघ मांसिघोत दीपणियां सुं वात करी के आदो मुलक देणो कीयो नैं इकावन लाप रूपीया पेसकसी रा ठेहराय पांच हजार गांव मारवाड़ रा सुं अढ़ाई हजार गाव रामसिंघजी रै जिण मे मेड़तो, प्रवसर, मारोठ, सोजत, जाळोर, भीणाय, केकडी, देवलीया रा सोले गाव········महाराजा रामसिंघजी रैं नैं जोधपुर, नागौर, डीडवाणो, फलौधी, जैतारण अ प्रगना मा० वीजैसिंघजी रैं, अजमेर दीपणीया नैं दीयो इण तरै वात ठेहरी रू ६००००० रोकड़

दीया नै बतीस हाथी भरणां में दीया नै अेक रावटी लाष में दीवी ......दिषणियां नै कूच करायौ।"

५. भंडारी दौलतराम, सुरतराम, पंचोली लालजी इत्यादि व्यक्तियों से पैसे वसूल कर उनको मुक्त करना, धाय भाई जगा के आचरण से सरदारों का रूष्ट होना, फिर महाराजा के अज्ञानुसार कुछ सरदारों को कैद करवाने फिर उनको मरवाने इत्यादि का वृत्तांत है।

६. महाराजा द्वारा मेड़ता पर अधिकार करने पर राम द्वारा मेड़ता पुनः हस्तगत करने के हेतु किये गये प्रयत्नों का वृत्तांत है।

७. जोशी बलू को विरोधी सरदारों से पेशकसी वसूल करने भेजना (वि० सं० १८१८), फिर बलू के ससैन्य अजमेर पर अधिकार करने हेतु जाने तथा मराठों से हुए युद्धों का वृत्तांत है।

८. बलू द्वारा धाय भाई की शिकायत महाराजा को करने का उल्लेख इस प्रकार है—

"जोसी बलजी धाय भाई री चुगली षाई के मुलक में पइसौ पैदास करां जीतरौ धायभाई उड़ावै है नै पवास राषी तीएा रै बीस हजार रौ मेणौ है, कुर्सी बैठे छै, घोड़ा छव बीसी राषै छै सु अेक अेक घोड़ा तीन तीन रूपीया रोजानी री ...... महाराज......धायभाईजी नु जोधपुर बुलायौ......धायभाई खना सु रसालो उरौ लियौ ...... ।"

इसके आगे महाराजा का बूंदी विवाह करने हेतु जाने का उल्लेख है।

९. वि० सं० १८२२ में उज्जैन की तरफ से महादाजी सिंधिया द्वारा पुनः मारवाड़ पर आक्रमण करने इत्यादि घटनायें वर्णित है।

१०. वर्णित है कि भरतपुर के जाट राजा जसवन्तसिंह ने जब जयपुर पर चढ़ाई की उस समय महाराजा विजयसिंह ने जाट राजा के सहायतार्थ सेना भेजी।

११. रामसिंह की मृत्यु के पश्चात् साभर पर महाराजा का अधिकार, वि० सं० १८३४ में आंबाजी के खिराज लेने हेतु ढूंढाड़ में आने, महाराजा द्वारा बड़ी सेना भेजने पर उसके मेवाड़ मे जाने का उल्लेख है।

१२. जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंह को मा० विजयसिंह द्वारा दक्षिणियों के विरुद्ध मदद देने (१८४४), महाराजा का अजमेर पर अधिकार होने का उल्लेख।

१३. वि० सं० १८४७ में महादाजी सिंधिया ने फिर चढ़ाई की, इस बार महाराजा के सहायतार्थ बीकानेर राजा गजसिंह तथा कृष्णगढ़ के प्रतापसिंह बुलाये गये, मराठों की सेना अजमेर चल कर आलणियावास के पास पहुँची, उसके

साथ फ्रेंच जनरल डी बोईने था। इसमें भी विजयसिंह को हार कर मराठों से संधि करनी पड़ी।

१४. कुछ सरदारों द्वारा उपद्रव करने, भीमसिंह द्वारा गढ़ पर अधिकार करने, फिर सरदारों द्वारा समझा बुझा कर इसे हटाने इत्यादि घटनाओं का विवरण दिया है।

१५. अन्त में महाराजा के राजलोक की विगत में उसके कुंवरों का विवरण कुछ विस्तार से दिया है।

अन्तिम भाग—

"माराज श्री विजैसिंघजी बूंदी परणीज नैं पाछा पधारतां पवासी री बेटी पदमावती बाई नु बूंदी रा रावराजा उमेदसिंघजी रा पवास रा वाभा नुं परणाई सु जोधपुर परणीजण नैं आया सु परणीज पाछा जावता मेड़ते आया।"

यह किसी मूल ग्रंथ की प्रतिलिपि अनेक व्यक्तियों के हाथ से की गई है। कागज मटमैले रंग के हैं। ऊपर गत्ता चढ़ा हुआ है। लिखावट अशुद्ध है।

इसमें महाराजा विजयसिंह के राजकाल का विस्तृत वर्णन दिया है। ये घटनायें जोधपुर की ख्यात से भी मिलती जुलती है।

३८. महाराजा भीमसिंहजी री ख्यात

१. महाराजा भीमसिंहजी री ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र० ३. १५६४५, ४. ३२.५ × २६ सेमी०, ५. १२, ६. २८-३०, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ख्यात में जोधपुर के शासक महाराजा भीमसिंह के राज्यकाल की घटनायें हैं। प्रारम्भ में महाराजा के जन्म, राज्याभिषेक तथा मृत्यु के संवत है फिर ख्यात का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

प्रारम्भ—

"म्हाराज श्री भीवसिंहजी पोकरण सुं जैसलमेर परणीजण नुं पधारीया सो उठै म्हाराजा श्री विजैसिंगजी देवलोक हुवा री षबर पोंहती तरै ताकीद सूं कूंच कर पोकरण पधारीया नैं पोकरण सूं सांतरा उंट लेनैं महाराजा नैं सवाईसिंघजी चढ़िया सो सीगोरीयां री बारी होय असाढ सुद ६ रात रा लापण पोल (जोधपुर) पधारिया ……।"

घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. वर्णित है कि महाराजा विजयसिंह के पुत्र जालमसिंह और प्रपौत्र मानसिंह राज्य मिलने की आशा न देख कर मुल्क में लूटमार करने लगे, फिर मानसिंह पुन. जालोर तथा जालमसिंह गांव सिरियारी चले गये ।

२. महाराजा द्वारा अपने पक्ष के लोगों को जागीर में गाव इत्यादि देने का उल्लेख है ।

३. नियुक्तियों के बारे में लिखा है--

"समत १८५२ मे दीवाणगी मं० मानीदास सु ताणीर करम० सोभाचंदोत नु दीवी, नै मुसायवी सोभाचंदजी रै नांवै हुई ... ...सीवचंद झूठ घणो बोलतौ तिण सु काम अगाड़ी चलियौ नी तरै समत १८५३ में सिं० जोधराज रै नांवै दिवाणगी कराई नै बेटा नीलराज रै नावे हुई नै कांम आप करतौ सो सीरदार मुसदी पवास पासवान वगैरे री खातर नही रापतौ, वडौ जबरदस्त धणी रा हुकम बीना कीणी नु धारतौ नही जिणसु जोधराजजी उपर सारा बैराजी ... ... ।"

४. महाराजा द्वारा अपने भाइयों को मरवाने तथा वि० सं० १८५४ में असेराज की अध्यक्षता में जालोर (मानसिंह) का घेराव डालने, नगर पर कब्जा नहीं होने पर असेराज को कैद कर उससे ६०००० रू० वसूल करने का उल्लेख है । आगे वर्णित है कि असेराज बीमार रहने लगा महाराजा ने १८५७ में असेसागर तालाब बनवाया और इसी वर्ष जब असेराज का देहान्त हुआ तब उसका शव इसी तालाब पर दग्ध किया गया ।

५. वि० सं० १८५७ में भीमसिंह की शादी सवाई प्रतापसिंह (आमेर नरेश) तथा इसकी (प्रतापसिंह) की शादी विजयसिंह की पौत्री के साथ पुष्कर में बड़े समारोह के साथ सम्पन्न होने का उल्लेख है । भीमसिंह के साथ चले सरदारों की विस्तृत सूची खांपानुसार दी है । इस समय मौका पाकर मानसिंह द्वारा पाली में लूट खसोट करने का भी विवरण दिया है ।

६. सानेई ग्राम के सायबसिंह भाटी द्वारा अन्य उपद्रवी सरदारों की मंत्रणानुसार जोधराज को छल से मारने का उल्लेख है, जिस पर महाराजा द्वारा आउवा, आसोप, चंडावल, रास, रोयट तथा नीवाज के पट्टे जब्त किये जाने का उल्लेख है ।

७. वि० सं० १८६० में इन्द्रराज, बनराज, गुलराज तथा गंगाराम द्वारा चारों तरफ से जालोर पर आक्रमण करने तथा नगर पर उनका अधिकार होने का उल्लेख है ।

८. वि० सं० १८६० कार्तिक सुदि ७ को महाराजा का अदीठ की बीमारी मे देवगति प्राप्त होने, उसके पीछे रानियो इत्यादि सती हुई उनके नाम दिये हैं ।

अन्तिम भाग—

"अजीतसिंह रा राणीयों नै पीपालाया पाप ज्यां रौ सराप हुवौ परंतर रईत मुलक में आवाद रही मोकलौ सुष पायौ ईतीसी भींवसिंघ री ख्यात संपूरण।"

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ की गई ई। रजिस्टर पर गत्ता चढ़ा हुआ है, कागज सफेद रंग के तथा कुछ मोटे हैं। इसमें अंकित संवत घटनायें आदि जोधपुर की ख्यात से मिलती जुलती है। भीमसिंह विजयसिंह के राज्य इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

३६. महाराजा तखतसिंह री ख्यात[1]

१. महाराजा तखतसिंहजी री ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६२६, ४. ३३.५ × २४.५ सेमी० (रजिस्टरनुमा), ५. २५५, ६. २०-२२, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. देवनागरी, राजस्थानी, १०. प्रस्तुत ख्यात में जोधपुर के महाराजा तखतसिंह के राज्यकाल (सं० १६०० से १६२६) की घटनायें वर्णित हैं, ख्यात का प्रारम्भ महाराजा मानसिंह की मृत्यु, उनके पीछे हुई सतियों आदि से हुआ है।

प्रारम्भ—

॥ श्री गणेसाय नम ॥ श्री नाथजी सत्य छै

माराज श्री मानसिंघजी वैकुंठ कीयौ समत १६०० रा भादवा सुद ११ पाछली रात रा जिण दिन सुं लगाय माराज श्री तखतसिंघजी संमत १६२६ रा भादवा मा सुद १५ ताई राज कीयौ जठा तांई री ष्यात।

भादवा सुद १२ नै सुरज अंगां नाजर साळगरांम जनांना में जाय अरज करी श्री हजूर साहव वैकुंठ पधारीया जद रांणीजी थी चौथा देवड़ीजी नाव अजैकंवर देवड़ा अपेसिंघजी री वेटी गाव निमज रा जिकां पिंडा नै उणां री डावडी राषा नै पड़दायतीयां च्यार........।"

ख्यात में अंकित महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. महाराजा मानसिंह के दाह संस्कार के पश्चात् शोक प्रकट करने, राजघराने की ओर से अंग्रेजी सरकार महाराजा तखतसिंह (अहमदनगर) के गोद लेने का आग्रह, फिर आश्विन सुदि १ को अहमदनगर जाने वाले सरदारों, मुत्सदियों, खवास, पासवानों आदि की सूची दी है। रानियां, उमरावों और लडलो द्वारा मा० तखतसिंह

---

१. डॉ० नारायणसिंह भाटी द्वारा सम्पादित।

को दिये गये रुक्के, पत्रों इत्यादि की प्रतिलिपि अंकित है तथा इसके पश्चात् महाराजा के जोधपुर आने उत्सव इत्यादि मनाने का वृत्तांत है।

२. विद्रोह करने वाले व्यक्तियों को पकड़ने (कार्तिक सुदि १४), महाराजा की रानियों के लेने अहमदनगर राजकीय व्यक्तियों के भेजने (मार्गशीर्ष वदि ३) कुरब वगैरा इनायत किये उसकी विगत—

"मीगसर वद ५ राव राजा रिधमलजी नै वैठण री कुरब हुवौ नै छोटा बेटा राजमल नै पालपी कड़ा मोती मोतीयों री कंठी सीरपेच नै राव पदवी ईनायत हुई ··· ·।"

३. राज्याभिषेक होने का वृत्तात इस प्रकार है—

"मीगसर सुद १० सुकर श्री हजूर साहब राजतिलक विराजीया दीन घड़ी १४ चढ़तां री मोरथ थो कुंभ लगन में अर इण रीत सु हुवौ जिण री विगत पेले दिन सुद ६ री तो श्री हजूर साहब रै बूत हुवौ नै सभा मंडप में काठ री बंगलौ हुवौ नै च्यारों कांनी तौरण लागा मंडप हुव नै·······तिनै आदळे विधि पुरवक सारौ होम हुवौ नै सिणगार चौकी उपर विछायत होय ·······पछै व्यास हरपचंदजी तिलक कीयो नै मोतीयों रा आपा चेपीया, पोसाप केसरिया पाग वगैरै पधरावण नै जवार सिरपेच मोतीमां री फुलमाळा वगैरै सारौ जवार तथा गेणौ पधराव नै हो ·······पछै वगड़ी ठाकुरां तरवार वधाई ·····पछै पैली तो उमरावां री·······पछै दिवांण मुतसदी पवास पासवांन जनांना ······ सारां री निजर निछरावळ हुई नै तोपां री सिलकां १२० हुई······· । उणहीज दिन दिवांण मु० लिषमीचंदजी रा बेटा सुकनचंदजी नै किलादार (नियुक्त)······· ।"

४. आगे वर्णित है कि महाराजा अजेन्ट साहब से मिल कर राज्यकार्य के लिये विभिन्न सरदारों को गांव इत्यादि के पट्टे देने, राज्य-कार्य के लिये नियुक्तियां, महाराजा के अजेन्ट साहब से परामर्श करने, होली का उत्सव मनाने, महाराजा का सूरसागर जाने, कीलेदारी के पद पर देवकरण को नियुक्त करने, फिर उसे हटा कर अहमदनगर के पंवार अनाड़सिंह को नियुक्त करने इत्यादि घटनाओं का विवरण तिथियों सहित है।

५. महाराजा की ओर से भावा रार्जासह, सोहनसिह और सजनसिह को गांव पट्टे में मिले उसका विवरण, भावा भमुतसिह, लालसिह, शिवनाथसिह, सरूपसिह का अजमेर जाना, महाराजा के कंटालिया ठाकुर संभुसिह की मातमपोसी कराने जाना (आश्विन सुदि ६), फिर महाराजा और एजेन्ट के रावण के मेले में जाने (आश्विन सुदि ६) इत्यादि घटनायें वर्णित है।

६. पौष वदि १४ को वडे साहव और अजेन्ट के अजमेर से जोधपुर आने, उसका स्वागत करने, माजी साहिबा से उनकी वार्ता, चारों ही भावों को पट्टे इनायत हुए उसकी सूची जनानों को पट्टे प्राप्त हुए उसकी विगत (वैसाप वद १४ लगाय ५ तांई) घटनाओं का वृत्तांत दिया गया है।

७. माघ सुदि १४ के एजेन्ट के फिर जोधपुर आने का विवरण इस प्रकार दिया है—

"मा सुद १४ अजंट गीरांट साहव किला पर आय अरज करी कै लाहोर वाळां सुं हमारे लड़ाई वड़ी हुई जवर हुई जिसमे हमारी सिरकार की फतै हुई····।"

८. महाराजा के विवाह का वृत्तांत—

"फागण वद २ श्री हजूर साहवा रौ व्याव गांव झालामंड राणावत गभीरसिंघजी रै काका री वेटी वेन सुं हुवौ श्री हजूर हाथी रै होदै विराजीया नै पवासी मे पोकरण ठाकुर बैठा······। वद ३ ने अजंट गीरांट साहव नै झालामड बुलाया·········।"

कुछ ज्येष्ठ महिने की घटनायें इस प्रकार लिपिवद्ध है—

(अ) जेठ सुद ३ कुचामंण रा ठाकुरां नै मौसर हुवौ वतलावण हुई······।

(ब) सुद ८ श्रीजी साहब री वरसगांठ रौ समोरयौ हुवौ·······।

(स) सुद १० कुचामंण ठाकुरां नै मौसर हुवौ नै वतलावण हुई·········।

(द) सुद १२ मेडतीया दरवाजा बारे सेपावतजी रा तालाब ने राईकाबाग विचै पलटण रा लोक रै रेण सारू छावणी करावणी जिणरौ कमठौ सरू हुवौ····" आदि।

९. वडा साहव के जोधपुर आने, उमरावों तथा माजियों की नाराजगी की जाच इत्यादि कराने का हाल इस प्रकार दिया है—

"पोस सुद १२ वडा साहब री·······गढ उपर हुई, पांणी साहब गढ उपर हीज पायौ रंग राग नाच कूद हुवौ पछै श्री हजूर सु ईकंत हुवा। तरै साहब कयौ कै श्री माजीसा अर उमराव नाराज है सो आप नाराज मत रायौ इस वात मे आपके हक में अच्छा नही है जिण पर श्री हजूर फुरमायौ—माजी साहवा तो नाराज है नहीं, दोय च्यार बांमण है सो वेकाते हैं अर उमरावा कीसी का हम कुछ लिया है नही, जिण उपर साहब पाछौ कयौ—माजी साहब कुं वेकाणे वाळां कुं कैद करौ·······।"

आगे आसोप, रास, बगड़ी, वासणी के ठाकुरों को गांव इत्यादि मिले उसका व्योरा दिया गया है।

१०. सीकर रावराजा लक्ष्मणसिंह के (पड़दायतों का) पुत्र मुकनसिंह को पकड़वाने का उल्लेख इस प्रकार है—

"(१९०४ कातिक) वद ३ सीकर रावराजा लिछमणसिंघ रा बेटा पड़दायत रा मुकनसिंघ हुकमसिंघ सो सीकर सुं डूंगरसिंघ जवारसिंघ सांमल था जिणां नै पकड़ण रै वासते जैपुर रा अजंट री पिण तिपावट अठा रा अजेन्ट रै नावै आई ...... जिण सुं पंवार अनाड़सिंह फौज लीया डीडवाणा कांनी थो नै......डेरा लगाय जैसलमेर रा गांव मुजे में था जठै अनाड़सिंह जाय नै भादवा में ही पकड लीया था सो आज अठै जाबता सुं मेलीया तिणा नै गढ़ उपर बाभा भमुतसिंघजी रै डेरा हवेली में रापीया...... ।"

११. मेसन द्वारा सेखावतों (डूंगजी, जवाहरजी) को पकड़ने के लिए जाने, एजेन्ट गीरांट के स्थानान्तर होने का वृत्तांत—

"(१९०४ मार्गशीर्ष) सुद १३ तथा १४ सिकतर मैसन साहब सेपावता नै पकड़ण नै मुदे फौज में गयो थो सो पाछो आय सु आज अजंट साहब साथे गढ़ उपर आयो...... पौस वद ७ अजंट गीरांट साहब री बदळी री खबर आई, जिण सुं इणां री आज गढ़ उपर मीजमांनी हुई सो गीरांट साहब नै मेसन साहब हाट कासल साहब फौज सेपावतां नै पकड़ण मुदे फौज में गया था सो पकड़ पाछा आया सो आज गढ़ उपर अजंट साथे आय पाव कीयो विदायत हुई......फतेमैल में साहब थाणो पायो... पछै पातरिया भगतणियां री फतेमैल रा चौक मे गावणो हुवो ... ।"

१२. अदालत में हुई नियुक्तियों इत्यादि का विवरण—

"(१९०४) फागण वद ४ की चीत्र सेवा री अदालत छंगाणी सिवलाल नैं जोसी सीवनारायण रै थी सो अवेज मं० हरनाथ नै हेमचंद रै हुई नै दिवाणी अदालत में मु० प्रतापमल था तिणरी अवेज छंगाणी सीवलाल नै मेलीयो...... । अजंट साहब री उकीलायत मं० सिवचंद लिपमीचंदोत रै हुई ...... ।"

१३. वि० सं० १९०४ ज्येष्ठ वद ७ को भूकंप में हुई क्षति, दान-पुण्य का विवरण—

"जेठ वद ७ आबूजी उपर धरती धूजी आधी रात तिण सुं भीत जाय गांव पाड़ गई नै भीनमाल में जाय गांवां पड़ी नै आदमी दबिया नै धरती कदेई रातरा कदेई दिन रा थोड़ी घणी दीन ३५ तांई आबूजी उपर धूजी जेठ वद ८ रात आधी में घड़ी दोय घटतां धरती जोधपुर में धूजी नै पछै तीन चार बार धूजी सु श्री हजूर रू ५०० संकलप किया नै आयसजी श्री लिपमीनाथजी उण हीज रात रा रू ५००० पुन कीया ...... ।"



१४. हाकिम नियुक्त किये उसका उल्लेख—

"(१६०५) मिगसर वद ११ परबतसर री हाकमी जोशी सांवतरांम नै इनायत हुई नै मेड़ता रा चौतरा री पोतदारी मा० जोगीदास रै हुई........।"

१५. अदालतों की दरोगाई का ब्यौरा—

(अ) फोजदारी पटानवेस पंचोली धनरूप नै ।

(ब) दिवांणी अदालत सा रायराजमल नै पटानवेस पंचोली नवलमल नै ।

(स) उकील री अदालत लाला दौलतसिंघ नै ।

(द) चित्रसेवा री मा० गिरधरचंद नै व्यास जेठमल नै ।

१६. वि० सं० १६०६ श्रावण के महिने में विभिन्न परगनों के हाकिम आदि नियुक्त किये उसका ब्यौरा इस प्रकार दिया है—

"सांवण वद गोड़वाड़ री हाकमी आसोपा हिरदेरांम उतमरांम रा भाई रै हुई। सांवण वद ५ पटीयाल री उकील बेटी रो ब्याव रौ पलीतो लेने आयौ तिण नै सीप हुई नै सीरोपाव हुवौ। वद ७ पास हवाला रा गांवा रा तपतां री बदली हुई। प्रगने नागौर रा गांव जोसी प्रभुलाल तालके, जोधपुर रा भंडारी सिरीचंद तालके, मेड़तो परबतसर दौलतपुरो मा० प्रतापमल तालके, फलोधी पो० भीनमाल पटानवेस तांनै केईक फुटकर गांव........।"

१७. महाराजा के कई बार ठाकुरजी के दर्शन हेतु चौपासनी मन्दिर जाने का उल्लेख है, यथा—

"(वि०सं० १६०६) भाद्रपद वद ८ श्री हजुर साहब कायलांणा सुं चौपासनी दरसण करण नै छड़ी असवारी पधारी सो आगै श्री ठाकुरजी रौ जनम उछब हुवा पछै श्री गुंसाइजी माराज जसोदाजी वण नै ठाकुरजी रा मुढ़ा आगै निरत करता था जिण रा पगां में रूपारा सांकळ था सो तो श्री हजुर साहब हाथा सुं काढ लीया नै सोना री साटां आपरा हाथ सुं पैराय दीवी........।"

१८. बुधनाथ के मृत्युपरान्त स्त्री के सती होने का उल्लेख—

"(वि०सं० १६०६) भाद्रपद सुद ८ आयसजी श्री सुरतानाथजी रा बेटा बालानाथजी सुं छोटा बुधनाथजी काळ कीयौ तिणां री बहू सत कीयौ निजमिंदर रा नौरा में समाद दिवी, कोटवाळां वोत सी सती नी हुण री हुजत करी पीण मानी नही नै समाध दे दीवी ......।"

१६, महाराजा का जालोर प्रस्थान करने का उल्लेख इस प्रकार है—

"(वि०सं० १६०६) मु० मुकनचंद नै दिवाणगी री दुपटौ हुवौ। मीगसर वदी श्री हजूर जाळोर पधरण मुदे डेरा दापल हुवा वद ४ डेरा गांव मोगड़े हुवा।

वद ५ डेरा गांव रोयठ हुवा। ठाकुर गुरतांणसिंघजी प्रचलसिंघोत कोस २ तांई मामा आया पछै श्री हजूर कोट मे पधारीया सो ठाकुर रू० २००० नै घोड़ा २ निजर कीया नै श्री हजुर ठाकरों नै सिरेपाव इनायत कीयो·······। वद १० श्री हजूर पासे विराज पाली री कचेड़ी में पधारीया·······, माहाजन सारा राजी हुवा निजर रो विगत—मोरां १२५ रुपीया ४००० इण मुजब हुई। मिगसर वद १२ पाली सुं कूच हुवो सो गांव चाणोद·······डेरा हुवा ठाकुर कोस २ सांमा आया सारी फौज री सरभरा प्राछी तरै हुई·······पछै चांदराया डेरा हुवा वद ७ डेरा गांव प्राहोर हुवा और अजंट सर सपसपीर साहब मेरणपुर री छावणी था सो श्री हजूर माहब रा बुलावा सुं प्राहोर प्राया ·······।"

आगे महाराजा के साथ चले उमरावों इत्यादि की सूची अंकित है। फिर घोड़ों, हाथियों की संख्या भी दी है—

"ग्रोर लोग घोड़ा १०००, ऊंट १०००, हाथी ७, रथ १२, पीजस ७, पालयीयां ४, तांगा १००, उंट जाधोड़ा २५, जुमले भीड भाड़ ग्रादमी पांच हजार तथा छव हजार थी।"

२०. महाराजा के जालोर, ग्राबू, बिलाड़ा, मेड़ता ग्रौर नागौर भ्रमण करने का वृत्तात है। (डावी व जीमणी मिसल के) सरदारों की नामावली इत्यादि ग्रंकित है।

२१. तखतसिंह के पुत्री की शादी जयपुर नरेश सवाई रामसिंह के साथ करने का दहेज में दिये गये ग्राभूषण इत्यादि का विवरण दिया है। यथा—

"(वि० सं० १९०९ ग्रषाढ) वद ३ श्री बाईजीसा नै दायजौ देण सारू दौलतपांना री चौक सिणगारीजियौ सो उमराव मुसदी वगेरे सारा नै सैर रा ठावा ठावा विरांमण माजना वगेरै नै सारां नै देषण री दवायती हुई सो च्यार पोर दिन ताई सारा देषीयौ तिणरी ·····विगत—

जवार री रकमां तीन तरै री—हीरां री, पनां री, मांणक री,
१ १ १

हीरां री—

१ बोर, १ मांग टीको, १ आड, १ बोदी, १ टोटी जुमर जिकां सुधा, १ हास, १ तीमणीयो, १ कंठसरी, १ हार सतळ, ६ झुटंक जेलां सुधा, १ कड़ो मोटो, १ बाजु बंद, १ मादळीया वां सुधा, १ कातरीया बां सुधा, १ बंगड़ीयां जुवा सुदी, १ चोटी वंद, १ हथ चांकला, १ बींटीयां, १ कंदोरो, १ मुंदड़ो, १ दांवणां, १ कड़ला, १ तोडा १ पुणचीयां, १ पगवान, १ अणवट, १ वीछुड़ीयां, १ चोटुड़ीडा, १ पुणचीयां, १ वदी, १ नथ, १ फांटो·······।

उपर मुजाबीक मजा री नै इणी मुजाबिक मालम री मांगीना री रकमां सेत न्यारी मजरा, हप जूम, गणगान
 १ १ १
उपर मुजाबीक री गांना री मंडो लागो।"

पाछे (दहेज) सोने चांदी के बर्तनों, कपड़ों, डावड़ियों (दासियों) इत्यादि की सूचियां दी है।

२२. दीवान मुकनचंद को बंदी बनाने का उल्लेख इस प्रकार है—

"वि० सं० १९१० माह सुद ६ दिवान मुकनचंद ने गढ़ उपर पटकाव दियो नै कोटवाल जाम दियालो री हवेली पेस गोली अर भाई बेटां सारां नूं पकड़ गढ़ उपर लायो……नै माईन परगना में कागद लिखीया गया नै मु० मुकनचंद रा वासता हुवै जिणा नै तो पकड़ मिजो……।"

२३. महाराज कुमार जसवन्तसिंह का विवाह जामनगर होने का वृत्तान्त है।

२४. आगे वर्णित है कि नागौर पर कब किसका अधिकार रहा।

२५. उमरावों, ठाकुरों इत्यादि से मिलने का भी विवरण जगह जगह आया है यथा—

"(१९११) फागण वद ६ पोकरण ठाकुर ने मोसर हुवो घडी दोयेक वतलायण हुई, फागण वद १० उमरावां ने मोसर हुवो आउवो, आसोप, निवाज, भादराजन, वाकरो, समदड़ी, लवेरो नै फेर ही दस बारै आसांमी घणा सु माया तिणा नै मुजरो हुवो।"

२६. महाराजा का विवाह भाटी नथराज की पुत्री से होने का उल्लेख—

"(१९१३) मिगसर वद ७ दुतीक बुध श्री हजुर साहबा रो ब्याव पावता माजीरी भतीजी भाटी नथराज री बेटी सुं बालसमंद बाग में हुवो नै गढ़ उपर तोपां री सिलकां १०५ हुई।"

२७. वि० सं० १९१३ में हाकिम नियुक्त इस प्रकार हुए—

"मीगसर सुद ६ दरीबाभारी हाकमी कुसलचंदोत भंडारी गणेशचंद रै हुई नै परबतसररी हाकमी मुं सिंभूमल रै हुई। सुद १५ षजांना री दरोगाई मं० बादरमल रै हुई……। ……जोधपुर री हाकमी मं० भागचंद रै हुई नै कीलादारी अनाड़सिंध नै हाथ री कुरब नै दुपटो इनायत हुवो……।"

२८. गुलर ठाकुर विसनसिंह का अंग्रेजों से विरोध करने का उल्लेख—

"(वि० सं० १९१३) चैत सुद ११ गुलर ठाकुर विसनसिंघ मंगलसिंघोत सिरकार रौ हुकम मानें नहीं नै लागत रकम देवे नहीं तरै फौज जावण रौ हुकम हुवौ नै फौज मुसायब सि० कुशलराज ठैरीयौ।"

२९. आउवा वालों के बागी होने का उल्लेख व अंग्रेजों द्वारा चेतावनी दिये जाने का वृत्तांत इस प्रकार है—

"(वि०सं० १९१४) मिगसर वद ७ डीसा री छावणी सुं गोरां आउवा वालां नै सभा देण मुदे आवें है तिणां री सरभरा करावण सारू रूपीया दे दोढ़ीदार वछराज नै मेलीयौ........ओ इसत्यार अंगरेजी सिरकार रौ आयौ जिण में लीपीयौ कै जो बागी लोग है तिनकूं कोई मदत देवेगा या सरण रंवेगा तो उसकूं हुमारी सरकार आउवा की बरोबर बागी समजेगा।"

३०. इसी वर्ष आसोप का पट्टा जब्त करने का उल्लेख है—

"मींगसर सुद ७ आसोप रौ पटौ जबत होय मं० भागचंद नै हुवौ सुद १० आसोप रै ठाकुर दस पांच गांव उपर रूपीया ठैराया नै लूट पौस कीवौ और भा० भागचंद फौज लै बडलू आसोप कांनी चढ़ीयौ।"

३१. हाकिम फिर से नियुक्त हुए उसका विवरण इस प्रकार दिया है—

"जोधपुर री हाकमी सि० लिपमीचंद रै हुई, अर डीडवाणे री कोटवाली नाथावत व्यास उतमरांम रा बेटा हरनाथ रै नांवै मावारी में हुई........जालोर री हाकमी मु० पुनमचंद रा बेटा रै मावारी रा रू० ५२००० में ....ओर मेड़ता री हाकमी प्रो० रतनलाल रै मावारी रू० २४००० में हुई.........। गोड़वाड़ री हाकमी मं० भागचंद रै हुई.........।"

३२. वि० सं० १९१५ में नियुक्तयों का विवरण इस प्रकार दिया है—

"वडा साहब री उकीलायत पठांण सेवाजषा रै थी सो मुनसी चुनीलाल र हुई........। कोलीया री हाकमी व्यास गंगाराम रै हुई नै दोलतपुरा री हाकमी भंडारी अचलदास रै हुई, चैत वद १० अजंट साहब री उकीलायत पं० जोरावरमल रै हुई.........।"

३३. बागियों द्वारा गांव इत्यादि लूटने, महाराजा और अंग्रेजों द्वारा उनको दबाने आदि का वृत्तांत विस्तार से दिया है।

३४. भूमि नापने वाले सरकारी अधिकारियों की खातरी महाराजा द्वारा करने का उल्लेख है—

"पोस वद ७ (१९१७) विलायत सुं साहब लोक जणा ३ जमी नापण नै आवैं, तिणां री सरभरा करावण नै रैणा मुदे मुनसी पं० हीरालाल पं० लालो

हरदेवसिंघ पंडित ग्रज्योयाप्रसाद पीहत गीवनारायण री वेनोई नै ग्रठा सुं पढ़ाया........।"

३५. महाराजा की ओर से सती प्रथा रोकने के लिये प्रयत्न करने का उल्लेख—

"ठाकुर गोरधनसिंह रांमसरणे हुयो तिण रै लारै ठाकुरांणी सती हुई तिण मुदे गांव तो जपत हुयो नै सती रा दाग देवण में था तिण में ठाया ठाया माठ दस आदमीयां नै पकड़ लाय चांतरी भागसी में घाल दीया........।"

३६. कुछ नियुक्तियां आदि का ब्योरा इस प्रकार दिया है—

"आषाढ़ सुद १४ (१६१६) फौजदारी री ग्रदालत मंहारी पचांणदास नै सांदुनाथ दोनुं रै हुई.... ...ग्रौर जोधपुर री कोटवाली कपतांन दुरगाप्रसाद नै...... नागौर री हाकमी रसालदार मुनालाल रै........पाली री हाकमी मेता हरजीवण री, गोढ़वाड़ री हाकमी सि० सीयराज री।"

आगे फिर कुछ पदों के लिये नियुक्तियां इत्यादि का वृत्तांत दिया गया है।

३७. ख्यात के ग्रंत में तिंवरी ग्राम का पट्टा जब्त करने इत्यादि का वृत्तांत है।

"गांव तिंवरी रो प्रोहित ग्रनाड़सिंघ रामसरण हुय गयो तरै तिंवरी जब्त हुई तरै तिंवरी वाळां कवराज भारथदान रो मारफत तिंवरी री उठांतरी व जनानी डोडी री लवाजमो सरू हु जाय तिण रा रू० २०००० बीस हजार धामीया पिण मंजुर हुई नहीं तरै तिंवरी वाळा धरणा रै वासतै गांव में समाचार दीया....... सु जीव लेने भाग गया नै कितराक हात आया जिणां नै भापसी में घाल दिया।"

ख्यात में वि० सं० १६१६ तक की घटनाओं की प्रतिलिपि की गई है महाराजा के अग्रिम १० वर्षों का हाल इसमें नहीं है। ख्यात में महाराजा के अनेक वार कायलाने, सूरसागर, बालसमंद और मेलों इत्यादि में जाने का जिक्र आया है, इसके अतिरिक्त महाराजा की वर्षगांठ उत्सव प्रत्येक वर्ष मनाने, उमरावों इत्यादि सरदारों के मृत्यु उपरान्त महाराजा द्वारा शोक प्रकट करने का उल्लेख यथा स्थान दिया है।

इस प्रकार ख्यात में अनेक छोटी छोटी घटनाओं का वर्णन है वास्तव में यह एक रोजनामचा है जिसकी अधिकांश घटनाएं सामाजिक मान्यताओं के अध्ययन हेतु उपयोगी है।

ख्यात की प्रतिलिपि दो व्यक्तियों के हाथ से की गई है। लिखावट घसीट में है।

४०. तखतसिंह की ख्यात

१. तखतसिंह की ख्यात, अवतार चरित्र, नरहरिदास आदि, २. पु० प्र० ३. २२, ४. ३३.५ × २२ सेमी०, ५. ३८५, ६. ३०-३२, १७-२०, ७. वि० सं० १८३३, ई० सन् १७७६ आदि, ८. अज्ञात, ६. व्रज, राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के प्रारंभ में अवतार चरित्र (नरहरदास कृत) कृति लिपिबद्ध।

प्रारंभ—

छंद साटक

सुंडा डंड प्रचंड मेक डसणां मदगंध गंडस्थलं
.... ॥१॥

पुष्पिका :-

इति श्री अवतार चरित्र बारट नरहरिदासेन विर चित सूंपूरण संवत १८३३ असाढ वद ५ गुर लिपणो सरू कीयो थो सु फागण सुद ८ रव संपूरण लीपीयो····।[1]

तखतसिंहजी की ख्यात :

यह किसी मूल ख्यात की प्रतिलिपि है जो अपूर्ण है। प्रतिलिपि किसी अन्य व्यक्ति के हाथ से ग्रंथ निर्माण के बाद की गई है। इसमें महाराजा के दिनचर्या इत्यादि घटनाओं का वृत्तांत है।

प्रारंभ—

"समत १९२५ रा मिती आसोज सुद ८ रै दिन आबूजी सुं पाछा पधार नै सैर रै बारै रात आधी वजीयां दाषल हुवा, नै नम रै दिन तीसरै पहर पछै असवारी हुई हाथी रै होदे बीराजीया, खवासी में राणावत जोरावरसिंघ गंभीरसंघोत मोरछल कीयो नै बहुत जलुसात सु·······।" (पत्र—३१)

इसके अतिरिक्त महाराजा तखतसिंह जी के कुछ फुटकर कवित—

(दलद हूवौ दूर कूच हूवौ आणंद मन भायो·······)

आदि भी अंकित है।

ग्रंथ दो व्यक्तियो के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मंढ़ा हुआ है। अन्त में कुछ पत्र रिक्त पड़े है। पत्र हाथ के बने हुए है। लिखावट पत्रों के एक ओर ही है।

---

१. लिपिकर्ता का नाम मिटा दिया गया है।

४१. मुरारदानजी की ख्यात

१. मुरारदानजी की ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा०प्रा०वि०प्र०, ३. १५६५८ ४. ३३.५ × २६ सेमी०, ५. ३३०, ६. १२-१४, ७. २० वीं शताब्दी का प्रारंभ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ख्यात में मारवाड़ के संस्थापक राव सीहा से महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) तक का हाल दिया गया है। घटनाएँ प्राय. जोधपुर की ख्यात से मिलती जुलती हैं, पर अनेक बातें विशेष हैं। घटनाओं के संवत राव जोधा के वृत्तांत से लिये गये हैं।

ख्यात की विशेषताएं—

१. विभिन्न युद्धों में मारे गये योद्धाओं की सूचियें विस्तार से दी गई हैं, जैसे घरमाट के युद्ध में काम आने वाले वीरों की सूची आदि।

२. मल्लीनाथ के पुत्र जगमाल के वंशजों (महेचों) का हाल कुछ विस्तार से दिया है।

३. इसमें विविध राठोड़ राजाओं से निकलने वाली शाखाओं, प्रशाखाओं के विशिष्ट व्यक्तियों संबंधी अच्छी जानकारी दी है।

४. इस ख्यात में न केवल विभिन्न युद्धों में मारे जाने वाले योद्धाओं की विस्तृत सूची व उनका परिचय मिलता है अपितु प्रत्येक सरदार के अधीनस्थ योद्धाओं में से वीर गति प्राप्त होने वाले वीरों की संख्या भी अंकित की गई है।

५. सरदारों को कब कौनसी जागीर के गांव आदि प्राप्त हुए उसका ब्यौरा भी मिलता है।

६. मूलतः प्रमुख बड़ी घटनाएं अन्य ख्यातों से मिलती जुलती है पर इसमें स्थान स्थान पर अतिरिक्त सूचनाएं भी दी गई है जो शोधकर्ता के लिये बड़ी उपयोगी है।

मारवाड़ के शासक राव सीहा की स्त्री को स्वप्न आने की घटना से ख्यात का प्रारंभ होता है।

प्रारंभ—

"पाली रा डेरा सीहोजी वन में सिकार गया सिहाजी री वैर सुती थी तिण नुं सुहणो लाधो जाणं म्हारो पेट पाटा छै बेलो जायो छै तिण नुं नाहर ले जावै छै तरै आप उठ नै वासै हुई छोडावण नुं सो बेटारा पेट फाड़िया छै... आदि।"

प्रमुख महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है :—

१. सीहा का वृत्तांत :—

सीहा की मृत्यु आदि के बारे में लिखा है—

"पछै कनोज गया कितराक वरस राज कीयो राय कुंतसेन रै वंश री राय जैचंद दलै पांगुळो छै जैचंद श्राप वेद कीवी घणो साथ काम ग्रायो.......पाबै पड़िया सो ब्राह्मण उपाड़ नै ले गया गोइंदाणे गढ़ जा'र रह्या कितराक दिन सीहोजी गोइंदाणे राज कर धाम पधारिया। तरै बेटा नूं कह्यो—ये पाली जाय रहजो, उठा रो राज थांहरै आवसी.......।"

२. राव श्रास्थांन का वृत्तांत :–

आस्थांन द्वारा गोहिलों से युद्ध कर खेड़ हस्तगत करने का वृत्तांत है।

(दोहा—श्रणभंग श्रासहथान, खेड़ धरा.......)

फिर भीलों से ईडर का राज्य छीन कर श्रपके भ्राता सोनग को देने की घटना का विवरण दिया गया है।

(दोहा—वाछा छळ रखवाळ, श्रासथांन सोनग श्रज
कवित्त—कन्नोज उठिया, केण श्रारंभ महाबळ.......)

३. राव धूहड़ का वृत्तांत :–

राव धूहड़ के वृत्तांत में कुछ छप्पय कवित गीत श्रादि देकर वार्ता दी है।

छप्पय—पर सीमां पेसार, धेर रावतां जूश्राणां
गीत—श्रसि झाटकियां भड़ कियां श्रसंकित.......)

इसमें श्रंकित है कि धूहड़ चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति को कर्नाटक से किस प्रकार लेकर आया जो राठौड़ों की कुल देवी नागणेचियां कहलाई।

"पछै चक्रेश्वरी पत्थर री होय नागाणे विराजी सो श्रजै नागाणै हीज है.... जा पछै चक्रेश्वरी नागणेची बाजी.......।"

४. रायपाल का वृत्तांत :–

रायपाल की वार्ता में वर्णित है कि उसने राजपूत मांगा को अपना भिक्षुक बनाया व उसके पुत्र चंद हुआ, जिसके वंशज रोहड़िया बारहठ कहलाये। यथा—

"राव रायपाल जादमवंशी राजपूत मांगा नूं सर्वस्व धन दै आपरो भिक्षुक कियो, मांगा रो बेटो चंद हुवो चंद रै वंश रा रोहड़िया बारहट हुवा। रोड़ नै बुध भाटी नूं चारण कियो इण वास्ते रोहड़िया बारट कहीजै।"

कवित—

"मही रेलण रायपाल, चंद भाटी किय चारण"

५. राव जालणसी का वृत्तांत :–

राव जालणसी की वार्ता में चांदाणी ग्राम के एक श्रमर वृक्ष के फल को

सोढ़ा राजपूतों द्वारा तोड़ने पर राव द्वारा उनके डेरे लूटने व उनसे दंड वसूल करने की घटना का उल्लेख है।

६. राव छाडा का वृत्तांत :–

राव छाडा की वार्ता में लिखा है कि उसने अपने पिता जालणसी की इच्छानुसार सोढ़ों को दण्ड इत्यादि दिया। जैसलमेर पर चढ़ाई करने के संबंध मे गीत दिया है।

(गीत—तलवाड़ा हूंत महादळ ताणे, उतरियो ईसावली श्राप)

७. राव तीडा का वृत्तांत :–

राव तीडा के सिरोही के शासक से संघर्ष हुआ उसका उल्लेख इस प्रकार किया गया है—

"तीये अरसी सीरोही रा धणी कनै डंड लीधो अर जोरावरी सूं परणिया, सोनगरा कना सूं भीनमाल ली, वालीसां कनासूं चाकरी कराई, लोद्रवा रा धणी भाटियां कना सू डंड लियो, सोलकियो कनै पेसकसी लीवी·······जठै साथ पडतो तठै जांणे तीड इण वांसे तीडो नांव दिराणी ·······तीडोजी सिवाणे चहूवांण सातल सोम रे बदले अलाउद्दीन सूं लड़ काम आया[1]।"

८. राव माला का वृत्तांत :–

राव माला की वार्ता मे एक स्थान पर लिखा है—

"राव माला री बहन विमली भाटी घड़सी नुं धारेचे दीधी पहला विमली देवड़ा नुं परणाई थी सो देवड़ा रै पेट रो बेटो हुतो सो बिमली रै साथे गयो तिण नै घड़सी खाडाल रा गांव दिया। खाडाल रै गांव करण इण विमली रै बेटे राजस्थान बांधियो, तिण सूं इण रै वंश रा कणावंध देवड़ा कहावै छै।

रावस माले गांम भाद्रेश्वर काछेला नै सांसण दीयो·······।"

९. राव वीरम का वृत्तांत :–

राव वीरम के बारे में लिखा है—

"पछै जगमाल रै नै वीरम रै अण वण हुई तरै वीरमजी नै महेवा बारै काढ दिया तरै तीना कोसां उपर भाखर वरिया कनै गाम वीरम नगर वसायो ·····पछै वीरमनगर सूं वीरमजी नै जगमाल काढ दियो·······वीरम नगर सूं सोयल माहे आया तरे वळद थाक गया गाड़ा, आधा चाले नही, जद वीरमजी आपरा बड़ा बेटा

१. ओझाजी के अनुसार (जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम भाग, पृ० १७८-१७९) यह घटना निराधार है।

देवराज नैं उठै हीज रैत कने राखिया अर रैत पण उठै वस गई तिण गाम री नाम सेचावी दियो सेचावे देवराज नैं राव वीरमजी जोयां रै बीबूड़े गया……जोयां वीरम री घणो आदर कियो, चीबूड़े मांही वीरम मांहे जगात लाख रूपियां री उपजती थी सो जोयां वीरमजी नै दीवी। वीरमजी रै बेटा गोगादे घणो अनीतो तिण जोयां रै कबरां उपर पूजनीक फरास थो वाढ़ ढोल घड़ायो……तरै जोयां वीरम री गाया लीवी …… वेढ हुई, वीरम मारीयो।

दोहा—फिर वाढ़े फरहास, थिर जोयां री थापना……।"

१०. राव चूंडा का वृत्तांत :-

राव चूंडा की वार्ता में उन्ही घटनाओं का जिक्र है जो जोधपुर की ख्यात में वर्णित हैं। एक जगह सरदारों को मिलने वाली खुराक का वृत्तांत इस प्रकार दिया है।

"चूंडा रै मुजाई री वाकी—रोटी दोढ़ सेर री नै दोढ़ पाव घृत, दोढ़ कुड़छी मास, दोढ़ सेर राबड़ियो दूध, दोढ पाव मिसरी दोनुं बखत आदमी दीठ पुर्सीजै……राव चूंडो चांवडवाय आयो तरै उठै तोल नहीं जद घृत माप सूं मापने दियो, चांवडा चामुडा रो थान……।"

चूंडा की मोहिलाणी रानी द्वारा खुराक में कटोती करने पर सरदारों के रूष्ट होकर चले जाने का उल्लेख है। वार्ता के बीच बीच में अनेक दोहे भी अंकित है।

११. चूंडा के पुत्रों का हाल :-

इसके आगे चूंडा के पुत्रों व नरबद सतावत संबंधी वातें दी हैं, जो मुहता नैणसी की ख्यात से मिलती जुलती हैं।

१२. राव रिड़मल तथा जोधा का वृत्तांत :-

राव रिड़मल व जोधा के जीवन की घटनायें प्रायः वे ही है जो अन्य ख्यातों में मिलती है।

१३. इसी प्रकार जोधा के पुत्र सातल व सूजा का वृत्तांत दिया है। सूजा के कुंवर वाघा के प्रधान अमरा संबंधी कुछ घटनाएं दी है जो अन्य ख्यातों में नहीं मिलती यथा—"खड़िया धरमा रौ बेटो अमरो वाघा राव रो प्रधान हुतो। भाटियां रो राज मतोड़ो हुतो ……वाघे कंवर गांमा २४ सूं मतोड़ो खड़िया, अमराने पट्टो लिख दियो तरै भाटियां नुं मार मतोड़ा बारै काढ दिया। अमरे मतोड़े राज कीयो……अमरसी रै संतान नहीं आपरी कांवलियां री तीजी पांती अमरे गूजर गौड़ ब्राह्मणों नै दीवी सो गूजर गौड़ ब्राह्मण खावै है ……आदि।"

१४. राव गांगा का वृतांत :–

राव गांगा द्वारा सांसण में दिये गये गांवों का उल्लेख इस प्रकार है—

(क) शिवराज नूं दिया त्यांरी विगत गांम खारो बेरो तफे हवेली सहर सूं कोस ७ रेख ३०० री प्रोयत खींवावत सेता नुं दियो तिण रा हमे भोपत गुणेश भारमलोत है नैं जीवणदास दलपतोत है।

(ख) गांम खारो बेरो पांचलो तफे हवेली सैर सूं कोस ७ रेख १०० री प्रोयत सेवजी खीढ़ावत नै दियो हमे डूंगरसी जसा रो संहसो मेहाजल रो वीरमदास अमरा रो छै।

(ग) गांम घेविडो तफे ग्रोयसी प्रोयत जूजणसल बीजावत नु दीयो हमे सातल रा मदा सरो वीठल राघा रो है, सहर सूं कोस ११ रेख रू २०० घेवड़ा री

(घ) गाम घटियालो तफे बैहलवा रेख रू २०० री, सो प्रोयत केसा कूंपावत नूं दियो, हमे प्रोयत ठाकरसी माधव रो जगनाथ किसना रो गोपीनाथ जगमाल रो है।

(ङ) गाम सूराणी खुरद तफे कोडणा सहर सुं कोस १२ डुंगर कनै रेख १०० प्रोयत सोभा मदन राजावत सोभदा राजगुरू नुं दियो हमे कानों अखावत तीकम भानावत है।

(च) गाम खोडेचो तफे पीपाड़ सहर सूं कोस १७ नांदण पीपाड़ कनै रेख १५० री, सो श्रीमाली रामा मुरारी रा नुं दियो हमे रिणछोड़ चितांमणी रा नैं नरसिंघ चंडीदास रो है।

इसी प्रकार गांव चंगावड़ा (१० कोस रेख १००) येहड़ चकोर अमरावत को, गांव बडियासणी (सोजत से ६ कोस, रेख ४००) मूला कूंपावत को, गाव चाहडवास (सोजत से ७ कोस रेख ४००) प्रोहित मूला कूंपावत के, गांव मालपदियो (सोजत से ५ कोस रेख ४००) मूला कूंपावत को ही, गांव धरमा बसणी (रेख ४००) श्रीमाली व्यास अनंत दीक्षित को, गांव पलावलो (सोजत से ७ कोस रेख २००) व्यास सादा उद्धतावत को गांव तालकियो (सोजत से ५ कोस रेख ५००) ब्राह्मण डूंगर नाथावत को, गाव मूलियावस (सोजत से ७ कोस रेख २००) बारट तेजसी बीसलोत को, गाव रेपड़ावस खुरद (सोजत से कोस ५ रेख १५०) बारट भैरू नीबावत को, गाव कोलू (फलोधी से कोस ७ रेख ५००) भोपा घांधल भाखर सोहड़ तथा कला छाछावत को देने का उल्लेख है।

१५. महाराजा गजसिंह का वृतांत :–

राव गांगा के पश्चात् महाराजा गजसिंह का वृत्तांत दिया गया है उनके द्वारा दिये गये सांसण के गांवों की सूची इस प्रकार है :—

गांव
रूपावस—चारट राजसी भखावत
जालीवाड़ो खुरद—बारट राजसी प्रतापमलोत
पीपावास
वमी—प्रासीया डाभी रामावत
हिंगोलो खुरद—आढ़ा किसना दुरसावत
भाटलाई—लाळस खेतसी
पांचोटियो—आढ़ा दुरसा मेहावत नै किसना दुरसावत नै (संवत १६७७)
मघवाड़िया—खीमराज नैतमालोत (संवत १६६४)
सोमड़ावास—गाडण केसोदास (सवत १६८३)

१६. महाराजा जसवंतसिंह का वृत्तांत :–

महाराजा जसवंतसिंह के सैनिक अभियानों का विवरण दिया है। सैनिकों को रोकड़ वेतन इत्यादि दिये जाने का उल्लेख इस प्रकार है :—

"पटा वाळां नुं पटो दियो, इणां नुं रोकड़ देणी सरू कीवी, रोज रुपिया २ सिरदारां नै अर आठ आना रोज घोड़ा सवारां नै अर च्यार आना पाळा नै देण लागा साथ ५०००० भेळो कियो मेड़तै थांणो राखिया देश में ठौड़ ठौड़ थांणा राखिया (वि० सं० १७१५)"

कुंवर जगतसिंह के बारे में लिखा है—

"कुंवर जगतसिंघजी संवत १७२३ माहवद ४ रो जन्म जोधपुर तलहटी रा महलों मे, पछै वरस ११ मास २ रा होय काळ कियो जठा तांई रुपिया दस हजार खरचिया, हाथी, गाय १२०, तोला २० रोकड़ निछरावळ रुपिया १००० राठौड़ संग्रामसिंघ जूंझारसिंघोत दिया.......।"

१७. भाटी सबलसिंह पृथ्वीराजोत का वृत्तांत :–

एक स्थान पर भाटी पृथीराज के पुत्र सबलसिंह का विवरण इस प्रकार उद्धृत है :—

"भाटी सबलसिंघ प्रथीराजोत गोयंदास मानावत रै वंश में है। .... सबलसिंघ.......आधी रात रा रावड़िया दूध रा बाटका प्रभात रा विदामां रौ सीरो, सगळा आदमियां नै खवाड़तो और दोनूं वगत आपरै थाळ जेड़ा सगळा आदमियों.... रै थाळ.......आप पैरतो जेड़ा सगळा आदमियां नै कपड़ा पहरावतो.......।"

१८. अमरसिंह के पुत्र रायसिंह व पौत्र इंद्रसिंह का वृत्तांत विस्तारपूर्वक दिया है।

१९. मालदेव का वृत्तांत :–

राव मालदेव के वृत्तात में मूल रूप से उसके द्वारा लड़े गये युद्धों व सांसण में दान दिये गये गांवों आदि का उल्लेख है।

२०. चंद्रसेन का वृत्तांत :–

मालदेव के पश्चात् उसका लड़का चंद्रसेन उत्तराधिकारी हुआ। इसके राज्यकाल का संक्षेप में वर्णन देकर उसके पुत्रों का हाल दिया है। फिर राव राम उसके वंशजों का भी उल्लेख किया गया है। चंद्रसेन द्वारा सांसण में दिये गये गांवों के बारे में लिखा है—

"राव चद्रसेण सांसण दिया जिके मोटे राजा जवत किया, गाम दोय तो सांदू रामा धरमावत नै चद्रसेन रा दियोड़ा जवत किया, गुजरावस १ पालासलो २ ···· ···।"

२१. मोटा राजा उदयसिंह का वृत्तांत :–

मोटा राजा उदयसिंह व भाटियों के बीच हुए विग्रह का वृत्तांत इस प्रकार दिया है—

"सिंघ रो नै यटा री मारग बीकूपुर होयनै वहै सो मोटा राजा कहै फलोधी मांहै होय नै वहावसां अर केईक गांव बीकूपर रा फलोधी लारै घालिया चाहै इण वासो भाटियां आप भाप भाटी राव चन्द्र जोधावत फलोधी सूं गायां लीधी केलण भाटी री, तरै लारै वाहर हुई अर झगड़ो हुवो, तरै इतरा कांम आया ······भाटी सूरजमल किसनावत ·· ···। पछै सिंघ रौ साथ कतार परा थी अवतो थी आमो सांमो मोटो राजा चढ़ियो परा था भाटी आया, भाटी भानीदास दुर्जणसलोत मांणस १००० सूं आयो नै राजाजी कनै असवरा २५ था सूं जाय वेढ़ कीवी······तठा पछै भाटी डूंगरसी दुर्जणसलोत साथ भेळो कर झगड़ो करणो विचारियो तरै मोटे राजा री बेटी धन बाई नागौर रा चिरमीखां नुं देने तुरक मदत आविया, उठी सूं भाटी ही आया ····· अर तुरक आवै नहीं कहै आज म्हे थां का छां ······आप (मोटाराजा) तुरकां नूं लावण गया पण तुरक आया नहीं अर लोह भिळियो······ठाकुर ७ मरांणा······· ।"

सूरसिंह का जन्म फलोदी में होना लिखा है—

"संवत १६२७ वैशाख वद १ फलोधी महाराज सूरसिंघजी रौ जन्म हुवौ।"

मोटेराजा द्वारा चारणों प्रोहितों के गांव जब्त किये जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

"वि० सं० १६४२) ......ग्राडो दुरसो सांदू मालो वारठ ग्रखो ऐ भेळा हुवा ग्रर भारीगरो धरणो मेळो कर मोटा राजा रा डेरा ग्राउवे थो जठै ग्राप धरणो दियो, बारहठ ग्रखो नव घणी (ग्रणी) कर कांम ग्रायो, ग्राढो दुरसो गळे घालो पछै दुरसो सीरोही गयो। पूंगलो १, रीसाणियो २, जोगड़ावास ३, पलासली ४, गूजरांवस ५, वींठोरो खुरद ६, बूटेलाव ७, हापत ८, जांड्रो ६, नै कोटड़ो ऐ दस गांम चारणां रा लिया। बाहड़सा १, गोघवास २, ग्राकड़ावास ३, रहनडी ४, भवलीड ५, वासणी ६, कोरनडी ७, खारिया दोय ६, गोडांगड़ी १०, सुगाळियो ११, गिरवरियो १२ चिणवाड़ो ऐ १३ गांव ग्रोयतां रा जबत किया मोटे राजा।"

सिवाने में रहते हुए कल्ला राममलोत (मालदेव का पौत्र) को वादशाह के हुकम के अनुसार मोटे राजा उदयसिंह द्वारा सताने का उल्लेख भी है। अन्त में उनके रानियों कुंवर कुंवरियों का हाल देकर चारण प्रोहितों को सांसण में दिये जाने वाले गांवों का उल्लेख है।

२२. महाराजा सूरसिंह का वृत्तांत :–

महाराजा सूरसिंह से सम्बन्धित उन्ही घटनाओं का वृत्तांत है जो कि ग्रन्य ख्यातो में मिलता है। अन्य ख्यातों से मिलती जुलती घटनाओं के ग्रतिरिक्त कुछ नवीन वातें इस प्रकार ग्रंकित है—

"संवत १६४८ माह सुद ३ कुंवरजी सूरसिंघजी दाढी संवराई तरै मंडोवर गोठ सवळी हुई। तठै इतरो दियो—वागा ७४, घोड़ा २०, तरवारां ३७, रुपिया ३३२, दिया, टका ४० उमरावां रा खवासां नुं हजूरियां नुं हुजदारां नुं दीया।

सूरसिंघजी दिखण में महकर रै थांणे नै सायजादो नै नवाब खांनखाना ही महकर रै थांणे था सो इणानें आय घेरिया दिखणियों। रुपिया रो तीन पाव धांन मिळे छव महीना घेरो रहयो। पातसाही समांन गढ़ मांयलो खूटो तरै राठौड़ कूंभकरण पाथोत आय राजाजी नै केयो—आठमो लांघण मांनै सगळा रजपूतां नै छै सो कै तो ग्राप चढ़ो के म्हें चढ़ां छां। तरै राजाजी ग्रापरै ग्ररोगण रा सोना रा वासण वाढ़ नै रजपूतां नै दिया, पण धांन मिळे नही। तरै बाकरा मार नै गोठ कीवी। बीजै दिन कूंभकरण वळै दरबार में आयो, केयो—भूखां मरां छां। राजाजी रीसाय नै केयो—थूं चढ़ नै जा, तरै असवार ५ साथे था ग्रापरा घरू त्यांसूं जाय दिखणियां उपर पड़ियो, तरै पचास दिखणी मारीया नै बाकी रा भागा.........कुंभकरण पूरै लोहड़ै पड़ियो......संवत १६५२ रा चैत वदि २ दिखणियों रो घेरो उठाय ग्रमरचंपु दिखणी भाग गयो, हजूर रै......फतै हुई।

नवाब खांनखांना नासक अकबर री मुहम गढ़ भिडारी, तठै मूरती १ चतुंभुज री श्रांणी तिका कोठार मांहे राखी पछै एक दिन श्री राजाजी नूं कह्यौ—म्हारै कोठार मांहे श्री चतुर्भुज री मूरती छै। ....सो तुमकूं दी तरै सिलाम करने राजाजी लीवी नै संवत १६६२ चैत वद ५ की श्री चतुर्भुजजी नुं लीधा सो केई दिन तो ले साथे रहिया नै पछै जोधपुर रा गढ़ उपर पधराया सेवग लोहण सेवा करतो।"

महाराजा द्वारा सांसण में दिये गये गांवों का ब्यौरा देकर लाख पसाव, हाथी इत्यादि दिये उसकी विगत इस प्रकार दी है—

"१ लाख पसाव १ हाथी सादू माला उदावत नूं दियौ
१ लाख पसाव १ हाथी बारट लखा नूं दियौ
१ लाख पसाव १ हाथी भाट गोयं नूं दियौ
१ लाख पसाव १ हाथी कविया भांनीदास नूं दियौ

श्री पाद दमोदराश्रम जोधपुर श्रायौ तरै लखा होम करायौ, लाख ब्राह्मण जीमाया नै लक्ष्य ब्रह्मभोज करायौ। संवत १६६० रा माहा वद ५ खजाने ६६०००० नीनांण्ं लाख गढ़ उपर चढ़ाया....... ।"

२३. गर्जासह था वृत्तांत :–

महाराजा द्वारा शाही दरबार की ओर से लड़े युद्धों इत्यादि का वृत्तांत है फिर जसवन्तसिंह व अमरसिंह का भी वृत्तांत संक्षेप में वर्णित है।

राव बीका के वंशजों का हाल :–

बीकानेर के संस्थापक राव बीका एवं उसके वंशजों का हाल दिया है जो उपयोगी है क्योंकि दयालदास की ख्यात के अलावा इसमें कुछ अतिरिक्त सूचनाएं उपलब्ध होती हैं। (पत्र–११$\frac{1}{2}$)

राव मालदेव के वंशजों का हाल :–

फिर आगे राव मालदेव के २१ पुत्रों का विवरण दिया है जो इस प्रकार है—

(१) **मोटा राजा उदयसिंह**—इसके पुत्र जैतसिंह, किशनसिंह, जसुंत और केशवदास का वृत्तांत दिया है। (पत्र–२$\frac{1}{2}$)

(२) **राव राम**—इसके पुत्र करन, कला, केशवदास, पूरणमल, नरहरदास, राघोदास और किसनदास एवं उसके वंशजों के बारे में जानकारी दी है। (पत्र–४)

(३) **राव चंद्रसेन**—इसके पुत्र रायसिंह, उग्रसेन एवं आसकरण का वृत्तात दिया है। (पत्र–३)

(४) रायमल—इसके पुत्र कल्यांणदास, प्रतापसिंह, बलभद्र, कान्ह एवं सांवलदास का विवरण दिया है। (पत्र–४)

(५) रतनसी—रतनसी के पुत्रों में जैसिह, पंचायण, मादुल, जैतसी और फिर उनके साथ उनके वंशजों का भी विवरण दिया है। (पत्र–१½)

(६) मांण—इसके पुत्र सीध का उल्लेख है।

(७) भोजराज—इसके पुत्र सांवलदास, करमसी, काना, कल्यांणदास, ईसरदास व उनकी संतति का विवरण दिया है। (पत्र–२)

(८) विक्रमादित्य—इसके पुत्र अचलदास एवं केशवदास का उल्लेख है। (पत्र–½)

(९) महेस—इसके पुत्र रामदास, दूदा, कला, केशवदास एवं उसके वंशजों की विगत दी है।

(१०) तीलोकसी—इसके पुत्र कल्याणदास, राघवदास, गोपालदास एवं रामसिंह का विवरण दिया है।

(११) पृथ्वीराज—यह सोनगरों का भानजा था।

(१२) आसकरण—यह रानी जादमजी की कोख से हुआ।

(१३) गोपालदास—यह सोनगरों का भानजा था जो इडर में मारा गया।

(१४) डूंगरसी—यह टीपू नाम की वेश्या का पुत्र था।

(१५) लिखमीदास—इसे मोटाराजा ने सोभड़ावास ग्राम १६४१ में दिया।

(१६) रूपसी—यह पावा उलगण का पुत्र था।

(१७) तेजसी—यह पावा उलगण की कोख से हुआ।

(१८) ठाकुरसी—यह पावां उलगण से हुआ।

(१९) इसरदास—यह भी पावां उलगण की कोख से हुआ।

(२०) जैतसी—यह भी इसरदास का भाई था।

(२१) जैतमाल—यह प्रयाग मांडणोत का भाई था।

राव गांगा के वंशजों का हाल :—

गांगा के पुत्रों का विवरण इस प्रकार दिया है—

(१) मानसिंह—इसके पुत्र नरहरदास का विवरण है। (पत्र–१½)

(२) किसनदास—इसके पुत्र गोपालदास, राघोदास, सांवलदास, भगवानदास का वृत्तात है। (पत्र–२½)

(३) वैरसल—इसके पुत्र वीरमदे और रूपसी का वृत्तांत है। (पत्र–१)

(४) कान्हा—इसके पुत्र गोपालदास, जैमल का उल्लेख है।

(५) सादुल—यह देवड़ों का भानजा था।

वाघा के वंशजों का हाल :—

इसमें वाघा के पुत्र वीरमदेव और जैतसी एवं उनके वंशजों का विवरण दिया है। (पत्र-३)

इसके बाद फिर मालदेव के पुत्र रतनसी एवं उसके वंशजों तथा भाण व उसके वंशजों का विस्तार से वृत्तात दिया है। (पत्र-४)

चांपावत राठौड़—चांपावत राठौड़ों के गांवों की वंशावली दी है—

पोकरण—रिड़मल से भभूतसिंह तक

आहोर—गोपालदास से लालसिंह

खीवाड़ा—गोपालदास से गुमानसिंह

आउवा—गोपालदास से देवीसिंह

रोयट—आईदान से सुरतांणसिंह

उदावत राठौड़—उदावतों के ठिकानों की वंशावलियां दी हैं।

रायपुर—सूजा से लक्ष्मणसिंह तक

नीबाज—कल्यांणदास से गुलाबसिंह तक

रास—जगराम से प्रतापसिंह तक

मेड़तिया राठौड़—इसमें केवल कुचामन के रघुनाथसिंहोत मेड़तियों की वंशावली राव जोधा से केसरीसिंह तक दी है।

ग्रंथ के अन्त में फिर चांपा, महेशदास एवं जैसा चांपावत राठौड़ों का विवरण दिया है, अन्त के दो पत्र फटे हुए है।

इसकी प्रतिलिपि दो व्यक्तियों के हाथ से की गई है। इसकी प्रतिलिपि मुरारीदान के संग्रहालय से की गई है।

४२. मुरारदान की ख्यात

१. मुरारदान की ख्यात (हिन्दी रूपान्तर), हिन्दी रूपान्तरकर्ता श्यामकरण आसोपा, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६७२, ४. ३३.५ × २६.५ सेमी०, ५. ३४२, ६. १८-२०, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. यह मुरारदान की मूल ख्यात का हिन्दी रूपान्तर है। प्रारम्भ में ब्रह्मा से वंशावली दी है फिर महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम तक के विभिन्न शासकों का वृत्तांत दिया गया है। प्रस्तुत ख्यात में राजाओं के रानियों, पड़दायतों, कुंवर.

कुंवरियों का हाल विस्तारपूर्ण दिया है। प्रशस्ति गीत, कवित्त व दोहे यथा स्थान राजस्थानी भाषा में दिये गये गये हैं। प्रतिलिपि के बारे में लिखा है—

"राठौड़ों की ख्यात कविराजजी श्री मुरारदानजी के यहां से लिखी गई यह ख्यात कविराजाजी साहिब के पिता को कोटवाल शेरकरणजी के समय में एक दीवाल मे मिली थी...... मारवाड़ी से हिन्दी किया पंडित दयाकरण दाधीच ने।"

ख्यात में आये कुछ फुटकर दोहे, कवित्त प्रारम्भ में इस प्रकार दिये हैं, यथा—

ग्यारै सौ एकावने चैत तीज रविवार
कनवज देखण कारणे चल्यौ तु संमरवार ॥१॥

राठौड़ों की उत्पति के बारे में लिखा है—"वृहदल (वंशावली के अनुसार ८६वा राजा) काकण देन से कुरुक्षेत्र को आया सो बीच में इसे गोमती मिली उसने जल मंत्र कर इसे दिया सो यह आप पी गया जिससे इसके गर्भ रह गया फिर उदर चीर कर निकाला गया सो वृहदल तो भारथ युद्ध में अभिमन्यु के साथ मारा गया और उसके उदर मे लड़का निकाला गया वह वृहद्धला राजा का पुत्र विश्वभर कमधज नाम से प्रसिद्ध हुआ ८७(वां) और इसी दिन से राठौड़ कहलाये। दोहा—

कमधज्जां धीरा कलह, राठौड़ां रिण वह
सांचह सूं तन ओढवे थोड़े भांजे वह ॥१॥

इनके वंशज गोपगोविन्द से रांणा ननपाल ६ पीढ़ी तक के राजा राणा कहलाये और रांणा ननपाल कर्णाटक का राजा हुआ तथा उसके वंशज राजा भरत जब गया यात्रा को चले तब कन्नौज को देखा और पंवारों से छीनकर अपना आधिपत्य जमा लिया। भरत के पुत्र पुंज ने पंवारों की कन्या से विवाह किया उससे १३ पुत्र हुए जिससे राठौड़ों की १३ शाखाओं का निर्माण हुआ (कवित्त—अभंपुरा, जैवत, सूर वाढेल, नरेसुर, अहर राय राठोड़, क्रिम कुरहा दानेसुर...... ।)

पुंज के आगे वंशावली इस प्रकार दी है—

धंभ - अभयचंद - विजयचंद - जयचंद (जो दलेपांगुले के नाम से प्रसिद्ध है) वरदाईसेन - सेतराम - सीहा।

इससे आगे सीहा से महाराजा जसवन्तसिंह तक का विवरण दिया है जो अन्य ख्यातों से मिलता जुलता है। राठौड़ शासकों के पश्चात मेड़तिया राठौड़ों वरसिंहोत, जोधा, करमसोत राठौड़ों आदि का विवरण काफी विस्तार से दिया है। जो प्रामाणिक ह। इनका इतना विस्तार से विवरण अन्यत्र नहीं है।

अन्तिम भाग—

१६. जसवंत मांनसिंघ का पुत्र बीकानेर में नौकर था पीछे संवत १६६१ में परगने मेड़ता का गाव खारिया इनायत हुवा सो संवत १६८६ में छोड़ कर पीछा बीकानेर गया।

२०. जगतसिह जसवंत का पुत्र ·······पता राव गोयंद का पुत्र १८- कान्ह पता का पुत्र········ ।

कुछ बीच के व अन्तिम के पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है। प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है। ग्रंथ के अन्त में दी गई सामग्री जो राठौड़ सामन्तों से सम्बन्धित है राज्य-व्यवस्था के अध्ययन हेतु बडी उपयोगी है।

४३. राठौड़ों की ख्यात

१. राठौड़ो की ख्यात (प्रतिलिपि), राव सीहा सूं विजयसिंह ताई, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६३५, ४. ३४ × २१ सेमी०, ५. १८६, ६. ३१, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. राव सीहा से महाराजा विजयसिंह तक के राजाओं का वृत्तांत अंकित है।

प्रारम्भ में कुछ पीढियों सम्बन्धी आकड़े दिये है, फिर राव सीहा की द्वारका यात्रा से ख्यात प्रारम्भ हुई है।

प्रारम्भ—

"माहिनायकाय नमः
राजा पुंज रै धरमबिब पीढी १२६
अमैचंद धरमबिब रै पीढी १२ ······
विजैचंद अमैचंद रै दीढी १२८
सीहो सेतराम रौ समत १२१२ रा आसोज सुदि ७ श्री दवारकानाथजी पधारिया अर यात्रा कीवी अर पाछा पाटण पधार गुजरात रा धणी मूलराज सोलंकी री मदत कर भाटी लाखा फूलाणी उपर गया काती वद ६ लाखा फूलाणी नैं आदमी पांच सो सूं मारियौ·······

कवित—

नवमी सुद चानकी मास काती निरंतर
पिता वैर रच माय सुर राखायच समहर········ ।"

सीहा से सम्बन्धित कुछ काल्पनिक वातों से उसके वंशजों का हाल चला है जिसमें प्रत्येक शासक की संतति इत्यादि का विवरण दिया है तथा उनसे सम्बन्धित

कुछ घटनाओं का विवरण संक्षेप में दिया है जो प्राय: अन्य ख्यातों वंशावलियों में मिलता है। चूंडा और उसके अनंतर विभिन्न राठौड राजाओं का वृत्तांत कुछ विस्तार से दिया है। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

राव रिड़मल के राज्यकाल व पूर्व की सभी घटनायें अंकित है।

१ राव रिड़मल का वृत्तांत :-

राव रिड़मल के २४ पुत्रों का वृत्तात इस प्रकार दिया है—

"राव रिड़मल रै बेटा २४ हुवा ''''''बडा कंवर अखैराजजी बडा बेटा जिणां रै टावर हुवौ नही तरै महादेवजी सोभ्रत री गांव धनेरिया है जठै जाय धरणौ दीयौ तरै श्री महादेवजी री आग्या सु' पुत्र अेक हुवौ तिणरौ नांव कू'पलौ दिरायौ। तिणरा पेट रा कू'पावत वाजै छै। दूजौ बेटौ पंचायण तिणरै बेटौ जैतौ तिणरा जैतावज कहीजै छै''''''। दूजो कंवर चांपोजी'''''', तीजा बेटा करणोजी ''''''चौथो सांडोजी जिणां रै बेटौ अेक तिणां रा सांडावत, पांचमा सायरजी सो गाव धणले रा तालाव में डूबनै मूवा तिण री थान जोधपुर रा किला में गोपाल पोळ रा मूंढा आगै है। चठा अडवालजी''''''। सातवों पातो, आठवो रूपो रूपावत कहीजै ''''''। नवों जगमाल जिण रै बेटो अेक खेतसी तिणां रा जगमालोत कहीजै। १० कांधल रा कांधलोत, ११ मांडण रा मांडणोत, १२ वागवीर, १३ नाथो, १४ वणवीर, १५ लालो, १६ सीधो, १७ मंडलो, तिणरा मंडला राठौड़, १८ बरो, १९ वालो, २० जैतमाल, २१ कर्मचंद, २२ भाखर, २३ जैतसी, २४ डुंगरसी।"

२. राव जोधा सूं गांगा तक हाल :-

जोधा ने मेवाड़ पर चढ़ाई की और उसकी विजय हुई उससे सम्बन्धित एक नीसांणी अंकित है—

प्रारम्भ—

जिण दिन जोध जनमिया जस थाळ बजाया
जै सिर छत्र न भमिया तै छत्र नमाया
बुंदी नाल बंधी दिये राव रिड़मल जाया'''''' ।"

राव जोधा द्वारा जोधपुर सहर बसाये जाने (संवत १५१५ जेठ सुद ११), सातल द्वारा मीर घडूले को मारने, सूजा के पुत्र उदा द्वारा सीधलों से जैतारण हस्तगत करने, सूजा के पश्चात् गांगा को सरदारों की इच्छानुसार उत्तराधिकारी बनाने तथा गांगा द्वारा लड़े गये युद्धों का वृत्तांत दिया गया है। गांगा की मृत्यु का हाल इस प्रकार दिया है—

"समत १५८८में धांम प्राप्त हुवा, झरोखा में विराजीया था नैं अमल री झेर थी सु उपरले झरोखा सु ं पड़ मर गया। पछै तिवरी री धणी मूलो थो तिण नूं ही मार नांखियौ अर जोगी सोमनाथ नास नैं छूटौ। इणां माथे मालदेव वैराजी हा सो उणा नैं पाट वैठतां ही मराय नांखिया।"

३. मालदेव का वृत्तांत :–

मालदेव के वृत्तांत में उनकी रानियों व कुंवरों कुंवरियों का विवरण दिया है, फिर मालदेव द्वारा लड़े गये युद्धों, शेरशाह की जोधपुर पर चढ़ाई इत्यादि का वृत्तांत है जो प्रायः अन्य ख्यातों से मिलता जुलता ही है। ख्यात में वर्णित है कि जब मालदेव पुंगलगढ़ के भाटियों के यहाँ शादी करने जाता है तब किस प्रकार भाटी छल से उन्हें मारने का प्रयत्न करते हैं—

"राव मालदेवजी पूंगल रा भाटी राव फलांणसिंघ री वेटी परणीजण नुं गया था.........सो भाटियों दगो विचारियो.........प्रोहित राघे वात समज लीवी.. प्रोहित राघो जांनीवासा डेरा में गयो अर राव मालदेजी सुं इकंत हुवा, सारौ अँवाळ मालम कीयो....... आप पूंगल रा गढ़ उपर पधारो तो सावचेत हुय पधारजो ....जद रावजी प्रोहित सूं राजी हुवा........पछै जनांना सूं सीख हुई..... भटीयांणी आपरा वाप नूं ....(केयो)—आंपणा गुर छै जिण नूं दिरावो........जद प्रोहितजी घर रा नुं ले जांन साथे जोधपुर आय वास वसायौ सो पुंगलिया प्रोहित वाजै........।"

४. चंद्रसेन का वृत्तांत :–

राव चंद्रसेण के वृत्तांत में उसके बड़े भाई राव राम तथा उदयसिंह के चले संघर्ष का विवरण दिया है। शाही सेना की जोधपुर चढ़ाई और वहाँ कब्जा करने, बादशाह अकबर से मिलने फिर लूट-खसोट करने का विवरण इस प्रकार दिया है—

"पछै समत १६२७ रा मीगसर सुद २ पातसाह अकबर अजमेर ख्वाजाजी री जात्रा करण आयौ पछै चैत में नागौर आयो...... पछै राव चंद्रसेण भादराजण सुं घोड़ा पांच सौ सूं अकबर पातसाह कनै आया, वैशाख वद १ नुं नागौर आया, पातसाह सुं मुलाजमत कीवी पातसाह सूरत देख वहोत राजी हुवौ अर फळोधी सुं उदयसिघजी पिण घोड़ा तीन सौ सुं नागौर पातसाह कनै आया मुलाजमत हुई पातसा कह्यो—तंम हाल यहां ही रहो अर चंद्रसेण पातसाह सूं सीख कर पाछा भाद्राजण आया ......अर पीपलूण रा भापरां में गया अर धाड़ा धुकों लूट खोस घणी करणी मांडी। गांव म्हैली मुगलां री थांणो थो सु मारियो।"

फिर बादशाह द्वारा बीकानेर रायसिंह को जोधपुर का शासक नियुक्त करने, (१६३१ रा बीकानेर रा राव रायसिंघजी नु पातसा जोधपुर लिख दीयौ सो डोढ वरस (१½) तांई रायसिंहजी तालुकै रह्यो भर तुरकांणी सावत रही) राव राम और चंद्रसेन के पुत्रों का हाल इत्यादि दिया है।

५. उदयसिंह का वृत्तांत :—

मोटा राजा उदयसिंह के वृत्तांत में मुख्य रूप से शाही दरबार की ओर से उसे सिरोही सिवाने पर अधिकार करने ......तथा मालदेव के पुत्र रायमल को बादशाह ने सिवाणा दिया था उसके बाद उसका पुत्र कल्याणदास उत्तराधिकारी बना उसने एक बार बादशाह के एक छोटे मनसबदार को मार डाला था तिस पर उदयसिंह को सिवाणा पर भेजा गया उस समय की घटना ख्यात में इस प्रकार अंकित है—

"कलेजी आपरी ठाकुरानियां रा माथा हाथां सु वाढिया, कोई कहै मडी में घाल बाळ दीवी सिताणा रो गढ़ कंवर भोपत आदमी पांच सौ सु नाळेर मारग जाय गढ़ मेलियो कलो रायमलोत भलो लड़ियो नै मोटा राजा उदैसिंघजो री फतै हुई ...... ।"

उदयसिंह की रानियों और संतति का विवरण भी दिया है।

६. सूरसिंह का वृत्तांत :—

सूरसिंह द्वारा शाही दरबार की ओर से लड़े गये युद्धों इत्यादि का वृत्तांत है। गुजरात में विद्रोह होने वहां उनकी नियुक्ति होने, कोलियों से लड़ाई करने का विवरण इस प्रकार दिया है—

"संवत १६६२ में फेर महाराजा सूरसिंगजी नु गुजरात रो सोबौ हुवौ गुजरात रै पातसाह वादर मांडवी में कोलीयां रो मेवासों बांध राखीयौ थो सो मा० फौज ले पधारीया.......राठौड़ गोपालदास इडरीयो वरजीया कै आंपणी फतै हुय गई हमें इणां रो लारो मत करो जगा अडवी है पण इणां री वात मांनी नहीं सो ......ठावा आदमी हकनाक पचोस कांम आया नै कोली एक ही मुवो नहीं ... ।"

२५ में से ९ वीरगति पाने वाले राठौड़ सरदारों की सूची दी है। महाराजा की मृत्यु सम्बन्धित एक कवित्त दिया है—

प्रारम्भ—

सूरसिंघ सिरताज हुवो जोधांण हंगांमी
किसनांणे किसनेस भर देह धरा हंगांमी....... ॥१॥

७. गजसिंह का वृत्तांत :–

महाराजा गजसिंह के राज्यभिषेक से सम्बन्धित दो दूहे एक कवित्त दिया है। प्रारम्भ दूहा—

सोले सो छियतरै महीनो आसू मास
टीकायत बैठो तखत सुरताणै गजसाह

गजसिंह की रानियों संतति आदि के विवरण के पश्चात् बादशाह से जागीर के परगने आदि प्राप्त हुए उसकी सूची दी है। महाराजा द्वारा शाही दरबार में की गई सेवाओं इत्यादि का वृत्तांत दिया गया है जो कि ग्रंथांक १३५०७, रा० शो० सं० से मिलता जुलता है। इसमें भी राव अमरसिंह की अलग से हकीकत दी है।

८. जसवंतसिंह का वृत्तांत :–

महाराजा जसवन्तसिंह के वृत्तात मे उज्जैन की लड़ाई का विवरण दिया है। अन्य ख्यातो की तरह इसमें भी वीर गति पाने वाले योद्धाओं की विस्तृत सूची अंकित है। जसवन्तसिंह द्वारा शाही दरबार की ओर से लड़े गये युद्धों इत्यादि उन्हीं घटनाओं का वृत्तांत है जो ग्रंथांक २०१३०, रा० प्रा० वि० प्र० में दिया है। नैणसी को दण्ड इत्यादि देने का उल्लेख इस प्रकार है—

"पछै कठेइ तो ख्यातां में लिखावट है कै आंगल्यां रै मेणबतियां लगाय बासदै उपर राख आंगळियां बाळ दीवी कै म्हांरै हात सु' पईसो अेक ही भरा नही ··· ··· ।"

९. महाराजा जसवंतसिंह का वृत्तांत और दुर्गादास :–

दुर्गादास द्वारा मेवाड़ के राणा और उनके पुत्र अमरसिंह के बीच सुलह कराने का उल्लेख इस प्रकार है—

"दुरगादासजी आदमी ५०० सु' चढ़ीया ··· "दुरगादासजी राणांजी सूं अरज करी—महाराज घर रौ कळेस आछौ नहीं घर रा कळेस सु' दुसमणां रा पेच पड़ै छै इण वखत तुरक तो आहीज चावै है सु कंवर सू' झगड़ो कर सभा देसां जद कंवर छावणो कर पातसाह कनै जाय पुकारसी तो वात आछी नही है"······ दुरगादासजी कंवर अमरसिंघ नै आपरा भला आदमी मेल केवायो कै थे लोकां रा बेकाया बेको मती रांणेजी विराजीयां थां नु' धरती आवे नहीं अर राड़ करसो तो राठोड़ सारा म्हें दिवांणजी सांमल छां ये म्हांसु पड़पसो नही सो म्हारो कह्यो मांनो ······ कंवर रौ हाथ रूमाल सू' बांध दिवांण रै पगे लगाया, राणेजी उठ कंवर रा हाथ खोलीया तकसीर माफ कीनी····· "महाराज अजीतसिंघजी रौ घणौ गुण मानियो ।"

महाराजा अजीतसिंह के विखे में जिन सरदारों ने सेवा चाकरी की उससे सम्बन्धित महाराजा के मुख से कहे २३८ दूहे लिपिबद्ध है। इसके बारे में लिखा है—

"आप फुरमायो कै विखे में उमराव वगैरे हाजर था तिणां री हाजरी जेड़ी चाकरी कीवी जिणरी विगत देख थी हजूर रा श्री मुख सूं फुरमावणा मुजब दूहा वणिया तिणरी विगत--

दोहा प्रारम्भ—

करी विखा में चाकरी, सामधरम सिरदार
कहियै लागा कुवधियां, हुवा पछै हुजदार

अन्तिम—

तिण वेला री तेजसी, आभै सीस लगाय
जगो भिड़ साथे लीयां, खगां उथेला खाय ।।२३८।।

इसके आगे बारठ शक्तिदान कृत १६ दोहे अंकित है।

प्रारम्भ—

अचला नै परताप रै, हुती नरहवा ठाव
तोनु म्हाराजा दीयौ, रीया सरीपो गांव ।।१।।

महाराजा द्वारा की गई नियुक्तियों (जोधपुर रा मुतसदियां नु राज रौ कांम ओहदा सूंपीया तिणरी विगत) का ब्योरा दिया गया है। विखे में जिन सरदारों ने महाराजा का साथ दिया उनको जागीरीयां आदि इनायत की तथा विरोध करने वालों के पट्टे जब्त करने व दण्ड इत्यादि का वृत्तांत दिया गया है। फिर उनके रानियों कुंवरों का विवरण अंकित है—

फरूकशियर को कैद किये जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

"पछै सयदां रा आदमी मांह जनांना में जाय पातसा फरकसेर नु हाथ पकड़ ले आया अर कैद कर दीयौ अर········महाराज तीन दिन तांई लाल कोट में सईदां री सला मुजब विराजीया रहया नै सिनांन सेवा पिण उठै हौज कीवी अर उठै हौज रसोड़ौ करायो········।"

इसमें अजीतसिंह के राज्यकाल की सभी घटनाओं का विस्तृत विवरण दिया है। घटनाएँ प्रायः ख्यातों से मिलती जुलती है। सैयदों के राजनैतिक षड़यंत्र पर इससे विशेष प्रकाश पड़ता है।

१०. महाराजा अभयसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा अभयसिंह का वृत्तांत ग्रंथांक १५६३२ (रा० प्रा० वि० प्र०) से मिलता जुलता है। अभैसिंह की आंबेर शादी करने हेतु जाना, राजकीय नियुक्तियों

सरबुलंदखा से युद्ध, बीकानेर पर महाराजा की ओर से की गई चढ़ाइयों, दक्षिणियों के विरुद्ध महाराजा द्वारा शाही सेना में जाने, अहमदाबाद में लूटमार करने, आमेर नरेश सवाई जयसिंह से युद्ध करने, इन युद्धों में काम आये सरदारों की नामावली आदि भी अंकित की गई है।

११. महाराजा रामसिंह का वृत्तांत :—

महाराजा रामसिंह के राज्यकाल के वृत्तांत में राजकीय नियुक्तियों का विवरण दिया गया है, सिरोपाव मुत्सदियों को दिये उसकी विगत, विभिन्न सरदारों का महाराजा से रूठना, सवाई ईश्वरसिंह (आमेर नरेश) को सहायतार्थ बुलाना, राजा गजसिंह (बीकानेर) द्वारा बखतसिंह की मदद करने, रामसिंह तथा बखतसिंह के बीच युद्ध होने, युद्ध में मारे गये योद्धाओं की नामावली इत्यादि अंकित है। बखतसिंह का जोधपुर पर अधिकार होने का वृत्तांत इस प्रकार है—

"धाय भाई देवकरण भंडारी सुरतराम व्यास उदैचंद वगेरै गढ़ उपर गया सो दिन आठ ताई गढ़ मे लड़ीया नै पछै भाटी सुजांणसिह अर फेर राव मोहकमसिंह चवांण थो…… सो महाराजा बखतसिंह सूं मिळिया ……गांव समाड़ीया से चांपावत सुरजमल रामसिघोत नै देवाण रो जोधो उदेसिंग हिन्दूसिघोत कयो— सुजाणसिघ मोहकमसिंह मिळ गया है सो इणां नुं मार नाखसा नै गढ़ बखतसिंघ नै देवा नही तरै आ वात चवड़े हुय गई तरै सुजांणसिघजी मोहकमसिंघजी गढ बखतसिंघजीं नुं सूंप दीयो महाराज रामसिंघजी रो वात सारी विगड़ गई, भरोसो जाण गढ में राखीया सो हरामखोर हुय निवड़ीया।

दोहो—

किलो कहै किरतार नूं हुं वणीयो वज्जर।
माह राखीया वोर चुगतां कै नाजर के गुज्जर।
औ मत हीणो सूजडो लापर गयो लतर……।"

१२. महाराजा बखतसिंह का वृत्तांत :—

बखतसिंह द्वारा ओहदे इत्यादि सौपे गये उसकी विगत दी है। उनके द्वारा भवन निर्माण कार्य तथा मरम्मत आदि कराने का विवरण दिया है।

विरोधी व्यक्तियों को दण्ड देने, मरवाने इत्यादि घटनाओं के बाद महाराजा के सोनोली ग्राम में (वि० सं० १८०६ भाद्रपद १३) मृत्यु होना लिखा है।

१३. महाराजा विजयसिंह का वृत्तांत :-

प्रारम्भ में राजलोक की विगत दी है। इसमें मूल रूप से महाराजा विजयसिंह और दक्षिणियों तथा रामसिंह के बीच हुए संघर्ष का वृत्तांत दिया गया है। अन्त में लिखा है कि साभर दक्षिणियों से हस्तगत कर सवाई रामसिंह को सौंप दिया।

अन्तिम भाग—

"पछै सांभर दिखणिया नीचै थो सो छुडाय नै जैपुर वाला रामसिंघजी नै सूंप दीनो सो सांभर री ...... ।"

यह किसी मूल ग्रंथ की प्रतिलिपि एक से अधिक व्यक्तियों के हाथ से की गई है। प्रतिलिपि अपूर्ण है। कागज सफेद है। उन पर लाइनें खींची हुई है। लिखावट सुन्दर है। गत्ता कागज का चढ़ा हुआ है। पत्र इतने जीर्ण नहीं है फिर भी खण्डित हो रहे हैं। ग्रंथ मारवाड की राजनैतिक स्थिति के अध्ययन हेतु उपयोगी है।

४४. राव सीहा सूं वीरमजी तक ख्यात

१. राव सीहा सूं वीरमजी तक की ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४०, ४, ३४×३५ सेमी०, ५. १७, ६, १८-२०, ७. २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०, इसमें राव सीहा से वीरम तक राठोडों के इतिहास की संक्षिप्त रूपरेखा है।

प्रारम्भ—

"राव सीहोजी वडो ठाकुर हुवो, वडो साथ रो धणी हुवो, मास ६ सीकार रमतो नै भाई अलह कनोज रहतो, सो सीहोजो अेक समै पुसकरजी जात्रा करण आया था। तरै भीनमाल रा विरामण आय पुकारीया कह्यो—माहारो गांव मुलतांन रै पातसा लूटीयो ...... ।"

१. भीनमाल के ब्राह्मणो के आग्रह से राव सीहा के बादशाह से लड़ने तथा दोनों ओर से मारे गये व्यक्तियों के आंकड़े दिये हैं। फिर सीहा द्वारा लाखा फूलाणी को मारने इत्यादि घटनाएँ वर्णित है जो जोधपुर की ख्यात से मिलती है।

२. आस्थान के वृत्तांत में दिया है कि भोमियो पाली से कुछ पशु चुरा ले जाते हैं और आस्थानजी उसे छुड़ा लाते हैं इससे पाली के ब्राह्मण खुश होकर रावजी के वहीं रहने का प्रबन्ध कर देते हैं। गोहिलों से खेड़ हस्तगत करते हैं, ईडर पर अधिकार कर अपने भाई सोनग को देते हैं। अन्त में आस्थान के राजलोक की विगत दी है।

४५. राठौड़ों री ख्यात फुटकर

१. राठौड़ां री ख्यात फुटकर गीत कवित वंशावलियां आदि, खिड़िया हुकमीचंद, चारण दाना, किसनो आसावत, चारण सिमुदान, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४४, ४. ३४.४×२०.५ सेमी०, ५. ३१०, ६. ३६, ७. २०वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें राव मल्लीनाथ से जोधपुर के शासक भीवसिंह तक का इतिवृत्त अंकित है।

(१) राठौड़ों री ख्यात :–

इसके प्रारम्भ में लिखा है कि भंडारी फौजचंद की वही से यह नकल उतारी गई जिसमें सलखा के पुत्र मल्लीनाथ से वृत्तांत प्रारम्भ हुआ है।

प्रारम्भ—

"रा० मालो सलखाजी रै बेटो पेड़ मांय पाट बैठा ……टीकै……मुए मालोजी जोरावर देव वंसी पुरप ताखतीर भोमीया था तीयां सारा ही नै मारनै धरती लीवी मेहवे परै कोस ८० उपर कोट छै तठा सूं……।"

इसमें जोधपुर के शासक महाराजा विजयसिंह और उनके पौत्र भीवसिंह तक का इतिहास की प्रतिलिपि की गई। जगह-जगह खाली स्थान छोड़ दिये गये हैं। इसमें विशेष रूप से विजयसिंह के राज्यकाल का वृत्तांत सविस्तार दिया है। इसमें उन्ही घटनाओं का विवरण देखने में आया है जो प्रायः अन्य ख्यातों बातों में मिलता है। (पत्र–१६६)

(२) कवित्त गीत संग्रह :–

ओसवालों, जोधपुर के महाराजाओं से सम्बन्धित कुछ काव्य कृतियां इस प्रकार संग्रहित है—

(क) ओसवालों रा कवित्त :–

प्रारम्भ—

श्री वायमान पद्योसेवसे, बावन पटलीयों थी रतन
प्रभू सुरनावताय सदगुरू दीधो सांवत आठ दस वरसा…… ॥१॥

(ख) महाराजा जसवन्तसिंघजी रा छप्पय :–

प्रारम्भ—

इसो राज जसराज, तासे सम और न कोय
पांवां लागा आय, गुमरे के करता गाई…… ॥१॥

(२ छप्पय १ कवित्त)

(ग) गीत राव रीड़मलजी नैं चीतौड़ चूक हुवौ ती समा रौ—

प्रारम्भ—

दोहा— चूक करै सीसोदीया सबलौ सताव आर्गे सारै
वीरमहरै हेकलै विढ़तै .... ॥१॥

(घ) गीत महाराजा अजीतसिंघ रौ :–

प्रारम्भ—

प्रसिध दुनियां नमै जसराज रा पाटेपत,
प्रगटै साहा लगै समद पाजा
माहरा विष तेहुत तै भीटीयौ .... ॥१॥

(ड़) गीत अमैंसिघजी रौ गुजरात में कह्यौ—

प्रारम्भ—

तीजे तीजणी पहरै तन अंतरै नगर नरै उद्धव नारी नैर
सोवौ राल कमध श्रे खवरै .... ॥१॥

(च) गीत (कवित) विजैसिघजी रौ पटेल आया सूं राड़ कीनी (खिड़ीया हुकमीचन्द कृत)

प्रारम्भ—

पबै उठो है हुए चाहे मुनी बैण सीघ पणै,
विजै के समायौ मही डाड जुहारौ है.... ... ॥१॥

(१५ द्वालों का गीत)

(छ) गीत खीची गोरधन रौ—

प्रारम्भ—

साह जका वेरी लपेटा मांहे सालणी सकौ,
बहर ईक पेच चवतार बांधैं,
माला दोहु बळां खसोले मागरै ..... ॥१॥

(३) वंशावलियाँ :–

इसमें निम्नलिखित विविध स्थानों की पीढ़ियाँ अंकित है—

जोधपुर	सेतराम से सरदारसिंह तक
बूंदी	गोपीनाथोत से रामसिंघोत तक
जैसलमेर	सबलसिंह से मूलराज तक
बीकानेर	जोधा से गंगासिंह तक
पोकरण	रिड़मल के पुत्र चांपा से गुमानसिंह तक

आउवा	रिड़मलजी से मुसालसिंह तक
रोइठ	रिड़मल से इन्द्रसिंघ तक
रायपुर	किलाणदास से दौलतसिंह तक
खैरवा	गोमदराम से दौलतसिंह तक
वालरवा	रोणछोड़दास से रतनसिंह तक
लवेरा	साहबखान से उदैसिंह तक
खेजड़ला	किसनसिंह से सादूलसिंह तक
रामपुरा	गुरतसिंह से भाटी भवानीसिंह
संखवास	चतुरभुज से चौहान सरजी तक
आसोप	रिड़मल से चैनसिंह तक
बलूंदा	राव जोधा से जीवणसिंह तक
किसनगढ़	किशनसिंह से कल्याणसिंह तक
रतलाम	महाराजा उदयसिंह से पदमसिंह तक
ईडर	अजीतसिंह से गंभीरसिंह तक
खीवसर	जोधा से जोरावरसिंह तक
चंदावाल (कूंपावत)	फतेसिंह से वीसनसिंह तक
नींबाज (उदावत)	कीलांणसिंह से सांवतसिंह तक
पाटोदी	राव मालदेव से जवारसिंह तक
गूदोच (उदावत)	राव जोधा से इंद्रसिंह तक
ग्राम सनांणा (मेड़तीया)	दूदोजी से वेलवेसिंह तक
ग्राम बोड़ावड़ (मेड़तीया)	दूदोजी से मंगलसिंह तक
गांव वडू (मेड़तीया)	दूदोजी से सुरतानसिंह तक
रीयां (मेड़तीया)	राव जोधा से शिवनाथसिंह तक
वगड़ी (जैतावत)	राव रिड़मल से शिवनाथसिंह तक
पाली (चांपावत)	रिड़मल से गजसिंह तक
रास	किल्यांणदात से जवानसिंघ तक
खारडा पाली रा धणी	आईदान से रायसिंह तक
कोरणा रो धणी करनोत	रिड़मल से श्यामकरणजी तक
भाद्राजण	रिड़मल से बखतसिंह तक
बाघावस (करनोत)	रिड़मल से जसकरणजी तक
गांव मंवरी रा धणी (जोधा)	मालदेव से देवीसिंह तक

(४) फुटकर गीत कवित्त :-

कुछ फुटकर गीत कवित्त बिना शीर्षक के इस प्रकार दिये हैं—

(क) गीत चारण दाना रो कह्यो—

प्रारम्भ—

मीसन पवास कोध जीण मयो, हठीयो मनावणं हारं,
हुवो न को मंडोवर हसी, बांगोहरा सारस्तो बजीरं ॥१॥

(ख) गीत सेवग भीसनां आसायत रो कह्यो—

प्रारम्भ—

नव कोटा गु छल सुपह नाडूलो, भारत करे नीतो कायम,
दोखी मान कीया दहवाय, भारते सो उडाया भीम ॥१॥

(ग) कवित्त मनहर (मुरारदान कृत)—

प्रारम्भ—

लाज औ लिहाज भिष्ट भायन उदारदि,
धारं है पिता के गुन कौन मन भावे ना
भनत मुरार सनमान जे पिता के नर? ....॥१॥

(६) महाराजा विजयसिंह का वृत्तांत :-

इसके बाद महाराजा विजयसिंह का वृत्तांत आ जाता है जिसमें उनके द्वारा दक्षिणियों से की गई लड़ाइयों, युद्ध में काम आये सरदारों की सूची (जिसमें कहीं उनके पिता, गांव का नाम अंकित है) महाराजा के जाटनी पासवान गुलाबराय का वृत्तांत दिया गया है। इसकी इच्छानुसार सेरसिंहजी को युवराज घोषित किया गया।

"पछे पासवानजी कंवर सेरसिंघजी नै १८४८ रा टीको दीयो जोवराज (युवराज) पदवी रो पासवानजी रा बाग रा चौक में भारी बीछायत हुई थी महाराज पुरसी विराजीया नै पुरसी कनै नीचै गादी उपर सेरसिंघजी बैठा, नै मुंडा आगै भतीज मानसिंघजी बैठा ...... ।

पासवान की मृत्यु का वृत्तांत :-

पासवान के सोना इत्यादि दान किये जाने के पश्चात् वह चूक से मरवा दी गई इसका विवरण इस प्रकार है—

"उण दीन पासवानजी मोहरां री थैलीयां घणी पुन कीवी घणी बेदा में जाती रेई अेक दोय जीणां नै दीधी जोके जाहर हुई तरै श्री भींवसिंघजी मंगाय



लीवी उण दिन लायों रो माल ईसड हुवो पछै ग्रायण रा पासवांनजी नै चूक हुवो ।"

(६) महाराजा विजयसिंह रै कमठों रो विगत ग्रादि :-

महाराजा विजयसिंह द्वारा करवाये गये भवन-निर्माण कार्य इत्यादि का ब्यौरा दिया गया है । फिर ग्रन्त में राजलोक की विगत दी है ।

(७) महाराजा भीमसिंह का वृत्तांत :-

महाराजा भीमसिंह के राज्यकाल का संक्षेप में वृत्तांत दिया है ।

(८) बाड़मेर बस्ती री विगत सं० १७२० में :-

वाड़मेर नगर में (वि० सं० १७२०) विभिन्न जाति के लोगों के घर थे उसके आंकड़ें दिये हैं । यथा—

"५५१ माहजन ग्रोसवाल
४० वीरामण पोपरणा
१०० रजपूतां रा ...... ।"

इसके ग्रतिरिक्त वाड़मेर के पास स्थित विभिन्न गांवों की हकीकत भी दी है।

(९) हकीकत ग्रांबेर राजा जैर्यासघजी रै वडो कंवर रार्मासघजी री :-

इसमें जयपुर के नरेश सवाई रामसिंह ने वि० सं० १७२२ भाद्र वदि ४ को परगने इत्यादि जागीर में प्राप्त किये उसका ब्यौरा दिया गया है ।

प्रारम्भ—

"परगना १६ सोवो १ का मासिघ उगरसेन नरसिंघदास लुणकरणोत सेपावत रा नु फोजदारी छै ।

६ देस तालके रा

१ परगनौ ग्रत्रलौ मारौ वामरौ गांव १४ दांम १२०००० मांहे ग्रामेर सुं कोस २० ।" (पत्र-३)

(१०) वात सेखावतों री :-

इस वार्ता में ग्रंकित है कि मोकल के १०० घोड़ियां थीं इनसे जो बछेरे उत्पन्न होते वे ग्रामेर के राजा पृथ्वीराज को दे दिये जाते थे परन्तु मोकल के पुत्र शेखा ने इस प्रकार बछेरे ग्रादि आमेर नरेश को प्रदान करने बन्द कर दिये ग्रौर बड़ा पराक्रमी सिद्ध हुग्रा ।

फिर उसके पुत्र दुरगा का वृत्तांत दिया है ।

प्रारम्भ—

"कछवाहो वालो मोकल बालावंत सु थो ठाकुर हुवो। गाव रो धणी हुवो। गांव ८ तथा १० भाई बंदां रा था, भोमीया थका धरती में रहे, घरे घोड़ियों १०० थी ...।" (पत्र–२)

(११) परगनों री विगत :–

इसमें परगना अमरसर, मांनगढ़, अजबगढ तथा मनोहर की हकीकत दी गई है जिसमें मुख्य रूप से इनकी भौगोलिक स्थिति, इन परगनों के अन्तर्गत पड़ने वाले गांवों की सूची इत्यादि भी अंकित है।

प्रारम्भ—

"परगना अमरसर सुं बतीसी रो परगनो तुरावटी, मुदे तुरावटी मांहे गांवड़ी गुणेसर पठांण छै, वडी मेवासा री ठौड़ छै ......।" (पत्र–५)

(१२) हुमायुं का शेखावतों से युद्ध का वृत्तांत :–

इसके आगे बादशाह हुमायुं और शेखावतों के बीच हुए युद्ध का वृत्तांत है, अंकित है कि पहले तो मुगल सेना भाग खड़ी हुई परन्तु पुनः हमला करने पर शेखावत हार कर भाग गये।

यथा—

"हीदाल कछवाहां री फौज भाजी पातसाह री फतै कीवी मुलक रो सारो लोक भागो........।"

(१३) हाकम आदि के रिजक में बढ़ोतरी का हाल :–

महाराजा जसवन्तसिंह ने वि० सं० १७२२ में कामदारों आदि के 'रिजक' में बढोतरी की उसका ब्यौरा दिया गया है।

प्रारम्भ—

"३५०० मु० करमसिंह सारै परगनों रो हाकम आगे रू० ३५०० पावतो रू० १००० ईजाफे कीया।

२५०० मं० ताराचंद नाराणोत जोधपुर रो हाकम आगे रू० १५०० पावतो रू० १००० वधारीया....... ।"

(१४) महाराजा विजयसिंह के मुत्सद्दियों की विगत :–

महाराजा विजयसिंह के मुत्सदियों, हाकमों, कारकून इत्यादि की नामावली दी है। फिर खीवसर ठिकाने की वंशावली (करणसिंह तक) तथा सांभर की विगत इत्यादि संक्षेप में दी है।

(१५) सहर बसियां री विगत :–

विभिन्न शहर दुर्ग इत्यादि कब किसने बसाये अथवा बनवाये उसका ब्यौरा दिया है। फिर मुहणोत की विगत बहुत संक्षेप में देकर राठौड़ों की १३ शाखाओं के नाम दिये हैं।

(१६) वीर गीत :–

अन्त में कुछ वीर गीत, कवित्त इस प्रकार अंकित है—

(क) गीत—

प्रारम्भ—

जूनो राव धर लेण आवीयो ·········· ॥१॥

(ख) कवत राव वीरम रा—

प्रारम्भ—

दस वेद बीस दूणों, मास काती रविवार
पप कृष्ण पंचमी, सवत संगराम सकारह ॥१॥

(ग) कवित चूंडाजी री :—

प्रारम्भ—

प्रथम हुवौ प्रताप, देव चावड धर दीयौ
अे सह सोहत अराक, खोस सहू लीध खजानौ···· ॥१॥

(घ) राजाओं रा दूहा—

इसमें राजाओं (रिडमल, जोधा, सूजा, मालदेव आदि) के दोहे अंकित हैं।

प्रारम्भ—

रिड़मल महमद मार नैं, खसैं सहू खुरसाण
रिधू मंडोवर राजवी, भळहळतौ कुळ भांण ॥१॥

(ङ) *गीत महाराजा बखतसिंह री (चारण सिभूदान कृत)*—

प्रारम्भ—

भला बोलतो अकारा वोल आकारीठ तौल भालौ
जरदा मरदां कसे रूप में जोगेस
पड़ोया अनेक भीच छाती चाढ़ भुजां पांण ॥१॥

(च) राजा मानधाता री कवित-छप्पय—

प्रारम्भ—

असी लाख गयं गुड़ं पदम देस हैवर संज
पाचा लल जाचवा गेहर सुर अंबर गर्जे···· ··· ।

(छ) वीर विक्रमादित्य रौ कवित्त—

छत्तीस सहस मंडली, सुभट एक कोड़ घनू धारै
मंडलीक चौवीस लाख सेवै यारी तर ...... ॥१॥ (१ कवित्त)

(ज) रावण रौ कवित्त—

प्रारम्भ—

यसी लाख सामंत, नवळ गढ़ दुवाई रा गंजै
नेउ सहस निसाण, ताम दरतर वजै...... ॥१॥

(झ) महाराजा विजयसिंह रौ कवित्त—

प्रारम्भ—

तीजौ सिव कोक, चंडी को त्रसूल क्रिया
चक्र रहर कर कोकदंड जमराज कचो ॥१॥

(ञ) राजा सालिवाहन को कवित्त—

प्रारम्भ—

यूकण दमण पलोज, कछ पंचाळ नीरतर
सेतवंद रामेसर गुजर खंड वैरागर........ ॥१॥

इसके अतिरिक्त 'गढ कोटा रौ कवित्त', 'राठौड़ों रौ तेरै साखां रौ कवित्त' तथा 'चहुवाणों रौ पीढ़ियों रौ कवत्त' भी अंकित है।

प्रतिलिपि अनेक व्यक्तियों के हाथ से की गई है। कागज पर लाइनें खींची हुई है। कागज का गत्ता चढा हुआ है। मारवाड़ सम्बन्धी विविध जानकारी हेतु ग्रंथ उपयोगी है।

४६. ख्यात ठिकाणा भींयड़ा

१. ख्यात ठीकाणा भींयड़ा (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४३, ४. २६.५ × १७.४ सेमी० (पुस्तकनुमा), ५. ११७, ६. १८-१६, ७, २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी मिश्रित राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें भींयड़ा ग्राम के नामकरण व उससे सम्बन्धित कुछ घटनाओं का विवेचन दिया गया है।

प्रारम्भ—

"॥ श्री रामायनमः ॥

॥ ख्यात ठीकाणा भींयड़ा ॥ परगने सोभत ॥ सम्प्रदाय रामानन्द ॥

भूमिका—जो कि श्री दरबार के हुकम से मारवाड़ की ख्यात बणानै का



हुकम हुवा जब और ठीकाणो की ख्यात पेस हुई जिससे हमारे ठीकांणे की भी ख्यात पेस होना मुनासिब समझ कर महकमे तवारीख से हुकम आया ...... तब अबी वर्तमान समय में विद्यमान जो मंहतजी महाराज श्री स्वामी भागवतदासजी .... ." (पत्र खंडित है)।

इस प्रकार प्रारम्भ में यह बतलाया गया है कि ख्यात किस आशय से लिखी गई है, फिर झींथड़ा ग्राम की भौगोलिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए गांव का नाम भीथड़ा कैसे पड़ा बताया है कि जालोर का शासक कान्हड़दे सोनगरा राज्य करता था, उसके लड़के वीरमदेव और दिल्ली बादशाह के यहां एक व्यक्ति पंजुपेक के बीच कुश्ती हुई जिसमें पंजुपेक हार गया। बादशाह की लड़की पराक्रमी वीरमदेव पर मोहित हो गई और उसने उससे शादी करनी चाही। बादशाह ने यह शादी का प्रस्ताव वीरमदे के समक्ष रखा, वीरमदेव ने ६ महीने की मोहलत और कुछ धन मागा और वह वहाँ से चल कर पुनः जालोर चला गया तथा जालोर के किले का निर्माण किया गया, कान्हड़दे उस समय दिल्ली में ही था। जब ३ महीने से ऊपर समय निकल गया और वीरमदे नहीं लौटा तो कान्हड़दे दरबार से एक घोड़े झीथा पर सवार होकर निकला और इस ग्राम (जोथडा) मे पहुँचा। लोगो को इसके भागने का रहस्य मालूम हो गया था तो कान्हड़दे ने घोड़े को फटकारा कि तेरे पहले यह बात यहाँ आ पहुँची, इस पर घोड़ा मर गया। इस घोडे के नाम पर इस गांव का नाम झीथड़ा पडा।

इसके बाद झीथडा ग्राम में जो भक्त महन्त और पूर्वाचार्य हुए उनका विवरण दिया गया है और भक्ति का महत्व बताया है।

विविध भक्तों द्वारा अपने शिष्यों को शिक्षा प्रदान करने का उल्लेख इस प्रकार है—

"साक्षात श्रीमन्नारायण है सो जीव लोको पर कृपा करके गुह्य अंधेरा दूर करने वाला राम तारक मंत्र है, उसका श्री लक्ष्मीजी महाराज को उपदेश कीया और लक्ष्मीजी ने विघकसेनजी को रामतारक मंत्र का उपदेश किया और विधकसेनजी नें शठकोप मुनि को उपदेश दिया तथा शठकोप मुनी ने नाथ मुनी को उपदेश दिया, और नाथ मुनी नें पूंडारीकाक्ष मुनी को, पुंडारीकाक्ष ने राममिश्राचार्य को राममिश्र ने पूर्णाचार्य को, पूर्णाचार्य ने रामानुज स्वामी को, सो यह रामानुज स्वामी वड़े महात्मा और ज्ञानी........ ।"

इसके बाद चार सम्प्रदायों (रामानुज सम्प्रदाय, ब्रह्म सम्प्रदाय, निंबार्क सम्प्रदाय) का उल्लेख किया है। रामानुज स्वामी ने कुरेश स्वामी और कुरेश स्वामी ने पराशर स्वामी को उपदेश दिया इसका विवरण इस प्रकार दिया है—

(१) श्री स्वामी रामानुजाचार्य (२) कुरेश स्वामी (३) पराशर स्वामी (४) लोकाचार्य (५) देवाधिपाचार्य (६) शैलेश स्वामी (७) वरवर मुनि (८) गुरुपोतम स्वामी (९) गंगाधराचार्य (१०) सदाचार्य (११) रामेश्वराचार्य (१२) द्वारानंद स्वामी (१३) देवानंद स्वामी (१४) श्यामानंद स्वामी (१५) श्रुतानंद स्वामी (१६) नित्यानंद स्वामी (१७) पूर्णानंद स्वामी (१९) हरीयानंद स्वामी (२०) रामानंद स्वामी

फिर रामानन्द स्वामी का वृत्तांत दिया है तथा इसके अतिरिक्त भक्त कूवाजी का जीवन परिचय दिया है। कूवाजी ने झींथड़ा ग्राम में स्थान बांधा तथा वृंदावन से कृष्ण जीथड़ा में विराजमान हुए उसका वृत्तांत और कुछ महत्वपूर्ण इसी ग्राम से सम्बन्धित अंकित है। स्वामी हरभक्तदासजी, स्वामी प्रह्लाददास, स्वामी कनीराम, स्वामी तांबरदासजी, स्वामी भगवतदासजी इत्यादि का भी संक्षिप्त वृत्तांत है।

इन साधुओं के १० लक्षण इस प्रकार अंकित है—

(१) भद्ररूप रहणा, (२) गोपीचंद का तिलक करणा, (३) यज्ञोपवीत रपणा, (४) गुरु के वाक्य का पालन करना, (५) सत मुद्रा धारण करना, (६) राम मंत्र का जप करना, (७) कमंडल का जलपात्र रखणा, (८) तुलसी की माला पहरणी, (९) चोटी रखणी, (१०) धोये हुवे सफेद वस्त्र पहरणा।

महाराजा विजयसिंह और उनके कुंवर फतेसिंह द्वारा झींथड़ा ग्राम भेंट किया गया उसके तांबा पत्र की प्रतिलिपि इस प्रकार दी है—

नकल कीवी तांबा पत्र री

श्री परमेश्वर जी सत्यं छै

॥ श्री कृष्ण जी ॥

॥ सही ॥

स्वारूप श्री ठाकुरजी श्री जांणारायजी रै परगने सोभत रौ गांव जीतड़ो रेप २०००) दोय हजार रौ बाबाजी श्री ग्रातमारामजी री बरसी रै दिन राजा विजयसिंह कंवर फतेसिंह चडायो छै। सो किणी पीडी तफावत न करै नै ठाकुरद्वारे

टेहले भगत हर भगत कूवावत करै । तांबा पत्र राठौड़ भगवतसिंघ सागतसिंघोत खांप चांपावत री ग्ररज सु । संवत १८१७ रा माह वद १

मुकाम पायतखत गढ़ जोधपुर १ लिखतु सिंघवी फतैचंद सं० १८१७।"

एक ओर पत्र की प्रतिलिपि दी है जिसमें जोधपुर दरबार की ओर से भीभड़ा के स्वामी को ग्रादेश दिया गया कि ग्रगले जागीरदारों का अधिकार समाप्त किया जाता है क्योंकि यह ग्राम पुनरथ (पुण्यार्थ) इनायत कर दिया है ।

ग्रन्त में मूल ग्रंथ के लिपिकार का नाम नरसिंघदास दिया है ।

इसकी प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है । लिपि साफ है ।

४७. महाराजा गजसिंह, जसवन्तसिंह, ग्रमरसिंह, सूरसिंह री ख्यात

१. महाराजा गजसिंह, जसवंतसिंह, ग्रमरसिंह, सूरसिंह री ख्यात (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६३३, ४. ३३ × २५ सेमी०, ५. ७६, ६. १६-२१, ७. २०वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८. ग्रज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ख्यात में विवरण निम्न प्रकार है—

(क) महाराजा गजसिंह री ख्यात :–

ख्यात के प्रारम्भ में जोधपुर के शासक महाराजा गजसिंह (सूरसिंह के पुत्र) के जन्म, गद्दीनशीनी के संवत आदि दिये हैं, फिर सूरसिंह की मृत्यु के पश्चात् शाही फरमान के अनुसार दक्षिण में जाना लिखा है ।

प्रारम्भ—

"महाराजा श्री गजसिंघजी समत १६५२ रा काती सुद ८ रो जन्म, समत १६७६ छीयतरा रा ग्रासोज सुद ८ पाट बैठा बुरहानपुर में ……… ।

माराज सूरसिंघजी देवलोक हुवा तरै जांहगीर रो फरमान ग्रायो थो दिखण जावजो तरै गया । आगरा सु पातसाहजो सीरपाव हाथी घोड़ा सोना री साकळ सुधा मेलीया……… ।"

प्रस्तुत ख्यात में लिपिबद्ध घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) महाराजा के राज्याभिषेक के समय परगने जागीर में मिले हुए थे और शाही दरबार से जो परगने इनको मिले उसकी सूची तथा रेख इत्यादि का ब्योरा दिया गया है ।

(२) महाराजा के दक्षिणियों की सेना से लड़ने उसमें विजयी होने, बादशाह द्वारा 'दलथंभण' का खिताब देने का उल्लेख तथा एक दोहा इस प्रकार उधृत है—

दुहा—

गज बंधी आलोचीयो, कर भेळा वरीयांम ।
पतसाही रापुं पगां, तौ दळथंभण नाम ॥१॥

(३) महाराजा के वि० सं० १६७६ में जोधपुर आने, रानी सीसोदणी परतापदेजी को राणीपदा आदि देने का उल्लेख इस प्रकार है—

"सीसोदणी परतापदेजी नुं राणीपदा री
पाट दीयौ पटौ १८००१) रौ दीयौ, बीजा
राजलोक सुं बीवणौ पटौ .... ।

(४) गजसिंह का बागी खुरम पर भेजे जाने, युद्ध क्षेत्र से खुर्रम के भागने, शाही सेना की विजय होने का उल्लेख इस प्रकार दिया है—

"दिषणी सोबौ सायजादौ खुरम थो सु पातसाह सुं फिर गयौ नैं तषत लेण री मनसोबौ कर पुरव में गयौ नैं उठै सुं साथ भेळौ कर आगरा नूं आवण लागौ । उदैपुर राणा हरसिंह (करणसिंह होना चाहिए) आपरा कंवर भीव नूं षुरम री साथ कीयौ, पातसाह जाहांगीर अजमेर था, सु साहजादा परवेज नुं षुरम सांमो मेलण नैं त्यार कर आगरा नूं कूच कीयौ, मा० गजसिंघजी नुं बुलाया सु....... समत १६८१ रा काती सुद १५ हाजीपुर पटणै गंगाजी री तीर उपर सायजादो षुरम परवेज वेढ हुई । षुरम री फोज में सीसोदीयो भीव हजार पचास लोक सुं हरोळ थो । गौड़ गोपालदास नैं केई नवाब षुरम रै सांमल था नैं परवेज री फोज मे आमेर रौ राजा वडा जैसिंघ कनै लोक सांवळो देषीयौ तरै हरोल ईणां नै (रा) कीया ....नैं महाराज गजसिंघजी ठावी बाजु नदी रै कांठै आंतरै थका उभा था । इमें वेढ हुई ... 'नै षुरम रा नै राण भीव रा साथ री जागां उपड़ी तरै परवेज री फौज रा पग छुटा नै षुरम नैं भीव कही—ओर तो फतै हुई, गजसिंघजी उभा छै सो इणां नैं बतळावौ सो उण वषत नदी रै कांठै गजसिंघजी नाड़ौ षोलता हा सो जेज लागी तरै कूंपावत गोरधन.......कही—हमार आपनै नाड़ौ षोलण री वषत लादी छै ? तरै माराज केयौ—मै तो आहीज वाट जोवतौ थो कै कोई राजपूत कैण वाळो है कै नहीं है । पछै असवार होय वागां उठाई, तरवार बजाई सीसोदीयो भीव हाथी चढ़ियौ उभौ थो सो माराज नैं गोरधन दोनों भींव रैं हाथी गया सो बरछी री दे नैं भीव नैं मार लीयौ । षुरम भागौ[१]....... ।"

१. ओझा ने (जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० ३६४) इस वृत्तांत को एकांगी तथा पक्षपातपूर्ण बतलाया है क्योंकि इसमें भीम की वीरता का विस्तृत वर्णन नहीं दिया है ।

खुर्रम की ओर से योद्धा काम आये व घायल हुए उनके नाम दिये हैं।

(५) परवेज के देहांत होने, गजसिंह के कुंवर अमरसिंह को नागौर जागीर में देने का हाल इस प्रकार है—

"समत १६८३ रा काती में साहजादो परवेज फोत हुवो नै मोवतपां नीसरीयो... ...उकील भगवान साह जसकरण कंवर अमरसिंघजी रै नांवै नागोर लिपीयो, पछै अमरसिंघजी नै राठोड़ राजसिंघ कूंपावत इणां फौज साथे असवार पनरै सोळे नै हुवा मुता रांम हाकम मेलीयो सु नागौर नवाब पांनपांना री सुं उतार नै अमरसिंघ नुं दी...... ।"

(६) जहांगीर की मृत्यु और शाहजहां का उत्तराधिकारी होने, १८ व्यक्तियों को मारने का उल्लेख इस प्रकार है—

"समत १६८४ रा आसाढ़ वद ४ आगरा में शाहजहां तपत बैठो तरै अठारै जणा नु मारीया, दूहो—

सबळ सगाई नी गीएँ, ना सबळां सुं सीर,
पुरम अठारै मारीया, ककौ ककि वीर ॥१॥"

(७) गजसिंह का बादशाह की सेवा में उपस्थित होने, आगरे के आस-पास के लुटेरे भोमियों पर शाही सेना के साथ गजसिंह के सैनिकों को भेजने तथा युद्ध में महाराजा की ओर से काम आये योद्धाओं की सूची अंकित है।

(८) बादशाह द्वारा खानजहां पठान के विरुद्ध गजसिंह आदि बड़े-बड़े सरदारों को भेजने का उल्लेख, फिर साथ चले उमरावों की विस्तृत सूची दी है तथा गजसिंह की ओर से मारे गये योद्धाओं की नामावली भी अंकित है। युद्ध मे व्यक्ति काम आये उसके आकडे इस प्रकार दिये हैं—

"पातसाजी रा लोक जणा ३०० कांम आया नै हजार १००० अेक घायल हुवा, पठांण पांनज्यां रा जणा २०० मुवा नै घायल घण हुआ।

समत १६८७ रा पातसाही फौजां सूं लड़नै जणा ५० सु मीरादेसर रै हाथ पांनजीहां मारीयो गयो।"[1]

(९) वि० सं० १६८६ में विलायत के बादशाह की दिल्ली पर चढ़ाई और गजसिंह व उनके सैनिकों के वीरता से लड़ने के उपरान्त शत्रुओं के पैर उखड़ने आदि का वृत्तांत दिया है।

1. ओझा ने (जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० ४०१), मुंशी देवीप्रसाद (शाहजहां-नामा, पहला भाग २३-३३) के अनुसार माधोसिंह के हाथ से खानजहां मरा गया लिखा है।

प्रारम्भ—

"समत १६८६ रा दीली उपर बीलायत री पातसा[1] च्यार लाख फौज ले आयो सु तीन लाख तो सीष (सिक्ख) था नैं एक लाप घोड़ो हुतो········ ।"

(१०) महाराजा का शाही सेना के साथ बीजापुर पर चढ़ाई करने का विवरण दिया है । फिर गजसिंह के अनारा नाम की पासवान की हकीकत दी है । इसमें वर्णित है कि जसवंतसिंह किस प्रकार अनारा को खुश कर अपने पिता का उत्तराधिकारी बना ।

"पछै एक दिन माराज अनारा रैं मैल पधारीया नैं छोटा कंवर जसवंतसिंघजी हजूर आया सु माराज अनारा उठीया सु········आगे पगरपीयां रा जोड़ा कंवरजी धरिया········तरैं अनारा पमा पमा कही—तरैं कंवरजी जसवंतसिंघजी कही—मारैं तो आप मा बरोबर हो, तरैं इणा सुं अनारा बोत राजी हुई नैं माराज सुं अरज कीवी के अमरसिंघजी तो वडा हैं सो कमाय सवाय जमी पावसी········ जोधपुर री राज जसवंतसिंघजी नैं दीरावो तरैं महाराजा वचन दियौ ।"

(११) मेरो द्वारा वि० सं० १६७९ में मेड़ता से पशु इत्यादि ले जाने पर हुए झगड़े का विवरण दिया है । इसी वर्ष फलौदी पर बलोचों की चढ़ाई होने पर गजसिंह की सेना द्वारा किये गये मुकाबले आदि का वृत्तांत है ।

(१२) महाराजा की ओर से चारणों, उमरावों, चाकरों को पसाव हाथी आदि दिये उसकी सूची दी है ।

(१३) महाराजा गजसिंह के वि० सं० १६९४ ज्येष्ठ सुदि ३ का देहावसान होने का उल्लेख है तथा एक सूची में बतलाया है कि उन्होंने कुछ हथनियां अमुक जगह से प्राप्त की ।

(१४) महाराजा द्वारा करवाये गये भवन-निर्माण कार्य तथा तुलादान इत्यादि किया उसकी विगत दी है, फिर महाराजा के रानियों व संतति के हाल, आदि का वर्णन है ।

(१५) मृत्युपरान्त अनारा का गहना दरबार में लाया गया उसकी सूची, महाराजा द्वारा चारणों को गांव सांसण दिये उसकी विगत है और अन्त में महाराजा जसववंतसिंह को शाही दरबार से जागीर में परगने इत्यादि मिले उसका ब्यौरा दिया गया है । इसके साथ ही गजसिंह की ख्यात समाप्त हो जाती है । (पत्र—२५)

१. विलायत का बादशाह कौन था और विलायत से किस देश का आशय है, यह ख्यात मे अंकित नहीं है अत. ओझा ने (वही, पृ० ४०२) यह घटना कल्पित ही मानी है ।

(ख) जसवंतसिंह री ख्यात :-

ख्यात का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

"म।राज जसवंतसिघजी समत १६८३ में माघ वद ४ मंगलवार रौ बुरानपुर हवेली में जनम समत १६६१ रा सावण सुद ६ कासमीर में राजा गजसिंघजी पातसाह सुं अरज कर वडो बेटो अमरसिंघ.......।"

महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम) के राज्यकाल की घटनाओं का विवरण-कम इस प्रकार है।

(१) प्रारम्भ मे बादशाह द्वारा महाराजा जसवंतसिंह और उनके उमरावो को सिरोपाव आदि दिये उसकी विगत दी है, फिर बादशाह की ओर से टीके पर परगने इत्यादि मिले उसकी विस्तृत सूची अंकित है।

(२) महाराजा का पोकरण पर अधिकार करने का वृत्तांत दिया है, भाटियो और महाराजा की ओर से मारे गये योद्धाओं की सूची दी है। एक गीत दिया है—प्रारम्भ—

'गढ कलीपो लीयो जसा पत्री गुरू।'

(३) वि०सं० १६६८ आश्विन सुदि १० को लाहोर जाने और वहां चारणो उमरावों को घोड़े हाथी इत्यादि बख्शीश मे दिये उसकी सूची दी है।

(४) वि० सं० १७१४ में शाहजहां के रोग-ग्रस्त होने, बादशाह के पुत्रो द्वारा बगावत इत्यादि करने तथा महाराजा का औरंगजेब के विरुद्ध लडने (धरमाट का युद्ध) युद्ध मे काम आये योद्धाओं की सूची भी अंकित की गई है।

(५) शिवाजी का उत्कर्ष रोकने के लिये वि० सं० १७२० मे महाराजा द्वारा की गई चढ़ाई का वृत्तात है।

(६) वि० सं० १७२१ श्रावण सुदि में पूना मे महाराजा के यहा शाही मनसबदार उपस्थित थे उनके नाम दिये है।

(७) कुंवर पृथ्वीसिंह का बादशाह की सेवा में उपस्थित होने, वि० सं० १७२२ में शाहजहां का देहान्त होने का उल्लेख है।

(८) महाराजा के प्रयत्नों से मराठों और मुगलो में मेल स्थापित करने का उल्लेख है।

(९) वि० सं० १७३० में शाही फरमान के अनुसार महाराज के काबुल जाने का उल्लेख है। वहां पठानों से युद्ध करने, युद्ध में काम आये योद्धाओं की नामावली अंकित है।

(१०) औरंगजेब द्वारा गोरधननाथजी का देवल तुड़वाने का उल्लेख है—

"समत १७२५ में गोकलजी में श्री गोरधननाथजी रौ देउरौ थो सो पाड़णौ पातसाह औरंगजेब हुकम दीयौ तरै श्री नाथजी री मूरत लेनै गुसांईजी जोधपुर आया, केई दिन जोधपुर मुं नजीक भाकर मे कदमखंडी छै.......।"

(११) वि० सं० १७२३ में मुहणोत नैणसी व सुन्दरदास को कैद किये जाने, उनके द्वारा आत्महत्या करने का वृत्तात है।

(१२) नैणसी के पुत्र करमसी को मरवाने का वृत्तात ख्यात में इस प्रकार दिया है—

"पछै राव रायसिंघजी (नागौर) दीपण में था उठै घडी २ तथा ४ बेकार रहै नै अजाणचक रा मर गया तरै सिरदारा रा मुसदीयां चाकरां सारां कह्यो—औ काही हूवो ? उणों रै गुजरात रो वेद नौकर थो तिण नुं पूछियो औ कांही कारण हुवौ ? तरै वेद कह्यो—"करमां नो दोस छै (भाग्य का दोष) इणा गुजराती बोली री अरथ ओ छै कै प्रालब्ध रौ चूक छै नै रायसिंघजी रा चाकर समजीया कै करमसी मुणोयत रो दोस छै...."तिण सु मुहणोत करमसी नै भीत में चुणाय दीयो नै मारीयो नै नागौर लिपोयो—धाणी मे पीलाय नाषजो सो करमसी री बडारणीयां २ थी जीका करमसी रा बेटा सांवतसिंघ सागरमलसिंघ नै लेनै नीसरी सो कीसनगढ़ ले गई सो कोई दिन उठै हीज मोटा हुवा।"

(१३) महाराजा जसवंतसिंह द्वारा वि० सं० १७१७ में गुजरात के बादशाह औरंगजेब को घोड़े, सोना चांदी, कपड़े इत्यादि पेसकसी में भेजे गये उसकी सूची अंकित है।

(१४) महाराजा जसवंतसिंह के परधान कामदारों की नामावली दी है तथा उनके बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी भी अंकित की गई है यथा—

"राठौड़ राजसिंघ षीवा मांडल कूपांवत रो समत १६६७ रा राजा सूरसिंघजी चाकर राष नै कंवर गजसिंघजी रै चाकर थापीया सु राजा गजसिंघजी जीवीया जठा तांई प्रधानगी कीवी पछै महाराज जसवंतसिंहजी मुंडा आगै प्रधानगी कीवी".... ....मा० जसवंतसिंघजी जोधपुर पधारिया तरै राजसिंघजी साथे आयो, समत १६६७ रा पोस वद ५ राठौड़ राजसिंघ आसोप रो धणी रांम सरण हुवो कागे दाग हुवौ तरै नारषांन राजसिंघोत कागे छत्री कराई।"

१५ विशिष्ट व्यक्तियों का विवरण दिया गया है जो प्रशासनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

(१५) महाराजा के देहावसान का विवरण इस प्रकार दिया है—

"महाराजा श्री जसवंतसिंघजी समत १७३५ रा पौस वद १० वार वीसपत वार श्रेक पौर चार घड़ी दीन चडिया पोसोर में देवलोक हुवा, बुंदेला पूरणमल रा धाग मे दाग हुवो।"

(१६) अन्त में महाराजा की रानियों व कुंवरों का वृत्तांत दिया गया है। (पत्र–३८)

यह विस्तृत ख्यात मारवाड़ के इतिहास के लिये उपयोगी है।

(ग) अमरसिंह री ख्यात :–

इसमे महाराजा गजसिंह के ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह का वृत्तात दिया गया है।

प्रारम्भ—

"माराज गजसिंघजी रै पाटवी कंवर थो सु माराज इणां सुं नाराज था तीण सुं अमरसिंघजी नुं टीका सुं दूर कीया, सं० १६६१ में लाहौर बुलाय पातसाह जी रै जूदा चाकर राषीया·······।"

अंकित घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है :–

(१) प्रारम्भ मे अमरसिंह के वादशाह की हाजरी में उपस्थित होने आदि का विवरण संवत सहित दिया गया है।

(२) वि० सं० १७०१ मे बीकानेर के गांव सीलवा और नागौर के गाव जाखणिया के संबंध में झगड़ा होने पर बीकानेर वालो के साथ अमरसिंह की सेना से हुई लड़ाई का वृत्तात दिया है। युद्ध में अमरसिंह के योद्धा काम आये अथवा घायल हुए उनकी नामावली अंकित है।

(३) अमरसिंह द्वारा वादशाह के प्रमुख दरबारी सलावतखां को मारने फिर स्वयं के मारे जाने का उल्लेख है।

(४) अमरसिंह के दाह संस्कार आदि का विवरण है।

(५) शाही दरबार व डेरे मे लडते हुए अमरसिंह के साथ सरदार काम आये उनकी सूची दी है। फिर वादशाह के व्यक्ति मारे गये उनके कुछ नाम दिये है।

(६) अमरसिंह के राजलोक की विगत में उसकी रानियों और कुंवरों का हाल दिया है। जिसमें उनके पुत्र रायसिंह के शाही दरबार की ओर से अनेक युद्धो मे लडने का वृत्तांत है। फिर अन्त मे रायसिंह के पुत्र इन्द्रसिंह के वृत्तात में उसे नागौर मिलने, दक्षिण में भेजे जाने, अजीतसिंह द्वारा उसके पुत्रों को चूक से मरवाने इत्यादि के उल्लेख के साथ ख्यात का यह भाग समाप्त हो जाता है। (पत्र–६)

(घ) महाराजा सूरसिंह री ख्यात :–

जोधपुर के शासक मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र सूरसिंह की ख्यात का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

"सवाई राजा सूरसिंघजी समत १६२६ रा बैसाख वद घडी १७ रात गयां रौ जन्म, समत १६५१ रा सावण वद १२[1] अकबर पातसाह लाहौर में टीको दीयौ, दोय हजारी जात सवा हजारी असवार मनसब दीयो ......।

घटनाओं का क्रम इस प्रकार है—

(१) शाही दरबार से मिले परगनों के नाम, गांवों की संख्या इत्यादि का ब्यौरा दिया है।

(२) अकबर द्वारा महाराजा को गुजरात के प्रबन्ध के लिये भेजे जाने का उल्लेख है।

(३) अकबर की मृत्यु के पश्चात जहांगीर द्वारा महाराजा को पुनः गुजरात में नियुक्त करने, वहां विद्रोहियों का दमन करने का उल्लेख इस प्रकार है—

"जहांगीर माराज सूरसिंघजी नै अहमदाबाद रौ सोबो इनायत कर गुजरात में मेलीया सो लालमीयां उपर माडवे गया। राजाजी घाटी उपर चढ़िया ऊभा रहा, फौजा आधी गई सो मांडवो ले लियौ। मांडवो लेनैं पाछा फिरीया तरै घाटी मांहि लालामीयां आप वेढ कीवी ......।"

आगे महाराजा की ओर से मारे गये योद्धाओं की सूची दी है।

(४) वि० सं० १६६६ मे बादशाह द्वारा महावतखां को राणा अमरसिंह के दमन करने हेतु भेजने का उल्लेख है।

(५) अन्त में वि० सं० १६६८ में सीसोदिया भीम द्वारा ईसाली लूटने इत्यादि घटनाओं के साथ ख्यात समाप्त हो जाती है।

"समत १६६८ रा पौस सीसोदीया भींवजी गांव ईसाली मार नै निकळीया तरै राठौड लीषमण नारायणोत रा अमरो ......।"

इसमें महाराजा सूरसिंह की ख्यात की प्रतिलिपि पूर्ण नहीं है। प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है।

---

१. यह संवत ठीक नहीं है, देखें ओझा—जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड पृ० ३६४

४८. कछवाहों री ख्यात अथवा वंशावली

१. कछवाहों री ख्यात, २. रा० शो० सं०, ३. १३४६८, ४, ३४.५× २५.५ सेमी०, ५. ६३, ६. ३०-३२, ७. २० वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ख्यात में घटनाओं आदि का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) वंशावली :–

प्रारम्भ में एक दोहा दिया है फिर कछवाहों की वंशावली में आदि नारायण से सवाई राम तक ३०४ नाम अंकित हैं।

दोहा—

रोहीतास सुं कालपी, नरवर सुं गवालेर।
द्योसे सैं कूरम विभू, आया फिर आंबेर ॥१॥

(२) प्रस्तुत ख्यात की वंशावली के अनुसार २७१ वें राजा ईसरसिंह से सवाई रामसिंह तक के राजाओं और उनकी विभिन्न शाखाओं आदि का विवरण दिया गया है। ईसरसिंह से नरवर छूटने और सोढ़देव का ढूंढाड़ में अधिकार होने का उल्लेख इस प्रकार है—

"ईसरसिंघजी वृघ पणो जांण आपका वंश में राज सदा थिर रहै इसी सला वांमणां नैं पूछी जद पिडतां अरज करी राज पुन्य कीयां आप तो स्वर्ग का भोग भोगवस्यो और आपके पुत्र पोतां के राज पदवी निश्चल रहसी। जद आप फुरमायो इसो दान पात्र कुण छैं·······वांमणां नैं तो परसरांम को श्राप छै सो यां को राज रहै नही सु मांणजां नैं दीजैं, सो सास्त्र को लेख छै·······सो राज तो जयसिंघजी कंवर भाणेज नैं संकलप कीयो·······काती वद ६ संवत १०१३ कैं बरस पछैं राज तिलक सोढदेजी नैं हुवो·······पछैं सोढदेवजी के कंवर दूलेरायजी सो वानैं समर्थवान जांण जयसिंघजी सोची विचारी जो अेक राज में दो राजा पटे नहीं······ सोढदेवजी मूं अरज करी– यो मामाजी साहिब मांने राज पुन्य दीयो·······राज माके राखवा को मरजी होय जद तो आप ई हद में सूं कूच कीजैं ·······पछैं आप उठा सूं सांतर सरजाम कर बरेली की तरफ गाव निदरावली जा बैठा·······म्हाराज कंवर (दूलेराय) के वडगूजरां के झगड़ो हुवो तीमे वड़गूजर मारया गया·······पछैं देवती को राज·······गूजरां को छो या षवर सुणी, उठा सुं फौज भेजी सो फेर द्योसे झगड़ो हुवो भीव कंवरजी की फतै हुई·······राणा सोढ़देजी नैं लिषी······· अमल हो गयो छैं·······पछैं सुभ मुहरत दिखाया कंवरजी नैं युवराज की पदवी दीवी ·······गांव में मीणा को फितूर घणो·······कंवरजी मूरछत हुवा तठै देवीजी

आय दर्शण दिया ……कंवरजी रै घाव आछा हो गया……बोल्या कि कुलदेवी सुं ……कंवरजी ग्रसतुती करी देवीजी फुरमायो……रण विजय होसी……अठै थारो राज होसी……ई नाका में मारो मिंदर बणावो……कंवरजी चढ़ भ्राया सुणिया मीणां वडो ग्राचरज मान्यो……नाका पर देवीजी को मन्दिर वणाय पूजा कराय ग्रर मांची के डूंगर पर गढ़ वणवायो गांव को नाम रामगढ़ दीयो…… सोढदेवजी काळवस हुवा, मीती महा सुद ६ संवत १०६३, राज कीयो वरस ४० मास ३ दिन ११……पछै तिलक दूलेरायजी के हुवो……।"

(३) राजा काकिल ग्रौर हणुराय :-

दूलेराम के पुत्र काकिल का उत्तराधिकारी होने आदि घटनाओं का विवरण इस प्रकार है—

"काकलजी राज पायो सो उमराव सिरदार कितराक तो गुवालेर झगड़ा में काम ग्राया ग्रौर कितराक जखमी छा सो ग्रठे मुवा……मीणा माई सगां नै ग्रेकठा कर जमी दाबवा पर मन वधायो……पछै झगड़ो करवो विचारियो (काकिलने) या वात मीणा सुणी झगड़ो हुवो……हजूर के साथ लोग थोड़ा छा महाराज घायल होय मूरछा पाय खेत में पड़िया ग्रर मीणां फतै समझ ग्राप ग्रापका घरां गया……माता……दूध की वरषा करी सो हजूर चेतन हुवा……आकास वाणी हुई……थारो विजय होसी……माता की ग्राज्ञा माफक जगां खुदाई सो महादेव की पिंड निसरी तिकी शास्त्रों की पूजन प्रतिष्ठा कराय मन्दिर की नीव दिराई। ग्रामेर को धूंणी थापी। पछै उठै थांणा……राव षोह पधारिया…… पछै मोरां सूं चहूवाणां को टीको आयो सो लै'र उठै जाय ब्याह कियो……झगड़ो हुवो (मीणों से वापस झगड़ा हुग्रा) मीणां वडगूजरां को मुंह फिरयो ग्रर गढ़ की तरफ भागा……कितनां ही दिनां पछै देवलोक हुवा मिती वैसाष वद १० संवत १०९६ में। राज कीयो वरस ३ महीना २ दिन १८। कंवर च्यार—हणुजी राजा हुवा, ग्रलंघरायजी, देलणजी, रायपालजी। हणुतरायजी सो यां का राज में अमन चैन वडो रहयो। नई जमी दाबी नही। पछै काळवस हुवा मिति काति सुद १३ संवत १११० में। राज कीयो वरस १४ महिना ५ दिन ७, यां के बेटो एक जांनड़देजी सो राज वैठो……।"

(४) जांनड़दे, पनवनजी ग्रौर मलेसीजी :-

जांनड़दे का उत्तराधिकारी होने राज्य में शांति रहने और वि० सं० ११२७ चैत्र सुदि ६ को देहान्त होने का उल्लेख है। उनके पुत्र पनवनजी संबंधी घटनायें इस प्रकार वर्णित है—

"पृथ्वीराज के काके कन्ह प्रथीराज नै पूछी जो बाई ब्याह लायक हुई सो कुण नै परणावणी...... ढूंढाड का राजा पनवनजी की रजपूती.........घणी आछी छै अर आंपोरा सनमंदी छै सो या बाई वां जोग्य छै सो टीको भेजो.........विवाह कीयो। (आग्रह करने पर) चहुवांणां के सामिल रह्या.........।"

सोलंकियों से युद्ध कर गुजरात पर अधिकार करने का उल्लेख है—

"कांई वार झगड़ों कीया पर घोड़ा उठाय सोलंषी नै मारयो ओर साथ का मार गया...... सोलंखी का सहर में जाय उठै साबित गुजरात मे अमल कीयो उठै थांणो बैठा आप दिली दापल हुवा सो प्रथीराजजी सामा आर ले गया.........।"

पृथ्वीराज और मोहम्मद गौरी के बीच हुए युद्ध का वृत्तांत है। अनेक छप्पय दोहे उद्धृत हैं। राठौड़ों की फौज से लड़ते हुए मारे (पनवनजी) जाने का उल्लेख है—

"राठोड़ों का आदमी असी लाप दळ सूं झगड़ो कान्ह करतो हुवो घाव साठ लागा मूरछत हुवा ...... अर यानें साथ का लोग उठा लाया। पछै महाराज की स्वरग जावा की पबर सुण प्रथीराज केयो, छप्पय—

आज विधाता ढिल्लड़ी, आज ढुढाड़ अनर्थ।
आज दिन प्रथीराज, आज सांवत बिन सत्थ.....।"

उनके पुत्र मलेसी के उत्तराधिकारी होने और गागरोन के शासक की पुत्री के साथ विवाह करने और वि० सं० १२०३ फाल्गुन सुदि ३ को देहान्त होने का उल्लेख है।

(५) बीजलजी छोटा भाई सिधणजी और राजदेवजी :–

बीजलजी के भाई सोधणजी के बारे में (शादी) इत्यादि का वृत्तांत है फिर इसके निःसन्तान मरने पर मलेसी का पुत्र राजदेव उत्तराधिकारी बना इसके द्वारा आमेर में महल बनाने तथा वि० सं० १२७३ पौष वद ६ में देहान्त होना लिखा है।

(६) केलणजी, कुंतलदेव और जोणसी :–

राजदेव के बाद उसका पुत्र केलण के उत्तराधिकारी होने, केलण गढ़ बनवाने, वि० सं० १३३३ काती वद ६ में देहान्त होने, उसके पुत्र कुंतलदेव के उत्तराधिकारी होने और माघ वदि ६ संवत १३७४ में देहान्त होने, उसके पुत्र जैणसी के उत्तराधिकारी होने और आबू के राजा की पुत्री (देवड़ी) के साथ शादी करने और माघ वदि ३ सं० १४१३ में देवलोक होना लिखा हैं।

(७) उदैकरण, नरसिंघ, बणवीर और उधरणजी :-

जैणसी के बाद उदैकरण के उत्तराधिकारी होने और फाल्गुन वदि ३ संवत १४४५ को देहान्त होना लिखा है। फिर उसके पुत्र नरसिंह के उत्तराधिकारी होने, उसकी मृत्यु पश्चात् (वि० सं० १४८४ भाद्रपद ५) वणवीर का उत्तराधिकारी होने का उल्लेख है। इसके देहान्त (वि० सं० १४९६) आश्विन वद ११ बाद उस के पुत्र महाराज उधरणजी का राज्यारोहण होना लिखा है।

(८) चन्द्रसेन, पृथ्वीराज और भारमल और भगवंतदास :-

चन्द्रसेन के समय की कोई घटना का वृत्तांत नहीं दिया है, संवत १५५६ फाल्गुन वद ५ देहान्त होना लिखा है। फिर उसके उत्तराधिकारी पृथ्वीराज के कृष्ण का भक्त होना लिखा है और उसके बाद क्रमशः भारमल, भगवंतदास का उत्तराधिकारी होने का उल्लेख है।

(९) मानसिंह और भावसिंह :-

भगवंतदास के पुत्र मानसिंह के महाराणा प्रताप के साथ एक थाली में भोजन नही करने और रामप्रसाद हाथी नही देने पर दोनों के बीच युद्ध होने का उल्लेख है। प्रताप ने प्रतिज्ञा की—

"राणा नेम कियो जो 'आमेर झगड़ो कर नहीं जीतूं जितने पाघ बाधूं नही, अर थाल में जीमूं नही अर पिलंग पर सोऊं नही.........।"

मानसिंह का अकबर की ओर से अनेक युद्धों में भाग लेने और कुछ काल्प-निक बातें आदि वर्णित है। मानसिंह के दक्षिण में रहते हुए वहा वि० सं० १६७१ आश्विन सुदि १० को देहान्त होना लिखा है।

मानसिंह के पश्चात् उसके पुत्र भावसिंह का उत्तराधिकारी होने व उसके कुंवर बद्रीसिंह का कुंवरपदे में देहान्त होना लिखा है।

(१०) जयसिंह रामसिंह :-

भावसिंह के निःसन्तान मरने पर महासिंह के पुत्र जयसिंह का आमेर राज गद्दी पर बैठने का उल्लेख है। शाहजहां के पुत्रों द्वारा विद्रोह करने पर जयसिंह को शाहजादा सुजा को दबाने हेतु भेजना, उसके जम्मू से भगाकर वहां थाना स्थापित कर दिल्ली लौटने, महाराजा का बीजापुर, धवाचोल आदि स्थलों पर अधिकार होने का उल्लेख है।

रामसिह द्वारा ग्रासाम में तथा काबुल में विद्रोहियों को दबाकर वहां बादशाह का ग्रधिकार करने का उल्लेख है।

(११) विशनसिह सवाई जयसिह :–

रामसिह के पौत्र विशनसिह के उत्तराधिकारी होने, जाटों का दमन बादशाह के ग्रादेशानुसार करने व वि० सं० १७४६ माघ सुदि ५ को देहान्त होने का उल्लेख है।

जयसिह को 'सवाई' का खिताब देने का उल्लेख इस प्रकार वर्णित है—

"हजूर पातसाह सूं मिळिया, जद हजूर ने बालक जांण पातसाह हजूर का दोनूं हाथ पकड़ कही ग्रब थाको बळ कांइ जद हजूर बोलिया ओरत का पांवद एक हाथ पकड़ता है तींको निरवाह करै छै सो म्हारा तो पांवद दोनूं हाथ पकड़या सो बळ को कांई प्रमाण। जद बादशाह बहोत राजी हुवो ग्रर कहो उमर तो ग्रा अर बात ईसी ग्राछी करै छै, जद महरबांन होय सवाई पणा रो खिताब दियो।

हजूर सूं ग्रजीतसिहजी ग्राप री बेटी की सगाई करी, पछै दोनूं राजा के सला हुई पातसाह का पालसे किया मकांन तो ग्रापां लिया ही ग्रब ग्रजमेर व सांभर क्यूं छोडो छो सु जोधपुर सूं कूच कर ग्रजमेर गया, उठै पातसाह को फौजदार छो तीसूं घड़ी च्यार भगड़ो हुवो पछै हजूर सूं ग्रा मिळियो, सो हजूर सूं पांच रूपीया ले'र सांभर आय ग्रमल कियो। पातसाह...... ...नारनोल का सायदां नै लियां आयो ....ग्रर ग्रठी सूं दोनूं राजा का धोड़ा ....सैयदां नै मार फतै करी ....।

पछै संवत १७६६ काती में आमेर सुं कूच कर ग्रमरसरवाटी में होय त्रिवेणी संनान करीयो........पछै संवत १७६६ काती में कुरूक्षेत्र जाय संनान करियो ग्रर सोनो की भूमि वगैरह बहोत पुन्य कियो...... ...हजूर तालावन होय नरांणपुर को गढ़ तोड़ ग्रामेर दापल हुवा.........।

फौज भेळी कर कूच कीयो सो आगरा के नजदीक भगडो हुवो तामे फरुकसियर की फतै हुई सो दिल्ली आय तखत बैठो ग्रर हजूर ने मिरजाई को खिताब दियो........ ग्रर मालवा को सूबो लिप भेज्यो ' ......।

(जयसिह) दिल्ली नै कूच कीयो सो रसता में तरांणपुर ब्याह कर दिल्ली गया। हजूर पातसाह कनै जाय नजर करी........पातसाह हजूर नै कही जाटां नै सर करो सो हजूर कूच कर कामां डेरा किया सो जाट घबराय ....।

संवत १७८४ का सावण के महीनें सवाई जैपुर की नींव दिवाई, सहर वसायो, महल बणायो.......सर महल तीन बड़ा जयसिंह का, बणाया बादळ महल १, तलाव ताल कटोरो २, गोविन्दजी को महल चन्द्रमहल ३, बागजे निवास ५........।"

अभयसिंह का जयपुर पर चढ़ाई करने का एक कारण इस प्रकार दिया है—

"जद नागोर में अभैसिहजी गूं छोटो भाई बघतसिहजी राज करै छो सो दरबार कर फूलों की माळा तूरी बाटी, जद ओरा तो सारा सुंगी, एक चारण छो जी सूंगी नही, जद बघतसिहजी पूछी बारटजी तुरी सूंगो क्यूं नही ? जद बारट अरज करी महाराज नाक बिना की सूघू, नाक तो जयसिंहजी ले गया, जद आ बात मारां नै दूषी, जद बखतसिंहजी जोधपुर ने लीषी—नाक तो जयसिंहजी लै'र जाय छै सो आप जरूर चढ़ो.......।"

(१२) ईश्वरसिंह और माधोसिंह :–

जयसिंह के बाद उसके पुत्र ईश्वरसिंह के उत्तराधिकारी होने, उदयपुर राणा द्वारा माधोसिंह को जयपुर की राजगद्दी दिलवाने हेतु किये गये प्रयत्नों आदि का वृत्तांत दिया है। माधोसिंह के मराठों से और जाटों से युद्ध करने का वृत्तांत है। उसके बनाये भवन आदि का भी विवरण दिया है।

माधोसिंह के पश्चात् पृथ्वीसिंह और प्रतापसिंह क्रमशः जयपुर राजगद्दी पर बैठने फिर जगतसिंह का उत्तराधिकारी होने, महाराजा मानसिंह द्वारा जोधपुर पर चढ़ाई करने, फिर जगतसिंह की मृत्यु के बाद उनकी भटीयानी राणी द्वारा राज्य करने, फिर अन्त में सवाई रामसिंह के राज्य-काल का वृत्तांत दिया गया है। मृत्यु के बारे में लिखा है—"संवत १८३७ भादवा सुद १४ आधी रात पछै दोय बज्यों आसरै महाराज रामसिंहजी देवलोक हुवा।"

ग्रंथ के अन्तिम भाग में सवाई जयसिंह का वृत्तांत विस्तार से किसी अन्य व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। घोड़ों की चिकित्सा संबंधी कृति भी ग्रंथ के अन्त में दी गई है। कछवाह राजाओं के वृत्तांत के अतिरिक्त कुछ विभिन्न गांवों के ठाकुरों की वंशावलियां भी दी गई है। यह ग्रंथ कछवाहों के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

मूल ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मंढ़ा हुआ है।

४६. उम्मेदसिंह हाडा की ख्यात

१. उम्मेदसिंह हाडा की ख्यात, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १८८४०, ४. ४३.६ × १५.३ सेमी०, ५. १३२, ६. ३२-३६, ७. वि० सं० १६३०, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इस बहीनुमा ख्यात में बूँदी के महाराव उम्मेदसिंह हाडा के शासन-काल (वि० स० १७८६-१८३३) का विस्तार पूर्वक वर्णन दिया है जिसमे मूलतः अपने पैत्रिक राज्य बूंदी को प्राप्त करने हेतु किये गये प्रयत्नों का वृत्तात है।

प्रारम्भ—

"श्री गणेसायनमः महाराजधिराज महाराव राजा श्री उम्मेदसिहजी को चरित्र राजा वण्या जद सूं लेर संवत १८३३ तांई को अहवाल ई रीत जांणियो सो लष्यो छै, संवत १६३० ।

महाराजधिराज महाराजा श्री बुधसिंहजी को महाराणाजी श्री चांडावतजी बेघूं का ज्याका महाराज कुमार श्री उम्मेदसिहजी को जन्म संवत १७८६ का असाढ़ सुद १४ उपरांत सनीसरवार मुकाम जैपुर के नजीक गांव घोहोरी भट राजाजी के जठै मुकाम छो उठै जन्म होयो ......।"

प्रस्तुत ग्रंथ में अंकित महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) महाराव बुधसिंह की मृत्यु के पश्चात् बालक उम्मेदसिंह का बेगूं में राज्यभिषेक तथा उस समय कोटा बूंदी की राजनैतिक स्थिति का विवरण ।

(२) वर्णित है कि उस समय बूंदी पर दलेलसिंह का अधिकार था (तारागढ़ का किलेदार सालमसिंह का पुत्र) सवाई जयसिंह ने बुधसिंह को हटा कर इसको (दलेलसिंह) गद्दी पर बैठाया था ।

(३) जयपुर नरेश सवाई जयसिंह की मृत्यु के पश्चात उम्मेदसिंह द्वारा बूंदी पर अधिकार करने हेतु किये गये प्रयत्नों का उल्लेख है ।

(४) सवाई जयसिंह द्वारा जोधपुर पर और अभयसिंह द्वारा बीकानेर पर की गई चढ़ाईयो का विवरण दिया है । फिर लिखा है कि जयसिंह और अभयसिंह के बीच मनमुटाव हो गया था अतः उम्मेदसिंह ने अभैसिंह से सहायता मागी पर उसे मदद नहीं मिली ।

(५) वर्णित है कि गुजरात के सूबेदार फकरदौला (फखरुद्दीन) की मदद से उम्मेदसिंह ने बूंदी पर चढ़ाई की, दलेलसिंह हार कर भाग गया ।

"दलेलसिंह सू आयर बूंदी छूटी"

(६) उदयपुर के महाराणा द्वारा अपने भानजे माधोसिंह को जयपुर की राजगद्दी दिलाने हेतु मराठों से सहायता लेने व जयपुर पर चढ़ाई करने का वृत्तांत।

(७) बूंदी पर मराठों का आक्रमण व ईश्वरसिंह के विष पान कर मर जाने तथा माधोसिंह के उत्तराधिकारी होने का उल्लेख।

"राजा ईसरीसिंहजी नें जहर केसीदास पथी वरस संवत १८०६ में दे मारयौ जी आटे सूबेदार जैपुर चढ़ि आयौ संवत १८०७ का पौस में राजा ईसरी सिंहजी नें भी जैहर ही पायौ सो मुवा।"

(८) बूंदी पर पुनः दलेलसिंह का अधिकार होने पर उम्मेदसिंह द्वारा मराठों आदि से सहायता लेने और उसका बूंदी पर फिर से अधिकार होने पर ब्राह्मणों को भोज आदि देने का उल्लेख है—

"संवत १८०५ का काती सुद १३ सनीसरवार रावराज उम्मेदसिंहजी महाधीराज वीर तपबळी अवतार म्हा प्रतापीक वूंदी का राज के तषत राज महेल·········· विराजीया·········राजा बुधसिंहजी का तप को फळ सत्य संकळप हुवौ।"

(९) उम्मेदसिंह द्वारा बनाये गये भवन निर्माण कार्यों इत्यादि का वृत्तांत है।

(१०) प्रधानों को हाथी पालकी आदि देने का वृत्तांत है।

(११) राज्य का कार्यभार अपने पुत्र अजीतसिंह को सौंपने का उल्लेख है। आगे अजीतसिंह के राज्यकाल की कुछ घटनाओं का विवरण अंकित है।

अन्त में लिखा है कि उम्मेदसिंह नें चार विवाह किये जिनमें से दो रानियों के नाम दिये है।

अन्तिम भाग—

"राणीजी श्री उदावतजी राणेस का ठाकुर बषतसिंहजी की बेटी पोती संभुसिहजी की पड़पोती जगरामजी पड़पोती जगरामजी की नांव कुंनणकंवर व्याव समत १८२१ वैसाष सुदि १ दिन पर·······।"

अन्त का संभवतः एक पत्र लुप्त होने से ख्यात अपूर्ण हैं। ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। लिखावट अशुद्ध है व काट छांट भी काफी है। अन्त के पत्र एक ओर से खण्डित है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

महाराव उम्मेदसिंह कालीन बूंदी और मराठों के राजस्थान की राजनीति में दखल के अध्ययन हेतु यह ग्रंथ उपयोगी है।

५०. कवित्त, वात संग्रह ग्रादि

१. वात, कवित्त संग्रह आदि, दुरसा ग्राढा, बारट आसा आदि, २. रा० शो० सं०, ३. २३१, ४. ३०×१६.५ सेमी०, ५. ६६, ६. २१, ७. वि० सं० १७६४ (ई० सन् १७३७), ८. मेरू दास, ९. राजस्थानी देवनागरी, १०. इसमें महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कृतियों का संग्रह है। प्रारम्भ में कुछ कवित्त गीन ग्रादि इस प्रकार ग्रंकित हैं :—

(१) कवित्त राठौड़ मोपत गोपालदासोत रो :–

प्रारम्भ—

रिण हजाद गज रूप वांध पैंडी घट वैहड........।

(२) गीत सुरजमल जंतमालोत रो (ग्राढ़ा दुरसा कृत)

(मान चहुवांण मारियो तिण साप रो)

प्रारम्भ—

ग्राफळै अप्रम सुवार अठारै कंस मार वाका करै।
सबळा भीच भीम सुरजमल मांन जुरासिंध नै हैजम रै ॥१॥

आगे पारसी के १२ महिनों का उल्लेख है।

(३) ग्रखोइणी मांन फौज :–

अक्षोहिणी सेना का विवरण इस प्रकार ग्रंकित है :—

१ पत रो मांन	२ सेना रो मांन	३ सेना मुप	४ गुल्म रो मांन	५व्याइनी रा मान
हाथी १ रथ १ घोड़ा ३ पाळा ४	हाथी ३ रथ ३ घोड़ा ६ पाळा १५	हाथी ३ रथ ६ घोड़ा २७ पाळा ४५	हाथी २७ रथ २७ घोड़ा ६१ पाळा १३५	हाथी ८१ रथ ८१ घोडा २४३ पाळा ४०५

६ पतना मांन	७ चमु मांन	८ मनी कना	९ अक्षोणी	
हाथी २४३ रथ २४३ घोड़ा ७२६ पाळा १२१५	हाथी ७२६ रथ ७२६ घोडा २१८७ पाळा ३६४५	हाथी २१८७ रथ २१८७ घोड़ा ६५६१ पाळा १९३५	हाथी २१८७० रथ २१८७० घोड़ा ६५६१० पाळा १०९३५०	सब संख्या २१८७००

१८ अक्षोणी महाभारत आवटीयो—

हाथी ६३६६०
रथ ६३६६०
घोडा ११८०६८०
पाळा १९६८३०० कुल — ३६३६६००

(४) राव जोधाजी री बात :-

यह वार्ता जोधा के गया यात्रा से प्रारम्भ होती है।

प्रारम्भ—

"राव जोधाजी गयाजी री जात पधारिया उठै ग्रागरा री पापती नीसरीया तरै राज करन राठोड़ कनवज रा धणी नुं राव जोधो मिळीयो तरै राजा करन पातसाह जी सूं गुंदरायो ·· ··आदि।"

एक प्रशस्ति गीत दिया है फिर जोधपुर दुर्ग बनवाने का उल्लेख है आगे सातल सूजा और गांगे का विवरण है। फिर मालदेव का वृत्तांत आ जाता है पहले उसके द्वारा बनाये विभिन्न किले कोटडियां इत्यादि (भवन निर्माण कार्य) का वृत्तांत है कुछ गढ़ों का उल्लेख भी है। यथा—

"श्रीवांणो राज वीरनारायण पंवार री करायो सं० १०७७ गढ़ मांडीयो, पछै गढ चहुआंणों रै आयो सं० १३६४ सातल सोम नु मारनै अलावदीन पातसा लियो पछै राव माला रै हुओ···· ···आदि।"

७ कवित्त राव मालदे (बारट आसा कृत) के लिपिबद्ध है।

प्रारम्भ—

कवण किसन पति सबळ काळ प्रति कवण अगंजित
पृथीपति कुण बांण पत सुरपति कवण····· ··आदि

राव मालदेव ने जैसलमेर पर आक्रमण किया उसका हाल पत्र लुप्त हो जाने से अपूर्ण है।

(५) लोद्रवे जैसलमेर की वार्ता :-

जैसलमेर की संक्षिप्त रूपरेखा अंकित है।

प्रारम्भ—

"लुद्रवो जैसलमेर कन्है सून्हो छै पंवार भांण री बैसणो। जैसलमेर जैसल तठा पछै वसायो छै···· ·· लुद्रवो पंवार लोद्रा रहता पछै भाटी देवराज देरावर थकै

पंवारां नुं मारनै लुद्रवो लियो, कितरायक पाट भाटीया रै राज रियो। रावल भोजदे उपर तुरकां री फौज आई तरै भोजदे साको कर मूओ ......

माहि महेसर भोजदे लुद्रवो कैलास।
अण वढ़ीयो आपै नही बाप तणो आवास॥

पछै रावळ जैसल लोद्रवो पाड़ नै जैसलमेर वसायो संवत १२१२ सांवण वद १२।"

इसी प्रकार अजमेर और मंडोर स्थलों का विवरण दिया है। (पत्र-३)

(६) वात सातलमेर री :—

इसमें सातलमेर के कुछ शासकों का वृत्तांत है फिर मालदे का यहां अधिकार होने का उल्लेख है।

प्रारम्भ—

"सं० १५३० राव गोयंद रै टीकै बैठो सुं वरस ५२ राज कीयो, बहु ठाकुर हुवो। १५८२ गोयंद काळ कीयो राव जैतमाल टीकै बैठो सुं रावल री बेटीं परणीयो...... मालदे १६०७ काती माहे.........गढ़ घेरीयो ....जैतमाल जैसलमेर गयो, राव मालदे सातलमेर पाड़ नै सं० १६०८ पोकरण री कोट करायो ....आदि।"

(७) ऐतिहासिक बातें :—

इसमें से कुछ बातें प्रकाशित हो चुकी है। बातों का केवल यहाँ नामोल्लेख किया जा रहा है।

राव रिड़मल री वात, अखैराज रिड़मलोत री बात, राव चूंडा री बात, बात एक सोजत रै प्रबंध री, बात रांणा सांगा री, बात लाखे री. बात राव माल अचला पंचाइणोत री वात, बात जसवंत तिलोकसियोत री कूंपावत री, बात जैतसी कूंपावत री, बात मांडण कूंपावत री, बात देईदास जैतावत री, बात राव चंद्रसेन री, बात रायसिंह री, बात महाराजा उदयसिंह सूरसिंह री, गजसिंह री बात, सिवाणे गढ़ री बात, भाटी राव केलण रै कोट री विगत आदि। इन बातों के विवरण हेतु देखें, ग्रंथांक १२३४, रा० शो० सं०।

पुष्पिका—

"लिपंत भैरूंदास, लिपाई कंवर श्री अर्पसिंघजी, लिपी चारण री पोथी मांहि सुं।"

यह ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, लिपि सुवाच्य है। पत्र बहुत जीर्ण मटमैले रंग के है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

५१. सेजड़ला माताजी री निसांणी तथा अचलदास खीची री बात

१. सेजड़ला माताजी री निसाणी तथा अचलदास खीची री बात, २. रा० शो० सं०, ३. ३२८०, ४. १६×२१ सेमी०, ५. १०६, ६. ८-१७, ७. वि० सं० १८०६-११, ई० सन् १८४६-६०, ८. प० पृथ्वीराज इत्यादि, ६. संस्कृत, राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रन्थ के प्रारम्भ के १२ पत्र लुप्त होने से ग्रन्थ अपूर्ण है, ग्रन्थ का प्रारम्भ 'नैनीजी रै वारे मांमिया दूहों' से हुआ है—

वैसाषे वन मोरिया मोरया नतकार।
विरह ज गावैं कोयली मुझ घर नहीं भरतार ॥१॥ (पत्र–१)

१. सेजड़ला माताजी री निसांणी :–

प्रस्तुत निसाणी मे सेजड़ला ग्राम की देवी का गुणगान किया गया है।

प्रारम्भ—

पेजडले थान भवांनी हुंदा नगर कोट दीपंदा है।
सब देवा वंदन गवरी नंदन सूंडाला सोहंदा है॥

अन्तिम भाग—

गेही सुमती सो वीनती पांनाजाद धरंदा हुंइ।
नीमाणी गघर साम कवेसर भवानी भणंदा हुंइ॥ (पत्र–३)

२. अचलदास खीची री बात :–

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक ६०,२८ में वर्णित है। अन्त में लिपिकार ने पुष्पिका दी है पर यह किसी अन्य व्यक्ति द्वारा मिटाई गई है। (पत्र–२१)

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में अनेक जैन रचनायें इत्यादि संकलित है।

ग्रंथ अपूर्ण है। यह अनेक व्यक्तियों के हाथों से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ के कुछ पत्र त्रुटित हैं और पत्र चिपक जाने से अक्षर पढ़ने में असुविधा होती है। लिपि सुवाच्य नहीं है। इसमें एक रंगीन चित्र सम्भवतः किसी जैन तीर्थंकर का चित्रित है।

ग्रंथ धार्मिक मान्यताओं के अध्ययन की दृष्टि से उपयोगी है।

५३. वार्ता संग्रह

१. वार्ता संग्रह, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३५७३, ४. ३०×२१ सेमी०, ५. १७५, ६. ३२-४७, ७. वि० सं० १८१२, ई० सन् १७५५, रोहिट

(मारवाड़), ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के प्रारम्भ में वैताल पच्चीसी के दोहे इत्यादि लिपिबद्ध है, इसके अतिरिक्त कुछ बातें, क्रिया आदि वर्णित है जो कि सर्वेक्षित अन्य ग्रंथों में आ चुकी हैं। इनके अतिरिक्त निम्न कृतियाँ अध्ययन योग्य हैं—

(१) दाढ़ाळा री वार्ता
(२) सदैवच्छ री वार्ता
(३) गुण विवेकवार री निसाणी
(४) चंद कुंवर री वार्ता
(५) रिसालु रा दूहा
(६) उदयपुर री गजल
(७) राठौड रतन महेशदासोत री वचनिका
(८) जलाल गहाणी री वार्ता
(९) राजा भोज री पनरमी विद्या
(१०) रिसालु कंवर री वार्ता

(क) वैताल पचीसी :–

यह वैताल पंचशत्तिका का राजस्थानी गद्य-पद्य में अनुवाद है। मिलावें ग्रंथांक २१४३, रा० प्रा० वि० प्र०।

(ख) महाराजा अजीतसिंह री कवित्त :–

ग्रन्थ में १०६वें पत्र पर जोधपुर के शासक महाराजा अजीतसिंह के दाह-संस्कार से सम्बन्धित कुछ कवित्त लिपिबद्ध हैं।

इन कृतियों के अतिरिक्त अनेक जैन कृतियाँ भी इसके साथ लिपिबद्ध हैं। ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। लिखावट ठीक है पर कागज चिपक जाने से और खण्डित हो जाने से कहीं-कहीं पढ़ना असम्भव है।

ग्रंथ पर गत्ता नहीं है। पत्र काफी जीर्ण मटमैले रंग के हैं।

५४. फुटकर गीत वातें इत्यादि

१. फुटकर गीत वातें इत्यादि, खड़ीया जगा आदि, २. रा० शो० सं०, ३. ८३७, ४. ३० × २३ सेमी०, ५. १२८, ६. २८-४२, ७. वि० सं० १९११-१४, ई० सन् १८५४-५७, सांचोर, ८. रामचंद्र, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. गीत जैतसिंह चांपावत रो :-

प्रस्तुत गीत आउवा ठाकुर कुशालसिंह के पुत्र जैतसिंह चांपावत का है। पिता-पुत्र दोनों ने जोधपुर घराने की अनेक सेवायें की तदुपरान्त महाराजा विजयसिंह द्वारा जैतसिंह चांपावत को मरवाने इत्यादि का वृत्तात है।

प्रारम्भ—

"दल्ली मत्ता राखसी मेना फैलसी·······आदि। (पत्र–१)

२. राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत उजीण खेत काम आया तिणरी वचनिका :-

यह ग्रन्थांक ६३४, रा० शो० सं० के राठौड़ रतनसिंह की वचनिका के समरूप ही है। इसमें न केवल रतनसिंह की वीरता का ही वर्णन है अपितु युद्ध में लड़े हाथियों, घोड़ों, राजपूत वीरों की भी प्रशंसा की गई है। अन्त में रतनसिंह के युद्ध क्षेत्र में वीरगति प्राप्त होने का उल्लेख किया है।

प्रारम्भ—

गणपत्त गुणे गहीर गुण मुहग दांन गुण देमण
सिधि वुधि रिधि सधीर सुंडाळा देव सु प्रसन्न ।।१।। (पत्र–६)

३. राव श्री रिड़मलजी बात :-

प्रस्तुत बात मलिनाथजी के पौत्र व रावल जगमालजी के पुत्र रिड़मल की है। प्रारम्भ में रिड़मलजी एक सौदागर से नवलखे घोडे को प्राप्त करने, उनके भाई भारमल का एक सोढ़ी से विवाह, सोढी का रिडमल से लगाव, आगे भारमल रिडमल और नवलखे घोडे का वृत्तात चलता है। वार्ता रोचक बनाने के लिए बीच-बीच में दोहों का प्रयोग भी किया गया है। (पत्र–३)

४. जलाल गहांणी री वात :-

यह प्रेम-कथा गजनीपुर के बादशाह कुलनसीब के अत्यन्त सुन्दर एवं बहादुर पुत्र जलाल और थट्टा भखर के शासक मृगतमायची की पत्नी बूबना की है। बात के बीच-बीच में सोरठों, दोहो का भी प्रयोग किया गया है। (पत्र–७)

कपडे की जिल्द में बंधा सुन्दर ग्रन्थ है। ग्रन्थ के बीच में कई पत्र खाली हैं व कई पत्रों पर रेखाचित्र इत्यादि बने हुए है। सम्पूर्ण ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है।

५५. वार्ता संग्रह इत्यादि

१. वार्ता संग्रह इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. ३३५६, ४. १५×१३ सेमी०, ५., ८४, . ६. १३-१५, ७. संवत् १८२७, ई० सन् १७७०, आणंदपुर,

८. देवीचंद, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ का प्रारम्भ माताजी की स्तुति से हुआ है।

प्रारम्भ—

देवी सेवो कोड़ कल्याण करै, देवी दीठां दीठ दोहोग दूर हरै।
दीवी पूज्यां पुन्य भंडार भरै, देवी गीमरयां सगळा काज सरै ॥१॥

१. राजा रिसालू री बात :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक ३४३ में वर्णित है। वार्ता पूर्ण है। (पत्र-१५)

२. सिंघासण बत्तीसी

इसमें धारानगरी के राजा भोज की ३२ वार्ताओं का संकलन है।

प्रारम्भ—

"मालदेस धारानगरी राजा भोज राज करै पांचस पीडत पा सेर है धनपाल माघपिडत कालीदास प्रमुख········ इत्यादि।"

३२ पुतलियां राजा भोज को पृथक्-पृथक् बातें सुनाती हैं। ३२ पुतलियों के नाम इस प्रकार दिये है—(१) विजीयादेवी (२) जयंती (३) अपराजीता (४) जय घोष (५) मांजु घोषा (६) लीलावती (७) जैवती (८) जय सेना (९) मदन सेना (१०) ············ (११) मदन मंजरी (१२) सिंगार कली (१३) रति प्रीयाः (१४) नरमोहनी (१५) भोगनीधा (१६) प्रेमावती (१७) सुप्रेमावती (१८) चंद्र-मुखी (१९) अनंगधजा (१०) कुरंग नयना (२१) लावन बती (२२) सौभाग मंजरी (२३) चंद्रका '(२४) हंसगमनी (२५) विद्यातप्रली (२६) आनंद प्रभा (२७) ससिकंता (२८) रूपकता (२९) देव प्रीया (३०) देव नदी (३१) पदमावती (३२) चंद्रावती।

अन्तिम भाग—

"राजा भोज सिंघासण बैठो, घणों दिन राज भोगव्यो, घणा उपगार कीया, घणो जस हुवो, एहवो राजा भोज हुवो ॥ इति श्री सिंघासण बतीसी संपूर्ण। समत् १८२७ वर्षे मिति कार्ता सुद ९ आणंद पूनम मध्यें लिपंत चेला देवी चंद स्वयं वचनार्थं। ग्रंथ नीति और राज्य-व्यवस्था हेतु उपयोगी है। (पत्र-६६)

३. जगदेव परमार री बात :-

ग्रंथ के अन्त मे जगदे पंवार की वार्ता (मिलावें ग्रंथाक २३६) है जो अपूर्ण है। (पत्र-५)

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। ग्रंथ पर जिल्द नहीं है। ग्रंथ के प्रारम्भ के ४६ और अन्तिम के कुछ पत्र लुप्त है।

५६. फुटकर बातें दूहे इत्यादि

१. फुटकर बातें दूहे इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. २७६, ४. २०.५ × १५.५ सेमी०, ५. १०५, ६. १७, ७. वि० सं० १८२८, ई० सन् १७७१, ८. रिधविजय, राम सागर, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ में संकलित वार्ताओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. वीरमदे सोनगरे री बात :–

प्रस्तुत वार्ता जालोर के शासक कान्हड़दे के पुत्र वीरमदे सोनगरे की है जो एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना पर आधारित है। कान्हड़दे का अप्सरा से विवाह व कुमार वीरमदे का उत्पन्न होना, कुमार के पावदाव विद्या में प्रवीण होना तथा अलाउद्दीन के यहाँ रण चातुरी में प्रसिद्ध होने पर बादशाह की पुत्री द्वारा कुमार से विवाह की इच्छा प्रकट करना, तदुपरान्त वीरमदे द्वारा विवाह खर्च के नाम पर प्रचुर धन लेकर जालोर दुर्ग के निर्माण के साथ युद्ध की तैयारी करना तथा कुछ घटनाओं के बाद वीरमदे द्वारा आत्मघात तत्पश्चात् शहजादी का सती होने का वृत्तांत है। बात तत्कालीन संस्कृति पर प्रकाश डालती है।

बात के आखिर में संवत १३०० में जालोर बसाने, सं० १४१६ में गढ़ की नीव देने तथा सं० १४३७ में बादशाह का किले पर अधिकार होने का वृत्तांत है। (पत्र–३०)

२. जलाल गहांणी री बात :–

प्रस्तुत बात ग्रंथाक ८३७, रा० शो० सं० से मिलती जुलती है, कुछ पाठ-भेद अवश्य है तथा उससे सुवाच्य है। (पत्र–३४)

३. बींजा सोरठ री बात :–

यह सांचोर के राजा जयचंद की मूल नक्षत्र में पैदा हुई पुत्री सोरठ और बींजा की प्रेम-कथा है। सोरठ को चांपा कुम्हार द्वारा पालने व एक बनजारे के साथ शादी करने के पश्चात् सोरठ और बींजा का प्रेम होने, उसके बाद सोरठ के राव खंगार तथा नवाब के वासना का शिकार होने पर भी बीजा के प्रति प्रेम बना रहने का वृत्तांत है।

गुजरात व राजस्थान की संस्कृति पर इसमें अच्छा प्रकाश पड़ता है। (पत्र-२०)

४. ढोला रा दूहा :–

ढोला और मारू की प्रेम-कथा से सम्बन्धित ३५६ दोहे शृंगार, सौन्दर्य तथा विरह के दिये गये हैं।

प्रारम्भ—

बीजळीयां झबकुयां आभै आभै च्यार।
जाय मळेसी सजना लांबी बांह पसार ॥१॥ (पत्र-३१)

ग्रंथ पर गत्ता नही है। अन्तिम कुछ पत्र गायब हैं तथा लिपि सुवाच्य है।

५७. फुटकर वातें, गीत, प्रेम-पत्र इत्यादि

१. फुटकर वाते, गीत, प्रेम-पत्र इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. २६०, ४. १८×२४ सेमी०, ५. ३४, ६. १३, ७. वि० सं० १८२६, ई० सन् १७७२, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ऐतिहासिक वातों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. बींजा सोरठ री वात :–

प्रस्तुत वात ग्रंथांक २७६ के समरूप है। यहां केवल प्रारम्भ दिया जा रहा है—

"सांचोर नगर तठै रायेंजा रायचद देवड़ो राज करै।
तिण रै मूळ रै पावै पैहल पुतरी रोजंम(जन्म) होवो········।" (पत्र-६)

२. जलाल गहांणी री वात :–

प्रस्तुत वात ग्रंथाक ८३७ के समरूप है। प्रारम्भ का भाग नहीं है। वार्ता अपूर्ण है। अन्त में लिपिकर्ता ने लिखा है—"स० १८२६ रा आसोज वद ८ लिखणी सरू कीवी सु आसोज वद १४ संपुरण।" (पत्र-६)

३. दिली रा पातसाहां रा नांव :–

तैमुरलंग से आलमगीर तक दिल्ली के बादशाहों का नामोल्लेख है। (पत्र-१)

४. उदयपुर रै सिसोदियां रा नांव :–

खीवसी से रांणा हमीरसिंह तक सिसोदिया राजाओं की केवल नामावली दी है। (पत्र-१)

५. राठोड़ों रा नाम :–

बिलाडा, मेडता, कन्नौज, पाली तथा मडोर में शासन करने वाले विभिन्न राठौड राजाओं के नाम अंकित है। (पत्र–२)

६. आंबेर जेपर रा कछवाहां रा नांव :–

भीवसिंह से सवाई पृथ्वीसिंह तक के जयपुर के राजाओ की वंशावली दी है। (पत्र–१)

७. बूंदी रै हाडां रा नांव :–

प्रारम्भ से उम्मेदसिंह तक के हाडा राजाओं का उल्लेख है। (पत्र–१)

८. भाटी जैसलमेर रा नाम :–

महारावल जैसलदेव से महारावल अखैसिंह तक के राजाओं का उल्लेख तत्पश्चात् राजा दशरथ की वंशावली से सम्बन्धित एक कवित्त दिया गया है।

६. गीत महाराजा विजयसिंह रो (चारण साहबदांन कृत)

जोधपुर के शासक विजयसिंह का प्रशस्ति-गीत है।

प्रारम्भ—

थाणो हेत मै किलाणकारी हर री देषते ······ थापै
वीजौ वोथ चैत में बंदागे, घणो बैस ······ ॥१॥

१०. गीत महाराजा अजीतसिंह रो (अज्ञात कर्तृक) :–

प्रस्तुत गीत जोधपुर के शासक अजीतसिंह की प्रशंसा में है।

प्रारम्भ—

सबळ कीयो आरंभ पारंभ गोकळ सकळ
गढ़ो आडो गढ़ां लैंण गाजै······ ॥१॥

इसके अतिरिक्त ग्रंथ मे एक प्रेम-पत्र तथा पृथ्वीराज रासो से सम्बन्धित २४ दोहे लिपिबद्ध है। ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। कुछ पत्र खण्डित व लुप्त होंने से ग्रंथ अपूर्ण है। सांस्कृतिक अध्ययन के लिए ग्रंथ उपयोगी है।

५८. वार्ता संग्रह

१. वार्ता संग्रह, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३५५५, ४. २८×२०.२ सेमी०, ५. १७४, ६. २८-३०, ७. वि० सं० १८२७-३१, ई० सन् १७७०-७४,

कंटालिया, पीपलिया, ८. केशर चंद, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रथम पत्र पर गणेशजी का रंगीन चित्र अंकित है। प्रथम कृति माधवनल चौपाई (कुशल लाभ कृत) लिपिबद्ध है। ऐतिहासिक कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. मोहन कुमार री वार्ता रा दूहा (कवि जांन कृत) :-

मोहन कुमार की प्रेम वार्ता से सम्बन्धित १२० दोहे संग्रहीत हैं।

प्रारम्भ—

आदि अगोचर अलप प्रभु निराकर
करतार देनहार जो सकल तन रचन हार संसार ॥१॥

अन्तिम भाग—

जोलु मोहन मोहन मोहनी जीयँ इह संसार
एक अंग संग हीर है स्वकंध पोन प्यार ॥१६॥
सोरेह सै सौरांणवै होय अगहन सुद वार
पँहर तीन में या कथा कीन्ही जान विचार ॥२०॥

पुष्पिका—

"इति श्री कवि जांन कृत मोहन मोही कथा संपूर्ण।" (पत्र–२$\frac{1}{2}$)

२. जैतसी उदावत री वार्ता :-

वार्ता के प्रारम्भ मे पीपाड के स्वामी सेखा और नागौर के दौलतीयाखान द्वारा जोधपुर के शासक राव गागा पर आक्रमण करने और उसमें राव गांगा के विजयी होने का उल्लेख है। चौहान शासक पत्ता द्वारा राजा सूंडा को बलि के रूप में चढ़ा देने पर जैतसी उदावत द्वारा वदला इत्यादि लेने का वृत्तांत वार्ता में दिया है।

प्रारम्भ—

"संवत १४६६ रा भाद्रवा सुद ४ राव सुजोजी रो जन्म संवत १५४८ रा राव सुजोजी पाट बैठा·······अथ वारता—राव गांगोजी जोधपुर राज करै सेपोजी पीपाड राज करै, तरै धरती रै वेघ राजा अणेसे उपरा। नागौर दौलतीयोपान पातसाही करै········।"

अन्तिम भाग—

"इसी भांत जैतसीजी सेपा सुजावत कनै वैर ओढ नै वैर काढियो, संवत १५७६ रा आसोज सुदि १० वार सोम रै दिन वैर काढियो·········।" (पत्र–५$\frac{1}{2}$)

३. पनरमी विद्या राजा भोज री वात (भवानीदास कृत) :-

प्रस्तुत वार्ता राजा भोज की पन्द्रहवी विद्या अथवा त्रिया-चरित्र के ज्ञान की कथा गद्य और पद्य में है।

प्रारम्भ—

श्री गणपति सरसती सीव विमुखी गुरुदेव
व्यास करै दीस प्रभु दीजै अक्षर भेव ॥१॥

वार्ता प्रारम्भ—

"राजा भोज वडो राजा दांनवंत, सतवंत, साहसी प्याग त्याग निकळंक नृपं राज करै छै। एकरण दिन राजा नै साढ़ा सात वरस की पनोती आई ......।"

(पत्र–११½)

४. अकल री बात :–

मिलावें ग्रंथांक ३५४६, रा० प्रा० वि० प्र०।

प्रारम्भ—

"गऊवरी नंदन वंद कै धम वंद सरसति ...... ॥१॥ (पत्र–६½)

५. सदेव वछ सावलिगां री वात :–

यह वही वार्ता है जो २०५(३) ग्रंथांक ड़ वर्णित है।

प्रारम्भ—

"पोह पावती नगरी छै राजा सालिवाहन राजा राज करै छै प्याग त्याग निकळंक छै......।" (पत्र–१३)

६. गोरा बादल री वारता कवित्त दूहा :–

यह मेवाड़ की सुन्दरी रानी पद्मिनी की प्रसिद्ध वार्ता गद्य-पद्य में है।

प्रारम्भ—

चरण कमळ चित लाई कै समरां सरसति मांय।
कहसुं कथा बणाइ कै प्रणमुं सद गुर पांय ॥१॥

पुष्पिका—

"इति श्री गोरा बादल री वारता संपूर्ण समाप्त लिषंत चेला केसरचंद अणंदपुर मध्ये।" (पत्र–५½)

७. चंद कुंवर री वार्ता :–

मिलावें ग्रथांक १०६४(३), रा० शो० सं०।

प्रारम्भ—

समरु सरसति मांय, गणपति देव के लागु पांय
परतापसिंघ की आग्या कीनी कथा रसक कवि राय ॥१॥

(पत्र–२½)

८. लाषा फुलांणी री वार्ता :–

इस वार्ता में लाखा फुलानी द्वारा अपनी बहिन पेमकुंवर की शादी पाटण के राजा बीभ से करने, फिर बीभ को मारने पर इसका बदला राव सीहा द्वारा लाखा फुलानी को मार कर लेने का उल्लेख है। वार्ता के बीच में दोहे भी दिये गये हैं। वार्ता का प्रारम्भ एक गीत से किया है जिसका विषय इस प्रकार दिया है—

"प्रथम तो गीत सेतरांमोत री लाषाजी नैं मारीया तिण समा रौ—
सुध मन जाति चालियौ सीहौ सेत सुतन ले वहु साज
मूल राजा नाळेर मेलीयौ ...... ॥१॥

अथ वात—

पाटण में सोलंषी राज करै राज नै हंस दोय भाई हंस रौ बेटौ बीभ राज रौ बेटौ मूल सो बीभ एक दिन सिकार चढ़ियौ ... ... ।"

पुष्पिका—

"सवत १८२६ वर्षे जेष्ट वदि १४ दिने पिपलीया ग्रामे लिपंत ऋषि केसरचंद लीपी कृत...... ।" (पत्र-३)

९. वीरमदे सोनगरे री वार्ता :–

मिलावें ग्रंथांक २७६(१), रा० शो० सं०।

प्रारम्भ—

"गड जाळोर सोनिगरौ वणवीर राज करैं छै वणवीर रैं कंवर २ हुवा वडा कंवर रौ नाम कांनड़दे छोटौ राणगदे ...... ।" (पत्र-४$\frac{1}{2}$)

१०. रामदास री वार्ता :–

यह राव रिड़मण के प्रपौत्र रामदास की वार्ता है। इसमें वर्णित है कि उसके ८४ आखड़ी (प्रतिज्ञायें) थीं (१. रूपा री थाळी विण जीमण री आपड़ी, २. जेठी मद रौ दातण करणो बीजा दातण री आपड़ी ...इत्यादि।) जालोर के शासक भीखा बुढण की स्त्री महेची द्वारा रामदास से आग्रह करने पर उसके द्वारा भीखा बुढण की सांढिया लूट ली जाती है और उन सांढियों को चारणों इत्यादि को दान कर देता है।

प्रारम्भ—

"रावजी श्री रिड़मलजी रै पुत्र राठौड वैराजी पुत्र राठौड रामदासजी गांव दूधवड पेडा री थापना कीधी छै, वडौ एक आपड सिध रजपूत हुवौ जिणनु ८४ आपडी हुती... ... ।

भीया बुढण जाळोर राज करै तिण रै सांढीयां हजार ५००० पंच रहै छै, फौक ५ तथा ७ छै। सो बाई महेची भीया बुढण नैं परणाई थी तिका एकण दिन रै समाजोग भीया मु चौपड़ रमती थी, भीया रो दाव सुरसो दीठो तरै बोली—जे डाव पडै तो रामदास वैरावत री ग्रांण छै'''' (भीये नें पूछा—रामदास कौन है?) हमारा भाई छै वडा रजपूत'''''''। (भीये ने कहा) हम उसको देखेंगे। हम पाई चार भाट मेलिया ''''।"

अन्तिम भाग—

"३०० मर ऊडां रा छै '''' हजार दो सांढीयां दीधी ने तलाव खिणायो ''''ठाकुर सोडै पधारीया सारो साथ मुंजाइ ग्ररोगीया, पछै ऊडां तलाव पिणीयो, मर भरीयो, मेळो भरीजण लागो सं० १५५५ नैं।" (पत्र–२)

इसके अतिरिक्त अनेक अनऐतिहासिक महत्वहीन कृतियां लिपिबद्ध है। नासिकेत की कथा की पुष्पिका मे लिखा है—"सवत १८२७ वर्ष वैसाष वदि १० दिने लिषंत ऋषि केसरचंद कंटालीया ग्रामे लिपो कृत ठाकुर राज श्री संग्रामसिंघजी राजे।"

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिखावट सुन्दर है। कहीं-कहीं लिखावट मे लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। पत्र मटमैले रंग के हैं। ग्रथ पर कपडे का गत्ता मंढा हुआ है। ग्रंथ साहित्यिक व सास्कृतिक दृष्टि से उपयोगी है।

५९. वात संग्रह इत्यादि

१. बात संग्रह इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. २१४, ४. २२.५× १६ सेमी०, ५. २२, ६. १६, ७. वि० सं० १८३३, ई० सन् १७७६, जालोर ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०, ग्रंथ मे संकलित महत्वपूर्ण वार्ताओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. गंगेव नींबावत रौ दोपारौ :–

यह एक सुन्दर गद्य काव्य है जिसमें खीची वंशीय नींबा के पुत्र गंगेव की और उसके साथियों की एक दिन की दिनचर्या का वृत्तान्त है।

उत्तर मध्यकालीन राजपूत सामंतों के आमोद-प्रमोद, खान-पान, रहन-सहन तथा वेशभूषा इत्यादि पर अच्छा प्रकाश डाला है। इसका गद्य अलंकारिक व लयात्मक है। सांस्कृतिक अध्ययन के लिए यह कृति बडी उपयोगी है। (पत्र–६)

२. अचलदास खीची री बात :–

गागरेण गढ़ के शासक अचलदास खींची बात ग्रंथांक ६० के समरूप है। (पत्र–१०)

ग्रंथ में प्रारम्भ के ६ पत्र खाली है। लिपि सुवाच्य है।

६०. बात संग्रह

१. बात संग्रह, २. रा० शो० सं०, ३. १०६४, ४. १२×१३.५ सेमी०, ५. १६३, ६. ८, ७. वि० सं० १८३८, ई० सन् १७८१, बधनोर ग्राम, ८. प० जीवगमल, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. डाढला भूंडण री बात :–

यह इस ग्रंथ की प्रथम वार्ता है, प्रथम पत्र फट जाने के कारण वार्ता कुछ अधूरी है। यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक २१६ में वर्णित है। यहाँ वार्ता का कुछ अन्तिम भाग दिया जा रहा है—

"………मुंडण सत कीयो बैकूंट धांम हुई चार चीलरां काम आया। इतरी बात संपुरण सं० १८३८ रा लिपतु पं० जीवगराम लीपी।" यह बात प्रतीकात्मक है और मध्यकालीन वीर भावना तथा संस्कारों को प्रकट करने वाली है। (पत्र–५४)

२. अचलदास खीची री बात :–

यह प्रेम वार्ता वही है जो पहले वर्णित है। यहाँ केवल इसका प्रारम्भ और अन्तिम भाग दिया जा रहा है।

प्रारम्भ—

"अचलदास षीचो गढ गागण राज करै। धणी अचलदास खीची तीणरै मेवाड़ी पट राणी छो ……आदि।"

अन्तिम भाग—

"रामत पुरी करनै पधारो। अचलदासजी बोलिया—थे तो माने हार साटे वेचिया छो तरै लालांजी नै रीम आई। था मु घरवास कोई नही……।" पत्र त्रुटित होने से वार्ता अपूर्ण है। (पत्र–३४)

३. चांद कुमार री वार्ता :–

यह चादकुमार की एक प्रेम वार्ता है जो कुछ पत्र गायब होने के कारण अपूर्ण है। वार्ता यहाँ से प्रारम्भ होती है—

प्रारम्भ—

"........चंद्रायणो । एक दिन चंद कुमार आयडै हालीयौ, राजाजी को साथ सब संग चालायौ........आदि ।"

वार्ता गद्य-पद्य में है इसमें प्रेम, शृंगार के अनेक दोहे संकलित है, यथा—

प्रीत कीया दुप उपजै, प्रीत करौ जिण कोय ।
ए दिल जिण सु बाधिया, ते नीरवाउ होय ।।४२।।
फूल फूल भमरौ फीरै, सब ही कुं सुप दे है ।
बहु नायक मधुकर भयौ, बाधौ किण सु नेह ।।४३।।

अन्तिम भाग दूहा है—

जोधबस जुग-जुग जीवौ, घणौ बधौ पीरिवार ।
नांम धरयौ प्रताए नै अरय गुण को सार ।।६६।।

पुष्पिका—

"इ० श्री चंद कंवर री ता० संपूर्णः सं० १८३८ रा भादवा सुद ११ लीं० पं० जीवणमल गांव बधनोर ।" (पत्र–२६)

४. चौथ माता री बात :-

यह एक राजस्थानी व्रत-कथा है इसमें वर्णित है कि व्रत कब क्यों करना चाहिए तथा करने से लाभ क्या है ।

प्रारम्भ—

"एक दिन पंडा वास गला साथ सुंदुर बार कीया बैठा था । तरै श्री किसनजी मराज पधारिया तरै राजा जूजसटल उठ नै सांमे आयौ श्री ठाकुरां रै पगे लागो परकमां दे नै डंडोत कीनी, ...इण वरत सु कुण उधरियौ, किण नै फळ दाता हुई किण विध वरत करै छै सो कहौ, तरै श्री किसनजी कहै छै........ किसन पप में चौथ आवै छै सो बरत कीजै छै । तिण दिन परभातै उठ नै दांतण सिनांन कीजै । पछै सेवा कीजै........आदि ।" (पत्र–२०$\frac{1}{2}$)

५. महाराजा अजीतसिंह रौ सिलोको :-

प्रस्तुत सिलोका काव्य महाराजा अजीतसिंह और मुगलों के संघर्ष से सम्बन्धित है ।

प्रारम्भ—

"कहुं सीलोको सुणजो इण काजौ
राज अजमल रो वपांण राजौ
महाराजा बैठा जाळोर मांहे
पतसा औरंगा रै नला घारू मांनी........आदि ।"

अन्तिम भाग—

मतरै इकयासी मांवण मासी
कीयो अजमल ईन्द्र लोक वासी
छाज अजमल सीलोको छाजै
वाजा जोधाणे इवचल वाजै ।"

६. सनीसर नै वीक्रमादित्त री वात :— (पत्र–८)

यह राजा विक्रमादित्य के न्याय करने सम्बन्धी एक पौराणिक कथा है।

प्रारम्भ—

"एक दिन रै समीया रै वीषै
सुरग लोक रै वीषै
नव ग्रहै भेळा हुवा तरै माहो माहै जगर (झगड़) वा लागा पछै झगरता झगरता श्री इंद्र माहाराज कनै गया। श्री इंद्र माहाराज कहो—हूंतो जांण, नही। थे मोत लोक रै वीछै उभाणी नगरी छै तठै वीर वीक्रमादित राज करै छै सो महा न्याई ··· सो थे उठै जावो·········आदि।"

प्रस्तुत वार्ता अपूर्ण है। (पत्र–१७½)

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ पर कागज का गत्ता हुआ है। पत्र लुप्त होने से अपूर्ण है। लोक मान्यताओं का इसमें अच्छा दिग्दर्शन है।

६१. वात संग्रह आदि

१. वात संग्रह आदि, २. रा० शो० सं०, ३ २५६६, ४. १५.५×१४.५ सेमी०, ५. ५६, ६. १३-२२, ७. वि० सं० १८३६-४६, ई० सन् १७८२-८३, आणंदपुर ग्राम, ८. चेला मलुकचंद, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०, प्रारम्भ के ५ पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है। ग्रंथ इन निम्नलिखित पंक्तियों से प्रारम्भ हुआ है—

"नास एत सवे दुपटानी, कल्याण भवते सदा।
कीसनेन भापते पूर्व, देव देव प्रकीर तता ॥"

ग्रंथ में निम्नलिखित ऐतिहासिक वार्ते संकलित है—

१. अचलदास खीची री वार्ता :—

प्रस्तुत वार्ता ग्रंथांक ६० से समरूप है।

२. रिड़मल खावड़िया री वात :— (पत्र–१८)

प्रस्तुत वार्ता ईडर के राव रणमल, उसके भ्राता भारमल और सोढी राणी की है। वार्ता के बीच-बीच में प्रेम के दोहे भी दिये गये है।

प्रारम्भ—

"मांडुगढ गोरी पातसाह राज करै ताहरा विलायत रै पातसाह नु मांडु रै पातिसाह री रसाळ जावै, तरा माडु रै पातसाह मांणस दोय वुलाया· · ···· ।"

अन्तिम भाग—

घर घर रळी वधांवणा हुवौ महले चाव ।
गावै मंगळ गोरड़ी आयौ रिड़मल राव ॥
सोढी उमरकोट री रिणमल पावड राव ।
घास वीढ गावीयौ पायौ लाख पसाव ॥१०४॥ (पत्र–१५)

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में चार युग, गणेश छंद, दस दोष, होम विधि, सप्तवदी, श्राद्ध विधि (क्रिया कर्म), हरियाली (उपदेश) इत्यादि रचनायें संकलित हैं।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ पर ऊपरी गत्ता नहीं है। ग्रंथ अपूर्ण है।

६२. वीर गीत, कवित्त तथा बात संग्रह आदि

१. वीर गीत, कवित्त तथा बात संग्रह आदि, दुरसा आढा, पूरा महियारिया, बारट राईपाल, ईसर मालावत, पृथ्वीराज राठौड़, केसवदास गाडण आदि, २. रा० प्रा० सं०, ३. ८२४०, ४. १८.८ × १३.५ सेमी०, ५. १५७, ६. ३७-४८, ७. १८वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के प्रारम्भ के पत्र कुछ गायब है। प्रारम्भ में ही ज्ञान, उपदेश सम्बन्धित कुछ दोहे कवित्त दिये गये है। ऐतिहासिक कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. गीत सुरतांण देवड़ै रौ (बारट दुरसा कृत) :–

यह गीत सिरोही के सुरताण देवड़े की प्रशंसा मे है।

प्रारम्भ—

कोली करि मांग तिजारी कमधज
गुड़ धूमाणौ गाळवीयौ········ ॥१॥

२. गीत हाथी गोपालदासोत रौ (दुरसा आढ़ा कृत) :–

प्रारम्भ—

काबेज दिली धकिस नचौ कामणी
पांण गहै पेयंतै पाथ········ ॥१॥

३. गीत वीठलदास चांपावत रौ :–
प्रारम्भ—

वीरा रग मंत कहर मुति ठणीया
हुवि वन सघण महादळ हीच········ ॥१॥

४. गीत हाडा दुरजनसिंघ रौ (पूरा महीयारिया कृत) :–
प्रारम्भ—

गयौ माल सोयां तणौ राव राजा गहिण
सिपायां रिजक गौ बिसाहू सार········ ॥१॥

५. गीत राठोड़ रांमसिंघ करमसेनोत (गाडण केसवदास कृत) :–
प्रारम्भ—

मंगल राजा हुऔ, हुऔ मंत्री पिण मंगल
सुक्र हर रयाधिपति हुग्रौ पीड़ण महिमंडलार···· · ॥१॥

६. कवित्त राणे कूंभ रा (बारट राईपाल कृत) :–
प्रारम्भ—

पंचतत कीयौ पिंड मही चक्कवै सुसठी
लाटी ग्रांण फिरत ध्रम्म धय मुघट निघटी ······ ॥१॥

७. गीत सुरतान देवड़े रौ :–
प्रारम्भ—

सुरताण जुतै घमसाण कीया सत्र
चोळ थई रिण मास चरि ··· ·· ॥१॥

८. गीत राव ग्रमरसिंघ रौ (ईसरदास के पौत्र कृत) :–
प्रारम्भ—

निसह डूबीयौ पडंती जूंजू ग्रनड़ां नड़ण
जवन दळ सरिस बळ दाषि जम रा ······ ॥१॥

९. गीत डूंगरपुर रै सीसोदियों रौ :–
प्रारम्भ—

अनि किण हीन दीन्हौ थांनिक ग्रागै
जुड़ि जीमणि एह वीजु गति ···· ·· ॥१॥

१०. गीत राठौड़ हरीदास रौ (ईसर मालावत कृत) :–
प्रारम्भ—

वरा रंभ ग्रावा परा सोक वांण वहै
सीह रौ छराद परा सये ···· ॥१॥

११. गीत राठौड़ रामसिंघ कल्यांणमलोत रौ (पृथ्वीराज राठौड़ कृत) :-

प्रारम्भ—

सरणाई चरण वपाणौ सुबदींह
मन जोगी जीहा अमर ...... ॥१॥

१२. गीत राठौड़ महेसदास दलपतोत रौ :-

प्रारम्भ—

सिधां साधिकां सहै तौ ग्रपाड़ै सोहीयौ
राग सीधू सजै पाग रीठौ ...... ॥१॥

१३. गीत रा० ईसरदास नींबावत रौ (दुरसा कृत) :-

प्रारम्भ—

करणहरा पेपे दिनकर
पल कारण हूंकळीया पलचर.... " ॥१॥

१४. गीत दलपत रायसिंघोत रौ कांम ग्रायौ तिण समै रौ :-

प्रारम्भ—

जीवौ ग्रासाणंद रतनु कहै—असि पूठ फणाला जीण उतरै
जरद मरद वप हूंत जूग्रा ...... ॥१॥

१५. गढ़ मांडियां री विगत नै जोधपुर महाराजाग्रों की पीढ़ियां :-

इसमें कुछ दुर्गों के निर्माण की तिथियां इत्यादि दी गई हैं, ग्रागे जोधपुर के शासक राव जोधा से जसवंतसिंह प्रथम के जन्म, राज्याभिषेक ग्रौर देहावसान होने की तिथियां ग्रंकित हैं, जो ग्रन्य ख्यातों से मिलती जुलती है।

१६. कवित राव चूंडा रै बेटां रौ :-

प्रारम्भ—

रिणमल रावां राव, सतो हरचंद पटेतर
राउत गुर रिणधीर.... ... ॥१॥

१८. गीत राव रिणमल रै बेटां रौ :-

प्रारम्भ—

जोधै कांधिल जिसा, लंपा चांपा लीलायति,
जैतमाल जगमाल, सांडौ रूपौ हापौ सति........ ॥१॥

१८. गीत राव ग्रमरसिंघ रौ :-

प्रारम्भ—

मृत ग्रवसरि चूक हूग्रो राव मासू
पोद सरिस वधीयौ जुध पेस........ ॥१॥

१९. गीत राजि श्री बलकरनजी री (ईसर के पुत्र कृत) :–

प्रारम्भ—

अणी रा भमर मोहसर अगर जोरावर
वारवर ग्रडर करिवर विसेपे........ ॥१॥

२०. बात पातिसाही सोबां री :–

बादशाही विभिन्न परगनों की आय का ब्यौरा इस प्रकार दिया गया है—

॥ परगना ४२०६ सिरकार १५२ सोबा २१ तिणरा दांम ८७००००००००० दाम प्रति रु १) २१८०

दांम	परगना	सिरकार	आसांमी
१०९०००००००	२६८	१४	सोबो अकबराबाद १
६३६८०००००	३१४	५	सोबो लाहौर २
७८२००००००	२३०	८	सोबो जहनाबाद ३
२०७५५००००००			वडौ सोबो दक्षण ४
६८९१०००००	७६		विरहानपुर ५
६३५००००००	१९१		बराड ६
४४६००००००	१०३	३	षांन देस ७
२९५४०००००	४३		तिलांगाणौ ८
२०००००००		२	बुगलांणो ९
३८८८०००००	२६०	१६	सोबो इलाबास १०
५३५८०००००	१९०	७	सोबो ग्रजमेर ११
५३५८०००००	१९०	९	सोबो ग्रहमदाबाद १२
२८३२०००००	१९०	५	सोबो ग्रजोध्यापुरव मे १३
९०१००००००	३४६	२१	सोबो जंडा सोजगनाथ १४
४५५००००००	११०	२७	सोबो बंगालो १५
३८३२०००००	२४४	८	सोबो बिहार १६
९२३००००००	५४	४	सोबो यटौ १७
७९८००००००	१५	०	सोबो पंधार १८
१४०२०००००	४६	०	सौबो कासमीर १९
१३०९०००००	३५	०	सोबो काबिल २०
४९८५०००००	२५१	२१	सोबो उजेणी मालवो २१
२६५६०००००	४६	४	सोबो मुलतांण २२

२१. गीत रावल तेजसी महेवचे रा] (केसवदास गाडण कृत) :–

प्रारम्भ—

भिणीय डगढ़ गुफा ज वद में मेयल
गेडेचो पत्र जोग परै ······ ॥१॥

२२. महाराजा जसवंतसिंघ रै परगनों रै दांम नै रूपयों री विगत :–

इसमें महाराजा जसवंतसिंघजी के विभिन्न परगनों की आय इस प्रकार दी गई है—

दांम प्रति रु० १) रा ४० लेपे—

दांम	रूपया	आसांमी
१४७२५०००	३६८१२५	परगना जोधपुर
१४००००००	३५००००	परगनो मेड़तो
८००००००	२०००००	परगनो सोजत
८००००००	२०००००	परगनो जैतारण
३००००००	७५०००	परगनो सिवाणो
२७०००००	६७५००	परगनो फलोधी
८०००००	२००००	परगनो पोकरन
११५०००००	२८७५००	परगनो जालोर
१००००००	२५००००	परगनो रेवाड़ी
५०००००	१२५००	परगनो गजसिंघपुरो
९९९६५६६	२४९९१४	परगनो उजैण
७३०००००	१८२५००	परगनो देपालपुर
१०००००००	२५००००	परगनो बघनोर
९३७६०००	२३४४००	परगनो नागोर री पटी
१०९९९७५६६	२७४७४३९ इतरी पायी	
१०२४३४	२५६५ तलब रहै	
११०१०००००	२७५०००४	

सांसण रा गांव छै तिणरी विगत—

गांव	रूपीया	आसामी	गांव	रूपीया	आसांमी
१२४	२३९७०	जोधपुर	४७	२३७००	मेड़तो
३३	२६१००	सोजत	१८	१०२००	जैतारण
३०	४५५०	सिवाणो	६	२४५०	फलोधी
२३	५३५०	जालोर	५	१५३०	ववलि
२८९	८७८५०		—	—	

२३. अकबर बादशाह सं० १६३६ जेठ असाढ़ में जागीरी दीधी रूपईयां मांहे तिणरी नकल :—

अकबर ने विभिन्न परगने जोधपुर शासकों को दिये उसका हाल इस प्रकार है—

मोटे राजा नुं रूपयों में	राजा सूरसिंध रूपयों में	राजा गजसिंघ रूपयों मे	जसवंतसिंघ रूपयों में	आसांमी
१५३६७५	१९९१२५	२५३५७५	३६८१२५	जोधपुर
—	२०००००	३०००००	३५००००	मेड़तो
—	९८५०७	१२५०००	२०००००	जैतारण
१२५०००	१२५०००	१५००००	२०००००	सोझत
३७५००	३७५००	६२५००	७५०००	सिवाणो
—	६७५०००	६७५०००	६७५०००	फलोधी
—	२८७५००	२८७५००	२८७५००	जालोर
—	१४०००	१४०००	२००००	पोकरण
—	—	—	१२५००	जगसिंघपुरो

२४. महाराजा जसवंतसिंघजी री जागीरी सं० १७१० रा :—

वि० सं० १७१० में महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के विभिन्न परगने और उसमें गांव थे उसकी आय का ब्यौरा इस प्रकार अंकित है—

दांम	रूपैया	आसामी	गाव
१३७४१०००	३४३५२५	जोधपुर	११००
१४००००००	३५००००	मेड़तो	३८३
१००००००००	२५००००	जैतारण	१४४
६००००००	१५००००	सोझत	२४६
३००००००	७५०००	सिवांणो	१४९

२७००००००	६७५००	फलौधी	६२
८००००	२००००	पोकरण	७७
५०००००	१२५००	गजसिंघपुरो	५
११७०५०००	२६२५२५	रेवाड़ी	३८६
६८०००००	१७००००	उदेही	१४०
१००००००	२५००००	मलारणा	१५५
७६२४६००	१६८११५०	११	२८४७

२५. गीत भैरसी जगमालोत रौ :–

प्रारम्भ—

वैरागर गंव विपूणा वाळी
पंथ वाळी लाणा·········धोरी ॥१॥

२६. गीत राजा सूरसिंघजी रौ (दुरसा कृत) :–

प्रारम्भ—

श्री घळी ही हूळं फल हलै सावळा
उरम द्वै हेमरां वगतरा उजळां ' ···· ॥१॥

२७. गीत सुरतांण देवड़ा रौ (दुरसा कृत) :–

प्रारम्भ—

जोयो राव सह रांण केकांण नित जा कीयो,
अवर दुनियांन नन कोई एहड़ो········ ॥१॥

२८. वात पातिसाह फिरोजसाह री :–

प्रस्तुत वार्ता दिल्ली के बादशाह फिरोजशाह और एक ब्राह्मण मलू की है। इसमें वर्णित है कि मलू चोरी किया करता था उसे बादशाह ने तुर्क बना कर उसका नाम मलूखां रख दिया और पांच हजार का मनसब देकर उसे अपना दीवान बना दिया। आगे मलूखां और फिरोजशाह के पुत्रों का वृत्तांत चलता है।

प्रारम्भ—

"वडो दिल्ली पातसाह हुवौ चीतां हिरणां री जिनावरां री हिकमत सिकार री सारी ही पेरोजसाह चलाई। सो फिरोजशाह पातसाही भोगवै, तिण समै री वात छै। दिल्ली पाइतपत मांहे एक बांमण कमला पति गरीब आदमी रहै छै। तिण रै बेटो एक मल्लू हुवो सु माहा उपाधी········।"

२९. वात पातसाह बहलोल री :–

प्रस्तुत वार्ता लोदी वंश के शासक बहलोल लोदी व उसके वंशज सिकन्दर लोदी तथा इब्राहीम लोदी की है। इसमें बतलाया गया है कि बहलोल ने किस प्रकार दिल्ली पर अधिकार किया।

प्रारम्भ—

"कुतबखास नु ं जसरथ पोपर भालियौ बीजा घणा पठांण हजार ५००० तौ उठै मारीया। वीजा सीनद उपर जाई कचोबचौ सको पठांणां रौ मारियौ…।"

आगे लिखा है—

"पातिसाही कसवा लूटण मांडीया…… पातिसाह नु ं षवर हुई पठाण आया, पतिसाही फौज सांम्ही मेल्ही वेढ १ सीहनद कन्है हुई तठै पठांणे वेढ जीती महमुंद री फौज भागी………पठांणा रौ माटीपणौ दिन पाधरौ देषि घणौ लोग बहलोल भेळौ हुग्रौ। महमुद वळे वीजी फौज मेली तकौ दिल्ली था कोस ४० सांम्हा आया तठै वेढ हुई, महमुंद री आ ही फौज भागी, तरै तौ घणौ लोग श्राय भेळौ हुऔ ………महमुंद भागौ सो कठी ही नु ं गयौ। बहलोल आणि दिल्ली रौ कोट लीयौ……।" (पत्र–१)

३०. दिल्ली रा तपत राजा पृथ्वीराज चहुवांण पछै पातिसाह हुग्रा तिणां ज वरस मास दिन पहर घड़ी तपत बैठा तिण री बात :–

प्रस्तुत वार्ता दिल्ली में पृथ्वीराज चौहान के बाद राजा सिंहासनासीन हुए उन राजाग्रों के नाम, किसने कितने वर्ष मास दिन राज्य किया उसका ब्यौरा दिया गया है। यह वार्ता किसने कब लिखवाई इसके बारे में भी लिखा है—

"तपत बैठा तिण री वात उकील मनोहरदास संवत १७२१ रा श्रांवण वदि १ लिपाई।"

यह श्रांकड़े रफी उदरजात तक दिये हैं और सुलतान मुहम्मदशाह का केवल नाम ही लिखा हुग्रा है।

३१. जोधपुर सो कंधार नु ं मुलतांण रै पंडै री राह :–

इसमें जोधपुर से कंधार और मुलतान कितना दूर है और जाते समय कौनसे बड़े शहर आते हैं वर्णित है।

प्रारम्भ—

"जोधपुर सुं ६० कोस वीकानेर, वीकानेर सुं कोस ४० पूंगल। पूंगल सुं कोस ३० मरोट विचै पांणी नही। मरोट सुं २६ किरोहर। किरोहर सुं ३६ कोस मुलतांण छै। मुलतांण सुं कोस ५०० कंधार छै सु मुलतांण सुं कोस ३६

हाजीखांन रौ दरों छै..... "हाजीखांन रै देश थी कोस ३० चवो छै छोटा सो सहर पचा थी कोस ३ तठै पठांणां री धरती ..... ।" (पत्र—$\frac{1}{2}$)

३२. बात बलक रा पातिसाह री :—

प्रस्तुत वार्ता प्रदेश बलक व उसके बादशाह की बहुत संक्षेप में है आगे इस देश से विभिन्न आस-पास के शहरों की दूरी दी गई है ।

प्रारम्भ—

"उजव कथणी । चकता बलग माहै रेत छै । कहै छै बलक री ठकुराई घोड़ा हजार २८०००० री छै । तिण मांहै वळे बलक बुपारो जुदा हिमे से हुआ ।" (पत्र—$\frac{1}{2}$)

३३. बात कुंकण देस री :—

वार्ता इस प्रकार है—

प्रारम्भ—

"त्रांबक परै कुंकण देस छै जिका धरती फरसरामजी समुद्र कन्है मांगि लीधी । कोस १२० गोदावरी था समुद्र पाछो गयो तिको कुंकण देश कहीजै छै तठै चावल कोदू ".... "उड़द घणा नीपजै छै, वडा पांन नाळेर सोपारी मिरच एलची जायफळ रा रूंप घणा छै ।" (पत्र—$\frac{1}{2}$)

३४. बात बिजापुर रै पातिसाह री :—

यह वार्ता बहुत संक्षेप में है ।

प्रारम्भ—

"घोड़ा हजार ४०००० री तो इणरै मूळगी साहवो हुतो नै दौलताबाद साहिजहा लीयो तद भीवरा नदी सीव की । ... .. पातिसाह पुरसांणी छै..... ।"

आगे एक जगह लिखा है—

"विजापुर परै कोस ६० कृष्ण गांगा नदी छै तठै करड कोल्हापुर सहर छै तठै परसरांम रौ अवतार हुवो छै.... .. ।"

३५. बात बूंदेलां री धरती री :—

प्रस्तुत वार्ता मुहता नैणसी की ख्यात के समरूप है ।

३६. बात गोलकुंडा साहिबी री :—

प्रस्तुत वार्ता गोलकुंडा शहर की संक्षेप में है ।

प्रारम्भ—

"पातिसाह कुतबीक होवै छै, जात मुगल पुरसांणी छै, घोड़ा ४०००० री साहिबी छै, बुरहांनपुर सुं कोस ३०० दौलताबाद सुं कोस २००१ गोलकुंडों देस

भावनगर सहर छै तठै वडो कोट छै दोली पाही ......सं० १७४४ रा पातिसाह औरंगजेब गोलकुंडो लीधो गोलकुंडा रै पातिसाह नूं अधरात रो सूते नु पकड़यो।" (पत्र-१/२)

३७. गढ़ मंडियां अर फुटकर घटनाओं री विगत :–

इसमें सबसे पहले अकबर के आगरे में वि० सं० १६६२ देहावसान होने फिर उसके वंशजों के गद्दीनशीनी होने, देहावसान होने के संवत् व कुछ घटनाएँ वर्णित हैं आगे ही शहर, दुर्ग कब किसने बनाये वर्णित वर्णित है, यह सामग्री अन्य ख्यातों में भी मिलती है।

३८. गांगेव नींबावत रो बेपारो :–

प्रस्तुत वार्ता वही है जो ग्रंथांक २१४, रा० शो० सं० में वर्णित है। पर यह उसके समरूप नही है, काफी पाठ-भेद है।

प्रारम्भ—

"श्रांवण भाद्रवै री संधि री वरपा रिति मंडी वरिया अति मंडी। दोही वीजां झड़ लाया। डाळी डाळी अंवर चमकिया........।"

सांस्कृतिक अध्ययन के लिये यह वर्णन उपयोगी है। (पत्र-३)

३९. जलाल गाहांणी री वार्ता :–

प्रस्तुत वार्ता पहले आ चुकी है देखें ग्रथांक ८३७, रा० शो० सं०। भाषा में अन्तर है।

प्रारम्भ—

"समंरि पतिसाही थटै रोझां-अगत-माईची पातिसाही लोग बैठे, तियै झांम रो पित्र याई भाई गोह नु झामरी बहिन परणाई ......।" (पत्र-८३/२)

४०. कवित्त उमादे सती रा :–

प्रारम्भ—

"गोर हरे राजि गिरे चिहु दिसि सू ऊक चाढे।
मेदपाट चीतोड़ भलो जोधपुर भमाड़े॥"

४१. दूहा श्री कृष्णजी रा (राठौड़ पृथ्वीराज कृत) :–

प्रारम्भ—

"दंडवत करै दुवारा नरै जुठर घसीया नहीं
ताय सिरजिया संसार, विसहर वसुदे रावउत॥१॥"

४२. बात पाटण श्रणहलवाड़ री :-

प्रस्तुत वार्ता इस प्रकार वर्णित है—

"मूल श्रो गांव वनराज चाउडै वासीयो। संवत ८०२ वैशाख सुदि ३[१] रोहिणी नक्षत्र मा पाटण री ठोड़ श्रणहल गोवालीयै वनराज नु दिषाई। आगै पाटण री थापती आपती कोई सहर वसतो, गुजराती लोग तिको दूर करिनै आबू री तलहटी री लोग वसियो तिण वेळा रो लग्न......।

पाटण में राजा सिंहासनासीन हुए उन राजाओं के नाम, किसने कितने समय राज्य किया अंकित है—

वरस	मास	दिन	श्रासांमी
६०	६	—	वनराज
१०	—	—	जोगराज
१३	—	—	रानदीत
१०	—	—	वरसिंघ
२६	—	—	पेमराज
१३	—	—	चावडराज
२०	—	—	गुंडराज
२८	—	—	भोउवा वाज चावडो सं० ९४८ मास ६

पाट ८ चावड़ा बैठा तठा पछै सोलंकी जैतारण गंगा थी जात्रा आयौ थो तिण नु चावड़ै परणायौ तिणरै बेटे मूलदेव राज लीयो—

			(चालुक्य वंश)
५८	६	—	मूलदेव सोलंकी सं० ९८७ राजे बैठो
१३	—	—	चावडराज
६	—	—	श्री वल्लभ
१७	—	—	दुर्लभराज
३७	—	—	भीमदेव निगसुत
३०	—	—	करण देव
४९	—	—	सिधराज जैसीघदे
३	२	—	जयपालदे

१. नैणसी री ख्यात (भाग ३, पृ० ४९) में पाटण की स्थापना सं० ८५२ श्रावण सुदि २ गुरुवार को होना लिखा है।

३	—	—	भोली भीमदेव मूलदेव री
३१	—	—	लोहड़ो भाई
२	१	—	कुमार पाल संवत् ११४८ वाली मूंलदेव

पाट ११ सोलंकीए पाटण भोगवी तठा आगे वाघेले धरती लीवी—

(वाघेला वंश)

२०	—	—	वाघेलो वीसलदेव
२५	—	—	अर्जनदेव
२३	—	—	सारंगदेव
३	७	३	गहिलो कर्णदेव

वरस ७१ मास ७ दिन ३ वाघेलां रै पाट ४-पाटण रही तठा आगे तुरकांणो हुओ

४५	—	—	सुलतान कुतव ततार पान सं० १३०८
३१	—	—	फरेपांन
२३	—	—	मुदफर
३४	—	—	अहमद सुलतांन जिण अहमदावाद वसायो सं० १४०७
२०	—	—	सुलतान कुतवी
१०	—	—	दाऊदपान
५८	—	—	महमद
२४	१०	२५	मुदफर
२२	—	१७	सिकंदर
१०	—	—	वहादर
२५	—	—	महमद
१८	—	—	मुदफर सं० १६११
३५	—	—	अकबर पातिसाह
२२	—	—	जहांगीर
२३	—	—	साहजहा औरंगजेब

४२. सदयवछ सावलिंगा री वार्ता :–

प्रस्तुत वार्ता पहले आ चुकी है देखें ग्रंथांक २१६, रा० शो० सं० । यहाँ केवल प्रारम्भ दिया जा रहा है—

प्रारम्भ—

"न्याव सुतारा निरवहण सुगण करै सिरजांम ।
सावलिगा सूदास रिस, तेण भवंत रिताम ।।

वार्ता—

"पूर्व भव सुगण महातमा रौ जीव सुजाणसिंघ पंचोली । सदयदवछ रौ जीव मनोहर सूत्रवी, सावलिंग रौ जीव रूपमती स्त्री छै.......आदि ।" (पत्र–८)

४४. दूहा रामचंद्रजी रा (राठौड़ पृथ्वीराज कृत) :–

प्रारम्भ—

"पिंड ब्रह्मंड पलोय ग्रासा जुग सीरकरि
किसव भलो न कोय दाव न दसरथ देवउत ।।१।।"

४५. ग्रोसवालों री जाति री विगत :–

इसमें ओसवालों की ३६४ जातियाँ का ब्यौरा दिया गया है जो कि ग्रंथांक ५६६ से मिलता जुलता है।[1]

४६. वात सिघसेन राठोड़ री :–

वार्ता की जानकारी के बारे में लिखा है—

"सोळंकीयां री भीर करि लापे फूलांणी मारीयौ । हिमै लापो जाम थटै वसै अर ग्रापरै नगर पाई तपत राज करै । सूरजि री वरदांन हुतो । ग्रागे सोलंकी सहर तोडे राज करता पछै चाउडां कन्हा सोलंकीये पाटण ली छै तिका वात विस्तार सु कही छै ।

हिमै सोलंकीयां चाउडां सु चूक कर राज लियो तिण समै री वात कहै जु पहली सु पहले सोलंकी तोडे राज करता । सु सोलंकियां रौ नाम राजा न वीजै रौ नाम बीज २ वेउ भाई धणी धोरी थका । तोडै रहै सु द्वारिकाजी री जात सू हालिया ...... ।" (पत्र–५)

प्रस्तुत ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । लिपि के अक्षर छोटे हैं, कहीं-कही पढ़ने मे ग्रसुविधा होती है । ग्रंथ के बहुत से पत्र गायब हैं । ग्रंथ जीर्ण होने के कारण पत्र ग्रंथ की जिल्द से ग्रलग हो रहे हैं । ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है । उपरोक्त कृतियों के अतिरिक्त सुकनावली, भजन छत्तीसी, हरिरस,

१. ग्रंथांक ५६६ में ओसवालों जातियो के ४०० नाम दिये हैं, ओसवाल जाति का इतिहास पृ० २५ मे ओसवालों की १८ गोत्रो की ४९८ शाखाएँ दी हैं ।

स्फुट वैद्यक नुस्खे, कबीर साखी, कोक वार्ता, स्फुट छंद, श्लोक इत्यादि अनेक कृतिया संकलित है ।

६३. वार्ता संग्रह

१. वार्ता संग्रह, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. २१४३, ४. ११.५× २४.२ सेमी०, ५. ३५, ६. १७, ७. वि० स० १८६०, ई० सन् १८०३, लूणकरणसर (बीकानेर), ८. क्षेमानन्द, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रन्थ में निम्नलिखित बातें संग्रहीत है—

१. मदन सतक वार्ता :–

प्रस्तुत लघु वार्ता गद्य-पद्य में है ।

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनमः अथ मदन सतक री वार्ता—विश्वा नदी पायनमि भूत वात चित धार मदन कुमार सत मे लिष्यो जो कीनो करतार ॥१॥

वार्ता—

श्री पुरनगर के विषै जिना नदवन ता माहि नै कांम देव को प्रासाद तिहा मदन कुमार घोड़ा बाधि·········आदि ।" (पत्र–३)

२. पीवे विजै री बात :–

यह दो डाकुओं बीजा (सोझत) और खोया (नाडूल) की वार्ता है।

वार्ता प्रारम्भ—

"पीवो विजो धाड़वी वडा दोड़ा वडा चोर, विजो सोझत वसै पीवो नाडूल वसै·······आदि ।"

चित्तौड़ के विजय साह देवीदास के यहाँ से घोड़ी चुराने का विवरण इस प्रकार दिया है—

"विजो वोलीयो—भाई कहो थे सु करा, इण कह्यौ—हुं कांई कहूं चीतौड़ मे घोड़ी २ जय नै विजय साह देवीदास रै छै·······घोड़ी आणो तो वडा धाड़वी वीसातो·······चळू भरनै कहयौ—जे उठै घोड़ी आणां तो एथ आय नै जीमां, नही तो इं कळंक माथै उदक । अबै दोनु चालीया··· ···· ।" (पत्र–३)

३. चौबोली री बात :–

यह उज्जैन के राजा विक्रमादित्य और उनकी रानी चौबोली की कथा गद्य-पद्य में है । मिलावें ग्रंथांक ४८५६, रा० शो० सं० । यहाँ वार्ता एक कवित्त से प्रारम्भ की गई है—

विकत्त—

"समापूर विक्रम राय बैठो सु विसेसी तिण ग्रवसर आवीयो ।
एक मागध परदेसो उभो दे ग्रासीस ... ... ॥१॥"

अन्तिम भाग—

"इति श्री चोवोली वार्ता कथा संपूर्ण समाप्त संवत १८६० वर्ये मिती पोह वदि १ दिने भोम वारे ।"

वार्ता संक्षेप में है । (पत्र–२)

४. दाढ़ाला री बात :–

मिलावे ग्रंथाक २१६, रा० शो० स० । यहाँ वार्ता का नाम 'वीसलदे सिरोही रै धणी री सूवर रै सिकार री बात' लिखा है और वार्ता एक दूहे से प्रारम्भ की गई है—

प्रारम्भ—

"गहै घू ं बलू ंवी घटा वणीया टूक विहवल्ल
अरवद सु ं अलगा रहै जांका कोण हवल्ल ॥१॥"

वात—

"आबू रा पहड़ा ऊपर नव नाथ चौरासि सिध चौसठ जोगणी बावन वीर तेतीस कोड़ देवता तपस्या करै ··· आदि ।" (पत्र–४)

५. वैताल पचीसी[1] :–

यह वैताल पंचशतिका का राजस्थानी भाषा मे अनुवाद है । कृति गद्य-पद्य मे है ।

प्रारम्भ—

"प्रणमु ं सरसत पाय वळे विनायक वीनवु ं
बुधि दे सिद्ध दिवाय सनमुप थाय सरस्वती ॥१॥" (पत्र–२३)

पुष्पिका—

"सं० १८६० वर्षे मिती माह वदि ५ दिते ससिवारे लुणकरणसर मध्ये पं० क्षेमानंद लिपंत श्री रस्तुः । कल्याणस्तु ।"

प्रस्तुत ग्रन्थ एक ही हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । कृतियाँ सब पूर्ण है । पत्र खुले है । लिपि सुवाच्य है ।

---

१. प्रकाशित (क) सं० अचलसिंह भाटी, राजस्थानी प्रकासण, जोधपुर
(ख) पुरुषोत्तम लाल मेनारिया, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

६४. फुटकर वातें

१. फुटकर वातें, २. रा० शो० सं०, ३. २०४, ४. १४×२१ सेमी०, ५. ११२, ६. १६, ७. वि० सं० १८६२, ई० सन् १८०५, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ऐतिहासिक वातों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. पलक दरियाव री वात :–

यह पलक दरियाव की वात पौराणिक है। इसमें भगवान विष्णु के अलौकिक कार्यों की प्रशस्ति है। (पत्र–४६)

२. गींदोली गणगौर में गईजें तीए री वात :–

अहमदावाद के वादशाह द्वारा महवे की कुछ लड़कियों को भगा कर ले जाने पर महवे के शासक मल्लिनाथ के पुत्र जगमाल द्वारा वादशाह की पुत्री गींदोली को (संवत् १३२५ चैत्र सुद ५) लाने के उपरान्त वादशाह द्वारा आक्रमण तथा उसके जगमाल से हार कर भागने का वर्णन है। (पत्र–४)

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य है। प्रारम्भ के ७ पत्र लुप्त होने से ग्रन्थ अपूर्ण है।

६५. फुटकर वात संग्रह

१. फुटकर वात संग्रह, २. रा० शो० सं०, ३. ३४३, ४. ७×८ सेमी० (गुटकानुमा), ५. १६२, ६. ७, ७. वि० सं० १८६३, ई० सन् १८०६, ८. मांनग, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. अचलदास उमा सांखली नैं लालां मेवाड़ी री वात :–

प्रस्तुत वार्ता ग्रन्थांक ६०, रा० शो० सं० के समरूप है।

प्रारम्भ—

"अचलदासजी गढ गागरण रौ धणी। गढ़ गागरण राज करैं। तिण रैं लालां मेवाड़ी पटरांणी छैं। मेवाड़ रौ धणी राणौ मोकलसी तणरी बेटी छैं। निदाठीयौ पुरष अपसरा रौ अवतार सगळोइ राज लाला मेवाड़ी रैं हाथ छैं...... आदि।" (पत्र–५६)

२. राजा रसालु री वात :–

यह पौराणिक कथा श्री पुरनगर के राजा सिमसतपाल के पुत्र रसालु की है जो गद्य-पद्य में है। (पत्र–६४)

प्रारम्भ—

"श्री पुरनगर के विषै राजा श्री सालवाहन राज करै छै। तिहनै पाटे राजा सिमरतपाल राज करै तिण राजा रै असत्री सात छै, तकै असत्री महारूपवंत छै ... आदि।"

अन्तिम भाग—

वार्ता इस दूहे के साथ समाप्त हो जाती है—

"रीसालु हंदी वातड़ी, राज समापण भार छै,
गावै चारण नीवलो, हस्तीयायो मोजवे ॥२२॥

इति राजा रसालु री वात संपूर्ण संवत १८६३ रा भादवा सुद १२ लिपतुं मांनग।" तत्कालीन मान्यताओं और नारी की दशा पर इससे प्रकाश पड़ता है।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। बहुत से पत्र चिपके हुए हैं। प्रारम्भ में 'हियाली' और 'बारेमासिया' के कुछ दोहे दिये हुए हैं। ग्रन्थ में अनेक पत्र खाली पड़े है।

६६. पनां री वात कवित्त आदि

१. पनां री वात, कवित्त आदि, सिड़िया छत्रा आदि, २. रा० शो० सं०, ३. ६३, ४. १८.५ × १३.५ सेमी०, ५. १२३, ६. १७-२३, ७. वि० सं० १८६५, ई० सन् १८०८, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. राव रतनचंद साहुकार की बेटी पनां री :—

यह ईडर के राव रायभाण के पुत्र वीरम तथा पूंगल के शाह रतन की पुत्री पन्नां की प्रेम-कथा गद्य-पद्य में है। प्रारम्भ के पत्र लुप्त होने से वार्ता अपूर्ण है, मिलावें ग्रन्थांक ७७, रा० शो० सं०।

प्रारम्भ—

"सो पनां कीएं हेक भातरी जांणें गाहेली कवांण
किनां दरीयाई को नीसांण, पनां आभा की
बीजली नां सांवण की तीज जोबन मे उन्मद''''' आदि।"

(पत्र–५३)

२. गीत रतनसिंघ रो (सिड़िया छत्रा कृत) :—

प्रारम्भ—

"घिन तुझ रतनेस राठौड़ चित धारण
किध हद क्रछट आसमे कमर्प''''''' ॥१॥"

३. गीत बादरसिंघ चांपावत रौ :-
प्रारम्भ—

"अर मैहलां सोच करै नीत ऊभी सांमन ही मोसारै
आख्यां नीद कीसी विध आवै लागै दुसमण लारै ॥१॥"

४. नव कोटां रौ कवित्त :-
प्रारम्भ—

"मंडोवर सांवत१ हुवौ, अजमेर सिध२ सुव
गढ़ पुंगल गजमल३ हुवौ लोद्रवे भाण४ भुव
जोगराज धर५ धाट हुवौ, हसु६ पारकर
अल्लपल्ल७ अरबद, भोजराजा जालंधर८
नव कोट९ कीराडु सुं जुगत थिर पंवारि थपीया
धरणी वाराह धर भाइयां, कोट वांट जुजु कीयौ ॥१॥"

पुष्पिका इस प्रकार अंकित है—

"पोथी पं० सीरदारमलजी री सु लीपी छै
संवत् १८६५ मी० सु० ८"

उपरोक्त कृतियों के अतिरिक्त चित्रगुप्त की कथा, माताजी रौ अष्टक, स्नेह लीला हरणुवत चरित्र, हरजस, करुण बत्तीसी, फुटकर छंद प्रेम-पत्र इत्यादि संकलित है ।

ग्रंथ अपूर्ण है यह अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है ।

६९. वार्ता संग्रह

१. वार्ता संग्रह, २. रा० शो० सं०, ३. १५९०८, ४. २४×१६ सेमी०, ५. १७७, ६. २५-२८, ७. वि० सं० १८६९, ई० १८१२, केकिंद नगर, ८. अचलदास, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में निम्नलिखित वार्ताओं का संग्रह है—

१. जलाल गहांणी री वात :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक ८३७, रा० शो० सं० में वर्णित है । प्रारम्भ के पत्र १४ लुप्त होने से वार्ता अपूर्ण है यहाँ केवल इसका अन्तिम भाग दिया जा रहा है—

"........वा की फौज लेकरि आय न बसी ही, गढ गजनी को थो सो काम करी पीछै जलाल वडो भोगी अमर हुवौ । इती जलाल गाहाणि री वात संपूरण ।"
(पत्र-१५)

२. हितोपदेश री कथावां :–

इसमें अनेक हितोपदेश सम्बन्धी कथायें गद्य-पद्य में संकलित हैं।

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनमः, श्री सारदायनमः, श्री गुरुभ्योनमः अथ हित उपदेस लिप्ये

दूहा— श्री महादेव परताप ते सकल कोक की सिद्धि,
चंद सीस गंगा वहत, जानत लोक प्रसिद्धि ॥१॥" (पत्र–१११)

३. मधुमालती री चौपाई :–

मधु और मालती की प्रेम कथा चौपाई, दोहों और सोरठों (६३) में वर्णित है।

प्रारम्भ—

"अथ मधुमालती री चौपई लिपते—
गाहा वीर विरंचित बावनमां पात्र संकर सुत गणपति गाऊं
चातुर रिहित सहस रिझाउं रस मालती मनोहर गाऊं ॥१॥"

अन्तिम भाग—

दूहा— "राज पाट ताहि रा जनीत, मत्रि पदे ताहि बुधि
कांमी काम विलास रस, ग्यांनी ग्यांन सु बुधि ······ ··· ॥६३॥"

पुष्पिका—

"इति श्री मधुमालती री कथा चौपइ संपूरणम् समाप्त। लिपंत पंडित श्री श्री गुलालचंदजी पंडित श्री फतेचंदजी शिष कचरदास लिपत्वा आतमारथे समत् १८६६ विर्षो शाके १७३४ प्रवतमांने मासो उम मासे पौस मासे श्रुकल पष्ये १२ बुधवाहरे प्रभात समीये लिप्यत्वां केकिंद नगरे ······ ।"

४. जखड़ा मुखड़ा री वार्ता :–

प्रस्तुत वार्ता पाटण के उडा भाटी के पुत्र भीम की है। भीम के बादशाह कुतुबद्दीन की सेवा इत्यादि में जाने का उल्लेख है, वार्ता अपूर्ण है।

प्रारम्भ—

"अथ जपड़ा मुपड़ा री वार्ता लिपते। पिछम देस में किवे एक पाटण देस गांव छै वडो सहर छै तठे उडो भाटी राज करै छै तिण रै दोय बेटा छै त्यांरा नाम वडो भीवो छोटो भाई देवो तिण रै गांव अढ़ीसै छै······तिण रै घणा रजपूत पांप पंप रा छै······भीवो टीके बैठो······ तिण समै दिल्ली रो धणी पिरोजसाह पतिसाह राज करै······तिण रै उमरावों रो घणो लाड छै······ ··· ।" (पत्र–२)

प्रस्तुत ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुन्दर है। प्रारम्भ व अन्त के कुछ पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है।

६८. वार्ता संग्रह

१. वार्ता संग्रह, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ४९१६, ४. १६.५× २३ सेमी०, ५. ६६, ६. १५, ७. वि० सं० १८७५-१८८१, ई० सन् १८१८-१८२४, विलावास, ८. हुकम सोभाग्य, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ मे कुछ वार्ताएँ संग्रहीत हैं जो अन्य सर्वेक्षित ग्रंथों में आ चुकी है, यहाँ केवल वार्ता का नाम और प्रारम्भ दिया जा रहा है—

१. जगदेव पंवार री वार्ता :–

मिलावें ग्रंथांक ३५४६, रा० प्रा० वि० प्र०।

प्रारम्भ—

"*प्रथम मालव देश रै विषे धार नगरी छै तठै उदियादित्य* राजा राज भोगवै छै। तिको जाति री पमार छै तिण रै दोय रांणी········।"

पुष्पिका—

"संवत् १८७५ रा शाके १७४० रा प्रवतर माने मासोत मासे उत्तमासे कृष्ण पक्षे चतुर दिस तिथौ १४ बुधवासरे रात्री घड़ी च्यार········लिपंत पं० हुकम सोभाग्य गाणि विलावस मध्यें।" (पत्र–४४)

२. राजा भोज माघ पिंडत डोकरो री कथा :–

प्रारम्भ—

"एक समै राज भोज नै माघ पंडित सेहर सु' कोस दोय अथवा ४ कोस माथै गया। सो एक वाग जोवण नु' गया था ··· ··।" (पत्र–२)

३. चंद कुमर री वार्ता :–

प्रारम्भ—

दूहा— "समरूं सरसति माय गणपत देव के लागु पाय
प्रतपसं आग्या करी, कथा सरस कवि राय ॥१॥" (पत्र–७$\frac{1}{2}$)

४. सदंवच्छ सावलिंग री वार्ता :–

प्रारम्भ—

"न्यायक सुतार निरवाहण, सुगण करै सुरजाम,
साविलंगा सुदा, सरस, तेण भवंतर नाम ॥१॥"

वार्ता प्रारम्भ—

"प्रथवी मांहे प्राणंदपुर नांमा नगर छै तठै सालवाहन राजा राज करै तिण रै कांमदार महुंतो छै…… ।" (पत्र–१७½)

५. पनरमो विद्या राजा भोज री वार्ता :–

प्रारम्भ—

श्री गणपती सरसति सीव विष्णु रवि गुर देव
व्यास करै परदास प्रभु दीजै अक्षर मेव ॥१॥ (२० दोहे)

वार्ता प्रारम्भ—

"राजा भोज वडो राजा दांनवंत सतवंत साहसिक प्याग त्याग निकळंक सुषै राज करै …… ।"

पुष्पिका—

"संवत १८८१ रा वैशाष सुद ५ रात्री उतावळ सुं लिपी से रात्र पोहर गइ थका ।" (पत्र–१२३½)

इन वार्ताओं के अतिरिक्त आंका री पाटी (गणित सम्बंधी), नेमनाथजी री लावणी इत्यादि कृतियाँ संकलित है ।

ग्रंथ दो व्यक्तियो के हाथ मे लिपिबद्ध किया गया है । ग्रंथ की लिखावट साफ सुथरी है । ग्रंथ पर गत्ता नही है ।

६६. विक्रमादित्य चौबोली राणी री कथा इत्यादि

१. विक्रमादित्य चौबोली राणी री कथा इत्यादि, २. रा० प्रो० सं०, ३ ४८५६, ४. ११.५ × १६ सेमी०, ५. ६०, ६. ६-११ ७. वि० सं० १८८०, ई० सन् १८२३, कैकींद नगर, ८. अज्ञात ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ का प्रारम्भ एक जैन कृति 'समायक विध' से हुआ है—

"नमो अरिहंताणं नमो सिधांण नमो आय रियांणं ……ग्रादि ।"

विक्रमादित्य चौबोली राणी री कथा :–

प्रस्तुत कथा उज्जैन नगर के राजा विक्रमादित्य और उनकी रानी चौबोली व खापरिया चोर की है है ।

प्रारम्भ—

"मालवा देस में एक उजैणी नगरी छै । तठै पमारां री समोड । परदुप काटण माहासीक दार श्री वीर विक्रमादित्य राजा राज करै छै । महा न्याई राजा छै, पिण उजैणी नगरी अड़ताली कोस लांबी छै बतीस कोस चौड़ी छै, चोरासी

बाजार छै कोड़ीधज साहा घणा वसे छै तठे। पापरो चोर चोरी करै छै.......
आदि।"

कथा में वर्णित है कि सुन्दरी बोबोली से राजा शादी करने की इच्छा प्रकट करता है। राजा के सामने एक शर्त रखी जाती है कि अणबोली रानी से वही शादी कर सकता है जो एक रात में चार बार रानी को बुलवावे। इस पर विक्रमादित्य कहानियाँ सुनाता है और रानी को चार बार बुलवाने पर शादी कर लेता है।

अन्तिम भाग—

"राजा बोलीयो राणीजी दावजी को होयजो पिण आप तो चार वेला बोलीयां पछै लगन थापी, ओछव मोछव कीधा राजा चोबोली रांणी परणीया घणा धवलमंगळ ओछाव कीया। गाजा वाजा कीया। राजा राणी सुखी हुवा। मा बाप घणा हाथी घोड़ा दीया। गहणा गाठा सोना रुपो दास दासी दीया। दत दायजो घणो देनै सीप दीधी।........सुष में राज करै छै आ वात सुणसी वाचसी तिको सदा सुखी रहसी।" (पत्र–२३)

ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता है पर बेसिला हुआ है। मूल ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा है, लिपि सुवाच्य है। ग्रंथ में इसके अतिरिक्त विभिन्न विषयों की अनेक कृतियाँ संकलित है जैसे चौविस तीर्थंकर, गौतम स्वामीजी स्तवन, नौकर री सज्झाय, नेमीनाथजी रो तवन, पारसनाथजी रो तवन, श्रावक री सिज्झाय, नेमीनाथजी रो तवन, पंच तीरथां रो तवन, राणपुरजी रो तवन, जसवंतजी रो तवन, साध वंदणा, नेमजी रो तवन, सूरजजी रो सिलोको, बारे मासियो, सनीसरजी री कथा, जीव काया सज्झाय, और गणेशजी री नीसाणी इत्यादि।

७०. कथा वार्ता इत्यादि

१. कथा वार्ता इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. २५७३, ४. १६.५ × २४ ५. ३६ ६. १७-३० ७. वि० सं० १८८५, ई० सन् १८२८, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, संस्कृत, देवनागरी १०. इन अर्द्ध ऐतिहासिक बातों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. पना री बात :–

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक ७७ में वर्णित है। प्रस्तुत वार्ता अपूर्ण है वार्ता का प्रारम्भ गणेशजी की स्तुति से किया गया है—

"सदा मनोरथ सिध कर वाणी अखर वँस
साहरां पहिली समरीयं गुण दातार गणेश ॥१॥" (पत्र–२)

२. राव रिणमल खावड़ीया री वात :–

प्रस्तुत वार्ता ग्रंथांक २५६६ के समरूप है । (पत्र–१०)

३. फुतबुद्दीन शाहिजादा री वचनिका :–

प्रस्तुत वार्ता वही है जो ग्रंथांक १६३ में वर्णित है । (पत्र–८½)

इन उपरोक्त वातों के अतिरिक्त चौथ माता री कथा, गणपति री कथा, फूलवंती की वार्ता, शिवरात्रि व्रत कथा, विष्णु सहस्रनाम इत्यादि कृतियां ग्रंथ में संकलित है ।

ग्रंथ पर गत्ता नहीं है । ग्रंथ एक व्यक्ति के हाथ से लिखा हुआ है । कुछ पत्र चिपके हुए हैं और ग्रंथ के अन्तिम बहुत से पत्र कीट-भक्षित है । बहुत से पत्र खाली पड़े है ।

७१. प्रतापसिंह म्होकमसिंह, हरिसिंघोत री वार्ता आदि

१. प्रतापसिंह म्होकमसिंह हरिसिंघोत री वार्ता आदि, बहादुरसिंह, मुहणोत सिवदास आदि २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ७८७४ ४. २२ × १५.५ सेमी०, ५. ३०, ६. १६१६, ७. वि० सं० १८६५, ई० सन् १८३८, जयपुर ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. प्रतापसिंह म्होकमसिंह हरीसिंघोत री वार्ता[1] :–

प्रस्तुत वार्ता मे देवलिया के रावत हरीसिंह के पुत्र प्रतापगढ के संस्थापक रावत प्रतापसिंह और इनके अनुज म्होकमसिंह का वीरता पूर्ण चरित्र वर्णित है । मिलावें ग्रंथांक १५११, रा० शो० सं० ।

वार्ता प्रारम्भ—

"देवगढ़ रावत प्रतापसिंघ हरीसिंघोत राज करै, जिको किसोहेक पातसाहा सू आडो कंवारी घड़ा री लाडो अड़ संग्राम री नाटसाल चक्रवर्ता जिसड़ी चाल·········आदि ।"

अन्तिम भाग—

हो रावां हो रजिया हो सोहड़ भलांह
सूरां सापुरसां तंणी, जुग रहसी गलांह ॥७॥

१. प्रकाशित, सं० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर (ग्रंथांक ५२)

"इती श्री रावत मोहकमसीघ हरीसींघोत री वात महाराज धिराज महाराज श्री वहादूरसिंघजी कृत संपूर्ण किसनगढ़ राज राजस्थान सं० १८९५ चैत्र वद १३ लीपी जैपुर मे।" (२५-१/२)

२. कवित ...... (बिना शीर्षक तथा अज्ञात कर्तृक) :-

प्रारम्भ—

"दुरजन सौं जीत अस सजन मौं गीत
नीत गुरदेवन मौ प्रीत तोहि सुजस क्रपांनी को ... ।"

३. गीत ...... (बिना शीर्षक तथा अज्ञात कर्तृक) :-

प्रारम्भ—

"डंडे पांन रो मेवास दिली आगरो स्याहरं ।
डंडे आगरो की गिणां विहारा हरी अनेक.......।।१।।"

४. सूर सती संवाद (मुहणोत सिवदास कृत) :-

प्रारम्भ—

राग मांढ़ ।। दोहा ।।
"मरदां मोद वधावणो, सतिग्रां नेह सवाद ।
असत्यां कायर ओलमो, सूर सती संवाद ।।१।।"

अन्तिम भाग—

"चढ़िया चढिम्रा जी मारूजी अनंत उछाह,
सूरा सती रो जी सूरज सापवी ।।२६।।
इति"

५. म्हाराज नागरीदास जी रा बणाया जोसर :-

दोहा—

"प्यारी पीय सपियन सहित चोपर पेलत बैठ
मनो मदनपुर चोहटे परी रूप की पैठ ।।१।।"

प्रस्तुत ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, लिपि सुवाच्य है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

७२. अचलदास खीची री वात तथा सकुन शास्त्र आदि

१. अचलदास खीची री वात तथा सकुन शास्त्र आदि, राव मालदेव आदि, २. रा० शो० सं०, ३. ६०, ४. १७.५ × २७ सेमी०, ५. २३६, ६. १८,

७. वि० सं० १६०८–१०, ई० सन् १८५१–३, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०.

१. हितोउपदेश पंचाख्यांन :–

इसमें उपदेश और राजनीति से सम्बन्धित अनेक दोहे लिपिबद्ध हैं।

प्रारम्भ—

"महादेव प्रतापतैं सहु काम की सिद्ध
चंवसि संग गावहत जांनत लोग प्रसिद्ध ॥१॥"

पुष्पिका—

"इति हीतोपदेस ग्रंथ राजनीत पचग्यान·······
पंच पंड समाप्त। १६०२ रा मिती फागुण सुद ११।" (पत्र–५५)

२. अचलदास खीची री बात :–

यह गागरोण के शासक अचलदास खीची उमा सांखली और लालां मेवाड़ की प्रेम वार्ता है। इसमें एक झीमा चारणी अचलदास के समक्ष उमा सांखली के रूप का वर्णन करती है जिस पर अचलदास उससे शादी करता है। उमा और लालों (मेवाड़ राणा मोकल की पुत्री) के बीच मनमुटाव हो जाता है। मांडू का मुसलमान सुल्तान गंगारोण पर आक्रमण करता है और दोनों दलों में भयंकर मारकाट व अचलदास वीरगति को प्राप्त होता है और ये दोनों रानियां सती होती है।

प्रारम्भ—

"प्रथम तो अचलदास षीची गढ़ गागुरण रो धणी·······तिण रै रांणी लाला मेवाड़ी दस सहस मेवाड़ रो धणी रांणो मोकल तिण री बेटी·······राज सगळो लालांजी रै हाथ·······आदि।"

अन्तिम भाग—

"अचलदासजी काम आया·······लालां उमाजी नै खबर हुई तरै बेई आंण सत किधो। तरै रूसणो भागो·······। ईति अचलदास खीची री बात संपूर्ण सवत १६१० चैत्र वद ११।" (पत्र–८)

३. राव श्री मालदेवजी विरचित सकुन सास्त्र :–

प्रारम्भ में विभिन्न दिशाओं का ज्ञान कराया गया है।

प्रारम्भ—

"अथ दिसा कूण रो वीचार·······चालतां डावो जीमणो जोइजै तरै कूंणा रो वीचार उतराधी धुरी तारो उगै तठै इशांन। उनाळा रो सूर्य उगै तठै

अगन प्रवांण सीयालो रो सूर्य उगै तिण रो जिमणो पासै रूपरास केसरी तारो तोरणीयो कहीजै...... ...।"

आगे विभिन्न सगुनों का वृत्तांत है—'कालो चीड़ो रा सुकन', 'सगाई करण नै जावे तिण रा सुकन', 'झगड़ो करण रो सुकन', 'नवो वास कीजे न सूल गाव वाडीजे तिणरा रा सुकन', 'धणी कनै हालतां रा सुकन' आदि।

युद्ध में जाते समय अच्छे बुरे सगुनों का वृत्तांत इस प्रकार दिया है—"घर थी चालो तो प्रथम तीतर डावो, रूपा मालाळो, हिरण मालाळो, काळ पूछ मालाळो भलो। नाहर स्याल सांप रो देठालो क्यूं ही नही। नील टास उवेड़ो चीवरी जीमणी पर डावो सांवळी डावी उवेड़ो भलो। श्रे सुकन पतवांणीया हो तरं ...... 'सुकन जोयर वीचार झगड़ो करणो ......।"

अन्तिम भाग—

"जो वोल सुकर के पेत, निहचल वादल विरपा देत
क्यूं पढे पिंडत आळ जंलाळ,
जहास निसर जहां दुकाळ
इति श्री रावजी मालदेवजी कृत संपूर्ण।" (पत्र-२)

आगे सगुन संबंधी अनेक चार्ट अंकित है।

इसके अतिरिक्त अनेक अनैतिहासिक फुटकर दोहे, छंद कवित्त आदि ग्रंथ में लिपिबद्ध है। ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ की लिपि सुवाच्य है। ग्रंथ पूर्ण है। पत्र मोटे हैं। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मंढ़ा है।

७३. ऐतिहासिक बातों का संग्रह

१. ऐतिहासिक वातों का संग्रह, २. रा० शो० सं०, ३. १२३४, ४. २४.५ × १६ सेमी०, ५. ११०, ६. २४, ७. १९ वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में संकलित अधिकाश बातें जोधपुर के राठौड़ राजाओं व उमरावों से सम्बन्धित हैं। कुछ ऐतिहासिक वातों का प्रकाशन हो चुका है। संग्रहीत ऐतिहासिक वातों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. मालदेव री बात :—

प्रारम्भ—

"उण रावजी नै केयो। रावजी साचमानी पाछा आय कमर वांध ने किण ही नै कयो नही।"

ग्रंथ का प्रारम्भ जोधपुर के शासक गांगा के ज्येष्ठ पुत्र मालदेव से हुआ है। प्रस्तुत बात अधूरी है। इसमें मालदेव द्वारा लड़े गये विभिन्न युद्धों, युद्ध में काम आये योद्धाओं का वृत्तांत है—शेरशाह का जोधपुर पर आक्रमण व उसका १ वर्ष ५ महीने ६ दिन अधिकार, शेरशाह की मृत्यु के बाद पुनः मालदेव का अधिकार, उस समय मालदेव के पास जोधपुर, सिवाणा, सोजत, जैतारण, फलोदी, पोकरण आदि परगने अधिकार में होने का उल्लेख है। मालदेव का जैसलमेर मेड़ते पर आक्रमण व मेड़ते पर संमत १६१३ फागुन सुदि १२ को अधिकार, संवत १६१४ में मालगढ़ दुर्ग की स्थापना और वहां देईदास जैतावत को नियुक्त करना, बादशाह अकबर की मदद से जयमल द्वारा मेड़ता पर आक्रमण (सं० १६१८) ३४ वर्षीय वीर देईदास जैतावत के साथ अनेक योद्धाओं के मारे जाने का वृत्तांत इस प्रकार है—

(१) भाखरसी जैतावत, (२) पूर्णमल प्रथीराज जैतावत, (३) तेजसी उरजन पंचायणोत का, (४) सहसो उरजन पंचायणोत का, (५) ईसरदास राणा अखेराज का, (६) गोयंद राणा अखेराजोत का, (७) पतो कूंपा महराजोत का, (८) भाण भोजराज साढ़ा रूपावत का, (९) अमरो रामावत का, (१०) सहसो रामावत का, (११) नेतसी सीहावत, (१२) जैमल तेजसीयोत, (१३) रांमो भैरदासोत, (१४) भाखरसी डूंगरसीयोत, (१५) अचलो भींवोत, (१६) महेस पंचायणोत, (१७) जैमल पचायणोत पंचायण दूदावत मेड़तीयौ, (१८) रिणधीर रायसिंघोत, (१९) सांगो रिणधीरोत, (२०) राजसिंघ घड़सीयोत, (२१) ईसर घड़सीयोत, (२२) मांगळीयो वीरम, (२३) तेजसी, (२४) भाटी तिलोकसी, (२५) भाटी पीथो, (२६) राणो जगनाथोत, (२७) भाटी पिराग भारमलोत, (२८) देदो, (२९) सिपाई हमजो, (३०) सूथार (बढ़ई) भानीदास, (३१) बारहट जीवो, (३२) बारहट जालप, (३३) बारहट चोलो।

सेनापति पृथ्वीराज के युद्ध में मारे जाने पर कूंपा को सेनापति नियुक्त करना इत्यादि। बारट आसा के ७ कवित[1] दिये हुए हैं, जिसमें प्रथम २ कवित मालदेव की प्रशंसा में है तथा ५ कवित मालदेव के छोटे बड़े परगने[2] अधिकार में रहे उससे संबंधित हैं।

१. प्रकाशित, सं० डा० नारायणसिंह भाटी, रा० शो० सं०, जोधपुर (परम्परा अंक ११)

२. प्रकाशित, सं० डा० नारायणसिंह भाटी, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर (विगत भाग ३, पृ० ७४–७५)

२. राव चद्रसेन री बात :–
प्रारम्भ—

संवत १५९८ सांवण सुद ८ जनम। राव चंद्रसेन राव मालदे वांसे टीके बैठो। बड़े वळाक्रम रो धणी ......।"

यह वार्ता मारवाड़ नरेश राव मालदेव के पुत्र चंद्रसेन की है। पिता की मृत्यु के बाद संवत १६१६ पौस सुद ६ को राज्याभिषेक, चंद्रसेन व उनके भाइयों में झगडा, चंद्रसेन का सवत १६१६ वैसाख वदी १३ को रांणा उदयसिंह के पुत्री से विवाह होने का उल्लेख, चंद्रसेन द्वारा अपने भाई उदयसिंह पर चढ़ाई, बड़े भ्राता राम का जोधपुर पर आक्रमण तथा राम को सरदारों द्वारा सोजत दिलाना, चंद्रसेन का अकबर बादशाह से मिलना इत्यादि अनेक घटनाओं का वृत्तांत है। (पत्र–१०)

३. बात महाराजा उदैसिहजी री :–

प्रस्तुत वार्ता मालदेव के पांचवें पुत्र उदैसिंह की है। महाराजा का १६४० कार्तिक वदी ८ राज्याभिषेक, महाराजा द्वारा सिरोही और सिवाने पर अधिकार करना, युद्ध में लडे व्यक्तियों का उल्लेख है। (पत्र–१)

४. बात महाराज सूरसिंह री :–

बादशाह अकबर द्वारा गुजरात में उपद्रव शांत करने हेतु वहां की रक्षा का भार शूरसिंह को सौंपना, महाराजा का संवत १६६१ में मेड़ता पर अधिकार करना, किशनसिंह द्वारा भाटी गोविन्ददास को मरवाना, तत्पश्चात महाराजा द्वारा किशन सिंह को मरवाने का उल्लेख आदि। (पत्र–४)

५. महाराजा अजीतसिंह री बात :–

यह वार्ता जोधपुर के शासक महाराजा जसवंतसिंह के पुत्र अजीतसिंह की बहुत सक्षेप में है, इसमें महाराजा के मनसब का उल्लेख कर विभिन्न कारखानो (विभागों) का वृत्तांत दिया है, जो प्रशासनिक दृष्टि से अध्ययन योग्य है।

६. बात भाटी केलण री :–

प्रस्तुत वार्ता मोटाराजा और भाटी केलण के बीच फलौदी में युद्ध हुआ जिसमें भाटी जीते व मोटा राजा के हारने का उल्लेख है युद्ध में मरे राठौड़ वीरो के नाम और ५० भाटियों के वीरगति को प्राप्त होने का उल्लेख है। (पत्र–१½)

७. बात मेड़तीयां री :–

मेड़ता आदू राजा मांनधाता द्वारा बसाया जाने का उल्लेख, मेड़ते पर जिन-जिन राजाओं का अधिकार संवत १५१५ से १६५८ तक रहा उनका संक्षेप में हाल

है। आगे नव कोटां की विगत दी गई है—बाडमेर, आबू, पारकर, पूंगल, जालोर, उमरकोट, अजमेर तथा गढ मंडोवर। (पत्र–३)

८. वात सोजत री :–

सोजत शहर और गांवां की भौगोलिक स्थिति का उल्लेख दिया गया है। (पत्र–१)

९. अंबावती नगरी री बात :–

प्रस्तुत वार्ता इस नगरी के राजा अंबकसेन व उसकी पुत्री सोझल की है इसी लड़की के नाम पर इस नगरी का नाम सोझत दिया गया है। (पत्र–१)

१०. वात अखैराज रिड़मलोत री :–

प्रस्तुत वार्ता बगडी के जागीरदार अखैराज (रिड़मल के पुत्र) की है। मेर जाति के लोग बगडी की धरती में नुकसान करने पर पंचायणजी द्वारा उनसे युद्ध, फिर पचायण का वावरीया हुल की पुत्री पारवती हुलणी के साथ शादी इत्यादि वृत्तांत है। (पत्र–१)

११. वात तेजसी वरसिंघ री :–

राव मालदेव द्वारा वरसिंह को रीयां की जागीर मिलने तथा रीया पर वीरमदे का आक्रमण करने का उल्लेख आदि है। (पत्र–१)

१२. वात अचला पंचाइणोत री :–

प्रस्तुत वार्ता अचळा की है, राव मालदे ने इनको रड़ोद के थाने पर नियुक्त किया था। वीर अचळा के एक समय ससुराल जाते समय मार्ग में दो बघेरों से झपट होने व उनको मारने का दिलचस्प उल्लख है। (पत्र–१)

१३. वात जसवंत तिलोकसीयोत री :–

जसवंत तिलोकसीयोत और मांडणसी कूंपावत का अकबर बादशाह के यहा नौकर होने का उल्लेख, अकबर द्वारा अपने पुत्र का संबंध माडणसी की पुत्री के साथ करने की इच्छा प्रकट करने पर जसवंत का रूठ कर मेवाड के राणा अमरसिंह के वहाँ चले जाने का उल्लेख है। (पत्र–१)

१४. वात राठौड़ तेजसी कूंपावत री :–

अनजाने में तेजसिंह कूंपावत के मारे जाने पर सीहा द्वारा पश्चाताप करना तथा रांमे और महेस द्वारा तेजसिंह कूंपावत का बैर लेने हेतु किये गये प्रयत्नों का वृत्तांत है। (पत्र–१)

१५. वात मांडण जी कूंपावत री :—

वीर मांडण कूंपावत का मेवाड़ के राणा के पास जाना, वहा रहते हुए राणा की आलोचना करने वाले व्यक्तियों को मौत के घाट उतारना तथा सांवलदास को भगाना तिस पर राणा के दीवांण द्वारा मांडण का स्वागत इत्यादि करने का उल्लेख है। (पत्र-२)

१६. वात राठोड़ देईदास जैतावत री :—

प्रस्तुत वार्ता मालदेव के प्रसिद्ध सामन्त देवीदास की है। मालदेव द्वारा मेड़ता में दुर्ग बनवाये जाने का देवीदास द्वारा विरोध करना, तत्पश्चात मेड़ते मे रहने के लिये राजी नही होना, राठोड़ जयमल द्वारा बादशाही फौज के आक्रमण में देवीदास का घायल होना, उसकी स्त्रियों का सती होना व देवीदास का सन्यासी होना, जैमल रूपसीयोत द्वारा देवीदास को बादशाह के समक्ष ले जाना, अन्त में राव कल्ला द्वारा देवीदास को सिरीयारी में चूक से मरवाने का वृत्तांत है। देवीदास की उपरोक्त घटनायें 'ऐतिहासिक बाता' (परम्परा) से मेल नही खाती हैं। (पत्र-३)

१७. वात राव जैतसीजी री :—

राव मालदेव के समय में एक पराक्रमी राजपूत हुआ। प्रस्तुत वार्ता मे उसकी धाक से संबधित एक किस्सा दिया गया है। (पत्र-१$\frac{1}{2}$)

१८. वात राठोड़ खींवा उदावत री :—

मालदेव के समय का बड़ा योद्धा, खींवा द्वारा ब्यावर पर अधिकार करना, फिर बधनोर पर अधिकार करने इत्यादि का वृतांत है। (पत्र-१)

१९. राठोड़ तेजसी डूंगरसीयोत री बात :—

राव मालदेव की तेजसीह उदावत पर विशेष कृपा इसके द्वारा चाटसू के पंवारो को लूट कर वैर लेने, राव मालदेव की ओर से सिवाने की रक्षा का भार तेजसिंह को देने और इस अवसर पर खर्च हेतु कुछ धन तेजसिंह को देने का आश्वासन देना, काफी समय तक खर्च के पैसे न दिये जाने पर तेजसी का खाना खाते हुए राव मालदेव के समक्ष पैसों की बात करना, तिस पर गुस्से में आये राव मालदेव द्वारा भोजन का थाल (सोने का) उसके आगे पटकना और तेजसी द्वारा यह थाल उठा कर ले जाने का वृतांत इत्यादि है जो मूल में इस प्रकार वर्णित है—

"पछै कितरै हेक दिन तेजसी दरबार आया। ऐक दिन रावजी अरोगता था.... ..आभोजी रावजी कन्हे जाता था। तितरै तेजसी आभा नुं कह्यो-म्हांरी

लाख दुगांणी इण तरै री देणी छै सु देनै जावो..... ...कयौ–थांनु समभ नै जवाब देस्यां ... ...रावजी वकै अभानु चितारियौ ......तरै रावजी कयौ–तुं हुजदरां नुं कांय रोकै क्यूं देणौ छै तो म्है देस्यां ......तरै तेजसी कयौ—तो लाख दुगांणी थे दो, तरै रावजी आरोगता रिसाय नैं सोने री तासळी नांखी जांणियौ थो तासळी न लेसी तेजसीजी तो तासळी लेने डेरे आया, रावजी बुरौ मांनियौ ......।" (पत्र–७)

२०. वात राठौड़ जसवंतसिंघजी डूंगरसियोत री :–

एक गरीब राठोड बांसवाले चाकर रहते हुये, एक समय मालदेव द्वारा मगवाये हाथियों को बांसवाले रावल प्रताप द्वारा रोकने पर जसवंत द्वारा हाथियों को मुक्त करवाने, तत्पश्चात जसवंत के ईडर रहते हुए अख्तियारखां से लोहा लेने, जसवंत को जैतारण मिलने, मेरों से टक्कर लेने तथा नागौर के पास पहाड़ियों में मुगलों से युद्ध करते हुए वीर गति प्राप्त होने का वृत्तांत है।

२१. वात सिवांणे री[१] :–

वीरनारायण पंवार द्वारा सिवांणे के गढ़ का निर्माण करवाना, वीरनारायण को मार कर गढ़ पर चौहानों का अधिकार होना, फिर बादशाह का यहाँ अधिकार होना, तत्पश्चात रावल माल का अधिकार होने का वृत्तांत है।

२२. वात राव लखोजी सिरोही राज करै :–

प्रस्तुत वार्ता राजधर के पुत्र तथा सिरोही के शासक राव लाखे की है। राजधर द्वारा अपनी पुत्री का संबंध लोहियाणे के राव से करने तथा राव द्वारा अपने श्वसुर राजधर को धोके से मारने, तत्पश्चात लाखे द्वारा बदला लेने हेतु राव को मारने का प्रयत्न करने और अन्त में लाखे को झूठा आश्वासन देने व झूठी महादेव की शपथ खाने पर राव के प्राण पखेरू उड़ जाने इत्यादि का वृत्तांत है। (पत्र–३)

आगे के वृत्तांत में सिवांने के शासक चौहान सातल और सोम (मारवाड़ के शासक राव टीडा के भानजों) पर सं० १३६४ में बादशाह अलाउद्दीन द्वारा आक्रमण करने पर टीडा के लड़ते हुए सिवाने में मारे जाने का उल्लेख है।[२] जिसके संबंधित दोहे भी उद्घृत हैं :—

---

१. विस्तार के लिये देखें विगत (भाग २, पृ० २१५)

२. ओझा के मतानुसार अलाउद्दीन से लड़ते हुए राव टीडा के सिवाने में मारे जाने की घटना कपोल कल्पित है। जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड पृ० १७९)

सोम सिरो सिवीयांण, आवंता सांभळ असुर,
परमारथ तज प्रांण, परत बीसो तीडै प्रथम ॥१॥
सिवीयांणे अड़साल, जळ चाढ़ण जालण हरो,
बिढ़ीयो चंवर बंबाळ, तीडो तिण साखी थये ॥२॥
महरत कज मारू राव, गढ़ पत गढ़ बाधौ गळै।
कमधां आद कहाव, यूहड़ हर चढीयां धरा ॥३॥

२३. वात दीवांण मेवाड़ रा धणीयां री वंसावली :–

ग्रंथ में श्री ब्रह्माजी से वनशर्मा तक मेवाड़ के दीवांणों की ५८ पीढ़ियों का वृत्तांत है। आगे गोदसी दित्य से भोगादित्य तक ५५ दित्यों का उल्लेख किया गया है। फिर भोज रावळ से करण रावळ तक २६ रावळों की पीढ़ियों का वृत्तांत है। (पत्र–३)

२४. वात रांणा रायमलजी री :

प्रस्तुत वार्ता मेवाड़ के महाराणा कूंभा के पुत्र राणा रायमल की है। राणा के राज्यकाल (वि० सं० १५३०–१५६६) में उसके तीनों पुत्रों पृथ्वीराज, जयमल और संग्रामसिंह के आपस में झगड़े के सिवाय अन्य कई विशेष उल्लेख योग्य घटनायें भी हैं। सांगा व उसके पिता में मनोमालिन्य होना तथा सांगा की मां के इच्छानुसार उसके उत्तराधिकारी होने का वृत्तांत ग्रंथ मे इस प्रकार दिया है—

"……लाडीजी कयो—म्हारै सांगो धणी बात छै……तरै सांगा नै रजपूतां एक पासू बुलायो सो रांणाजी नै धरती उतारीया था नै गोबर री चौको दियो थो तिण समै सांगो आयो नै पगां रै माथां टेकियो, जणां राणांजी बोलिया—म्हारा पगां उपर कासूं छै, तरै कोई बोलीया नहीं तरै राणांजी कयो—सांगलो हरांमखोर न छै यूं करनै पग अछटीयो सो गोबर रो भरीयोड़ो पगरो अंगूठो सांगा रै लिलाड़ रै लागो सोही टीको हुवो नै रांणाजी तो काळ कीयो, सांगोजी पाट बैठा ……।"

पृथ्वीराज की बहिन दमेती[1] का विवाह सिरोही के राव जगमाल से करने, पृथ्वीराज द्वारा आबू तथा जालोर पर आक्रमण करने तथा पृथ्वीराज के राव सुरतांन सांखला (बघनोदर के शासक) की कन्या तारादे से विवाह होने तथा उस कंवरानी के युद्ध के समय पृथ्वीराज के साथ रहने व युद्ध करने का वृत्तांत है।

---

१. जगदीशसिंह गहलोत ने (राजपूताने का इतिहास भाग प्रथम, पृ० २१६ आनन्दबाई लिखा है।

पृथ्वीराज को राव जगमाल द्वारा विष देने पर मृत्यु को प्राप्त होने का उल्लेख है। (पत्र–४)

२५. राणां रतनसीजी री बात :–

प्रस्तुत वार्ता मेवाड़ के शासक राणा सांगा के पुत्र रतनसिंह द्वितीय की है। रतनसिंह शिकार को बूंदी जाते हुए सूर्यमल्ल का मार्ग में मिलना तथा राणा द्वारा सूर्यमल्ल को मारने का असफल प्रयत्न करना, तत्पश्चात राणा द्वारा तलवार का वार करने पर सूर्यमल्ल के सिर का आखों का ऊपरी हिस्सा कट कर अलग होना तथा सूर्यमल्ल द्वारा राणा पर वार करने से दोनों वीरगति को प्राप्त होने का उल्लेख है।[1] (पत्र–१)

आगे के वृत्तात में सांगा के भाई पृथ्वीराज के दासी पुत्र वणवीर द्वारा विक्रमादित्य (रतनसिंह का भाई) को मारना तत्पश्चात बालक उदयसिंह को मारने का प्रयत्न करने का वृत्तांत है। (पत्र–१)

२६. बात रांणे लाखेजी :–

प्रस्तुत वार्ता मेवाड के महाराणा खेतसिंह के पुत्र लक्षसिंह की है। मारवाड़ के शासक राव चूडे द्वारा अपनी पुत्री का सम्बन्ध लाखे के साथ करने तथा लाखे के बाद उसके पुत्र मोकल का उत्तराधिकारी होने और अन्त में कुंभे द्वारा चूंडा के पुत्र रिड़मल को चितौड़ रहते हुए धोके से मरवाने का उल्लेख है। (पत्र–१)

२७. विगत मांगलीयां री :–

मांगळिया गहलोत शाखा के हैं। इनका प्रमुख स्थान वैराट है, उसके बाद बासवाले और मारवाड़ में आने का उल्लेख है। मांगळियों द्वारा ग्राम खींवसर बसाने, भगासर तालाब भागांबाई द्वारा कराने, बड़े भ्राता लखोजी के खींवसर रहने व छोटे भाई किलूजी के गांव तापू रहने व उसके पुत्र मेहोजी का गायो की वार में वीर गति प्राप्त होने का उल्लेख है। आगे उनके पीछे सती हुई महिलाओं के सम्बन्धित दोहे दिये हैं। मेहोजी की स्मारक छतरी बापीणी में होने का उल्लेख है। (पत्र–१)

२८. विगत छतीस राजकुल् री :–

ग्रंथ में ३६ कुलो का ब्यौरा इस प्रकार दिया है—

(क) सूर्य वंशी :–(१) राठौड़, (२) कछवाह, (३) टाक, (४) बजा, (५) वडगूजर, (६) सिसोदिया, (७) गोहिल, (८) मोठ, (९) हाला, (१०)

---

1. विस्तार के लिये देखें, वीर वीनोद, द्वितीय भाग, पृ० ७

हरवगस, (११) गौड़, (१२) चूड़समा, (१३) कदम, (१४) बला, (१५) बंदेल, (१६) सरवहया।

(ख) चन्द्रवंशी :–(१) जादम, (२) चपट, (३) करीठ, (४) धनपाल, (५) खुद्या, (६) राजपाल, (७) दोदक, (८) तंवर, (९) आमंक, (१०) निकंम, (११) डातीत, (१२) राखुक, (१३) लूवव, (१४) संख, (१५) बासटक, (१६) कुंभ तथा अन्त में

(ग) अगन वंशी :–(१) सोलंकी, (२) पिड़ीहार, (३) चौहान, (४) पंवार

आगे छत्तीस राज्वंशी जिन गढ़ों पर राज्य करते हैं उनके नाम दिये हैं जो कि मुहता नैणसी द्वारा लिखित ख्यात के समरूप है।[1]

२९. आठ पदवियां री विगत :–

८ पदवियों के संबंधित दूहा दिया गया है—

राव, राज रावत कहां दाख जांम दीवांण।
अस पदवी इळ ऊपरे, रावळ राजा रांण॥

अर्थात ८ पदवियां इस प्रकार है—(१) राव, (२) राजा, (३) रावत, (४) जांम, (५) दीवांण, (६) रावल, (७) राजा, (८) रांणा। (पत्र–१/२)

३०. दिल्ली रै पातसाहों रौ विवरो :–

दिल्ली में राजा सिंहासनासीन हुए उन शासकों का वर्णन संक्षेप में दिया गया है। दिल्ली के ९९००००००० गांव सहर होने ५७१ राजाओं के राज करने तथा कलयुग में दिल्ली नाम दिये जाने का उल्लेख है। एक हजार ३० वर्ष यहाँ पांडवों द्वारा राज्य करने, सुखाचेन और विक्रमादित्य के बीच युद्ध में सुखाचेन के मारे जाने और विक्रमादित्य का दिल्ली पर अधिकार होने का उल्लेख है। आगे के वृत्तांत में विभिन्न राजाओं ने किसने कितने वर्ष राज्य किया उसका ब्यौरा (वर्ष मास दिन घड़ी) फरूखसियर तक है। (पत्र–१२)

३१. दिली री पातसाही रा सोबां रा खालसा रा देसां री रेख :–

दिल्ली के विभिन्न खालसा परगनों की रेख के आकड़े दिये हैं। (पत्र–१)

अन्तिम भाग—

"सारा सोवा १९ सिरकार १४५ मैहल ४१०६ जिण रा रूपीया ५७१२५३२००११ ऊपत, खरच १४२८१३३००१ खरच नै बाकी रुपिया ५५६९७१८७०१० ईतरा वरस १ रा खासा खजांना में दाखल करै छै।"

1. मुहता नैणसी री ख्यात भाग ३ पृ० १७३

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है, लिपि सुवाच्य है। अन्त में कुछ पत्र रिक्त पड़े हैं, प्रारम्भ के १६ पत्र लुप्त हैं। मारवाड़ में सामन्तों की भूमिका पर इस ग्रंथ से विशेष प्रकाश पड़ता है।

जोधपुर तथा मेवाड़ राज्य के इतिहास अध्ययन हेतु बातें उपयोगी हैं।

७४. बात संग्रह

१. बात सग्रह, ३. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३६६५८, ४. २८×१८ सेमी०, ५. १६४, ६. ३३-३४, ७. १६वी शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रन्थ में निम्नलिखित ऐतिहासिक बातें संग्रहीत है—

१. नापा सांखला री बात :-

इस वार्ता के प्रारम्भ में कुम्भा द्वारा राव रिड़मल के छल से मारे जाने की घटना अंकित है। फिर एक गीत दिया है।

प्रारम्भ—

"रावजी श्री रिणमलजी सूं राणे कूंभे चूक करायो मेहपे पंवार रैं कहे सो आदमी अठारे लेय महपो रिड़मलजी रैं डेरे गयो""सो ढोलीया उपर पोढ़ीया""।

गीत—

मेल्हीयां राण कूंभ रयण राव मरण

अठारे अमराव अचूक""""॥१॥"

राव जोधा का मेवाड के साथ चले संघर्ष मे नापा द्वारा की गई बहुमूल्य सेवाओं का वृत्तांत है, जो मेवाड़ में रहते हुए गुप्त सूचनाएँ जोधा को देता था।

अन्तिम भाग—

"अर नापे रैं जात सांपलां आयो पंनपाल पोतां नुं, नापे पोतो कोई नहीं, सो नापो अे सोच जर वाय की अकलवंत था॥ इति श्री नापे सांपले री वात संपूर्ण॥ श्री॥" (पत्र–६३)

२. करणसिंघजी रैं कुंवरां री बात :-

इसमें बीकानेर के राजा कर्णसिंह के पुत्रों—अनूपसिंह, केसरीसिंह, पदमसिंह, मोहनसिंह और वनमालीदास (जो पासवानिया पुत्र था) की जीवन सम्बन्धी कुछ घटनाएँ तथा वीरतापूर्ण कार्यों का विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

"महाराजा श्री करणसिंघजी बीकानेर वडो राज कीयो वडो अड़पायत आंटीलो राज हुवो, श्री लपमी नारांईणजी रा वडा भक्त हुवा, तुरक रो परभात



रौ मुंह न देषता। दरवारी सइयद तुरक राख्या सुव रांवता कांनां में मोती घालीया, सो पातसाह चाकरी वदळे ग्रहदी मेलीया सो भली तरै जावतौ करावता, पावण नै मोकळौ देता पांणी खारौ पावता, कहिता—म्हांरै मुलक में इसौ हीज पांणी छै ······ आदि।"

वनमालीदास को मरवाने की घटना भी अंकित है।

अन्तिम भाग—

"पछै पातसाह कन्है वात मारी गई, विसारै पड़ी तद बुलाय गांव दीया वधारै मे आठ गांव पुनीयांण रा परतासिंघ नुं दीया, दस गांव तो सारै लषमीदास नुं दीया सो वनमालीदास इसौ हुवौ इण तरै मारी लीयौ ॥ इति करनसिंघजी रा कुंवरा री वात संपूर्ण ॥" (पत्र-१८)

३. मारवाड़ रै अमरावां री वात :–

प्रारम्भ में जोधपुर महाराजा अमैसिंह की मृत्यु के पश्चात् रामसिंह और बखतसिंह के बीच हुए संघर्ष में विभिन्न राठोड़ सरदारों के वीरतापूर्ण कार्यों का वृत्तांत है।

प्रारम्भ—

"राजा अमैसिंघजी संमत अठारै सै पचोतरे रै आसाढ सुद पांचु देवलोक हुवा, अजमेर में श्री पोकरजी उपर दाग हुवौ ······ रामसिंघजी बाहर पधारीया सारा लोकां मुजरौ कीयौ, दलपत कुंपावत कनीरांम रौ वेटौ आसोप थो सो पण जोधपुर आयौ ······ राजधिराज बखतसिंघजी नागौर सुं टीकौ हाथी घोड़ा दीया सो रांमसिंघजी नाकारीयौ, धाय नुं कहौ—काकेजी नुं कहावौ जाळोर छोड़ौ पछै टीकौ लेसां ······ ।"

आउवा ठाकुर चांपावत कुशलसिंह आदि सरदारों के प्रयत्नों से बखतसिंह का जोधपुर पर अधिकार होने, मराठो से लड़ने इत्यादि घटनाओ का वृत्तात है। महाराजा के मृत्यु का उल्लेख इस प्रकार है—

"दषणी मालवे मे जाय वड़ीया तद माराज गजसिंघजी सीष कर बीकानेर पधारीया, माधोसिंघजी नै बोलाया सो पण पधारीया सुं गांव सोनोली मालपुरे भेळा हुवा, दिन एक मिळीया दुजे दिन बखतसिंघजी रौ सरीर कुं वेचाक हुवौ, दिन चार वेचाक रह्या, पांचवे दिन देवलोक हुवा ······ ।"

इसके बाद फिर महाराजा विजयसिंह और मराठों के बीच हुए युद्धों में विभिन्न सरदारो इत्यादि द्वारा की गई सेवाओं का वृत्तांत है।

अन्तिम भाग—

"धाय भाई पछै बरस दोय नु समाय गयौ पण राजा सारी वात सावधान सो धरती जमाय लीवी, लोक उमराव सारा कंठ लगाय लिया...... "अमरावां दोनुं ही मिसलां कही थी सो सांची कीवी, जीवणी मिसलां सो हाथ भाल नागोर रै पांवद नु जोधपुर री पांवद कीयौ, डावी मिसल मेड़तियौ कही थी जो उभां पगां जमी बुडी नीचे दबै जिती न देवां सो सारा मर पुटा तद गई ।। इति मारवाड़ में धमचक हुवा तिणरी वात संपूर्ण।" (पत्र–१६३)

४. कुंवरसी सांखले री वात :–

यह जागलू के कुंवरसी सांखला तथा राणा वेणीदास की पुत्री भरमल की प्रेम-कथा गद्य-पद्य मे है।

प्रारम्भ—

"मांपलो पीवसी चरुसकाल जांगलू राज करै वडो साहिवी वडो सरदार सो पीवसीजी हलोद भालै परणोया, वडो वोहा हुवो, गुडो परच चल अपल कीयौ...... ।" (पत्र–२६)

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में डाढाला एकल गीड़ वाराह री वात, पलक दरीयाव री वात, पंचाख्यान वार्ता, बैताल पच्चीसी, सिंघासन बत्तीसी री वात लिपिबद्ध है। जो सर्वेक्षित ग्रंथों में पहले आ चुकी है।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। ग्रन्थ पर गत्ता मंढ़ा हुआ है।

मारवाड़ के सामन्तों की सेवाओं और विभिन्न सामाजिक मान्यताओं की दृष्टि से ग्रंथ उपयोगी है।

७५. फुटकर बातों गीतों कविताओं रो संग्रह

१. फुटकर बातों गीतों कविताओं रो संग्रह, कल्याणदास, नानूराम, २. रा० शो० सं०, ३. १५११, ४. २६.५ × १६ सेमी०, ५. १२५, ६. २२, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ऐतिहासिक बातों इत्यादि का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. रावत मोहकमसिंह चूंडावत री वात :–

प्रस्तुत वार्ता देवगढ़ (प्रतापगढ़ राज्य की प्राचीन राजधानी) के शासक रावत हरीसिंह के पुत्र प्रतापसिंह और मोहकमसिंह की है।

प्रारम्भ—

"देवगढ़ रावत प्रतापसिंघ हरीसीघोत राज करै। तिको किसड़ो हेर पातसाहा आडो। कंवारी घडा री लाडो। भड़ संग्राम री नाटसाल। चक्र जिसडी चाल........।"

वार्ता में सर्वप्रथम राजस्थानी कथा—परम्परानुसार रावत प्रतापसिंह व श्रेष्ठ क्षत्रिय शासक के रूप में चित्रण हुआ है तत्पश्चात् उसके भ्राता मोहकमसिंह का वीरतापूर्ण चरित्र वर्णित है। फिर देवगढ़ की धरती पर उपद्रव करने वाले भील को वीर मोहकमसिंह द्वारा मारे जाने की घटना का विस्तृत वर्णन है। भील को काल कवलित करने के बारे में वार्ताकार ने लिखा है—

"इण भांति बद्रूक न्हांपि ढाल तलवार लेने भील रै सामहो ज गयो नै पावडा बीस तीसेक सो बाकरियो, रोस रौ रूप परत पिधारियो सो बाकारतां ही भीलड़ो भीपर मातां रो पाण........आंटा पेटा लेतौ उधार सो देस देसां रा आंट खेटा जारिया बैठो थो सो जोम री मारियो.......नै बांह चढ़ाय चउठा धणी रा चढिन रावत सामहो ही तीर चलाये सो अछूट रौ रावत पगरै फूटि पार जाइ पड़ियो.......भील तरवार वाही, सो तो ढाल उपरां कीधी अर भील रै मार्य तरवार बाह कीधी दोहा... ....इण भाति भील नु मारि........आदि।"

आगे कथाकार ने औरंगजेब की शासन-नीति का वर्णन करते हुए उसके शाहजादे मुअाजम के द्वितीय पुत्र अजीमुश्शान की बंगाल की सूबेदारी का उल्लेख किया है। अजीमुश्शान द्वारा औरंगजेब की इच्छा के विरुद्ध खबरनवीस को (सेर बुलंदखां द्वारा) मरवाने पर रावत प्रतापसिंह मोहकमसिंह द्वारा निडर होकर शेर बुलंदखा को अपने आश्रय में लेने पर उनकी ओर बढ़ने का उल्लेख है।

अन्त में कथाकार ने पीपलोदा ग्राम के डोडिया राजपूतों द्वारा एक पण्डित को मार देने पर उनसे प्रतापसिंह व मोहकमसिंह के संघर्ष का वर्णन किया है। इस संघर्ष के प्रसंग में युद्ध सम्बन्धी जानकारी का विस्तृत विवरण दिया है। वार्ताकार ने वीररस के अनेक गीत, कवित्त, दूहे इत्यादि दिये है। (पत्र–१६)

२. **कंवाट सरवहिया री नै अनंतराय सांखला री बात :—**

यह वार्ता गढ़ गिरनार के नृप कंवाट तथा उसके ससुर (कोयलापुर पाटणी सगर के शासक) अनंतराय सांखला की है। प्रारम्भ में वार्ताकार ने उक्त नगर के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए अनंतराय सांखला के रक्षक राजपूत योद्धाओं और १०१ भाई भतीजों की शोभा की है। राजा द्वारा सभायें करने, आखेट के लिए जाने तथा नाव में बैठ समुद्र भ्रमण का वृत्तांत है।

आगे के वृत्तांत में कथाकार लिखता है कि कँवाट द्वारा कुछ कटु वचन अनंतराय सांखला को कहने पर कँवाट को वन्दी बना दिया जाता है और जब कँवाट के भानजे वीर ऊंकाजी को पता लगता है तो वह उक्त राजा के घोड़ों के लिये घास ले जाता है जिसमे अनेक छुपे हुए योद्धाओं द्वारा आक्रमण कर दिया जाता है। इस हादसे में अनंतराय सांखला के परिवार के १०१ सदस्य वीरगति को प्राप्त होते हैं।

वार्ता गद्य-पद्य में है। इसमें मध्यकालीन राजपूताने के रीति-रिवाज, खान-पान और युद्ध सम्बन्धी जानकारी का वर्णन मिलता है। वार्ता के अन्त में लिखा है—

"इण दोहा मांही बात रै कहणै वाळा रो नाम अर संमत मिती छै—

दानव अरिहरि नाम दिख जिन संपी वरजणि
हर जेठो कै सुत कही वात कवाट वखांणि ॥५॥
अठारा सो चौवनवै समत कातिक मास
कृष्ण पक्ष पड़िवा कथी वात कँवाट विलास ॥६॥" (पत्र–२२)

३. गीत ठाकर साहब श्री सूरसिंघजी रो (कल्याणदास चारण कृत) :–

प्रस्तुत गीत जयपुर राज्य के बगरू ठिकाने का अधिराज ठाकुर शूरसिंह चतुर्भुजोत कछवाह का है। गीत में गीतकार ने उक्त ठाकुर के युद्ध-प्रयाण के लिए सज्जित होने का वृत्तांत है। गीतकार ने आगे शुभ घड़ी में जन्मे ठाकुर के कुंवर सांवतसिंह की सराहना की है। (पत्र–२)

४. ठाकर साहिब श्री सूरसिंह रो रूपग (नानूराम भाट) :–

गीतकार ने ठाकुर सूरसिंह का यशोगान करते हुए राजसी ठाट-बाट का चित्र खींचा है। आगे गीत मे ठाकुर के अश्वों, हाथियों और गढ़ का वर्णन किया है। (पत्र–६)

५. वीरमदे पनां री बात :–

यह वीरमदे और पनां की प्रेमकथा है। मिलावें ग्रंथांक ७७, रा० शो० सं०, पना री वात। (पत्र–४१½)

६. रूकमणी हरण बिजै ब्याह :–

प्रस्तुत काव्य रूकमणी-हरण से सम्बन्धित है। मूल कथा वही है जो इस

परम्परा के ग्रन्य काव्यों में वर्णित है। कर्ता का नाम इसमें नहीं दिया है। पर इसका कर्त्ता मुरारीदास है।

प्रारम्भ—

"ग्रथँ गाथा चौसर ॐ नमो ग्रंग आभूपण,
परमल निरमल पूगरण हरण······· ॥१॥

अन्तिम भाग—

देव पराक्रम दाखियौ, इक सत ग्रंक सत पंच में
भापा करि गुरण भाखियौ ॥"

यह कृति कृष्ण भक्ति परम्परा को समझने में सहायक है। (पत्र–१३½)

ग्रंथ के अन्त में जती रासो, मोहकमसिंह जैतमालोत कँलवा के ठाकुर का प्रशस्ति गीत, नाथिया के दोहे, राजिया के दोहे, किसनिया के दोहे इत्यादि संकलित है। ग्रन्थ सांस्कृतिक ग्रध्ययन के लिए उपयोगी है।

मूल ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्त मे दोहे इत्यादि बाद में किसी दूसरे व्यक्ति के हाथ से लिखे गये हैं। लिपि सुवाच्य है। प्रत्येक पृष्ठ पर लाल स्याही से दोहरी लाइनें खींच कर दोनों ओर पर्याप्त मार्जिन छोड़ा गया है। अन्तिम कुछ पत्र खाली हैं। ग्रंथ पर गत्ता मढ़ा हुग्रा है।

७६. वात गीत दोहे इत्यादि

१. बात दोहे गीत इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. २३६, ४. १६×१२ सेमी०, ५. १७६, ६. १४, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. ग्रज्ञात, ६, राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. जलाल बूबना री बात :–

प्रस्तुत वार्ता ग्रंथांक ८३७, रा० शो० सं० के समरूप है। (पत्र–४४)

२. जगदेव पंवार री वात[1] :–

प्रस्तुत लोक कथा मालवा देश में धारा नगरी के पंवार राजा की दुहागिन रानी के पुत्र वीर जगदेव की है। सौतेली माता के दाह के कारण जगदेव को गृह परित्याग कर पाटण के राजा सिद्धराज के यहाँ रहने इत्यादि का उल्लेख है। वात अधूरी है।

---

१. प्रकाशित, सं० सूर्यकरण पारिक, राजस्थानी बाता। ऐतिहासिकता के लिये देखें लेख 'त्रिविध वीर जगदेव पंवार', राजस्थान भारती (भाग ४, अंक ४) डॉ० दशरथ शर्मा।

इसमें मध्यकालीन राजपूत समाज की मान्यताओं स्वामीभक्ति और वीरता आदि का अच्छा चित्रण है।

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में अनेक फुटकर कवित्त, गीत, दोहे इत्यादि दिये गये हैं। ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। कई पत्र खाली हैं।

७७. वार्ता दूहा कवित्त संग्रह

१. वार्ता दूहा कवित्त संग्रह, २. रा० शो० सं०, ३, १६१, ४. २४.८× २१ सेमी०, ५. ७८, ६. १८-२५, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. मोजदीन मेहताब री बात :–

यह इरान के शाह खुदादीन के पुत्र मोजदीन और उसके वजीर रोसनखान के पुत्र मेहताबखा की एक प्रेम-वार्ता पद्य मे है।

प्रारम्भ—

"सेहर ईरानी वातस्या, पुदादीन तीस नांम
साप्त-वजादा मोजदीन, मीन केत के धांम ॥१॥" (पत्र–४$\frac{1}{2}$)

२. रतनां हमीर री वात :–

यह वार्ता पहले वर्णित वार्ता मे समरूप है। वार्ता का प्रारम्भ एक दूहे से होता है।

दूहा—

"कुसम तणा सरपंच कर, जग जिण लीनो जीत
तिण री समर कर तवां, रस ग्रंथा री रीत ॥१॥"

वार्ता का अधिकांश भाग पद्य में ही है। इसके अतिरिक्त ग्रंथ में बारे मासिया रा दूहा, फुटकर दूहा, बरसात रा दूहा, सात वार रा दूहा, आठ पोहर रा दूहा, सात सखियां रा दूहा, संजोगणी रा दूहा, वियोग सिणगार रा दूहा, करनीजी री छंद आदि कृतियां संकलित है।

यह ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है। लिपि घसीट में है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है। कुछ पत्र कीट भक्षित है।

७८. वात संग्रह इत्यादि

१. वात संग्रह इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. १२४३, ४. २०× २८ सेमी०, ५. ५६, ६. १८, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ का प्रारम्भ शिवरात्रि की कथा से हुआ है—

१. शिवरात री कथा :–

प्रारम्भ—

"श्री माहादेवजी एकरा समे कैलास परवत विराजीया छै, सो कैलास किसड़ो छै तिका महिमा कहै छै ।। ········आदि ।"

प्रस्तुत शिवरात्रि की व्रत कथा में पार्वती महादेव शिव को हाथ जोड़ कर विनती करते हुए आग्रह करती है कि आप कोई कहानी कहें। जब शिव कहते हैं कि जो व्यक्ति मेरा व्रत फागुन कृष्ण चौदस के दिन करे और रात को जागरण करे उसके पापों का नाश होगा और उन्हें स्वर्ग में स्थान मिलेगा। इस पर पार्वती कहती हैं इस व्रत से पहले किसी व्यक्ति का उद्धार हुआ, सो कहें, इस पर शिवजी एक भील की कहानी सुनाते हैं। धार्मिक मान्यताओं पर इससे प्रकाश पड़ता है।
(पत्र–७)

२. बात गणगोरीयां मांहे गींदोली गावै छै तिणरो :–

प्रस्तुत वार्ता ग्रंथांक २०४ के समरूप है। (पत्र–५)

३. जगदेव पंवार री बात :–

यह ग्रंथांक २३६ के समरूप है, प्रस्तुत वार्ता पूर्ण है। अंत में जगदेव पंवार के सवत ११६१ में शीश-दान देने का और ११६६ में सिद्धराज के मरने का उल्लेख है।

"संवत इग्यारह इकांणवै, चैत दीन तीज रविवार।
सीस कंकाळी भट्टणी, जगदै दियो उतार॥"

अन्तिम भाग—

"संवत् ११६६ सिधराव जैसिंघदे वैकुंठ गया, सिधराव जैसिंघदे रै प्रधान कुदम मंत्री साजन दे हुवो।" (१६१/३)

ग्रंथ में इसके अतिरिक्त प्रेम-पत्री रा दूहा, पत्नी रा दूहा, पति रा दूहा, मदन कुंवर (कामदेव की एक पौराणिक कथा) इत्यादि कृतियाँ संकलित है। ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य है।

७६. तेजसिंह व मांडण कूंपावत री बात इत्यादि

१. तेजसिंह व मांडण कूंपावत री बात इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. ७८६१, ४. १०.५ × २०.६ सेमी०, ५. ४, ६. १२-१४, ७. १९वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रन्थ के प्रारम्भ में अचला पंचायण की बात है जो अपूर्ण है, पूर्ण वार्ता के लिये देखें ग्रंथांक १२३४, रा० शो० सं०।

१. बात राठौड़ तेजसी कूंपावत री :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक १२३४, रा० शो० सं० में वर्णित है। यहाँ केवल प्रस्तुत वार्ता का प्रारम्भ दिया जा रहा है—

"तेजसी कूंपावत आइची पेरथा री वसतो सु ओजणा जाट तद आइची घणा वसता सु वित घणो थो सु सीघल सीहे गांव हेरायो थो सु हेरू आय जोयो तरै गांव मांहै तेजसी……।" (पत्र–१½)

२. बात मांडण कूंपावत री :-

यह वार्ता भी सर्वेक्षित ग्रथांक १२३४, रा० शो० सं० में आ चुकी है। दोनों में कुछ पाठ-भेद अवश्य है तथा यह वार्ता अपूर्ण है।

प्रारम्भ—

"मांडणजी साहो कर नै रांणेजी कन्हे गया। साथ साये घणो हुतो सु दीवाण साथ वपाणीयो तरै भेवाड़े धात धाती…… आदि।" (पत्र–२)

प्रारम्भ व अन्त के कुछ पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है। ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है। कुछ पत्र कीट भक्षित हैं।

८०. तारा तंबोल री वार्ता

१. तारा तंबोल री वार्ता, २. रा० शो० सं०, ३. ५१२१, ४. ११×२५ सेमी०, ५. १, ६. १४, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी मिश्रित हिन्दी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत लघु वार्ता तारा तंबोल नामक नगर व वहाँ के राजा चंद्र की है जो जैन धर्म का अनुयायी था।

प्रारम्भ—

"संवत् १६८४ वर्षे महा सुदि १३ पतिसाह श्री साहेजिहांन राज बैठो, ता समै मुलतांन को वासी पत्री बुलाकीदास नै दूर देस की वात आय कही सो लिपी। प्रथम गुजरात देस मध्ये सहर अहमदाबाद नगर है तासु आगरो कोस ३२५ है आगरा सुं लाहौर कोस ३०० है……आदि।"

अन्तिम भाग—

"देहुरा उपर कळस ६०० मण सोने को है देहुरा के आस पास ६२ चैताले है एक पूजा होती है या प्रकार जैन धर्म प्रवर्त है। तारा तंबोल के आस पास सिंधु नदी है नदी का पाट ६२ का है, अेहमदाबाद से तारा तंबोल ५६०० कोस है।"

यह पत्र एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। जैन धर्म के विकास व विस्तार के अध्ययन की दृष्टि से वार्ता उपयोगी है।

१. शिवरात री कथा :–

प्रारम्भ—

"श्री माहादेवजी एकण समैं कैलास परवत विराजीया छैं, सो कैलास किसड़ौ छैं तिका महिमा कहै छै ॥ ·······आदि।"

प्रस्तुत शिवरात्रि की व्रत कथा में पार्वती महादेव शिव को हाथ जोड़ कर विनती करते हुए आग्रह करती है कि आप कोई कहानी कहे। जब शिव कहते हैं कि जो व्यक्ति मेरा व्रत फागुन कृष्ण चौदस के दिन करे और रात को जागरण करे उसके पापों का नाश होगा और उन्हें स्वर्ग में स्थान मिलेगा। इस पर पार्वती कहती है इस व्रत से पहले किसी व्यक्ति का उद्धार हुआ, सो कहें, इस पर शिवजी एक भील की कहानी सुनाते हैं। धार्मिक मान्यताओं पर इससे प्रकाश पड़ता है। (पत्र–७)

२. बात गणगोरीयां मांहे गींदोली गावं छै तिणरी :–

प्रस्तुत वार्ता ग्रंथांक २०४ के समरूप है। (पत्र–५)

३. जगदेव पंवार री बात :–

यह ग्रंथांक २३६ के समरूप है, प्रस्तुत वार्ता पूर्ण है। अंत में जगदेव पंवार के संवत ११६१ में शीश-दान देने का और ११६६ में सिद्धराज के मरने का उल्लेख है।

"संवत इग्यारह इकांणवै, चैत दीन तीज रविवार।
सीस कंकाळी भट्टणी, जगदे दियौ उतार॥"

अन्तिम भाग—

"संवत् ११६६ सिधराव जैसिघदे वैकुंठ गया, सिधराव जैसिघदे रैं प्रधान कुदम मंत्री साजन दे हुवौ।" (१६$\frac{१}{२}$)

ग्रंथ में इसके अतिरिक्त प्रेम-पत्री रा दूहा, पत्नी रा दूहा, पति रा दूहा, मदन कुंवर (कामदेव की एक पौराणिक कथा) इत्यादि कृतियाँ संकलित है। ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य है।

७९. तेजसिंह व मांडण कूंपावत री बात इत्यादि

१. तेजसिंह व मांडण कूंपावत री बात इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. ७८६१, ४. १०.५×२०.६ सेमी०, ५. ४, ६. १२-१४, ७. १९वी शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रन्थ के प्रारम्भ में अचला पंचायण की बात है जो अपूर्ण है, पूर्ण वार्ता के लिये देखें ग्रंथांक १२३४, रा० शो० सं०।

१. बात राठौड़ तेजसी कूंपावत री :-

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक १२३४, रा० शो० सं० में वर्णित है। यहाँ केवल प्रस्तुत वार्ता का प्रारम्भ दिया जा रहा है—

"तेजसी कूंपावत आइची पेरवा री वसतौ सु ओजणा जाट तद आइची घणा वसता सु वित घणौ थो सु सीथल सीहे गांव हेरायौ थो सु हेरू आय जोयौ तरै गांव मांहे तेजसी·······।" (पत्र–१½)

२. बात मांडण कूंपावत री :-

यह वार्ता भी सर्वेक्षित ग्रंथांक १२३४, रा० शो० सं० में आ चुकी है। दोनों में कुछ पाठ-भेद अवश्य है तथा यह वार्ता अपूर्ण है।

प्रारम्भ—

"मांडणजी साहो कर नै रांणेजी कन्है गया। साथ साथे घणो हुतौ सु दीवाण साथ थपाणीयौ तरै भेवाडे घात घाती······· आदि।" (पत्र–२)

प्रारम्भ व अन्त के कुछ पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है। ग्रन्थ पर गत्ता नहीं है। कुछ पत्र कीट भक्षित हैं।

८०. तारा तंबोल री वार्ता

१. तारा तंबोल री वार्ता, २. रा० शो० सं०, ३. ५१२१, ४. ११× २५ सेमी०, ५. १, ६. १४, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी मिश्रित हिन्दी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत लघु वार्ता तारा तंबोल नामक नगर व वहाँ के राजा चंद्र की है जो जैन धर्म का अनुयायी था।

प्रारम्भ—

"संवत् १६८४ वर्षे महा सुदि १३ पतिसाह श्री साहेजिहांन राज बैठो, ता समै मुलतांन को वासी पत्री बुलाकीदास नै दूर देस की वात आय कहीं सो लिपी। प्रथम पुजरात देस मध्ये सहर अहमदाबाद नगर है तासु आगरो कोस ३२५ है आगरा सुं लाहौर कोस ३०० है·······आदि।"

अन्तिम भाग—

"देहरा उपर कळस ६०० मण सोने को है देहरा के आस पास ६२ चैताले है एक पूजा होती है या प्रकार जैन धर्म प्रवर्त है। तारा तंबोल के आस पास सिंधु नदी है नदी का पाट ६२ का है, अहमदाबाद से तारा तंबोल ५६०० कोस है।"

यह पत्र एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। जैन धर्म के विकास व विस्तार के अध्ययन की दृष्टि से वार्ता उपयोगी है।

८१. जगदेव पंवार री बात आदि

१. जगदेव पंवार री बात, २. रा० शो० सं०, ३. १०५०, ४. ३२ × २१.५ सेमी०, ५. ८२, ६, २६, ७. वि० सं० १९४३-४४, ई० सन् १८८६-८७, सासांणी ग्राम, ८. ब्राह्मण रामनाथ, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के दीमक लगने से प्रारम्भ के बहुत से पत्र नहीं हैं, दान शील तपभाव संवाद सालभद्रजी रो सिलोको आदि कृतियां भी लिपिबद्ध है।

जगदेव पंवार री बात :–

प्रस्तुत वार्ता अपूर्ण है क्योंकि पत्र संख्या ३७ से ४९ तक के पत्र गायब है। यह वही वार्ता है जो ग्रंथ २३६ में वर्णित है। यहाँ केवल वार्ता का प्रारम्भ दिया जा रहा है।

प्रारम्भ—

"मालव देस रै विषे। धारा नगरी छै। तठै उदियादित्य राजा राज करै छै। तिण रै पटरांणी दोय छै। महारूप रो निधांन छै। वडी तो बाघेली छै, तिण रै रीणधवल कुंवर छै। दूजी रांणी सोळंकणी छै, तिका दुहागण छै। तिण रै वरस दोय रै आंतरै एक कंवर हुवो छै। तिण रो नांव जगदेव दीधो। सो रंग मांहि कांईक सावळो छै ......आदि।" (पत्र–९)

८२. कवित्त दूहा बात संग्रह

१. कवित्त दूहा बात संग्रह, दधवाड़िया माधवदास, खड़िया जगा, नकुल आदि, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३५४९, ४. १५ × २२.५ सेमी०, ५. ९९, ६. २१-२५, ७. १९वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८. भूवर चंद्र, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. *कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—*

१. राम रासो (दधवाड़िया माधवदास कृत) :–

प्रस्तुत काव्य कृति राम भक्ति सम्बन्धी है।

प्रारम्भ—

"........ ।। अथ धधवाड़िया माधवदास कृत राम रासो लिख्यते ।।

रांमजी उंकार सूं आप अनत, अंतरजामी आप अनंत........।" (पत्र–२३)

२. राठौड़ रतन महेशदासोत री वचनिका (खड़िया जगा कृत) :–

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक ६३४, रा० शो० सं० में वर्णित है। यहाँ केवल पुष्पिका दी जा रही है।

। राठौड़ रतन महेसदासोत री वचनिका संपूर्णम् कृत मास्तिः
चंद ।।" (पत्र–७$\frac{1}{2}$)

। :–

हों मे धूमली नगर के राजकुमार जेठवा और उजली की प्रेम-कथा

"धण पापै घड़ियाह, अहरण आभड़ीया नहीं
समुदां स्वात तणाह, मिळै न मोती नीपजै ।।१।।"

(पत्र–१, दोहे ४४)

कुल कृत) :–

ड़ों की चिकित्सा का विवरण दिया गया है। मिलावें ग्रंथांक
सं०।

लहोत्तर ग्रंथ लिख्येत ।। श्री नकुल कृतः एक समै इन्द्रलोक रै विवै
तैंतीस कोड़ि देवता सहित सभा मांडि बैठा छै इतरै श्री महारुद्रजी
पधारिया इन्द्रजी नमस्कार कीधो.........आदि।" अश्व चिकित्सा की
। उपयोगी है। (पत्र–५$\frac{1}{2}$)

ां री बात :–

र्ता पाटण अमंपुर के शासक अरिमर्दन के प्रधान राठौड़ विजयपाल
पुत्रों की है। वार्ता के बीच में दोहे हैं। यह मध्यकालीन सामा-
को समझने में बड़ी सहायक कृति है।

"गवरी नंदन वंद कै अरू वंदूं सरसति
सद गुरु कुं वंदन करी कहिस्युं अकल चरित ।।१।।"

नामा पाटण तठै राजा अरिमर्दन राज करै छै, महावीर दातार
। राजा रै विजपाल नांमै राठौड़ प्रधांन छै। तिण रै च्यार पुत्र
एक दूजो सहस बुधी तीजो लाघ बुद्धि चौथो कोड़ बुद्धि छै, महा
वंकळा में प्रवीण छै.........आदि।"

है तो साप मारीयो नै श्री महाराज नै रांणीजी रो डील वचायो
। रै मन रो संदेह भागो घणी खुस्याली हुई, तरै राजाजी बीजा

भायां नै दूणो रोजगार दीयो नै सोबुद्धी नै चौगुणो रोजगार दीधो नै परधांन थापियो·······पछै राजाजी कना थी सीप मांगनै···· ···घरै आया मा बाप सुं च्यारुं ही मिळीया घणो सुष हुवो, इति अकल बाहांदरां री वात संपूर्ण।" (पत्र-१०½)

६. जलाल गहांणी री बात :–

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक ८३७, रा० शो० सं० में वर्णित है। (पत्र–८)

७. अनंतराय सांपले री बात :–

प्रस्तुत वार्ता कोयलापुर पाटण के शासक अनंतराय सांखला व उसके सम्बन्धियों की है। इस वार्ता में युद्ध-वर्णन के अतिरिक्त अनेक रीति-रिवाजों और मान्यताओं का वर्णन भी है। मिलावें ग्रंथांक १५११(२), रा० शो० सं०।

प्रारम्भ—

"श्री गणपत्ये नमः अथ वार्ता अनंतराय सांपलो उगो वालो जेसो सरवहीयो तिण री वात लिष्यते: समुद्र रै बीच कोइलापुर पाटण तिण रो धणी अनंतराय सांपलो छत्रधारी तीण रै वडो गढ़ वडी जमीन रो धणी छै तिण रै एक सौ भाई-भतीजा छै तिको गढ़ मांहे भेळा रहे छै······· ।"

अन्तिम भाग—

"पातिसाह पचास असवारां सुं अहमदाबाद आयो बीसा तो·······जैसाजी रै चरणो चहोढया संवत् १३०० माहे हु ३ इतम् सूरा पूरा छत्रीयां री वात कही, सूरवीर दातार री मन री कही, इति श्री अनंतराय सांपला री वात संपूर्णः।"

(पत्र–४)

८. आलणसीह भाटी हराहुल री संवादो :–

यह आलणसिंह भाटी और हराहुल से सम्बन्धित अपूर्ण कृति है।

प्रारम्भ—

" ······वट जस पटेह, आवु तो आलण अवस ॥२४॥"

अन्तिम भाग—

नहो वर सेहेजो वाळीयो सालुभायो अलुभाड़
हरे हुल परणावीयो आलवासी अोनाड़ ॥६०॥" (पत्र–१)

९. राजकुल छत्तीस गीत :–

३६ राजवंशों से सम्बन्धित गीत लिपिबद्ध हैं।

प्रारम्भ—

"धारा नगर परमार नरंद चहुवांण नाडुला
गढ़ आहेड़े गहलोत महोवे गढ़ चंदेला ······ ।" (पत्र–½)

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में कुछ फुटकर कवित्त, दोहे, पार्श्वजिन स्तवन, महादेवजी का गीत इत्यादि कृतियाँ संकलित है।

मूल ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिखावट एक सी नहीं है, ग्रंथ पर गत्ता है।

८३. जागीरदारों री पीढ़ियां आदि

१. जागीरदारों री पीढ़ियां आदि, २, रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ४०२१२-४०२१६ (मूलतः एक ही ग्रंथ के पत्र), ४. ५५ × १६.५ सेमी०, ५. १६५, ६. २३-२७, ७. वि० सं० १७२८, ई० सन् १६७१, ८. गुसाइं प्रांणवलभ आदि, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में रावलोत व अन्य भाटियों, खीची तथा सोनगरा चौहानों, कूंपावत मंडलावत, चांपावत, पातावत, मेड़तिया व अन्य राठौड़ सरदारों की जागीर के गाव पीढियों इत्यादि का ब्यौरा दिया है। प्रारम्भ—

"रावलोत भाटी

भाटी भीवसिंघ सगरांमसींघ सूरसींघोत माहसींघ दलसालोत से...... ...नु पटो ईनायत कीयो तैरी विगत

जालपसर गोदारा रै सूरसिंघ कीयो पटै ...."

इसके अतिरिक्त बीकानेर महाराजा अनूपसिंह व उसके वंशजों का हाल व बीकानेर के राठोड़ सरदारों की पीढ़ियाँ भी अंकित है। ग्रंथांक ४०२१६ के प्रारम्भ में लिपि समय, लिपिकर्ता का नाम इस प्रकार अंकित है—

"श्री बीद्रांवनजी में श्री रावलो कुंज मोल लीवीह प्रोहत अणदरांम तीण कुंज रा लीपत तीहारी नकल सं० १७२८ मीती फागुण सुद १२ लिपतु श्री गुंसाई प्रांणवलभजी श्री गुंसाई वलभजी... .... ।"

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति द्वारा की गई है। जो बड़ी अशुद्ध है। प्रस्तुत ग्रन्थ प्राचीन होने के कारण अनेक दृष्टियो से उपयोगी है।

८४. जदुवंश वंशावली

१. जदुवंश वंशावली, रतनू हमीर, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ९२३, ४. ११.५ × २४ सेमी०, ५. १६, ६. १३, ७. वि० सं० १८१५, ई० सन् १७५८, ८. पं० कुंअर कुशलगणि, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत

काव्य कृति के प्रारम्भ में यदुवंश की वंशावली पौराणिक आधार पर दी गई है फिर राव देसल व उसके पुत्र लाखे की प्रशंसा की गई है।

प्रारम्भ—

"।।श्री गणेशायनमः अथ गुण जदुवंश वंशावली वरणन ।।
देवां देव अमर लंबोदर दुष दालिद भंजण लंबोदर
दायक सुभ वायक लंबोदर, देवक दांन मूंक लंबोदर ।।१।।

रचियता का नाम इस प्रकार दिया है—

"राजवट प्रिथी प्रमाण रहावां कीरति थिरियां तणी कहावां
कहियो सुकवि जांणी हितकारी भयो हमीर एह गुण भारी"

अन्तिम भाग—

"अकलिधारी दिल उजळ, सामंद इंद सरियो सहज पत्री तरहण त्याग पग
तप वळी बाप बेटे तणी जोड़ अमर वहदोह जग ।।७।।"

पुष्पिका—

"इति श्री यदुवंश वंसावली संपूर्ण पं० कुमर कुशल गणि लिपितं संवत १८१५ वर्षे।"

प्रस्तुत ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। कुछ पत्र पानी से भीगे हुए हैं। कृति पूर्ण है। पत्र सब खुले हैं।

८५. राठौड़ों की वंशावली, ऐतिहासिक बातें तथा गीत इत्यादि

१. राठौड़ों की वंशावली, ऐतिहासिक बातें तथा गीत इत्यादि, गाडण केसोदास, माधोदास दधवाड़िया, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३५४६, ४. ३०×२४.६ सेमी०, ५. १४५, ६. ३२-३४, ७. वि० सं० १८०६-१८१६, ई० सन् १७४९-१७६२, बराटिया, ८. शिवराम, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ में संकलित कृतियों को निम्नलिखित अध्यायों में बांटा जा सकता है—

(अ) वीर गीत कवित्त संग्रह

१. गुण विवेक वार नीसाणी (गाडण केसोदास कृत) :-

प्रारम्भ—

"ॐ ऊंकार अरूप निरगुण निरवांण नाथ
निरालंब निराकार प्रांण हुंदा प्रांण.......।"

पुष्पिका—

"इति श्री गुण विवेक वार नीसांणी संपूर्ण संवत १८०६ रा आसोज सुदि ५ गुरुवार लिपतं पं० शिवराम बरांटीया मध्ये।" (पत्र–४$\frac{1}{2}$)

२. गीत संपपरो सेरसिंघ मेड़तीया रो नै कुशालसिंघ चांपावत रो :–

प्रारम्भ—

"चवड़ै आवीया घरा रैं बेध बेहु राजा बंधे चाळ, बेहु ई भरावं दगे छुटे गोळा बंवाळा बळी सिंघ राग वाजीया भुभ्काउ वाजा........ ॥१॥"

३. गीत महाराज! बखतसिंघजी रो राजा जयसिंघजी सुं राड़ कीधी गंगवाणा तिण समीया रो :–

प्रारम्भ—

"राता वासरी उपडी वागा सुपाता करेवा रूपंड पराता
प्रवाड़ा भल आगै ही धिराज,
आगरा ता फौज लीयां परातां जैसिंघ आयो ... .. ॥१॥"

४. गीत जाति संपपरो महाराज श्री गजसिंघजी रो :–

प्रारम्भ—

"गाजैसिंघ ली गयंद वाजा मंगळी नीसाण वाजै
दीवाणे जोधार राजा ठोडै हुवाह,
पतिसाहां नाटसाल थाट थंभ पति........ ॥१॥"

५. गीत जाति संपपरो महाराज जसवंतसिंघ रो उजेण रा समीया रो :–

प्रारम्भ—

"पगां थामीया पतंगां रंगा सुरंगां बगां पमगां उमगा
नारद आए नगां धाए आज,
भुजंगां चलकी काया विहंगां दुरंगां भगां........ ॥१॥"

६. गीत जाति संपपरो महाराज श्री अजीतसिंघजी रो :–

प्रारम्भ—

"उभा ओळगं भूपती कोड़ि छत्रपति राजा अजो धुरती
नोपती छती वाजती निघात,
चिकथां विभाड़ै धड़ा चक्रव्रती वीयो चुंडो राव ॥१॥"

७. गीत जाति संपपरो राजा सवाई जैसिंघ रो :–

प्रारम्भ—

"मच सांभर अनोखी राड़ि घुंबाघोर मार मवैं, बळा बळी
अंबागड़ समीवडां वाजि,
वाचता कुरांण वेद हीदवां तुरका वैर आपरा .... ॥१॥"

८. गीत जाति संपखरो :–

प्रारम्भ—

"देवां दातारां भुझांरा सारां च्यारां वेदां अवतारां
दसां वार गिरां रूप सुरां धांम
सतीयां सारा सूरा पूरां रयेसुरां पीरां पैगंबरी,
सिधां साधिकां प्रमाण ॥१॥"

९. गीत जाति संपखरो (गणेशजी रौ) :–

प्रारम्भ—

सिदा साधि कांवडलो सिध मुद्राळो मोटो महंत उजाळो
मंयक ओ मो जटालो जोगेंद्र,
सचाळो मुजाळो सूरौ सुंडाळो प्रसन सामर ढाळो······· ॥१॥

१०. गीत जाति संपखरो (गणेशजी रौ) :–

प्रारम्भ—

"गिरां भ्रंगरां पोहाळां गाळां विचाळां फुलादां वाग
भुरजाला गढ़ां मेरू विमरालां वीर
थांमड रौ चरताळां तेताला वैतालां तालां······· ॥१॥"

११. गीत संपखरो इंद्र महाराज रो :–

प्रारम्भ—

"घणा वणावो वादळां रूप रचावो चोसरी घटा छिलावोत
लावनं दीह लावो अछेह,
पवन परौ पलावो प्रछळा करावौ पांणी महाराज इंद्र
आवो वरसावौ मेह ॥१॥"

१२. गीत जाति संपखरो श्री सूरज रौ :–

प्रारम्भ—

"प्राभै दीपतो उद्योत भाभै कासिव सुत सुघाट पाट देह—
वाट चढि दाटै ओटीयौ अंधार,
पुले कपाटां फुंदाळा हाटां भ्रमीयां सु भ्रम पुले······· ॥१॥"

१३. गीत जाति संपखरो :–

प्रारम्भ—

"वडां वांनरां सधीरां लीधां वाहर सजी रौ वडौ चढ़े
लंका सीस कोपे राजा रांमचंद,
मिळै थाट वनचरां हिले निसाचरां माथै······· ॥१॥"

१४. गीत जाति संपषरौ :-

प्रारम्भ—

"नरां पीयारी पीयारी सुरां असुरां पीयारी नागां प्यारी
रियां जिया गैणां गंध्रवां प्रवीत
धुतारी कंवारी नारी सदारी ठगारी धरा जिका ... ॥१॥"

१५. गीत जाति संपषरौ :-

प्रारम्भ—

"धड़ा कठठे वादळां दळा आंधी सोर उडै दांमणी
चमकै भाला सालळै दुझाल,
मेटेवा मलेछांणां महादेवा थोग हींदवाणां ...... ॥१॥"

१६. गीत जाति संपषरौ :-

प्रारम्भ—

"कीधां केवांणी उवांणी करां सेवीयाणी धरा सोझै तिके
राजा राव जांणी कांगुरां सु कठि
नेड़ी गहांणी गहांणी तोडि सपलांणी ... ॥१॥"

१७. गीत जाति संपषरौ राजा अभैसिघजी रौ :-

प्रारम्भ—

"वडां तिवारां वधारै विनो सांभरि अेहमदाबाद चाडे
कमधां धणी वाटे अणी राड़ि,
आगै दीवाळी में होळी हूं जीहु ती राजा अजे पूजीया ... ॥१॥"

१८. गीत जाति संपषरौ अभैसिहजी रौ :-

प्रारम्भ—

"घुरै अंबाळां नोबतां घुरै इंद्र ज्यु गयंद गाजै घैसारां
घोड़ां भढां भीम ज्यु भाराय,
असवारी भारी अभौ इंद्र ज्यु सवाई ओपे सवाई
अजीतसाह नरिंदां रौ नाय ॥१॥"

१९. गीत जाति सांणोर (महाराजा अमरसिंह रौ) सर बुलंदखां रै युद्ध रौ :-

प्रारम्भ—

"पतिसाह अडग ठग बेड़ी पाळे जबरी पटझर केहरी म्यंद,
आंकुस पाग मांनि अभमल रौ विण मद रद होय सेरविलंद ॥१॥"

२०. गीत जाति सांणोर :–

प्रारम्भ—

"असपति सु' लिपे निवाब इनायत दाव पेच करि थाको दौड़,
मरूधर मांहे मुगलां नैं ठोड़ ठोड मारैं राठोड़ ॥१॥"

२१. गीत जाति सांणोर :–

प्रारम्भ—

"असपति रौ साल दिली रौ उंठंब सुणीयौ बेहु पया सु प्रवीत,
गिणीयां दिना में क्षत्रीयां गुर जोधांणे लेसी जगजीत ॥१॥"

ग्रंथ में गोरपनाथजी रौ छंद, परमेसरजी रौ छंद, गोरंभजी रौ छंद, पार्श्वनाथजी रौ छंद इत्यादि कृतियाँ लिपिबद्ध हैं। पुष्पिका में इस प्रकार अंकित है—

"लिपत पंडित शिवराम वराठीया मध्ये संवत १८१७ रा माह सुदि ८ गुरुवारे चिरं चेला गंगाराम मोतीराम वाचनार्थं ॥ पोथी पंडित गंगाराम मोतीराम री छै, सही सही।"

(ब) राठौड़ों री वंशावली

राठौड़ों की वंशावली आदिनारायण से प्रारम्भ कर जोधपुर के शासक महाराज अभैसिंह तक वर्णित है। प्रस्तुत वंशावली में अनेक ऐतिहासिक घटनाएं, गीत, कवित्त इत्यादि वर्णित है।

प्रारम्भ—

श्लोक—

"अविरल मद जल निवाह भ्रमर कुळां नेक सेवित
कपोलं वछित फल दातार ·········· ॥१॥

अथ वार्ता—

प्रथम अपरंपर श्री नारायणजी सिष्ट रचण री मनसा कीधी "आदि।"

वास्तविक ख्यात का प्रारम्भ कन्नौज के राजा राठौड़ जयचंद के वृत्तांत से होता है। पृथ्वीराज चौहान और जयचंद के बीच विग्रह का वृत्तांत इस प्रकार वर्णित है—

"संवत ११५१ चैत मास आठम तिथ राजा जैचंद री पुत्री संयोगिता परणी, चहुवांण प्रथीराज सु' लड़ाई हुई तठै प्रथीराज रा सामत कांम आया तठै राजा जैचंद री सगौ भाई वीरमदे महिलां में पोढयौ तठै वीरा रस वाजित्र सांभळि नैं जाग्यौ तरै सात पवास उभा सेवा करता था तिणां नैं पुछीयौ—वीरारस कठै वाजै छै तरै पवासां अरज करी ·······पुत्री संयोगिता प्रथ्वीराज चहुवाण ले नैं जाय छै सो

लड़ाई हुवै छै तरै वीरमदे नै रीस आई, हरांमपोरां म्हांनू क्यूं न जगाया तरै सात पवास मारीया........वीरमदे प्रथीराज नै जाय पुहतो तठै रिण संग्राम हुवो प्रथीराज रा सोरंभ रै पाट सात सांमंत काम आया, घरम डाव प्रथीराज ले नै छूटो .... ।"

वंशावली में अंकित महत्वपूर्ण घटनाओं एवं गीतों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) 'सेतराम रै पुत्र १०० हुवा तिण में एक सीहोजी मारवाड में आया तिको किसै प्रकार करि कनवज सुं कूच कीयो संवत १२६६ महा सुदि ७....... पेड़ पाटण महेस गोहिल राज करै, पाली नगर तठै पालीवाल बांमण राज करै........ सीहोजी महेस गोहिल नै मारिनै पेड़ लीधी........

दूहा—

पेड़ लीधी पांडा वळे सीहे सेल वजाय
दत दीधो सत संग्राहणो सो फळ केथो जाय ॥१॥"

(२) "आसथांनजी तो पेड़ राज करै.......इतरै पीरोजसाह पतिसाह रो बेटो कुतबदीन साहिजादो मका री जात जातां पाली आय नै डेरा हुवा तरै तुरका पाली रै फिलसे बांमणां रै पेडे गाय मारी तिण उपर आसथांनजी नै पबर हुई, तिण सुं महाभारत रिण संग्राम लोह उडाय नै कांम आया........ । कवित्त—

संवत वार चालै वरस वैसाषी पुन्य प्रवीत,
आवीयो कांम आस्थांन यु सात वीस सुभटां सहित ।

दूहा—

सोनिग मारयो सोमलो, ईडर वैठो आय
कैहरि नै परभूय किसी, कदे न दीठी काय ॥१॥"

वार्ता—

"ईडरगढ़ सोनिग पुत्र हरभांण सहित राज थापना हुई तठै ईडरीया राठौड़ नै हथूंडिया राठौड़ ए दोय साष सोनिगजी सुं हुई ।"

(४) "धूहड़ आसथांनोत रै आंना वाघेला सुं लड़ाई हुई तठै कांम आया, पछै धूहड़जी रो बैर अड़सी उहडोल काढीयो आंना वाघेला नै मारीयो, धूहड़जी री देवळी चांतरो सिवांणे रा गांव क्रिसंगड़ो जठै कांम आया......... ।

धूहड़जी रो गीत—

संग पैंठा वने मने संक सबली दीयै वरस डंड एकण दोय
अख गंजीयो नर हीयो........ ॥१॥"

५. जालणसी पुत्र छाडो तिण रो गीत :-

प्रारम्भ—

"तलवाड़ै हुत महादळ तांणै उतरीयौ इसा बळ आइ
जैसलमेर तणा जालण उत· ...... ॥१॥"

६. गीत तीडाजी रो :-

प्रारम्भ—

"चक्रव्रत आन चौक मिळ चलवल रहै राठोड़ै रांणे
तीडो अभंग तुरकदळ आए पाजां चढ़ि न पुलांणे ॥१॥

७. गीत राव सलपाजी रो :-

"राव तीडोजी काम आया संवत १३४४ तीडोजी पाट सलपोजी (बैठा)।

गीत प्रारम्भ—

वाहर नको नको वैराई धण उठ केकांण धूवा,
प्रहसण पसरै पैरी सीमां राव पसीयौ ...... ॥१॥
संवत १३६६ राव सलपोजी कांम आया।"

८. कंवर जगमाल महमद बेगड़ा री बेटी गींदोली लायौ तिण रो विवरण :-

इसका विस्तारपूर्वक विवरण दिया गया है।

९. वीरमदे सलपावत रो वार्ता :-

वार्ता के साथ घटनाओ को प्रमाणित करने हेतु स्थान-स्थान पर निसाणी छंद साक्षी के रूप में लिपिबद्ध है।

प्रारम्भ—

"राव सलपाजी रो बेटो वीरमदे वडो राजपूत पर-भोम पंचायण, वडो आपड़ ......आदि। वीरमदे सलपावत नै निसांणी बादर ढाढी कहै—

प्रारम्भ—

मालो नै वीरमदे रंग भाई वित्तै हुवा दुरजन
वितीया परपत विरत्ते वीरमदे...... ॥१॥
संवत १४४० वीरमदे कांम आया काति वदि ५ तिण समीया रो गीत हरसूर

बारट कहै—

वटाउ वात कहो वीरमांयण जोध महीह तणै जमीया
पौरस आयस कोइ पूछै पैला कैता रिण पड़ीया ॥१॥"

१०. गोगादे वीरमोत री वार्ता :–

वीरम के पुत्र गोगादे राठोड़ द्वारा जोइयों से वैर इत्यादि लेने का वृत्तांत है।

प्रारम्भ—

"गोगादे वीरमोत वडो रजपूत सेषाळे राजथांन वडो आपड सिघ…… भैसा नै आगे पाछै बांधि नै मायो वाढै तिण रा किसा वंषांण, रजपूती पणी गोगादेजी रा जद जांणां दला जोइयां रो माथो इण भांति पाडै तो आप री वैर लेतो इसो वचन गोगादे नै सुणाय नै कह्यो ……।

संवत १४४७ रा जेठ वदि १३ तळाव उपरा कांम आया, भूणीया रडा गांव री पापती।"

११. रांणगदे रै पुत्र री वार्ता :–

रांणगदे भाटी के पुत्र सादूळ को अरड़कमल चूंडावत द्वारा मारे जाने पर राव चूंडा का वैर लेने इत्यादि का वृत्तात है। यथा—

प्रारम्भ—

"रांणगदे भाटी तिण री बेटो सादो तिण नूं अरड़कमल चूंडावत मारीयो तिण रो वैर राव चूंडैजी काढीयो, पछै तिण आटे केलण भाटी मुलतान री फौज लाय नै नागोर मराई, पछै तिण आंटे राव रिड़मलजी आसणीकोट जाय भाटी देवराज सातलोत मारीयो, पछै वैर भागो …… आदि।"

१२. राव चूंडा री वात :–

राव चूंडा द्वारा मंडोर तथा नागोर हस्तगत करने का वृत्तांत है। यथा—

"राव चूंडो मंडोवर रो धणी हुवो ईंदा रजपूत हूवा सो आगे धरती मांहे सींधल के कोटेचा मांगळिया रजपूत हुता तिणा नै राव चूंडे काढीया ……ठकुराई चूंडाजी री वधती गई ……तठा पछै राव चूंडो नागोर उपर गयो, तरै नागोर मां सु तुरक नाठा ……पछै राव चूंडो नागोर हीज रीयो……इतरा में आलो रोहड़ीयो काळाउ सुं……नागोर आयो, दिन पांच सात रियो, पण ओळपे नहीं, तरै चारण समझावणी कीनी—

दूहो—

हू काळाउ काहू तोने चीत न आवै
चुंड रा फाटो फुटो जाइ डोडवांणो डंडीया पछै ॥१॥

……दूहो सुण नै तुरत ओळख्यी ……चारण नै लाय पसाव दीयो, विरज गांव सांसण में दीयो……।"

१३. राव रिड़मल री बात :–

प्रस्तुत वार्ता में राव रिड़मल की पुत्री राजकंवर की शादी मेवाड़ के राणा खेता के साथ करने का वृत्तांत है। इसके अतिरिक्त अन्य घटनायें प्राय: दूसरी ख्यातों इत्यादि से मिलती जुलती है।

१४. जोधा री बात :–

जोधा द्वारा मंडोर पर अधिकार करने, जोधपुर दुर्ग का निर्माण करने इत्यादि अनेक घटनाओं का वृत्तांत है। राव जोधा से सम्बन्धित अनेक गीत, कवित्त, वार्ता के बीच-बीच में दिये हैं। यथा—

(क) अथ गीत राव जोधाजी रो :–

"नर नाग मंडळे मेवाड़ निरयतां कमधज गुरड फिरै को पंथ,
कुंभकरण सिर संके न काडै······ ॥१॥

(ख) अथ नीसांणी राव जोधा री :–

जिण दिन जोध जनमीया जस थाळ वजाय।
मांगळिया गहलोत गौड़ सोई पड़वाया······।"

जोधाजी की वार्ता के पश्चात् जैतसी उदावत, वीरदे जैमलजी इत्यादि राठौड़ों का वृत्तांत दिया गया है। कुछ गीत जोधपुर महाराजाओं और उनके समसामयिक योद्धाओं के लिपिबद्ध हैं जिनका विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(अ) गीत अमरा विजावत रो :–

प्रारम्भ—

"सूरज पुड़ मेदण जोति समावण सकत साराहीयो
सूर सहस काल्है विजै वरी सिर······ ॥१॥"

(ग) गीत राजा उदैसिघजी रो :–

प्रारम्भ—

"मोटा राजा मेर समांणे त्रिहु रायां सिरसी तुड़ि तांणं,
उदियासिघ तपत अपांणै······ ॥१॥"

(घ) गीत राजा सूरसिंघ रो अठताळो (माधोदास दधवाड़िया कृत) :–

प्रारम्भ—

"रिण वरण धड़ चतुरंगजी धण मयण सूर तिघणी घणी
जैकार ग्रीजण जोगणी तुड़ तांण······ ॥१॥"

(ङ) गीत साह बहादर जीता तिण समीया रौ :–

प्रारम्भ—

"कंपलागिर धोम रजी धर किरण उदै होत सैंहस कर
पारंभ राम पवंग गज पाघर ······ ॥१॥"

(च) गीत जाति चितइलोल गर्जासघजी रौ :–

जोधपुर के शासक गजसिंह के जन्म व राज्यारोहण के संवत देकर प्रशस्ति गीत दिया है। यथा—

"संवत १६५२ काती सुदि ८ गर्जासघजी रौ जनम संवत १६७६ आसोज सुदि ६ गुरवार राजा गर्जासघजी टीकै बैठा ······ ।

गीत प्रारम्भ—

गज फौज गंजै भडां मंजै सगा तोड़ै सोग,
पतिसाह भागो पेत पाधर धकै चढि सिर धींग
सो गर्जासघ रै गर्जासघ ग्ररिदळ गहणो गर्जासघ ॥१॥"

(छ) महाराजा जसवंतसिंघ रौ कवित्त :–

इसी प्रकार से संवत देकर फिर एक कवित्त और संतति इत्यादि का उल्लेख किया है।

"जसवंतसिंघजी रौ जन्म संवत १६६५ असाड़ वदि ७, महाराज श्री जसवंतसिंघजी टीकै बैठा संवत १७१५ वैसाष सुदि १ वार शुक्र उजैण पेत्र पातिसाह श्री अवरंग साह सु' लड़या—

कवित्त प्रारम्भ—

जांम इंद्र उवड़ै जांम दिणीयर दरसावै
जांम सोम सुभ श्रवै जांम हरि नांम रहावै
जांम नाग वासिग जांमई सर जोगेसुर
जांम सात समंद जांम धरती गिर अवरंग······ ।"

(ज) महाराजा ग्रजीतसिंघ ग्रर ग्रभर्यासघ री वात :–

महाराजा अजीतसिंह के जन्म, राज्यारोहण और मृत्यु के संवत के पश्चात् संतति का उल्लेख कर अभयसिंह का उत्तराधिकारी होना लिखा है।

(स) वार्ता संग्रह

वंशावली के तत्पश्चात् ऐतिहासिक बातें लिपिबद्ध है—

१. तेजसीजी री बात[1] :–

जैतारण के स्वामी डूंगरसिंह उदावत के पुत्र तेजसिंह द्वारा पंवारों से बदला लेने, सिवाने पर मालदेव की ओर से अधिकार करने इत्यादि घटनाएं वर्णित हैं। मिलावें ग्रंथांक १२३४(१६), रा० शो० सं०।

प्रारम्भ—

"राव श्री जोधाजी भार्या हाडी जसमादे पुत्र सुजाजी, सुजाजी पुत्र उदा उदाजी सु' पांप उदावत कहांणी, उदाजी पुत्र डुंगरसीजी डुंगरसीजी पुत्र राज श्री तेजसिजी री वार्ता—तेजसिंह वडो रजपूत आपाड़ सिघ, राव मालदेवजी रै दरबार घणो कायदो ...... आदि।"

२. राठौड़ जसवंत डूंगरसियोत री वार्ता :–

डूंगरसिंह उदावत के पुत्र जसवंतसिंह द्वारा मालदेव से मेल करने फिर ईधर में रहते हुए अखतीयारखान से युद्ध करने इत्यादि घटनाओं का वृत्तांत परम्परा—'ऐतिहासिक वातां '(पृ० ६८) से मिलता जुलता है।

प्रारम्भ—

"अठै राव मालदेजी सोना री थाळी बावत तेजसी सु' बुरी मानीयो, तेजसीजी जैतारण मांहि सु परा काढीया नै जैतारण पालसै कीवी, रतनसी उदावत नै पटै दीधी, तरै जसवंतजी डुगरसीजी रो वेटो जैतारण छुटो तरै डूंगरपुर बांसवाले गया। तठै रावळ प्रतापसिंघ राज करै ...... ।"

३. राठौड़ देईदास री वार्ता :–

प्रस्तुत वार्ता मालदेव के प्रसिद्ध सामन्त देवीदास की है।

प्रारम्भ—

"राव मालदेजी मेडतो जैमलजी कना सु' लीयो तरै मेड़ता दोळो कोट थो तिकै राव मालदेजी पडायो ...... आदि।"

४. राव मालदे जैता कूंपा री वार्ता :

देखें ग्रंथांक १२३४(१७), रा० शो० सं०।

प्रारम्भ—

"संवत १६०० सइकै मिगसर वदि ३ बडी बेढ़ि हुई, राव मालदे उपरा सूर पातिसाह नै लेनै वीरमदे दूदावत फौज ल्यायो ...... आदि।"

---

१. प्रकाशित, सं० नारायणसिंह भाटी, रा० शो० सं०, जोधपुर ('परम्परा' ऐतिहासिक वातां, पृ० ६०)

५. राठौड़ कूंपा री बात :–

प्रस्तुत वार्ता में राव रिड़मल के प्रपौत्र और मेहराज के पुत्र राठौड़ वीर कूंपा के द्वारा लड़े गये युद्धों इत्यादि का वृत्तात है।

प्रारम्भ—

"राठौड कूंपोजी वडौ ठाकुर हुवौ सो वीरमदे दूदावत रै चाकर था, मेडता रौ गांव मुगघड़ो पटै थो, तिकौ किण हेक बोल वचन उपरा छांडि नै वीरमदे वाघावत कनै वसीया········ ।

पछै कूंपेजी राव जैतसिंघ नै मारि नै बीकानेर लीवी, पछै नागौर लीवी खांन नासि गयौ रांणा उदैसिंघ सांगावत नै राणा सागाजी रौ पुतरेलौ छोकरी रौ बेटे वणवीर घणौ साथ लेनैं रांणीजी नै जाय घेरीया तद मेवाड़ रै गांव मदारीये कूंपाजी नै राव मालदे थांणै रापीया था······· ।"

६. राठौड़ खींवा उदावत री बात :–

खींवा उदावत की वार्ता बहुत संक्षेप मे इस प्रकार वर्णित है—

प्रारम्भ—

"राठौड़ षीवो उदावत वडौ ठाकुर हुवौ भाजण री परत वहतौ थो तिकौ वडी वेढ़ि में काम आया। गिररी पटे थी तिणरी साष दुहो—

गिररी उपरि वट गढ़ षीमो साल पळांह
कमधज केवा काढिया डाकणि थवी डळांह ॥१॥"

दीवाण री ब्यावर किणहेक वागड़ीया रजपूत नु थी सो षीवोजी दवाय नैं उरी लीवी, ब्यावर लीनां पछै वागड़ीयो रजपूत ब्यावर छोडि नैं वघनोर गयौ, तरै षीवेजी वळे वघनोर मां सु काढि नैं वघनोर उरी लीनीं, पछै राव मालदेजी ३६० गांवां सु षीवाजी नैं वघनोर पटै दीधी।"

७. राठौड़ जैतसी उदावत री वार्ता :–

प्रस्तुत वार्ता अति संक्षेप में इस प्रकार वर्णित है—

प्रारम्भ—

"राठौड़ जैतसी उदावत वडौ रजपूत थो········मेवाड़ रै गांव कोसीथल राव मालदेजी राठौड़ जैतसी उदावत नैं थांणै रापीया सो रांणो उदैसिघजी चलाय ने जैतसीजी उपरैं आया, आछौ मांमलौ कीयौ नैं जैतसीजी रौ बोलबाला हुवौ, राणांजी चीतौड़ सिधाया। वळे राव सेषोजी पीपाड़ रौ धणी सेवकी री वेढ़ि में राव गांगेजी मारीया था तरैं सूराचंद रा चहुवाणां रै माथै राजा सूजा सूंडा रौ वैर थो

सो सेपेजी मरतां जैतसीजी नै भळायो थो ग्रो दावो जैता मतीज ये वाळज्यो, पछै संवत १५६१ रा ग्रासोज सुदि १० दावो वाळीयो । राजा सूडा रो वैर लीयो ।"

८. चंद्रसेन, उग्रसेन ग्रौर ग्रासकरन री वार्ता:—

इसमें जोधपुर के शासक मालदेव के पुत्र चद्रसेन और चंद्रसेन के पुत्र आसकरन ग्रौर उग्रसेन की वार्ता वर्णित है ।

"राव मालदेजी कंवर रांमसिंघ नै देसाटो दीयो, संवत १६१५ काती सुदि १५ तिको कवर रांमसिंघ मेवाड़ रै गांव कैलावे गयो, रांणा उदैसिंघजी पटै दीयो ·······आदि ।"

उदयसिंह द्वारा गागाणी ग्राम लूटने ग्रौर राव राम द्वारा लूनी नदी के उरली तरफ से गाव इत्यादि लूटने पर चंद्रसेन द्वारा युद्ध करने तत्पश्चात् जोधपुर गढ पर मुगलों का ग्रधिकार होने, चंद्रसेन का भाद्रजण जाना तथा मुगलों से मुकाबला इत्यादि करने का उल्लेख है ।

राव राम की मृत्यु का उल्लेख इस प्रकार है—

"जोधपुर तो तुरकां रो थांणो थो, सोजित राव राम नै तुरकां वणी नही तरै राव रांम सोजित सूनो करि नै लोक साथे करि नै सिरीयारी जाय वसीया, पछै राव राम रै जोगीयां सु मांमलो हुवो तरै लपमण नाथ पतर भांजियो नै सराप दीयो तिण सु राव रांम तुरत मुवो । संवत १६२९ जेठ सुदि ३ राव राम नै दाग सीरियारी हुवो छै ।"

राव चंद्रसेन की मृत्यु का उल्लेख इस प्रकार है—

"पछै रावजी सचीयाय री गाळ माहे रह्या, पछै दुधवड़ राठोड़ वैरसाल उदैसिघोत रै मिजमानी पांण गया था सो तठै क्यु ही हुवो सो रावजी पाछा आय सचीयाय री गाळ मांहे चंद्रसेन संवत १६३७ माहा सुदि ७ रांम कइयो—रावजी नै दाग सारण गाव महाकाळ रै वड़ कनै हुवो छै, तठै सतियो ३ हुई······· ।"

चंद्रसेन के पुत्रों उग्रसेन ग्रौर ग्रासकरन के बीच राज्य-हक के लिए मनमुटाव होने का उल्लेख है, और ग्रन्त में दोनों के मारे जाने का उल्लेख है ।

"····· ····सारण ग्राया दोनु भाई माहो मांहि मिळीया दिन १० तथा १२ हुवा तरै राव ग्रासकरन रजपूता नै भेळा करि नै कह्यो—एकण म्यान में दोय पांडा समावैं नहीं, इणां री निजरी बुरी दीसै छै म्है भेळा नही रहां·······म्हांने थे सीष दो, ज्यु मांमा कनै उदैपुर जासुं । रांणा उदैसिघजो कनै । तरै राजपूतां कह्यो-मजाल छै·······ग्राप (उग्रसेन) सिवाणे पधारो तरै इणा क्यूं वात दाय ग्राई नही·······।

"रावजी एक ढोलणी उपरि आडा हुवा, आदमी ५ तथा ७ रावजी कनै था, आदमी ५ तथा ७ उग्रसेनजी कनै छै, पहले दिन १ रांमति चौपड़ री रमीया था सो रावजी क्यूं मिठाई हारिया था सो उग्रसेन मिस घात नै कह्यौ, रावजी मिठाई हारी छै तिको मंगावौ.......उग्रसेनजी कटारी काढ़ी.... ...दिपावण लागा आ म्है कटारी मोलि लीनी छै तरै साथ रां जोय पाछी दीनी तरै उग्रसेनजी च्यारां आंगुलीयां सु कटारी झाली नै बीजो हाथ रावजी री छाती उपरि देय नै.......कटारी बाही सो करक मांहे होय नै परि नीसरी.......राठौड़ बीको उग्रसेन नै झालीयौ तरै सेपे सांकरोत ईस उपरै पग देनै हाथ मरोड़ नै कटारी उरी लेनै ऊबा हीज कटारी उग्रसेस नै वाही सो एक पंवा मांहि लागि नै बीजी काप माहे नीसरी, तरै उग्रसेन कह्यौ—फिट बीका हरांमखोर तें मनै मारियौ....... ।"

९. सिवांणा गढ़ री वार्ता :—

मिलावें ग्रथांक १२३४ (११), रा० शो० सं० ।

प्रारम्भ—

"प्रथम तो सिवांणे गढ़ पमारां रो करायो, वीरनारायण पमार करायौ थो, तिणरी ठकुराई निपट जोरै थी.......आदि।"

१०. नव कोटां री विगत री बात :—

इसमें नव कोटां की विगत इस प्रकार दी है—

१. मंडोवर कोट पंवार सांवत रो वैसणो छै पछै पड़ियारां लीनो.......।

२. दूजो कोट अजमेर पंवार सिधसुय रो वैसणो छै वडो तारागढ़ भायर उपर छै।

३. तीजो कोट पुंगल गजमल पमार रो वैसणो, सिंध री धरती सु अड़तो....।

४. चौथो कोट लोद्रवो जैसलमेर कनै सूनो छै, पंवार भांण रो वैसणो छै.... ...।

५. पांचमो कोट आबूजी अनहपाल पंवार रो वैसणो छै अचलगढ़ छै.......।

६. छठो कोट पारकर हंस पंवार रो वैसणो, पारकर भापर रै पुंई छै, कछ भड़तो छै.......।

७. सातमो कोट धरधाट तिको उमरकोट कहीजै, पमार जोगराज रो वैसणो छै.......।

८. आठमो कोट जालोर, पमार भोज रो वैसणो छै....... ।

९. नवमो कोट किराडु छै, धरणी वाराह रो वैसणो छै, गांव ७०० लारा लागा छै.......।

११. सोजत री वार्ता :–

वही वार्ता है जो विगत भाग १ (पृष्ठ ३८३) मे वर्णित है।

प्रारम्भ—

"*आदु अंबावती नगरी कहीजै छै, तांबा री पांन छै* ……*आदि।*"

१२. रांणा रायमल री वार्ता :–

उदयपुर के राना रायमल के पुत्रों की वार्ता वर्णित है, मिलावें ग्रंथांक १२३४ (२४), रा० शो० सं०।

प्रारम्भ—

"रांणा रायमलजी चीतौड़ राज करै, तिण रै रांणी झालीजी तिण रै पेट रा बेटा प्रिथीराज १ जैमल २ सागो ३……आदि।"

१३. चित्तौड़ रा धणियां री वंशावली :–

ब्रह्माजी से लेकर उदयपुर के राणा प्रतापसिंह (जगतसिंह का पुत्र) तक वंशावली अंकित है।

प्रारम्भ—

"संवत ५५० वर्षे नागद्रहा चुड़ामण देवी गोरा भैरव पुज्य ब्रह्मा रौ पुत्र विजय पांन रिष तठा थी विजय पांन गोत्र कहाण छै श्री ब्रह्माजी १ बीजयपांन २, देव सर्मा ३……आदि।"

१४. जोधपुर रा धणी रैं डावो जीमणी मिसल री विगत :–

मिसल जीमणी रा उमराव		मिसल डावी री विगत	
चांपावत	१	मेड़तिया	१
कुंपावत	२	माधवदासोत	२
जैतावत	३	विसनदासोत	३
भदावत	४	चादावत	४
कलावत	५	रायमलोत	५
रांणावत	६	ईसरोत	६
करनोत	७	सुरतांणोत	७
वाला	८	केसोदासोत	८
धवेचा	९	गोयंददासोत	९
महेचा	१०	जगमालोत	१०
पाता	११	रायसिंघोत	११

मांडला	१२	जोधा	१२
उहड़	१३	उदावत	१३
भाटी	१४	करमसोत	१४
मांगळिया	१५	गुजायत	१५
पुरबिया	१६	जैतावत	१६
प्रोहित	१७	सतावत	१७
		सोढा	१८
		कछवाह	१९
		ईंदा	२०
		मुहता	२१
		सिपाई	२२
		ग्रारवी	२३
		देस दीवाण	२४

१५. मोटी छोटी ग्रासामियों री विगत :-

जोधपुर के ८ मोटे ठिकाने और १६ छोटी कोटि के ठिकानो के नाम अंकित हैं।

मोटा ठिकाना—

जीमणी मिसल		डावी मिसल	
पाली	१	नींवाज	१
ग्राउवो	२	रीया	२
ग्रासोप	३	ग्रालणीयावास	३
बगड़ी	४	पेरवो	४

पोहकरण री सिरी
परधांनगी लारै
१६ ग्रासांमी छोटी

चंडावळ	१	रायपुर	६
रोहिट	२	रास	१०
समदड़ी	३	छिपीयो	११
फळोधी	४	बलाडो	१२
लवेरो	५	नीबैंडो कुंपावतो रो	१३
पेजड़लो	६	भाद्राजण	१४

घिरणलो	७	बळुंदो	१५
घांघाणी	८	पींवसर	१६

१६. महाराज अमरसिंघजी री वार्ता :–

प्रस्तुत वार्ता जोधपुर के शासक महाराजा गजसिंह के ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह की है जिसमे उसका इतिवृत्त अंकित है।

प्रारम्भ—

"संवत् १६४० रा वैशाप महीनै महाराज श्री गजसिंघजी कंवर अमरसिंघजी नै देसोटो दीयो...... आदि।"

१७. सोनिगरा वीरमदे री वार्ता :–

यह जालोर के शासक कान्हड़दे के पुत्र वीरमदे सोनगरा की वार्ता है ग्रंथांक २७६ (१), रा० शो० सं० से मिलती जुलती है।

प्रारम्भ—

"गढ जाळोर सोनिगराव वणवीरजी रै कंवर दोय हुवा—वडो कंवर का छोटो रांणगदे, टीकै कानड़दे बैठो, गढ़ जाळोर राज करै ......।"

१८. अनंतराय सांपला री वार्ता :–

प्रस्तुत वार्ता कोयलापुर पाटण के स्वामी अनंतराय सांखला व मिलावें ग्रथाक १५११ (२), रा० शो० सं०।

प्रारम्भ—

"कायलापुर पाटण रौ धणी अनंतराय सांपलो, वडो ठाकुर ....आदि।"

१९. जगदेव पंवार री बात :–

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक २३६, रा० शो० सं० में वर्णित है।

प्रारम्भ—

"मालवा देस माहे धार नगरी तठै पमार उदयादीत राज क रांणी २.... .. आदि।

२०. जपरा मुपरा री वार्ता :–

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक १४६०८ (४), रा०शो०सं० में व

प्रारम्भ—

"पश्चिम दिस नै पाटण गांव छै तठै ओठो भाटी राज करै, ति हुवा, एकण रौ तो नांम भीवो नै दूजो रौ नांम देवो .... ..आदि।"

२१. शिवरात्री री वार्ता :–

शिव रात्रि की व्रत कथा लिपिबद्ध है ।

प्रारम्भ—

"श्री महादेवजी कैलास पर्वत उपर विराजिया छै, कैलास पर्वत रूपा मई छै.......।"

२२. महाराज जसवंतसिंघ री वार्ता :–

प्रस्तुत वार्ता में जोधपुर के शासक जसवंतसिंह द्वारा लडे गये युद्धों विशेष तौर से उज्जैन की लड़ाई का विवरण दिया गया है ।

प्रारम्भ—

"संवत १६८३ रा पोस वदि ४ मंगलवार जसवंतसिंघजी रौ जन्म, संवत १६६५ महाराज श्री जसवंतसिंघजी पाट बैठा, बडो राजा हुवौ ......।"

महाराज की मृत्यु के पश्चात् जोधपुर गढ पर मुगलों का अधिकार होने तथा राठौड़ दुर्गादास और मुगलों के बीच हुए संघर्ष का वृत्तान्त दिया गया है । घटनाओं को प्रमाणित करने हेतु अनेक दोहे, गीत इत्यादि वार्ता के बीच-बीच में दिये गये हैं ।

इस वार्ता के पश्चात् राव सीहा के पुत्र आसथान की वार्ता पुनः लिपिबद्ध की गई है । फिर गढ़, शहर कब किसने बनाये उसकी विगत दी है जो प्रायः अन्य ख्यातों, वातों में मिलती है । मोटा राजा उदयसिंह, राव जोधा, राव गागा, राव चूंडा इत्यादि की वार्ता बहुत संक्षेप में (५-७ पंक्तियों में) लिपिबद्ध है ।

२३. महाराजा अजीतसिंघ री वार्ता :–

जोधपुर के शासक महाराजा अजीतसिंह के जीवन की कुछ अन्तिम घटनाओं का विवरण संक्षेप मे दिया गया है ।

प्रारम्भ—

"महाराज श्री अजीतसिंघजी पातिसाह श्री फरकसाह रा बिना हुकम नरबदा सु मुरड़ नै पाछा देस में पधारीया नै पातिसाहजी दिपण गया....... ।"

वार्ता का अन्त महाराजा की मृत्यु से होता है—

महाराज परणीज नै जाडेचीजी रा महला पोढ़ीया था तिण राति महाराज सु कँवर बखतसिंहजी चूक कीयो संवत १७८१ रा असाढ़ सुदि १३ मंगलवार.......।"

२४. एकलगिड़ बाराह री वार्ता :–

यह वही वार्ता है जो ग्रंथांक २१६, रा० शो० सं० में वर्णित है ।

२५. वार्ता महाराज अभयसिंघ देवलोक हुवा मारवाड़ में वियो हुवो तिए समीया रो :-

महाराज अभयसिंह की मृत्यु के पश्चात् राज्यहक के लिये बखतसिंह और रामसिंह के बीच हुए उत्तराधिकारी युद्ध का वृत्तांत विस्तार से दिया है।

प्रारम्भ—

"संवत १८०६ रा असाढ सुदि १४ री राति घड़ी २ पाछली रहितां महाराज अभैसिघजी अजमेर देवलोक हुवा नैं दाग पोहकरजी दीरायो·······।"

इसके पश्चात् शिवरात्री की कथा पुनः लिपिबद्ध की गई है जो ग्रंथ की अन्तिम कृति है।

पुष्पिका—

"इति शिवरात्ररी कथा संपूर्ण लिपतं पं० शिवरांम वरांठीया मध्ये सं० १८१६ चैत्र सुदि १३ मोतीरांम वचनार्थं।" (पत्र-८१)

यह वृहदाकार ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिखावट साफ सुथरी है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मढ़ा हुआ है। पत्र काफी जीर्ण मटमैले रंग के हैं। अन्तिम अधिकांश पत्र रिक्त पड़े हैं।

८६. राठौड़ों री वंशावली आदि

१. राठौड़ों री वंशावली आदि, २. रा० शो० सं०, ३. २७६२, ४. २२ × १५ सेमी०, ५. १६, ६. १६, ७. १८वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ में संकलित कृतियों का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१. राठौड़ां री वंशावलो :-

इसमें राठौड़ों की वंशावली पौराणिक आधार पर चली है। राठौड़ों का मूल स्थान करणाटक में कल्याणी बताया गया है और तत्पश्चात कन्नौज।

प्रारम्भ—

"सदन बुद्धि गज वदन रदन दुख विडरन
गनपति उमया ईस तासु नंदन अघ खंडन·······।"

वास्तविक ख्यात का प्रारम्भ राव सीहाजी से (पत्र ४) होता हैं। इसमे संवत्, घटनायें इत्यादि राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित 'राठौड़ वंश री विगत एवं राठोड़ां री वंशावली' के मिलती जुलती है। वृत्तांत महाराजा अजीत

सिंह व उनके कुंवर अभयसिंह तक चलता है। वृत्तांत में मुख्य रूप से इन राजाओं की सन्तति शादी-सम्बन्ध इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है।

अन्तिम भाग—

"........रतनसिंघजी शिशोदीयां रा दोहीता प्रथीसिंघजी देवळिया वाळा रा दोहीता जन्म १७७४ रा श्रां सुदि ६ रौ नैं........रूपसिंघजी नैं रतनसिंघजी मा जाया भाई सं० १७७५ रा काती सुद १ रौ जन्म, सौभागसिंघजी गौड केसरीसिंघजी रा दोहिता।" (पत्र–१८)

२. छत्तीस कारखांनो रा नाम :–

यहां ३७ कारखानों के नाम इस प्रकार दिये है—(१) धरमपुरी (२) अंवरारखांनो (३) खजांना रौ कोठार (४) सिलेखांनो (५) तबेलो (६) सुतरखांनो (७) तोप खांनो (८) दफतर खांनो (९) सेज खांनो (१०) तंबोल खानों (११) सिकार खांनो (१२) कबूतर खांनो (१३) वबर खानो (१४) रूसनाई खांनो (१५) नौबत खांनो (१६) अठाला रौ कोठार (१७) मोदी खांनो (१८) जुहार खांनो (१९) रसोड़ा खांनो (२०) सुघा खांनो (२१) कपडा रौ कोठार (२२) तोसा खांनो (२३) कीली खांनो (२४) गडखांनो (२५) फरास खानो (२६) पालखी खांनो (२७) तातेर खानो (२८) झरझर खांनो (२९) बारूद खांनो (३०) झीण खांनो (३१) ओहड खांनो (३२) अंवर खांनो (३३) रथ खांनो (३४) पंडत खांनो (३५) भगस खानो (३६) सूरदार खानो (३७) सेत खांनो। (पत्र–$\frac{1}{2}$)

३. अठारे सूर्यवंशी राजाओं रा नांम :–

इसमें सूर्य वंशी १८ राजपूत शाखाओं के नाम अंकित हैं। (पत्र–$\frac{1}{2}$)

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, लिखावट के अक्षर मोटे हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

८७. बादशाहों की पीढियां

१. बादशाह री पीढ़ियां, २. रा० शो० सं०, ३. ३८७०, ४. ११.५ × १७ सेमी०, ५. ८, ६. १०–११, ७. १८वीं शताब्दी का उतरार्द्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में संवत ९२९ से दिल्ली में राजा सिंहासनासीन हुए उन राजाओं की पीढ़ियां विसलदे से चौहान पोहड़दे तक अंकित है।

प्रारम्भ—

"अथ पातसारी पीढ़ीया लिपते—प्रथम थूंटी गाडो समत ६२६ वैशाख वदि १३ वार सोम अथ आसांमी वरस मास दिन घडी राज कीयौ तिणरी वीगत।"

(पत्र–१)

इन पीढ़ियों के बाद १६ सतियों से संबंधित ७ दोहे लिपिबद्ध हैं।

ग्रंथ दो व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है, पत्र लुप्त होने से ग्रंथ अपूर्ण है। विविध जानकारी हेतु ग्रंथ उपयोगी है।

८८. कछवाहों री वंशावली

१. कछवाहो री वंशावली, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ५२११, ४. १५ × २२.५ सेमी०, ५. ११४, ६. १०, ७. १९ वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

प्रारम्भ—

"श्री आदिनारायण तै कंवळ में ब्रह्माजी १, मारीचर २, कस्यंप ३, सूर्य ४ ......।"

इसमें कछवाहों की वंशावली आदिनारायण से जयपुर के शासक सवाई जगतसिंह तक दी गई है। प्रारम्भ में देव वंश की वंशावली मे २६३ नाम दिये हैं। कहीं-कहीं किसने कितने वर्ष राज्य किया अंकित है। फिर राजवंश में राजा ईसरीसिंघ का वृत्तांत प्रारंभ होता है। यथा—

"राजा ईसीसिंगजी पंडितानां बुलार पुछी सो राज सदा थिर रहे सो दान बतावो, जदि पंडितों राजा सु कही सो राज देस सुधा दान कर्‌या सदा थिर रहै......।"

यह वृत्तांत ग्रंथांक १३४६८, रा० शो० स० कछवाहा की ख्यात से मिलता जुलता है। आगे विभिन्न शासकों के वृत्तांत मे मूल रूप से राजा का जन्म, राज्यारोहण और राजाओं के रानियों के नाम, उनकी संतति और मृत्यु संवत इत्यादि दिये गये है। राजा भगवंतदास और सवाई मानसिंह तथा उसके वंशजों का विवरण अंकित है।

यथा—

"तदि रानो प्रतापसी डेरें आयो और कही आपको आज महमानी छै तदि कंवर मानसिंघजी बोल्या कई तयारी करास्यो, जदे रांणेजी कही आप फुरमावो सो ही......जदि आप कही सो थीर की तयारी कराजै......।"

जयपुर कछवाहा राजाओं ने मुगल बादशाहों की जो सेवायें की उसका वृत्तांत विशेष तौर से दिया गया है।

अन्तिम भाग—

"महाराजाधिराज श्री सवाई जयसिंघजी महाराजा श्री सवाई जगतसिंहजी का बेटा, जन्म मिती वैशाष सुदि १ संवत १८७० के साल। श्री जमवयजी पधारया जाति देवा, सर्व माज्यां गाथ पधारी मीती असाढ़ सुदि ८ संवत १८८४ के साल।"

यह ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिखावट मोटे अक्षरों में साफ सुथरी है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है। कागज मोटे, हाथ के बने हुए हैं।

कछवाह राजाओं के इतिहास अध्ययन हेतु ग्रंथ उपयोगी है।

८६. गौड़ों की वंशावली, विन्है रासो, मिर्जा राजा जयसिंह के छप्पय आदि

१. गौड़ों की वंशावली, विन्है रासो, मिर्जा राजा जयसिंह के छप्पय आदि, महेसदास, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३४६२१, ४. २४.५ × ३० सेमी०, ५. ११५, ६. १३–१५, ७. वि० सं० १८७६, ई० सन् १८१६, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, ब्रज, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में संग्रहीत कृतियो का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. गौड़ों की वंशावली (राव महेसदास कृत) :–

इस काव्य-कृति में गौड़ राजपूतों की वंशावली तथा राजा अनरूद्धसिंह, अर्जुन, भीम आदि गौडों द्वारा शाहजहां की ओर स लड़े युद्धो का वृत्तांत है। प्रारम्भ का अंश, पत्र जीर्ण शीर्ण व खण्डित होने से अपूर्ण है।

प्रारम्भ—

"स्वेता अमर वैसिता ·····। ········· लंवज चिहूर सोम सजिता ·······॥१॥"

अन्तिम भाग—

"भरथ री भुजा सत्रघण सुजाल, सिरदार सूर फौजां सिजाल,
सुज कहै आतमा रामसीह, अजमाल तणा पांचो अबीह ॥३३॥"

पुष्पिका—

"इती श्री वंशावली गौड़ों की राव महेसदास कृत लिषतम पठनार्थ अगरजी समत १८७६ मीती चैत्र सुदि २ सनवरा नै पूरी हुई·······।" (पत्र–१३)

२. विन्हे रासो (राव महेसदास कृत)[१] :–

इसमें दिल्ली के बादशाह शाहजहां तथा उसके तीन विद्रोही पुत्रों (शाहसुजा, मुराद, औरंगजेब) के बीच हुए युद्धों का वृत्तांत है। जिसमें कवि का मूल उद्देश्य अपने आश्रयदाता राजगढ़ के शासक अर्जुन गौड़ की वीरता का गुण-गान करना रहा है।

प्रारम्भ—

"स्वेत अमर वेयसित्ता मुक्तासिरा भगता,
स्वेताअमर सोम लंबज चिहुर सोम सजिता,.......॥१॥" (पत्र–८०)

३. रघुनाथ चरित्र (महेसदास कृत) :–

इस १२७ छंदों की (ब्रज भाषा में) रचना में श्री रामचन्द्र के चरित्र का विवरण बाल काण्ड तक दिया है।

प्रारम्भ—

"सीतां पति सुमरि सुमरि गुर सरसुति
सहति उमा सिव सुमरि गीरीस.......॥१॥"

अन्त—

"कवि महेस कहे सुप मिदर के मदि रंग
वढो सू नये रंग लागे॥१२७॥"

पुष्पिका—

"इति श्री कवि महेसदास विरचिता यान.......रामचरित्र संपूरन भीती जेठ सुदि वृसपतवार नै पूरी हुई संवत १८७६।" (पत्र–१२½)

४. गीत अरजनजी को राव कल्याणदास कहे :–

प्रारम्भ—

"उजेणि मंडप जुध अवरंग माडे, कंगळ केसरया अर्जं किया,
तोरण थया तणी'र तरवारया.......॥१॥"

इसके अतिरिक्त राजा जयसिंह के छप्पय (महेसदास कृत), रसराज (पत्र–३०) आदि कृतियाँ लिपिबद्ध है।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। लिखावट साधारण है। पत्र काफी जीर्ण है, ऊपर का गत्ता फटा हुआ है। गौड़ों के इतिहास के अध्ययन हेतु यह ग्रंथ अति उपयोगी है।

---

१. प्रकाशित, सं० सौभाग्यसिंह शेखावत, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर।

६०. नाथों की पीढ़ियों व बातें तथा मानसिंह रा गीत कवित्त

१. नाथों री पीढ़ियों व बातें तथा मानसिंह रा गीत कवित्त, लालस सैंणा, चालकदान, अनाडसिंह, बारट तिलोक, भोपालदान, मेहडू मोड़ा, आसिया बांकीदास आदि, २. पु० प्र०, ३. १५१०, ४. २८×२१ सेमी०, ५. २२८, ६. २५–३०, ७. वि० सं० १८७८, ई० सन् १८२१, जोधपुर, ८. अज्ञात, ९, राजस्थानी, देवनागरी, संस्कृत, १०. प्रस्तुत वृहदाकार ग्रंथ में नाथों की वंशावलियों, उनके उत्पति से संबंधित पौराणिक वार्ताऐं, उन पर रचे काव्य तथा महाराजा मानसिंह के अनेक प्रशस्ति गीत, कवित्त व निसांणीयां आदि सन्निविष्ट है। केवल महत्वपूर्ण कृतियों का ही यहाँ विवरण-क्रम दिया जा रहा है—

प्रारम्भ में वर्षाकाल संबंधी दोहे आदि दिये है—

प्रारम्भ—

"॥सांकर सिद्ध जोगी स्वरूप आनंद मूर्ति महिमा अनूप ॥

दोहा—

पवन करण आनंद परम, सरवन धन संबध ।
त्रिविध चल रहो छै, तठै सीतल मंद सुगंध ॥१॥"

फिर मंगलाचरण, नाथ अवतार, नाथ चरित्र, गोरखपुर महिमा, चौरंगीनाथ कथा आदि कृतियों के अतिरिक्त नाथ उत्पति की एक पौराणिक कथा भी दी है ।

१. नाथों की वंशावली :–

नाथों की वंशावली की प्रतिलिपि निरंजननाथ से लाडूनाथ तक इस प्रकार अंकित है, जो पदमनाथ भाट की पुस्तक से ली गई है ।

(१) निरंजननाथ (२) अमैश्रुननाथ (३) परमश्रुनाथ (४) अधिकश्रुननाथ (५) चेतनश्रुन (६) ऊंकारनाथ (७) अणमैनाथ (८) आदिनाथ (९) मछेंद्रनाथ (१०) गोरखनाथ (११) जलंधरनाथ (१२) सिध सिणगारीनाथ (१३) सरवरी पाव (१४) सीतली पाव (१५) सखंदर पाव (१६) वंकी पाव (१७) चौरंगी पाव (१८) मसांणी पाव (१९) सागड़ी पाव (२०) सिद्ध सितली पाव (२१) दौलती पाव (२२) सिधली पाव (२३) निरमली पाव (२४) सुंदरी पाव (२५) सांवत पाव (२६) गरीबी पाव (२७) नगेन्द्र पाव (२८) तुरंगी पाव (२९) ध्यानी पाव (३०) बोहरंगी पाव (३१) विचारी पाव (३२) भिष्यारी पाव (३३) हाजरी पाव (३४) भरपूरी पाव (३५) मेलनाथजी (३६) पीरथांन नाथजी (३७) तुरथनाथजी (३८) गोयदनाथजी (३९) गोयंदनाथजी के गाडानाथजी (४०) कंवलनाथजी केसरनाथ के

(४१) केसरनाथ के सिवनाथ महेशनाथजी, (४२) महेशनाथजी के हरनाथ ओपनाथ, सुरतनाथ, देवनाथजी भीवनाथजी (४३) फिर देवनाथजी के लाडू नाथजी।

नेण सुख भाट द्वारा लिखाई गई वंशावली भी इसके आगे अंकित है जो इससे भिन्न है।

२. मांनसिहजी रो गीत लालस सेणा कृत :-

प्रारम्भ—

"समहरि आचार जाव मूप साचा, मुदै करि मेलणा फौज मांहि,
जिके पल हुवा हरवळ जिके, सामध्रम तणा भर भार सा है ······ ॥१॥

३. गीत महाराज अजीतसिंहजी रो :-

प्रारम्भ—

"कमंध भोम छळ तोम तुरकां तणा काटिया,
सोम रवि जित्त तरवार साराह
वेध सु तोम तुरका तण पपावण,
करै जुध जोम तज होम कछवाहा ॥१॥"

४. गीत महाराज जसवंतसिहजी रो (उज्जैन युद्ध से संबन्धित) :-

प्रारम्भ—

"तरफां हुओ दारा तणी हुओ सूजा तरफ,
पिंड लीयां पजांना पार पाये,
पूंन जितरा करै जसो वळ पाग रै,
रोद इतरा हिया मांहि रापे ॥१॥"

५. गीत महाराजा अजीतसिंघजी रो :-

प्रारम्भ—

"वपत विलंद इसड़ी हुआ तपत केवा वळे,
जिहानावाद अजळ हुओ जेर,
जोधपुर साह अवरंग कीधो जवत,
अजें लीधो विरड़ जेण अजमेर ॥१॥"

६. गीत हजूर साहवां रो (मा० मानसिंह) :-

प्रारम्भ—

"वावड़िया कूआं वगीचां वाडी
पणघट आवै सहू प्रजा,
पग पग हुओ जोधपुर पांणी
आस ततो दूसरा अजा ॥१॥"

७. अनाड़सिंह री कह्यो कवित :–

प्रारम्भ––

"चात्रक की टेर घन थीन सुनहि कहु हंसन की सुमान सखरमु ।
नान चिकोरन की चंद विन पूरै कौन कार जे पखीरन को सरै तरवर सु ॥१॥"

(१ कवित्त)

८. गीत चालकदांन कहै– (नाथ प्रशंसा) :–

प्रारम्भ—

"वणीयो वैराट रूप वरपाकृत अंग तडित प्रतिवंब अभै ।
चात्र कमाण देष आपै चित, नाथ नाम है बूंद नभै ॥१॥"

९. गीत सांदू चैनो कहै :–

दोहू सचिनंद रा नूर मुषारविंद रा दोहू
आनंद रा सुछंद रा विहारी अलप,
जांमी गोपीचंद रा भरथ्री देण चिरंजीवी ····॥१॥"

(४ गीत)

१०. गीत ओपो आढो कहै, छोटो सावझड़ो :–

"नहचल अय क्रिन विना नारेना
अदम काळ नदी आरेवा,
पाट मदार क्यूंहीक पारेपा
गिर जळ जेम दीह गारेगा ॥१॥"

११. नीसांणी किसनगढ़ सूं वरण आई (महाराजा मानसिंहजी की उपलब्धियों से सम्बन्धित है) :–

प्रारम्भ—

"उदै भाग मारू इळा रवि तेज उगाया,
फूले पोयण ज्यूं किता अरि तिमर विलाया,
सारा गुण प्रथमी सरां अंग एकण आया,
विध राजाइ राहसां व साथ बधाया,
पुन श्री नाथ प्रताप कै मन वंछत पाया,
सीरोही के राव का मन मगज मिटाया······ 'आदि ।"

१२. मांनसिंह की नीसांणी (बारट तिलोक री कही) :–
प्रारम्भ—

"सहस किरण दणियर समांण तप मांन तपावै,
हरिचंद पीछम ज्यूं हमार, संगार सरावै,
विजपात वारां सुं विसेस दुनियां गुण दावै,
पट दरसण पेरात का नह दांम लिरावै,
चारण भाट ग्रांह्मणां पिढ दवा पढ़ावै· · ····ग्रादि ।"

१३. गीत मांनसिंह का मोपाल रा कह्या गीत :–
प्रारम्भ—

"विजपतहर भोज कर नयण वेळा,
सेवागर पट वरण सचेला,
भूप चरण पंकज रेह मेळा,
मधुकर निकर कवेसर भेळा ॥१॥" (पत्र–३)

१४. दोहा मांनसिंहजी रा मेडू मोडा कहै :–
प्रारम्भ—

"दये मांन भापी दुनी, सापी सूरज चाद,
तुज पड़ग चापी तकां, वळे नु रापी वांघ ॥१॥ (८ दोहे)

१५. राठौड़ों रौ वंश वर्णन :–

इसमें राठौडों का सूर्य वंशी होना लिखा है तथा कनोज के राजा पुंज से महाराजा मांनसिंह तक राठौड़ राजाओं की वंशावली देकर राव मल्लीनाथ फिर महाराजा जसवंतसिंह से मांनसिंह तक के राजाओं का वहुत संक्षिप्त विवरण दिया है ।

१६. ग्रासिया बांकीदास कृत हजूर (मानसिंह) रा रूपक :–
प्रारम्भ—

"जगदाता कमध अलप तू जांणे, दियै लाप वित सासण दान,
सुपह सुमेर तणा सिखरां सुं, मन उंचौ महाराजा मान ॥१॥"

बांकीदास कृत महाराजा मानसिंह पर रचे कुछ प्रशस्ति गीत भी ग्रंकित है ।

इसके अतिरिक्त प्रस्तुत वृहदाकार ग्रंथ मे नाथ वार्ताएं, नाथों एवं महाराज मानसिंह के प्रशस्ति गीत कवित्त (अज्ञात कर्तृक) के अतिरिक्त बीच बीच में शृंगार तथा वसंत के दोहे ग्रादि भी ग्रंकित हैं । कृतियाँ शृंखला-बद्ध नही हैं, लिपिकार को समय-समय पर महाराजा एवं उनके गुरु नाथों के संबंध में जो सामग्री मिली

लिख दी गई। ग्रंथ के बीच-बीच में व अन्त में काफी पत्र रिक्त छोड़ दिये गये हैं। लिखावट साफ सुथरी है। ग्रंथ पर सुन्दर कपड़े का गत्ता मंढ़ा हुआ है। कागज हाथ के बने प्रतीत होते हैं।

६१. चौहानों की वंशावली

१. चौहानों की वंशावली, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १६८ (इंद्रगढ़), ४. १७×२५ सेमी०, ५. १४, ६. ८-६, ७. वि० म० १८८३, ई० सन् १८२६, ८, अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें चौहान राजपूत राजाओं की वंशावली दी है। इसकी प्रतिलिपि कहाँ से की गई इसके बारे में लिखा है—

प्रारम्भ—

"चुहांणां की वंसावली लपाई वडवा गोमदराम कोटा हाळा की पोथी सुं वैसाप सुदि १२ मंगलवार संवत १८८३ परसराम योतार हुआ त्यां नैं छत्री सु नैछत्री प्रथमी करी बीरामणों नैं राज कीनो ......।"

विभिन्न जतियों की उत्पत्ति किस प्रकार हुई उसके बारे में लिखा है—

"जव बरमाजी न छत्रस्या का वोक पाडयो, प्रथम इंद्र नैं फुतळो वणायो छो जीको तो पुंवार वोक पाडयो, धार उजीण को राज दीनो, दूसरां बरमाजी नैं फुतळो वणायौ छो तीको सोलंपी वोक पड़यो ज्यांनैं अण्हलपुर पाटण को राज दीनो, तीसरो सिवेजी नैं फुतळो वणायौ छो, तीको पडिहार वोक पाडयो जिन लो नागरी को राज दीनौ, चौथो श्री भगवान च्यारभुजा सूं पैदा हुआ ज्यांनैं दपण को राज महे कावतीनगर को राज्य दीनौ। चुहाण वोक पाड़यो, श्री चत्रभुज जी चहुवांण की कुळ की पीढ़ियों।"

हाडा चौहानों के बारे में लिखा है—

"राव धरमागद राजा के पाट राजा वीसलदेव कुहाया, ज्यां के वेटा ६ ती में वडो वेटो अज रावजी हुवा, तीसुं छोटो बेटो अनुराजजी, ...अनुराज का अस्टपालजी हाडा वाज्या अस्टपाल का चंद करणजी ......आदि।"

बूंदी हाडों द्वारा हस्तगत करने का उल्लेख इस प्रकार है—

"वाकाजी कैं बेटा १२ त्यां में बड़ा बेटा राव देवाजी (देवसिंह) हुवा राव देवाजी नैं बुंदी को राज लीनो संमत १३६८ के साल, मीणो ऊं सारो मारयौ बुंदी में राज कीनौ......।"

इसमे अंकित है कि चौहानों की १३६ पीढ़ियों में से ३६ पीढ़ी हाडा चौहानों की हुई। ग्रंथ बूंदी कोटा राज्य के इतिहास के अध्ययन के लिये उपयोगी है।

६२. वंशावलियां तथा पाटण बसियां री बात

१. वंशावलियां तथा पाटण बसियां री बात, २. रा० शो० सं०, ३. १३५०३, ४. ३४×२६.५ सेमी०, ५. १७, ६. १८–२१, ७. १६वी शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें किसी ग्रंथ के स्फुट खुले पत्र संकलित है। प्रारंभ के दो पत्रों में दिल्ली मे किसने कितने वर्ष, माह और दिन राज्य किया उसकी सूची दी है। अन्य कुछ पत्रों में गहलोत व चौहान राजाओं उमरावों की वशावली दी गई है। इसके अतिरिक्त पाटण की वातों दी है जो ग्रंथांक ८२४०, रा० शो० सं० के समरूप है।

प्रारम्भ—

"बात पाटण अणहलवाड़ा री—मूळ ओ गांव वनराज चावड़े वासायो सं० ८०२ वैसाष सुद ३ रोहीणी निक्षत्र, आ पाटण री ठोड़ अणहल गोवाळीये वनराज नुं दीपाई ......।"

उपरोक्त सभी वंशावलियां अपूर्ण है। ग्रंथ के यह सभी पत्र एक व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किये गये है।

६३. पुरोहितों की वंशावली

१. पुरोहितों की वंशावली, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १६०७४, ४. २८×१६ सेमी०, ५. ३५८, ६. १५–१८, ७. १६ वी शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत वृहदाकार ग्रंथ में पुरोहितों की वंशावली अंकित है।

प्रारम्भ—

"साप कायड़ रा पीरायां की बत्तीस गोत्रीय : जुजर वेदाय मानधुनीस... .... सापा पते सुत्राय: पंच पख राय: जांका नावें बत्तीस, भारगव चीयन; अयवन: जमदगन: कुजल कुलदे व्याये अजोध्या का.......नारायण को नाभी को कंवळ को ब्रह्मा को बसीष्ट को सकते फंपार सुर को बत्तीस को कंचेसर को कामदेव को श्री देयको गौतम को हरध्यान को वीठु.......।"

इसमे पुरोहितों के गोत्र तथा कुछ व्यक्तियों की पीढ़ियां इत्यादि अंकित हैं, पर इनका सम्बन्ध मूल पुरुषों से नहीं जोड़ा गया है। न ही इन व्यक्तियों के

बारे में कोई टीका टिप्पणी की गई है। प्रारम्भ के पांच पत्र बाद में जोड़ दिये गये है, मूल ग्रंथ के प्रारम्भ व अन्त के कुछ पत्र लुप्त हैं। पत्र काफी जीर्ण हैं जो किनारों से खंडित हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है। लिखावट साधारण है।

पुरोहितों की शाखाओं और गोत्रों के अध्ययन के लिये ग्रंथ उपयोगी है।

६४. वंशावलियों री वही

१. वंशावलियों री वही, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १८८४१, ४. ५५.५ × १७.५ सेमी०, ५. ९२, ६. ३५–४६, ७. वि० सं० १९०६-१२, ई० सन् १८४९-५५, ८, विरधीलाल, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में कुछ राजपूत राजाओं की वंशावलियां अंकित है। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. पड़िहार राजपूतों की वंशावली :–

पड़िहार राजपूतों की वंशावली ब्रह्मा से प्रारम्भ करके दी है, राजा सिवराजसिंह तक १२७ नाम दिये हैं।

प्रारम्भ—

"श्री गणेसायनमः अथ वंशावली पड़िहार रजपूतां की लिपी गांव सोनड़ प्रगना लवांरग इलाके जैपुर के जगा·······गांव सोनड़ सुती की पोथी सुं पड़िहारों की वंसावली लषी, मिती माहा बुदि १ संवत १८९७ उतारी लाल बरधीलाल नैं। ॐ ब्रह्मां उतपति हो प्राकमंडल·······।" (पत्र–१४)

२. सोलंखियों की वंशावली :—

ब्रह्मा से राव डूंगरसिंह (टोडा) तक सोलंकियों की वंशावली मूल पुरुषों से सम्बन्धित वृत्तांत संतति आदि का विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

"प्रथम ब्रमाजी अंनल कुंड के घाट आया जदे वे दिन परसरांमजी अवतार·······।" (पत्र–१८)

३. पंवारों की वंशावली :–

प्रारम्भ में सवाई केसोदासजी (बिजोलिया) तक पीढ़ियां तथा इतिवृत्त अंकित है।

प्रारम्भ—

"अंनल कुंड के थान च्यार पत्री पैदा कीया जदि राजा पल पंवार पैदा करि अर अेक क्रोड़ छनवै हजार गांवों सूं धार उजीण को राज दीओ ......।" (पत्र-१०)

४. कछवाहों की वंशावली :–

प्रारम्भ से सवाई इश्वरसिंह (जयपुर) तक वंशावली अंकित है। फिर कुछ जागीरदारो की पीढ़ियां भी दी है। (पत्र-१३)

५. तंवर राजपूतों की वंशावली :–

तंवर क्षत्रियो की वंशावली ब्रह्मा से प्रारम्भ हुई है।

प्रारम्भ—

"पहली ब्राह्मा प्रगट हुवा, ज्याके अनै ज्या कराणी, अनुस्वया ज्यां के सोम दूसरो नाव चंद्रमा ज्यां कराणी ......।"

अन्त—

"चौधरी पंपल ॥२०॥ ज्यां व चोधरी धीराज लंबरदार मुरलीपुर परगने मेरठ ॥२१॥ सं० १९०६।" (पत्र-३)

६. बीकानेर की वंशावली :–

राव जोधा से राजा डूंगरसिंह तक अंकित है।

(पत्र-२)

७. जोधपुर की वंशावली :–

प्रारम्भ से महाराजा जसवंतसिंह तक अंकित है। मिती वैसाष संवत १९१२

८. जैसलमेर रावल की पीढियां (लिषाई ढ़ाढ़ी दयाराम

जैसलमेर जादव वंश सूं) :–

यादव वंश से, महारावळ गजसिंह भाटी तक पीढिया अंकित हैं। लिपि सुवाच्य नही है। ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है।

ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

६५. राठोड़ों रा दोहा, वंशावली तथा कायस्थों री खांपों रा नाम

१. राठोड़ां रा दोहा, वंशावली तथा कायस्थों री खांपों रा नाम, २. रा० शो० सं०, ३. ६६७३, ४. १३.५ × १६ सेमी०, ५. ६१, ६. ६–८, ७. १९ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ में अंकित कृतियां का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. राठौड़ों रा दोहा :–

ग्रंथ के प्रारम्भ में फुटकर दोहे ग्रादि दिये हैं, फिर मारवाड़ के प्रारम्भिक शासकों (राव सीहा) के संतति सम्बन्धी कुछ दोहे लिपिबद्ध है।

प्रारम्भ—

"प्रासथांन सोनग ग्रडर ग्रवर गजै सुं ग्रज
ग्रे च्यारूं पुत्र सीह तणा चारूं वडा सपूत ॥१॥"

तत्पश्चात् राठौड़ों के विभिन्न शाखाग्रों से सम्बन्धित कवित्त दिये है।

(पत्र–८)

२. कायस्थों री पांपे :–

कायस्थों की ८४ खांपों (शाखाग्रों) का नामोल्लेख किया है। मिलावें ग्रंथांक २०६ से। (पत्र–२७)

३. राठौड़ों री वंशावली :–

राजा जयचंद से महाराजा तखतसिंह तक के राजाओं के नाम ग्रौर संतति आदि का उल्लेख है।

प्रारम्भ—

"राजा जैचंद रै प्रतापभांण रै ग्रमैभांण रै बरदाइसेन रै सेतराम रै रांणी ८४ चौरासी परणीया नै कंवर १०१ हुवा, जिण मे राव सिहोजी पचास भायां सुं वडा हुवा नै रांणी ३१ प्रणीजीया ‥‥।" (पत्र–१७)

ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध हुग्रा है। लिपि सुवाच्य नही है। ग्रतिम व प्रारम्भ के कुछ पत्र खाली पड़े है।

९६. राठौड़ों री वंशावली, नागोर री हकिकत ग्रादि

१. राठौड़ों री वंशावली, नागोर री हकिकत आदि, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३, १३७२५, ४. १२ × २८ सेमी०, ५. १६, ६. १४–१५, ७. वि० सं० १९९४, ई० सन् १९३७, ८. रामचंद्र, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ में संग्रहीत कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार हैं—

१. राजकुल छतीस :–

यह वही कृति है जो ग्रंथांक ३८८६, रा० शो० सं० में ग्रंकित है।

२. राठौड़ों की वंसावली :–

इसमें वर्णित है कि राठौड़ों की उत्पति चंद्रकला के राजा जवनसुत से हुई। प्रारम्भ का वृत्तांत राठौड़ों री वंशावली, रा० प्रा० वि० प्र० (प्रकाशित) से

राठोड़ शासकों का विवरण से मिलती जुलती है। राव सीहा और उसके बाद के राठोड़ शासकों का वृत्तांत है जो कि संक्षेप में है जिसमें मुख्यरूप से संतति, कुछ घटनाओं इत्यादि का वृत्तांत है जो कि बीकानेर के राजा जोरावरसिंह तक चलता है।

प्रारम्भ—

"हिवे एक चंद्रकला नगरी तिण री राजा जवनसुत। सो वडो परमातमा (पत्र-११) राजा। पण राजा रै पुत्र नही राजा वर्घ भयो........।"

३. कीसनगढ़ रूपनगर रा धणीयां री विगत :-

किसनगढ़ के संस्थापक किसनसिंह से राजसिंह तक के राठौड़ राजाओं की सूची दी है।

प्रारम्भ—

"कीसनजी उदैसंघोत जोधपुर सूं जायनै सं० १६६८ व० किसनगढ़ वसा नै भाटी गोइंददासजी नै अजमेर मांहि मारीया सं० १६७१ ज्येष्ट सुदि ६........।'

रूपनगर के बारे में लिखा है—

"पछे भारमलजी काळ कीयो तरै बेटो रूपसींघजी टीकै वैठा नै रूपन वसायो। रूपसोघ रा मांनासींघ टीकै वैठा ....।"

४. राठोड़ां रा कवित्त दोहा :-

राठोड़ो की वंशावली से सम्बन्धित ३ दोहे फिर १६ कवित्त दिये हैं।

दोहा प्रारम्भ—

"कुळ पूजा सीहैजी कीवी, दी मोहर सै दोय
प्रोहित पोथी पूजसी, सीहावत सह कोय ॥१॥

कवित्त प्रारम्भ—

"सेत सुतन सुप्रसन रीझै देवी राठेसूर, नुवै रां वाहरू।
केवणे दोघ दूजो वर पाय हूं पुठि, राजा मारवाडि सिघारो ॥१॥"

५. अमरसिंघजी नागोर पाया तिणरी विगत :-

अमरसिंह राठोड़ के मारे जाने इत्यादि का विवरण इस प्रकार है—

"स १६७० पोष सु १२ वै० जन्म सं १६९० रा। व० देसोटो दीयो। सं १६९५ रा काती मांहै नागोर अमल हुओ। पछै पातिस्याहा रै मुजरै मोड़ा गया तरै पायो चूक उभा रहया तरै सलावतपांन वसगी थो तिण अमरसिंघजी नूं कह्यो—वडा गिवार, तरै अमरसिंघजी सलावतखां रै कटारो री देर मारया........।"

६. नागोर की हकीकत :–

इसमें नागौर बसाये जाने और कब किसके अधिकार में रहा का संक्षिप्त विवरण दिया है।

प्रारम्भ—

"संवत १११५ रा चैत वदि ३ मंगलवार नै कोट की नींव दीवी केवांसा दाहिमो राजा प्रिथीराज चहुवांण री मिश्री घोड़ा परीद करंण नै जावतो थो हण जगां तळाब थो ……।"

७. भगतां री वंशावली :–

भक्तों की वंशावली अंकित है। साधारण जातियों की भक्त परम्परा किससे प्रारम्भ हुई इसका उल्लेख है।

"ब्राह्मण जै जै देववंसी १, महाजन तिलोचन वंसी २, रजपूत पीपा वंसी ३, चारण तुमर वंसी ४, कायथ चित्रगुप्त वंसी ५, सरगरो वालमीक कवसी ६, थोरी कीतावंसी ७, मीणो घाट वंसी ८, कसाई सुदनां वंसी ९, पीजारो दादुवंसी १०, रेबारी हीरावंसी ११, भाट जनकवंसी १२, पाती परमा वंसी १३, कुंभार राकावंसी १४, माळी नापावंसी १५, जाट धनावंसी १६, जुलाहो कबीर वंसी १७, ढेढ वूहदां वंसी १८, डूंब बीनरावंसी १९. छीपा नामदेवंसी २०, कीर कालु वंसी २१, नाई सनोवंसी २२, कलाळ वपना वंसी २३, पत्री नांनगवंसी २४, मोची वलम वंसी २५, तेली पदमां वंसी २६।"

पुष्पिका—

"भगत वंसावली संपूरण लिखिते लेखक वनमाली रामचंद्र मु० नागौर मारवाड़ सं० १९६४ रा मिती कार्तिक सुदि सनीवार।"

ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है, लिपि सुवाच्य है।

९७. राजाओं री पीढियां ख्यात बात संग्रह आदि

१. राजाओं री पीढ़ियां ख्यात बात संग्रह आदि, २. रा० प्रा० वि० प्र०,, ३. २६६३२, ४. १६.५×२१ सेमी०, ५. २३२, ६. १७–१८, ७. २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०, प्रस्तुत ग्रंथ में संग्रहीत कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. सहर वसियों री विगत :–

विभिन्न शहर कब किसने बसाये उसके संवत दिये हैं तथा जोधपुर के राजाओं द्वारा करवाये गये भवन-निर्माण कार्य इत्यादि का विवरण दिया बया है।

प्रारम्भ—

"अजमेर सं० २०२ रा में अजेपाल वसायो। दिली सं० ६७८ रा में राजा अनंगपाल तुंवर वसाई ।" (पत्र-४)

२. दिल्ली राज री विगत :—

दिल्ली पर कब किसका अधिकार रहा अंकित है।

प्रारम्भ—

"दिली प्रथम तो श्री विसन राज करतो नैं ता पछै इंद्र राज कीयो........ दिली मे वरस हजार ३०२० तो पाडवो रै वंस राज कीयो नैं पांडवां रा वंस राजा नीलाधपत सुं राजा संघपज लड़ाई कीवी ....।"

दिल्ली पर राज्य करने वाले तुंवरों तथा चौहानों की वंशावली दी है, जिसमें बताया गया है कि किसने कितने समय राज्य किया। तत्पश्चात् गौरी व लोदी वंश के शासको की वंशावली दी है। पृथ्वीराज चौहान आदि प्रसिद्ध शासकों के बारे में ऐतिहासिक टिप्पणियाँ भी दी हैं। अन्त में हुमायु व उसके वंशजों का हाल संक्षेप में दिया है। (पत्र-१८)

३. बीकानेर राजाओं री पीढ़ियां :—

राव बीका से सूरतसिंह तक के बीकानेर राजाओं की संक्षिप्त रूपरेखा अंकित है। (पत्र-३)

४. आंबेर राजा री पीढ़ियां :—

वंशावली आदि नारायण से प्रारम्भ हुई है जिसमें केवल नाम अंकित हैं, तत्पश्चात् जयपुर के संस्थापक सवाई जयसिंह व उसके वंशजों का हाल सवाई जगतसिंह तक संक्षेप में दिया गया है। (पत्र-१३)

५. उदयपुर रांणा री पीढ़ियां :—

यह पीढ़ियां कहां से उतारी गई उसके बारे में लिखा है—

"रांणाजी री पीढ़ियां री बीगत पंचोळी कलांण तीलोकसीजी पोथी सुं सं० १७५८ रा भादवा वदि ६ सुकर दायमा री नकल सं० १८६१ उदैपुर में लीवी।"

प्रारम्भ—

"बात सीसोदीयां री आगे गहलोत कहीजे छै, अेक वार इणां री, ठाकराई नासिक त्रिमप दीपण सुं हुती, ईणां रै पुरवजां रै सुरज री उपासना.......।"

इसमें अंकित पीढियें तथा बातें आदि मुहता नैणसी की ख्यात से मिलती जुलती हैं। (पत्र-८)

६. यात गौड़ां री :-

इसमें गौड़ वछराज का वृत्तांत दिया है और फिर उसके वंशजों की नामावली दी है।

प्रारम्भ—

"अ्रेह रा वडेरा तो गौड देस नुं रहता थु० प्रथीराज सोमेसर रौ अजमेर राज करै तद इणां रा वडेरा सुं वछराज दोय भाई पोहकर जात करण आया, पछै सदभाव ग्रजमेर देखण आया...... प्रथीराज सुं इणां जुहार कीयौ......।"

गौड़ां के सीसोदियो, कछवाहों और राठौड़ सरदारों से हुए वैर संबंधी लघु वार्ताएं इस प्रकार वर्णित है—

(क) बात एक गौड़ नै सीसोदियों रै वैर री :-

प्रारम्भ—

"राजा वीठलदास गोपालदासोत नूं मालवा माहे प्रगनो पेरावाद हुवौ थो सू पहेली ग्रौ परगनो सीसोदीया माधवसिंघ नगावत नूं थो सो गौड़ रा आदमी ग्रमल करण नुं गया था तीणा नुं सीसोदीया माधवसीघ रौ भतीज ग्रमल दे नहीं, तरै......उपाव हुवौ, माधवसिंघ रो भतीज मारांणो, तिण वैर सीसोदीये नगावत गौड़ रांमसिंघ गोपालदासोत मारोयो ......।"

(ख) बात एक गौड़ों री कछवाहा वैर पड़ियां री :-

प्रारम्भ—

"गौड़ गोपालदास पातसाह रै वास न थै, तरै गांव टाकी था, तद बाकी वेग नै कछवाहो वीजल राजा जगनाथ रौ बेटो रीणथंभोर थो ग्रे चढ उपर आया। कछवाही मनरूप गौड़ गोपालदास भेळा था ग्रादमी २००० उण कन्है था, आदमी ६०० गोपालदास कनै था तठै वेढ़ हुई......बीजल आदमी ४०० सूं पेत रहो.....।"

(ग) बात एक गौड़ों री राठौड़ों रै वैर री :-

इस वार्ता के बारे में लिखा है—

प्रारम्भ—

"वैर एक नवौ हुवौ सं० १७४६ रै मीती भादवा वद रा कीसनसिंघ सुजाणसिंघोत सेरसिंघ माघोसिंघोत मोटा राजा रा, सु गौड गरीबदास वीजेरांमोत महोमांह लड़ाई हुई, मापर कंवर कीसनसिंघ काम आयौ तिण री लीपी।

म्हाराज जसवंतसिंघजी रै देवलोक हुणे सुं उमराव कीतराक पातसाही चाकर हुवा, रा सुजाणसिंघजी पिण मुनसब पायौ, सोजत जैतारण केकड़ी पोसांगण

पटे पाया ·······केकाही वेटो किसनसिंघ थो तिण सूं गौड़ां सु भोम ग्वास उपर कलमच हुवा लड़ाई हुई, कंवर किसनसिंघ कांम आयौ ······आदि ।" (पत्र–१०)

इस प्रकार इन वातो में वर्णित है कि गौड़ों ने सीसोदियों, कछवाहों तथा राठौड़ों से किस प्रकार वैर मोल लिया ।

७. बात हुलां री :–

इसमें गहलोतों की एक शाखा हुल राजपूतों से संबंधित तथा कुछ फुटकर वातें संक्षेप में अंकित है। प्रारम्भ मे दिया है कि पहले सोजत पर हुलों का अधिकार था। बाघरा हुल, जैता व उसके वंशजों राघव करन तथा कामा इत्यादि हुल राजपूतो का विवरण है।

प्रारम्भ—

"गहलोतां री साप २४ में एक साप हुला री छै, सोभन पेलो हुलां री थी, वांघरो हुल तीण रौ करायौ वांधळाय तळाव छै, तिण रो पोतरो रांणो पेतो······· वडो राजपूत दातार······· ।" (पत्र–६)

८. राठौड़ां री ख्यात बात :–

पहले तोडा के सोलंकियों की वार्ता अंकित है।[१] फिर मूलराज सोलंकी के वृत्तांत में उसके आग्रह से राव सीहा द्वारा लाखा फुलांणी के मारे जाने का उल्लेख है।

प्रारम्भ—

"बात एक तोडा रा सोलंषीयों री, सारा हींदुसथान में तो मुसलमानी हुइ नै तोडा उचला अंनवी थका रया, पादस्या ही फौजो मेली·······।"

तत्पश्चात् राव सीहा से जोधपुर के शासक महाराजा मानसिंह तक के राठौड़ राजाओं का संक्षिप्त वृत्तांत है। इसमें मुख्य रूप से मोटा राजा उदयसिंह, गजसिंह, जसवंतसिंह तथा अभयसिंह द्वारा किये गये सैनिक अभियानों, दुर्गादास व मुगलों के बीच हुए संघर्ष इत्यादि का विवरण दिया गया है। घटनायें प्रायः अन्य ख्यातो से मिलती जुलती है। बीच-बीच में कुछ प्रशस्ति गीत भी अंकित हैं। अहमदाबाद के युद्ध (महाराजा अभयसिंह सरबुलंदखां के बीच) मे प्रोहित रिणछोड़ दास के वीरगति प्राप्त होने के उपलक्ष में कविया करणीदांन कृत एक गीत इस प्रकार है—

१. मुहता नैणसी री ख्यात (भाग १, पृ० २६३), 'बात सोलंकियों पाटण आयो री' से मिलती जुलती है।

प्रारम्भ—

"अठी पांवद अभी दुसहा सेर बीलंदां उठी,
जुटिओ अेहमदावाद दळ जोड़,
सुरसुरी दवारका वीच जैदव सुत,
राड़ धारै वपत हुई रीएछोड़ ॥१॥"

ख्यात का अन्तिम भाग—

"········मांनसिंघजी रो नांव वठो विष्यात हुवो।" (पत्र–८०)

९. पंवार मेपा रा तथा सोढों रा पोतरां की बात :–

इसमें वर्णित है कि राणा मोकल की हत्या करने वाले चाचा मेरा के साथ पंवार मेपा भी था, अनंतर राव रिड़मल द्वारा चाचा मेरा तो मार दिये गये पर मेपा हाथ नहीं आया और उसने राणां कूंभा को राजी कर राव रिड़मल को छल से मरवाया। तत्पश्चात् मेपा पंवार के वंशजों की विगत दी है।

प्रारम्भ—

"पंवार मेपो वडी धाट बराड रजपूत हुवो, वडो राह वेदी, कांम रो मांणस, उदैपुर रांणा रै केइक दिन वास हुतो राणा मोकल नु चाचे मेरे मारीयो ··· ···।"

(पत्र–३½)

१०. पंवार रावत करमचंद री बात :–

इसमें वर्णित है कि पंवार करमचंद ने कुंवरपदे में सांगा की कई सेवायें की, रायमल की मृत्यु के पश्चात् सांगा के उत्तराधिकारी होने पर करमचंद का यथोचित आदर सत्कार करने का उल्लेख है।

प्रारम्भ—

"पंवार रावत करमचंद धनोर रै आंबेसर वसतो तिण दित राणो रायमल चीतौड़ राज करै, पाटवी बेटो प्रथ्वीराज········।" (पत्र–६)

११. रिणथंमोर किलो रांणा रो, रांणा री तरफ सुं बूंदी रो राव सुरजण रहतो सु पातसाह अकबर नुं दीनो तिण री विगत :–

प्रारम्भ—

"पातसाह अकबर रीणथंभोर लागो, साथे आंबेर रो राजा मांन नै दूजा ही राजा, पण किलो मजबूत········सुरजन राजा मांन, मासीयाइ भाई········।"

(पत्र–१)

१२. बूंदी रा राव नारंण री बात :-

इसमें अंकित है कि बूंदी का राव नारायण अफीम अधिक सेवन करता था। उसके सूरजमल नामक पराक्रमी पुत्र उत्पन्न हुआ जो अपने पिता का उत्तराधिकारी बना। उस समय मेवाड़ का शासक महाराणा सांगा का पुत्र रतनसिंह था। राव सूरजमल हाडा और रतनसिंह की मृत्यु एक दूसरे के हाथ से (वि० सं० १५८८) शिकार खेलते हुई।

प्रारम्भ—

"नारंण अमल दोउ पाव पावे एक रात रा ठाकरांणी सांमल सूतो सु पाज चाली तरै आपरै बदले ठकराणी री जाग रै गाज पीणी, लोहो धणो आयो...... ।"

अन्तिम भाग—

"......माहोमाह लथपथ भाय राणा नै कटारी सुं मारीयो सो दोउ इण भात भैसरोल रै गाव......कांम आया।" (पत्र-१)

इसके बाद इंदों से संबंधित वार्ते दी हैं, जिसमें बताया है कि इन्दों ने किस प्रकार मंडोर पर अधिकार किया इसके बाद मंडोर के स्वामी नाहड़राव की वार्ता तथा जोधपुर, किसनगढ़ रूपनगर और ईडर के राठौड राजाओं की वंशावलीयां दी हैं। तत्पश्चात् मोटा राजा उदयसिंह का पुत्र भोपत, शार्दूल, पंवरा से (वि० सं० १६६३) में लड़ता हुआ मारा गया उसका विवरण है।

महाराजा अजीतसिंह के विखे में जिन लोगों ने महाराजा का साथ दिया उन पर रचे हुए अनेक गीत भी महाराजा कृत लिपिबद्ध हैं।

प्रारम्भ—

"कीया बाहरा ओछाड माडे मांनसिंघ धणी कोड
सराहै संसार जैता कीया जै सांमाना री
धरा मंडार भरै गुळ घृत थांड राजे ......॥१॥"

ग्रंथ के अन्त में महाराजा बखतसिंह द्वारा प्रोहित जगनाथ को दिये गये रुक्के (वि० सं० १८०८) की प्रतिलिपि दी गई है।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, लिपि घसीट में है। बीच में कुछ पत्र रिक्त छोड़ दिये गये हैं। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मंढ़ा हुआ है। ग्रंथ राजपूत संस्कृति के अध्ययन के लिये बड़ा उपयोगी है।

६८. भंडारी किशनमलजी री वही री नकल (राजाम्रों री पीढ़ीयां तथा जोधपुर राजाम्रों री फुटकर वातों और घटनाम्रों री संग्रह)

१, भंडारी किशनमलजी वही री नकल (राजाम्रों री पीढीयाँ तथा जोधपुर राजाम्रों री फुटकर बातों और घटनाम्रों री संग्रह), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६३४, ४. २७ × २२ सेमी० (रजिस्टर नुमा), ५. ३३५, ६. १६–२०, ७. २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के प्रारम्भ में सूची पत्र दिया है जिससे ग्रंथ में संकलित कृतियों की जानकारी प्राप्त होती है।

प्रारम्भ— ",श्री नाथजी सत्य छै"

मंडारी किसनमलजी री वही सुं ष्यात री नकल उतारी तिण री सूची पत्रम्—

(१) महाराजा देवलोक हुवै तीए री याद दासत विगत वार समत मीत वार।

(२) राज्य किशनगढ़ को पीढ़ियो री विगत।

(३) उदयपुर री पीढ़ियो री विगत।

(४) जयपुर राज री पीढ़ीयों री विगत।

(५) बीकानेर राजाम्रो री पीढ़ीयां अर काळ कीनो तिण री विगत।

(६) फेर भी आसामियें काळ कीनो तीण री याद।

(७) ठावी ठावी आसामियो काळ कीनो तीरी विगत।

(८) दरवाजा जोधपुर रा री एक दूसरा सुं फासला री तादाद।

(९) जोधपुर सूं परगना और मुलका रै फासला रै कोसां री तादाद।

(१०) राव मालदेजी राणा उदैसीघजी उपर गया और फतै पाकर जमी दाबी तिणरी विगत।

(११) विगत परगना लिया तिण री।

(१२) कोट कराया तिए री विगत।

(१३) कोट पड़ाया तिण री विगत।

(१४) महाराजा अजीतसिंघजी वादशाह औरंगजेब रै मुवा पछै जोधपुर आय अमल कीयो नै उमरावों नै मुतसीदीयों नै ग्रोदा बगसीया तिण री विगत।

(१५) फेर श्रीजी सांभर उपर कूच कीयो नै जैपुर सुं श्री जैसीघजी पधारीया नै झगड़ो कर सांभर डीडवाणा में दोनो रै सामलात में ही अमल हुवो तिणरी विगत।

(१६) विगत कांम सुंपीयां री।

(१७) राठोड़ों री वंशावली विगत ममत मोती यार आद श्री नारायण सुं ले नै राव वीरमदेजी तांई ख्यात विगतवार समेत।

(१८) जोधपुर रा राजाओं री पीढ़ीयां रो कवित।

(१९) बीकानेर, कोटा, बूंदी, जैसलमेर, जयपुर, उदयपुर रा राजावां री पीढ़ीयां रा कवित।

(२०) बादशाह री पीढ़ीयों रा कवित और विगत।

(२१) जोधपुर रा गढ़ कमठा ने मेल कराया तिण री विगत.......।

(२२) फुटकर बेरा बावड़ियों कराइ तिण री विगत।

(२३) १७३५ माराज जसवंतसिंघजी धांम पधारिया जद सुं लगाय मा० मानसिंघजी टीकै बैठा जठा तांई फुटकर बातां वगैरा री विगत।

अंकित सूची पत्र के अनुसार घटनाओं का विवरण नहीं दिया गया है प्रतिलिपि में कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. आसामियों काल् कीनो री विगत :—

दो पत्र लुप्त होने के फलस्वरूप महाराजाओं के मृत्यु के संवत अंकित नहीं हैं, जोधपुर के करीब १५० राजकीय व्यक्तियों आदि के मृत्यु संवत दिये हैं।

प्रारम्भ—

फेर ही इण मुजब आसामीयां काळ कीनो तिण री विगत—

१ नाजर गंगदासजी काळ कीयो १८५९ में भाद्रवा सुद २ रात रा।

१ नयकरण १८६८ वैसाष सुद ५ काळ कीयो।" (पत्र-४$\frac{1}{2}$)

२. फासला री तादाद :—

इसमें जोधपुर के विभिन्न स्थलों की दूरी (पांवडां में) दी है। यथा—

कालुजी री वावड़ी सुं श्री वैजनाथजी छाईससो पांवडा, मंडलेश्वर जी सुं वैजनाथ जी चवदेसो पांवडा ......आदि।"

३. जोधपुर सुं परगना वगैरे कोस इण मुजब :—

जोधपुर के विभिन्न परगनों (करीब ५४) की दूरी का ब्योरा दिया है।

४. राव मालदेव रौ वरणन :—

इसमें जोधपुर के शासक राव मालदेव ने राणा उदयसिंह पर चढ़ाई की और विभिन्न क्षेत्र अथवा परगने हस्तगत किये उसका ब्योरा दिया है। यथा—

"भाद्राजण सिंधल वीरम नै मारनै लीवो १५८८ में।"

आगे मालदेव द्वारा हस्तगत किये विभिन्न परगनो की सूची दी है, फिर उनके द्वारा बनवाये गये किले कोटड़ियों के नाम और कोट ध्वस्त कराये उनके नाम भी दिये हैं।

५. उमरावों मुतसद्दियों ने मोदा वगसियां री विगत :–

इसमें महाराजा अजीतसिंह द्वारा (१७६५ श्रावण सुद १३ को) की गई नियुक्तियों (परधानगी, दीवानगी, हाकमी आदि) का विवरण है।

६. महाराजा अजीतसिंह री सांभर विजय :–

महाराजा अजीतसिंह और सवाई जयसिंह (आमेर) के सांभर पर जाने, वहां प्रवन्धकर्ता फौजदार हुसैनखां को मार कर सांभर डोड़वाने पर अधिकार कर आधा आधा बांट लेने, वहां हाकिम नियुक्त करने का वृत्तांत है। फिर 'विगत १ कांम सुंपीयां री' अंकित है।

७. राठौड़ों री वंशावली :–

राठौड़ों की वंशावली आदिनारायण से विरमदे तक दी है। वंशावली के साथ कुछ काल्पनिक घटनायें और दूहे आदि दिये है। इसमे राजा चंद का वृत्तांत इस प्रकार दिया है....

"राजा चंद में दोय हाथी री वळ ·······तिण नै राजा धरम वम्व कासी रौ राज दीनो, अठारै टंकी कवांण पीचे, हाथी रौ माथो वाढ़ नाखे, पांच हाथियो मे एक तीर पार कर देवे, नै अड़तालीस मण रो मुगदर उठावें।"

वंशावली में मुख्य रूप से विभिन्न शासकों की रानियों तथा संतति का ब्योरा दिया है और इसमें प्रायः उन्ही घटनाओं का विवरण आया है जो अन्य ख्यातों वंशावलियों में मिलता है।

८. पीढियों रा कवित :–

इसमें जोधपुर, बीकानेर, कोटा, बूंदी, जैसलमेर, जयपुर, उदयपुर के राजाओं और दिल्ली के बादशाहों की पीढियों से संबन्धी कवित्त लिपिवद्ध हैं। यथा—

"जोधपुर री पीढियों रौ कवत—

कमधज वंस सेतरांम सीहा आसथांन
धुहड प्रतापी रायपाल जिम गाजे है·······।"

९. गढ़ रा कमठां री विगत :–

इसमें राव जोधा द्वारा जोधपुर गढ़ और बाद के विभिन्न शासकों, रानियो द्वारा करवाये गये भवन-निर्माण, जलाशय इत्यादि कार्यो का ब्योरा दिया गया है। इस हकीकत की प्रतिलिपि कहां से की गई इसके बारे में लिखा है—

"आ हकीकत जोसी तीलोकचंद रै थी सु, जोसी तीलोकचंद कना सुं सिघवी ग्यानमल लिपाई सं० १८७१ रै वैसाप सुद १० सुक्र।"

प्रारम्भ—
"ठेट सु' गढ़ री नीव राव जोधाजी दीनी ...... आदि ।" (पत्र–७½)

१०. धांम पदारियां री विगत :–

इसमें जोधपुर के शासक महाराजा गजसिंह, जसवंतसिंह, अजीतसिंह, अभैसिंह, बखतसिंह, रामसिंह, विजैसिंह, भीवसिह और कुछ राजकुवरों के देहावसान के संवत तथा दग्ध स्थान अ'कित है।

११. किशनगढ़ री पीढियां :–

महाराजा किसनसिंह से मोहकमसिंह तक किशनगढ़ के राठौड़ राजाओं की पीढ़िया अंकित है।

१२. उदैपुर री पीढियां :–

केवल ३–४ नाम दिये हैं—'राजसिंघ, अड़सी, हमीरसिंघजी, भीवसिंघजी।'

१३. जयपुर री पीढियां :–

किसनसिंह से सवाई प्रतापसिंह तक जयपुर कछवाह राजाओं की पीढियां अ'कित है।

१४. बीकानेर री पीढ़ियां :–

राव बीका से सरदारसिंह तक बीकानेर के राठौड़ राजाओं की पीढियां अ'कित है।

१५. फुटकर ऐतिहासिक बातें :–

जोधपुर के महाराजाओं (वि० सं० १७३५ से १८६५) आदि से संबन्धित कुछ फुटकर बातें संग्रहीत हैं।

महत्वपूर्ण घटनाएं जिनके संवत इत्यादि अ'कित है।

इस ख्यात में करीब आधे (अ'तिम) भाग में महाराजा विजयसिंह का वृत्तांत है, जिसमें मुख्य रूप से उसके द्वारा मराठों से लड़े गये युद्धो, फतेसिंह, जालमसिंह, भोमसिंह व उसके पुत्र भीमसिंह के विवरण के अतिरिक्त विरोधी सरदारों को दण्ड देने, मरवाने का वृत्तांत दिया गया है। घटनायें जोधपुर की ख्यात से मिलती जुलती ही हैं। घटनाओं की प्रतिलिपि इस प्रकार की गई है कि कोई क्रमबद्ध इतिहास नही बनता है। फिर भी यह ख्यात महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें संकलित वातों, घटनाओं का वृत्तांत विस्तार से दिया है। जोधपुर राज्य के इतिहास तथा राज्य व्यवस्था आदि के अध्ययन हेतु संग्रह उपयोगी है।

प्रतिलिपि दो व्यक्तियों के हाथ से की गई है। पत्र फीके पीले रंग के हैं जो कि जिल्द में सुरक्षित हैं। प्रारम्भ के कुछ पत्र खण्डित हैं। लिखावट काली स्याही में है, पर सुवाच्य नही है।

९९. चौहानों की वंशावली

१. चौहानों की वंशावली, २. रा० प्रा० वि० प्र०,, ३. १५८५४, ४. १५.८×२६ सेमी०, ५. १७, ६. ११–१३, ७. २० वी शताब्दी का प्रारंभ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. चौहानों की वंशावली पौराणिक आधार पर दी है। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) श्री नारायण से काशी ऋषि तक ६१ नाम दिये है। वर्णित है कि यह राजा ऋषि कहलाये और इन्होंने जगनर पर राज्य किया।

(२) मंगलपाल से खूमपाल २१५ नाम के राजा, मंगलनाथ जोगी की दवा से पाल नाम कहलाये।

(३) सूरतीत से केहरदीत २१९ नाम के राजा दीत कहलाये क्योंकि खूमपाल का पुत्र सूर्य के वरदाव से उत्पन्न हुआ।

(४) चंद्रचंद से हरिचन्द २०८ नाम के राजा चन्द कहलाये क्योंकि केहरदीत का पुत्र चन्द्र, चन्द्रमा के वरदान से उत्पन्न हुआ।

(५) राजा पिंग से राममरिण तक ८७ नाम के राजा मणि कहलाये क्योंकि हरिचन्द के पुत्र पिंगनामा ने नागपुत्री से विवाह किया था, उससे उत्पन्न हुए मणि कहलाये। इन्होंने मांडणपुर राज्य किया।

(६) हरिपति से अमँपति ८१ नाम के राजा पति कहलाये, क्योकि यह शिव के वरदान से हुए थे। इन्होने अमरावतीपुर राज्य किया।

(७) बुधसेण से विनेसेण ६२ नाम के राजा सेण कहलाये, क्योंकि अमँपति का पुत्र बुधसेण नेमनाथजी के वरदान से हुआ। इन्होंने अमरापुरी राज्य किया।

(८) ध्यजबन्ध से पंचाणध्वज उद्र नाम के राजा ध्वज कहलाये क्योंकि विनेसण ने केदारनाथ को ध्वजा चढ़ाई और नव कोटि मुद्रा लगाई। इन्होंने हरीगढ़ राज्य किया। आगे कलयुग की पीढ़ी दी है।

(९) चन्द्रध्वज से हरिभान तक ११४ राजाओ के नाम दिये हैं। इसके पुत्र मानिकराव के बारे में लिखा है—"मानिकराव राजा पुत्र रावी २२ गादि सांह संवत विक्रमार्क ७०३ मानिक राव पै माता आसापुरा समरा प्रसन्न हुई, समरा के नाम साहवरि ग्राम बसायो, आसापुरा कुळ देवी हुई, समरा प्रसन्न होय वर दीयो-घोड़ा चौवीस दोड़ाई फिरी पिछो देपे मती ......।"

(१०) एक तालिका मे चौहानो की २४ शाखाएं, राज्य स्थान आदि अंकित है तथा अन्त मे विजैराज इत्यादि राजाओं के रानियां संतति का उल्लेख किया है।

अन्तिम भाग—

"………चौथो कंवर वीरसेण रतन भंवर राज कीयौ, वीरसेण को वेटो जैतराव को वेटो हमीरराव अलावदीन पातसाह सूं साको कियो, गढ़ रणतभंवर। जिनका वेटा पोता मेवाड की घरती मे राज करै छै तीन वेटां को वंश चलयौ नही लपनसी राजा राणी ३ पुत्र १ गादी मठिन वेया राढ वीघोता देश में राज कीयो संवत् १२०४।"

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के द्वारा सुन्दर लिपि में लिखा गया है। ग्रंथ पर गर नहीं है। कागज मटमेले रंग के है।

ग्रंथ चौहान राजाओ के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

१००. जयपुर रा राजाओं री वंशावली

१. जयपुर (रा) राजाओ री वंशावली, २. रा०प्रा०वि०प्र०, ३. २७७७६, ४. ४३ × ३३ सेमी०, ५. १, ६. २६, ७. २० वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत तालिका मे कछवाह राजाओं की वंशावली ईसंसिह (ग्वालियर) से सवाई माधवसिंह (जयपुर) तक ३६ राजाओं के नाम अंकित है। राजाओं के जन्म संवत्, राज्यारोहण संवत्, देहांत संवत, राज्यकाल तथा रानियो व कुंवरो की संख्या अंकित है। जन्म संवत अधिकांश राजाओं के नही हैं।

प्रारम्भ—

संख्या	नाम राजा	राजधानी	जन्म सं०	गादी सं०	देवलोक सं०	राज्य काल	रानी	पुत्र
१	इसंसिगजी	ग्वालेर	—	—	१०२२		१	१
२	सोडदेवजी	दोसारामगढ़	—	१०२३	१०६३	४० वर्ष ३ मास १० दिन	१	

यह तालिका एक ही व्यक्ति के हाथ से बनाई गई है। इसमें रा… मलंयासी के पुत्रो की संख्या ३२ अंकित है।

१०१. राठौड़ रतन महेसादासोता री वचनिका आदि

१. राठौड़ रतन महेसादासोत री वचनिका आदि, जग्गा खिड़िया आदि, २. रा० शो० सं०, ३. १०६५, ४. २३.५ × १८.५ सेमी०, ५. ६३, ६. २५,

७. वि० सं० १७८६, ई० सन् १७२६, करमावास, ८. ग्यानविजय, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ में प्रारंभ के ४ पत्र गायब है। प्रारंभ में भमर बतीसी, धर्म बावनी, प्रस्ताविक पट पद कवित्त आदि कृतियां लिपिबद्ध है।

१. राठोड़ रतन महेसादास री वचनिका :–

प्रस्तुत वचनिका ग्रंथांक ६३४, रा० शो० सं० के समरूप है पर यह लिपि उससे पुरानी है तथा वचनिका पूर्ण है। यहाँ केवल इसका अन्तिम भाग दिया जा रहा है।

"दिल्ली का वांका, उभेंगण का साका च्यार जुग रिहसी सु कवि पातसाह कहि सी ॥३३७॥"

पुष्पिका—

"इति श्री राव रतन री वचनिका समाप्त। संवत १७८६ वर्षे मति मिहगसर शुद १३ शनीश्वर वारे लिषंत ॥ ग्यान विजय ॥ करमा वश्र ग्रामे मध्ये।"

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में मनुष्य के अनेक रोग उनका इलाज करने की दवाइयों आदि का वृत्तांत है।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि में लाल स्याही का प्रयोग कहीं-कहीं किया गया है। ग्रंथ जीर्ण होने के फलस्वरूप बहुत से पत्र जिल्द से अलग हो गये हैं। पत्र मटमैले रंग के है। ग्रंथ पर गत्ता नही है। अन्तिम १६ पत्र खाली पड़े हैं।

१०२. आईन-ए-अकबरी भाषा वचनिका

१. आईन-ए-अकबरी भाषा वचनिका, गुमानीरांम, २. रा० शो० सं०, ३. १६४६२, ४. ३६.५ × २५.५ सेमी०, ५. ७७, ६. ३२–३४, ७. वि० सं० १८५२, ई० सन् १७९५, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. यह आईने अकबरी (अबुल फजल कृत) के कुछ भाग का राजस्थानी भाषा में रूपान्तर है। इसमें सम्राट अकबर की शासन-व्यवस्था के विभिन्न विभागों तथा राज्यकाल की अनेकानेक सूचनायें समाविष्ट है।

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरुभ्योनम; ॥

सुमुख एकदंत सुचि कपोल गज कर्णक
लंबोदर इच विघाटो विघ्न नासो विनायक ॥१॥

दोहा—

सूरजवंसी कूर्म कुलरवि सो तेज प्रताप ।
तिमर नसांवन जगत को छत्रपति नृप आप ॥

श्रीमन महाराजा धिराज श्री धरम मूरत धरमावतार प्रयीपत सूरज प्रताप सकल नृप सिरोमणि सुप निधान बुधिवंत विचक्षण गुणां सागर विसे प्रकासी इन्द्र से सीतल अमृत समान मंगल मूर्त करण सम दांनी परम दयाल परम गरिष्ट करुणा-मय परम उदार श्री विष्णुभक्ति परायण सब छत्रिन सिरमोर श्री राज राजेन्द्र श्री महाराजाधिराज सवाई प्रतापसिंहजी देवाग्या ते यवन ग्रंथ आईने अकबरी की भाषा वचनिका जथा प्रति लिपी ।"

लिपि समय व कर्ता आदि के नाम इस प्रकार उद्धृत है—

"संवत असटादस सतं बावन अधिक पुनीत ।
पोस मास तिथ पंचमी किय अरंभ यह रीत ॥"

सो लाला हीरालाल मुनसी हुकम ल्यायो—तब हुकम को सीस चढायो अरु लिपवे को प्रारम्भ कियो परम सेवग आग्याकारी गुमानीराम कायसत ।"

ग्रंथ की भाषा शैली का उदाहरण प्रस्तुत है—

"उकील मुतलक ॥ सो हिंदी भाषा में मुसहिब प्रतिनिधि कहे ॥—सो वह अपनी अकल के जोर से वार चाम धरमी से पहोंच कर नायब मुलक अरु मालका रहे अर मसलत येकांत समां में अपनी उग्र बुधि ते उंजियारी करके निसचे करें सो वो बडा काम वादस्याही का नें आपणी मेंडी निगाह से बणावें.........आदि।"

ग्रंथ मे विषय-सूची भी अंकित है, तथा वस्तुओं के भाव इत्यादि विविध विषयो से संबंधित अनेक तालिकायें अंकित है ।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है । लिपि साफ सुथरी है प्रत्येक पत्र पर पत्र संख्या अंकित है । अन्त में कुछ पत्र खाली पडे हैं, अन्त में कुछ पत्र खंडित है, कृति अपूर्ण है । पत्र हाथ के के बने प्रतीत होते हैं । ग्रंथ पर सुन्दर कपड़े का गत्ता मंढा हुआ है ।

१०३. जैनियों को वंशावली व श्रावकों री विगत

१. जैनियों री वंशावली व श्रावकों री विगत, २. रा० शो० सं०, ३. १२७६७, ४. ३५×२२ सेमी०, ५. २१७, ६. २०–२७, ७. वि० सं० १८५३, ई० सन् १७६५, खजुरपुर, ८. देवीचन्द, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में जैनियों के कुछ गोत्रों की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला गया है और

विभिन्न जैनी पुरुषों, उनकी वंशावली तथा निवास-स्थान का उल्लेख भी दिया है। निवास-स्थान स्थलों आदि के नाम हासिये में एक ओर लिपिवद्ध हैं।

प्रारम्भ—

"श्री गणेशाय नमः श्री सच्चिकाय नमः एक दंतो माहा वुधी सर्व गुणो गण नायक सर्व सीधी करो देवा गवरी पुत्र विनायका ......आदि ।"

ग्रंथ के मध्य भाग में तातेड़ गोत्र की उत्पति कैसे हुई वर्णित है। माताजी द्वारा सरपणी का रूप धारण कर इश्वरचन्द्र के पुत्र को डसने और उसकी मृत्यु पश्चात् उसे लंकेश्वरी पार्श्वनाथ की कृपा से जिन्दा होने पर जैन मन्दिर में पूजा आदि होने व जैन धर्म अंगीकार करने व उसके वंशज तातेड गौत्र कहलाने का उल्लेख इस प्रकार है—

"......सहर में आहर मील्यो नहीं......आप श्री इश्वरचन्द्र रा बेटा नै मारो...... आप श्री माताजी सरपणी रो भेष कीधो मेहला में जाय नै अमैचन्द सुतो तिणरै पापती पापती अस्त्री सुती छै......सरपणी सास पीच लीनो...... कंवर सूतो मूवां समांन पड़ियो......ताड़पत्र मंगाय नै मतो घलाय लीनो नै लंकेश्वरी पारस्वनाथजी नै पेल नै पांणी पायो, विस री कोथली वारै आण पड़ी इतरै कंवर आळस मोड़ नै उठीयो......जैन रा देवरा में पुजा प्रभावना करण लागा जनोईयां तड़ा तड़ तोड़ो तीण था तातेड़ कहाणा, माताजी रो साचै वचन रही तरै सचीयाय कहीणी......माताजी रो कर लागै सवा मण वाट, घृत सेर १५, गुळ सेर १५, नाळेर २१, पुत्री फळ २१ कुंकुं चावळ...... चाढीजै चैत्री ८ पुजीजै आसोजी ६ पुजीजै......आदि।"

पुष्पिका—

"समत १८५२ वर्षे मीति प्रथम भाद्रवा वदि २ लिषतां देविचंद पजुर पुर मध्ये।"

तातेड़ गौत्र के अतिरिक्त भूर गौत्र, चित्र गौत्र, बोरूदीया गौत्र और काग गौत्र की उत्पति आदि पर प्रकाश डाला गया है। श्रावकों का वृत्तांत भी साथ में दिया है। जैनियों के इतिहास के लिये ग्रंथ अत्यन्त उपयोगी है।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिवद्ध हुआ है। लिपि सुवाच्य है। ग्रंथ के कुछ पत्र खाली पड़े है। ग्रंथ पर गत्ता नही है।

१०४. जैन वंशावली व श्रावकों को विगत आदि, भाग-२

१. जैन वंशावली व श्रावकों की विगत आदि, भाग-२, २. रा० शो० सं०, ३. १२७६८, ४. ४३ × ३३ सेमी०, ५. १६६, ६. ४३-५०, ७. वि० सं० १८५७, ई० सन् १८००, खजवाणा, ८. देवीचन्द, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें जैनियों के विभिन्न गोत्रों की उत्पत्ति और उस गोत्र के मूल पुरुषों की वंशावली पूर्व स्थान आदि लिपिबद्ध है।

प्रारम्भ में दो रंगीन चित्र गणेशजी और माताजी के चित्रित हैं।

प्रारम्भ—

"श्री गणेशाय नमः श्री सन्चिकाय नम.........वंशावली सुणतां थकां नर है पाप लोगार, जनमजे भारथ सुण्या गया कोढ़ अड़ार ॥१॥

इसमें जैनियों के कुकड़ा चोपड़ा गोत्र, कुंभट गोत्र, नप्पत्र गोत्र, श्रीमाल सुरिवा गोत्र, पुकरणा गोत्र, सुचिती गोत्र, (विस्तार में), राका गोत्र, आभड़ गोत्र, भूट गोत्र, डीडु गोत्र, मोराक्ष गोत्र, छाहवत गोत्र, बाघमार गोत्र, समूदड़ियो गोत्र, पिछोल्या गोत्र, हथूंडिया राठोड़ गोत्र आदि वर्णित है।

उदाहरण—

"कुकड़ा चोपडा गोत्र—

श्री गणेशाय नमः, कुकडा गोत्र लीपते पूर्व राठौर वंसे, कनवजीया शपायं, किंचितय ढिहार कथ्रयते कनोजीया राठौर वंसे सच्चिकालगा सवामण बाट कृत १५ सदसी पाटो नाळेर ४ पलकुकु पल घुय पुर सेड चाकडीयो तिलक राठोड़ अड़कमल प्रति बोधता भट्टार करम्न प्रभू सूरभी कनोज गोत्रे कूकड़ा १, चोपड़ा २, घूपीया ३, वट पटरां कवाल ४, एते शापा...... आदि।"

पुष्पिका—

"इति श्री हयूडीया राठोड़ गोत्र लीया कृत्वा समत १८५८ रा। १७२२ मा० माहासुद १२ ली० देविचन्द पचवाण म०।"

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया हुआ है। लिपि सुन्दर व सुवाच्य है। पत्र मोटे, हाथ के बने हुए हैं।

ओसवालों के गोत्र संबंधी जानकारी के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

१०५. जैनियों री वंशावली व श्रावकों री विगत, भाग-३

१. जैनियों री वंशावली व श्रावकों री विगत, भाग-३, २. रा० शो० सं०, ३. १२७६६, ४. ६३ × ३६ सेमी०, ५. ८८, ६. ६०-६६, ७. वि० स० १८५५,

ई० सन् १७६५, संभवतः खजुरपुर, ८. देवीचन्द, ६. देवनागरी, १०. इसमें जैनियों के बाफना, कणावट लूंणावत, गौत्रों की उत्पति उनके मूल पुरुषों की वंशावली, पूर्व निवास स्थान आदि वर्णित है।

प्रारम्भ—

"श्री गणेशाय नमः श्री सच्चिकायनमः ......वंशावली सुणतां थका नर है पाप लीगार जनमेंजे भारथ सुणया, गया कोढ अढ़ार ॥१॥

पूर्वे अग्रे जनमेजै राजा हुवो, तिणरै अढारै प्रकार रा कोढ हुवा। राजा जनमेजे होम जोग सास्त्र मुज छै मोकळा कीया पण कोढ नीवरतन हुवै नहीं... देवी आय सपने में केयो जे राजा थूं थारो सवाल ... .भारथ कांना सू सुणे तो कोढ़ निवरत हुवै, तद राजा वेद व्यासजी कनै जाय नै कयो माहरो वंस सुणावो ....आदि।"

लिखने का ढंग जैन वंशावली भाग एक और दो जैसा ही है। इसमें भी विभिन्न जैनी पुरुषों के स्थलों के नाम ग्रंथ के हासिये मे अंकित है।

पुष्पिका—

"इति श्री लूणावत गौत्र लीपी कृत्वाः समत १८५५ मीती काती वद ७ ली० देवीचन्द।"

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध हुआ है। ग्रंथ पर चमड़े का गत्ता मंढा हुआ है। लिपि सुवाच्य है। जैन धर्म के विस्तार को समझने हेतु ग्रथ उपयोगी है।

१०६. जैनियों री वंशावली व श्रावकों री विगत, भाग–४

१. जैनियो री वंशावली व श्रावकों री विगत, भाग–४, २. रा० शो० सं०, ३. १२७७०, ४. ४१.५ × ३१ सेमी०, ५. १३५, ६. ४८–५१, ७. वि० सं० १८५३, ई० सन् १७९६, खजवाणा, ८. देवीचन्द, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ का प्रारम्भ ग्रंथांक १२७६८ तथा १२७६६ की भांति ही हुआ है।

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनमः श्री सच्चिकाय नम.........वंशावली सुणतां थकां नर है पाप लीगार जनमेजै भारथ सूण्या गया कोढ़ अढ़ार।"

इसमे वर्णित है कि ओसवालों की उत्पति कैसे हुई, इसके संबन्धित एक कथा वर्णित है—

"अथ उसवाला री उतपत[1] ...... श्री महालीक्ष्मी स्थान तिण री पहला युग मांहे रयण माला त्रेता युगे यु फमाला...... ...भीनमाला नगरै विषै परमारराजा भीमसेन राजा राज करै तिणरै दोय पुत्र वडो उपलदे, लोडो सुरसुदक्ष। पिता यै छोटा बेटा नै राज तिलक दीधो, उपलदे नै देसोटो दीनो काळो घोड़ो सिरेपाव दे नै सीप दीनी नै कयौ—वेटा सुनी धरती वसावज्यो तिणरी माता सुणीयौं तरां मोहरां री पावरो भर मेलियो......... आदि।"

जैनियों के चोरडिया, गाहदीया गौत्रों की उत्पति, उनके मूल पुरुषों, उनकी वंशावली तथा पूर्व निवास-स्थान आदि का वृत्तांत दिया गया है। साथ में श्रावकों का भी उल्लेख है।

पुष्पिका—

"इति श्री चोरडीया गाहदीया गोत्र लिपी कृतं १७५३ लीपंत देविचंद पचवाण मध्ये करणोत राजे मती श्रांवण वद ६ ली. दिवीचंद लीपी कृतं॥"

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुन्दर व सुवाच्य है। ग्रन्थ के पत्र मोटे, हाथ के बने हुए हैं। ग्रन्थ पर कपड़े का गत्ता मंढ़ा हुआ है।

---

१. ओसवाल जाति के इतिहास (पृ० ५) में ओसवाल जाति की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला गया है जो इससे कुछ भिन्न है।

दूसरा अध्याय

विगत, हाल, हकीकत

१०७. राजलोकां री विगत, वीर गीत आदि

१. ग्रंथ का नाम व कर्त्ता—राजलोकों री विगत, वीरगीत आदि, २. प्राप्ति स्थान—रा० शो० सं०, ३. ग्रंथांक—१४४८४, ४. माप—१२ × १४ सेमी०, ५. पत्र संख्या—३६६, ६. पंक्ति संख्या—२०-२६, ७. लिपि समय, लिपि स्थान—वि० सं० १६८०-८७, ई० सन् १७२३-३०, जोधपुर, ८- लिपिकार—पंचोली चुतुर्भुज, मुहता सोभाचंद, बगसीराम आदि, ६. भाषा, लिपि—राजस्थानी, देवनागरी, १०. विशेष विवरण—प्रस्तुत ग्रंथ का प्रारम्भ 'राम चरित्र' कृति से हुआ है।

प्रारम्भ—

"श्री रामजी सत छै अथ श्री राम चीरत लिखते—नमो नमो नीमसकार गुंसाई, घट घट व्यापक जल थल मांही········ ॥१॥"

१. महाराजा अजीतसिंह रो उयाको हुवो तिण री विगत :–

अजीतसिंह की हत्या की घटना इस प्रकार उद्धृत है—

"सं० १७८० रा असाढ़ सुद ६ श्री महाराजजी चौ० जगतसिंह सेहसमलोत री बेटी तलैठी रै मेहलां परणीया········सुद १० डोलो ले गढ़ पदारीया नै सुद १२ कंकण डोरड़ा छोडीया······· पाछली रात घड़ी १ थी सुद १२ सोम री रात तरै पौढ़ीया मुं लोह हुवो नै वडारण १ दुड़बड़ी देती थी तीण नुं पीण मारी नै सुद १३ भोम दाग हुवो नै पछै ईतरी सतीयां हुई ······· ।" (पत्र–१)

२. अभयसिंह रो मनसब :–

महाराजा अभयसिंह के मनसब और जागीरी का ब्योरा दिया गया है।

प्रारम्भ—

"याददासत महाराज श्री ग्रमैसिंघजी रै मनसब जागीरी री तोजी री नकल दीली मु' प्रा० सेहजरांम·······लिप मेली थी सं० १७८३ रा चैत सुद १० मु० जैनीयास रै डेरां तिए री नकल छै ······ ।" (पत्र–३)

३. श्रोसवाल रा गौत्र :–

ओसवाल जाति के गौत्रों का नामोल्लेख है । (पत्र–३½)

४. चोईस साप चोहाण री त्यांरी विगत ग्रादि :–

चौहानों की २४ शाखाओं का नामोल्लेख है फिर दिल्ली में राजा (पृथ्वीराज चौहान से ग्रौरंगजेब) सिंहासनारूढ़ हुए व किसने कितने समय राज्य किया उसकी सूची दी है । (पत्र–४)

५. राठोड़ कहाणां तिए री विगत :–

राठौड़ों की उत्पत्ति कैसे हुई उसके सम्बन्ध में एक दंतकथा वर्णित है ।[1] फिर राठौड़ों की १३ शाखाग्रों का निर्माण हुआ उसका विवरण ग्रौर मारवाड़ में राठौड़ों का प्रवेश राव सीहा के द्वारिका यात्रा से लिखा है, फिर मारवाड़ के शासकों के संतति ग्रादि घटनाग्रों (संवत सहित) महाराजा ग्रजीतसिंह तक का विवरण दिया है ।

प्रारम्भ—

"ऐक चंद्रकला नगरी छै तीए रो राजा जवन सत छै । सु बडो धरमात्मा जारा ······ ।" (पत्र–१६)

६. चूक कर मारियो री विगत :–

राठौड़ सरदार इत्यादि धोखे से मारे गये उसका ब्योरा दिया गया है ।

प्रारम्भ—

"रा० मुकनदास नै रूघनाथ सीघो सुजाणसींघोत चांपावत गढ़ माहै मारीया सं० १७६४ ।" (पत्र–१)

७. नीसांणी राव जोधा री :–

यह एक प्रशस्ति-काव्य जोधपुर के संस्थापक राव जोधा से सम्बन्धित है ।

प्रारम्भ—

"जिण दिन जोध जनमिया, जस थाळ बजाया ।
जे सिर किणी नमावता, जीण पत्र नमाया ······ ॥१॥"

---

१. विस्तार के लिये देखें, राठौड़ वंश री विगत, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

८. गीत राठौड़ रायसिंघ कीलाणमलोत बीकानेर रो :–
प्रारम्भ—

"पाताळ वळ जठे उठे रहण न पाउं
रीध मंडे करण सरग रहे .... ॥१॥"

९. होली री उत्पत कथा[1] :–

होली का त्योहार मनाया जाता है उसके बारे में एक कथा वर्णित है—
प्रारम्भ—

"अथ राकस मालण री बेटी। ढुंढा राकसणी ......श्री महादेवजी उपर तपस्या कीवी ....आदि।"

अन्तिम भाग—

"ईत श्री होळी री कथा संपुरण सं० १७८७ रा माह सुद १२।"

(पत्र–२$\frac{1}{2}$)

१०. राठौड़ प्रथीराज रो कहो गीत (राव कल्याणमल की मृत्यु पर) :–
प्रारम्भ—

"सुप वास रमंतां पास........आस पास मोकलां दांम
न लीयें नांव पर्ये नारायण, कलीया तज चलीया वेकांम ॥१॥"

११. हाडा बुधसिंह रो कवित्त :–
प्रारम्भ—

"दैत दीली पन मीर माहाजल, सैंद होलोण ते भई गाढी
हीदून की हद दाब दीसुं दीस........ ॥१॥"

१२. गीत महाराजा अजीतसिंह रो :–
प्रारम्भ—

"हो रावां रजीयां सुणौ हो रावळ राणा
कमध तपी पर करौ, समवड सुलतानां........ ॥१॥"

ग्रंथ में इसके अतिरिक्त जयपुर, जैसलमेर और बूंदी के शासकों की वंशावलियों के अतिरिक्त अनेक अनैतिहासिक कृतियाँ भी लिपिबद्ध हैं।

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है। कुछ पत्र कीट भक्षित है।

---

१. प्रकाशित, सं० मोहनलाल पुरोहित, राजस्थानी व्रत कथाएं, पृ० ६१

१०८. विगत वात संग्रह

१. विगत वात संग्रह, लाखा जैमलोत आदि, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३५४६४, ४. १६ × २४ सेमी०, ५. १०५, ६. १२, ७. १८वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रन्थ में संग्रहीत कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. राठौड़ अमरसिंघ रा कवित्त मीसण लाखा जैमलोत रा कहीया :—

यह ५५ पद्यों, दूहों आदि की कविता नागौर के राव अमरसिंह राठौड़ की वीरता और उत्सर्ग से सम्बन्धित है।

प्रारम्भ—

दूहा— "लड़ीया आदि जुगादि लगि, सूरा सोहड समथ,
वडा सुपाग्रां ओळपे कहि सु भारत कथ ॥१॥

कवित्त— मति बुधि समपि हमेस जटाधारी जोगेसर
आपे सर ईसवर, कहा वंदे जोड़े कर…….. ॥१॥

अन्तिम— अमर मणिधर आगळें मुंस मेडै पाव,
गुर पुदाल मोडीया लकड़ी तणो गुणाव ॥५५॥" (पत्र-६)

२. दिली में राज कियो री विगत :—

इसमें राजा दशरथ से मुरादवक्श तक के राजाओं की वंशावली तथा किसने कितने समय (वर्ष, मास, दिन) राज्य किया अंकित है। कुछ विशिष्ट व्यक्तियों की जन्म कुण्डलियाँ भी दी हैं।

३. वात पाटण अणहलवाड़ा री :—

पाटण के बारे में बताया है कि इसे कब किसने बसाया फिर इसका लग्न देकर वनराज चावड़े से बादशाह जहांगीर तक के शासकों ने कितने वर्ष राज्य किया अंकित है। (पत्र-२?)

४. अहमदाबाद थी सेरां री (दूरी) विगत :—

अहमदाबाद से जोधपुर, सीरोही, उदयपुर आदि शहरों की दूरी अंकित है।

५. दिली रै पातिसाहों री विगत :—

पृथ्वीराज चौहान से फरुकसियर तक के बादशाहों ने कितने वर्ष राज्य किया अंकित है। (पत्र-४)

६. राणा प्रताप री बात :–

इसमें हल्दी घाटी के युद्ध का संक्षिप्त वृत्तांत है।

प्रारम्भ—

"राजा रांम साह तुंअर गुग्रालेर री धणी महारांणा जी श्री प्रतापसीघजी कनै था सो विपे मांहै रूपीआ ८०० रोज १ रोकड पावता, हळदी री घाटी वेढ १ तठै कांम ग्राया सं० १६३२ श्रावण वदि ७ राणे प्रतापसीघजी कछवाहो मांनसीघ सुं वेढ तिण मांहै कांम आया .... ।" (पत्र–१)

७. रांणा ग्रमरसिंह री बात :–

वि० सं० १६६६ में राणा अमरसिंह पर अब्दुला द्वारा की गई चढाई और राणा की ओर से मारे गये वीरों के नाम आदि दिये है।

प्रारम्भ—

"रांणाजी श्री ग्रमरसीघजी उपर अबदूलो आयौ तरै इणरो साथ कांम आयौ सं० १६६६ फागुण सुद ७.......।"

फिर ग्रकबर के चित्तौड़ ग्राक्रमण के समय राणा के पक्ष के मारे गये योद्धाग्रो की नामावली दी है। (पत्र–१½)

८. रांणा सांगा री बात :–

इसमें रांणा सांगा व बादशाह बाबर के बीच हुए युद्ध का संक्षिप्त विवरण है।

प्रारम्भ—

"रांणो सांगाजी पीली ग्रेपाल सिकरी बबर पातिसाह सु लड़ाई कीघी सो वात संवत १५८४ काती सुदि ५ रांणोजी ....ग्रेपाल भागा बाबर पातिसाह विलाइत री ग्रायौ ...... ।"

९. वात पातिसाही सोबां री पंचोली ग्राणंदरूप लिवाई सं० १७१५ काती सुदि १३ नै :–

इसमें दिल्ली के बादशाह के ग्रधीनस्थ परगनो, सिरकार, सोवा की विगत और उसके दांम ग्रादि का ब्यौरा दिया गया है। (पत्र–२)

१०. बात गोलकुंडा री नै करणाट री :–

इन स्थानो की भौगोलिक स्थिति आदि के बारे में विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

"पातिसाह कुतबी कहावई जात मुगल पुरासांणी छै, घोड़ा हजार ४०००० री साहीबी छै, ब्रांहनपुर सुं कोस ३०० दौलताबाद........ ।" (पत्र–१)

१६. रांणेजी परतापसींघजी नै कुंग्रर मांनसिघजी कछवाहै हलदीघाटी घमणोर राड़ हुई तिण री :–

इसमें भी हल्दीघाटी के युद्ध का ही वृत्तांत है ।

प्रारम्भ—

"कुंग्रर मांनसीघ गुजरात दिसी किण हीक काम पातिसाह श्री अकवर मेल्यो थो……… ।" (पत्र–२$\frac{1}{2}$)

१७. पातिसाह फोत हुवा तिण रा संवत :–

इसमे हुमायूं, अकबर इत्यादि बादशाहों के मृत्यु संवत, तिथि आदि अंकित है । (पत्र–$\frac{1}{2}$)

१८. वात चीतौड़ री :–

इसमें चित्तौड़ पर बहादुरशाह के आक्रमण का विवरण दिया है ।

प्रारम्भ—

"रांणो सांगोजी वैकुंठ पधारया जद टीके राणी करमेती हाडी नरवद मांडावत री बेटी तिण री बेटो बैठो । उदैसिंघजी वीक्रमदीतजी रा लहोडा भाई, तिण समै सं० १५६८ रा जेठ सुदि १२ बहादर पातिसाह चीतोड़ उपरि आयो……… ।" (पत्र–१)

१९. वात पुंवार रावत करमचंदजी री :–

इसमें राणा सागा द्वारा करमचंद को 'रावताई' का खिताब और भूमि आदि देने का उल्लेख है ।

प्रारम्भ—

"रांणेजी श्री रायमलजी चीतौड राज करै छै, टीकाइत कुंअर प्रिथीराजजी था, पछै जैमल टीकाइत रांणेजी करै थापीग्रो छै, तिण समै सांगोजी रायमलजी रौ बेटो वेहाल फिरै छै सो फिरता गांव आवेसर आया छै सो अठै पुंवार करमचंद…… । (पत्र–२)

२०. वात एक मेवाड़ री :–

महाराणा राजसिंह पर औरंगजेब की चढ़ाई का वृत्तात है । साहजादे अकबर का राठौड़ों की ओर मिल जाने का भी उल्लेख है ।

प्रारम्भ—

"मेवाड़ उपर पातिसाह श्री औरंगजेब चढे आयो नै रांणोजी श्री राजसीघ जी राज करता था, सं० १७३८ रा आसोज सुदि २ रांणाजी मगरां मे गया…… ।" (पत्र–३)

२१. वात राणा उदैसिघजी री :–

उसमें वर्णित है कि महाराणा उदैसिह किस प्रकार पासवानिये पुत्र वणवीर को हटा कर स्वयं गद्दी पर आरूढ़ हुए।

प्रारम्भ—

"राणाजी उदैसीघजी नै : कुंग्रर प्रिथीराजजी री पवासण पूतली जिणी रा पेट रौ वणवीर जि श्री दवायौ.......।"

२२. पासवांनां रा छोरू ठाकुर हुग्रां री विगत :–

इसमें कुछ राजाओं आदि के पासवानिये पुत्रों का हाल दिया है। यथा—

"वासवाले रावल मांनसिघ प्रताप रौ वणीग्रोणी रा पेट रौ निपट भलौ ठाकुर हुग्रौ, पछै भोमीग्रों एक माहीडो पकड़ीग्रौ तिण मारीग्रौ.......।

राव जगमाल सीरोहीयौ तिण रै घरै पवास १ हुती, तिण रै पेट महाजल हुग्रौ तिण रौ वेटौ राव कलो सीरोही रौ को दिन धणी हुग्रौ, सो राव कला री वहन मोटे राजा परणी, नै कला री बेटी राजा सूरजसिंघ परणीया हुता ...... आदि।"

(पत्र–$१\frac{१}{२}$)

२३. हीरा जवाहर री कीमत :–

इस प्रकार दी है—

"जवाहर री कीमत टांक १ री रती २४ तथा ३२ मोती श्र० ५०००० तथा ६०००० तांई.......हीरो रु० १००००० तथा रु० १२५००० तांई ......।"

(पत्र–$\frac{१}{२}$)

२४. वारे ग्राभूषण नांम :–

इस प्रकार अंकित है—

"(१) लज्या, (२) मान, (३) कटाक्ष, (४) आलः, (५) रत्याभय, (६) ग्रभय, (७) प्रेम सरस, (८) हसगय, (६) धीरज, (१०) चित हरण, (११) गुह्या स्थल, (१२) नीरसनांन, (१३) सोभतः।"

२५. महाराजा जसवंतसिहजी रै जागीर रा परगनों रा दांम री विगत :–

जोधपुर के शासक महाराजा जसवंतसिह (प्रथम) के जागीर में मिले परगनों की रेख के दांम व रूपये अंकित हैं, फिर विभिन्न परगनों में पड़ने वाले सांसण के गांवों की संख्या दी है। अन्त में मोटा राजा उदयसिह, सूरसिह, गजसिह और जसवंतसिह को बादशाह की ओर से मिले परगनों की भी कीमत दी है। (पत्र-२)

२६. देसों रै गांम री संख्या :–

विभिन्न प्रदेशों के गांवों की संख्या अंकित है। यथा—

"४० लाप गांम ओपामंडल रा,

१८ हजार गांम वैराट देस रा,

७२ हजार गांम गजना देस रा……।"

अन्त में इस प्रकार कुल गांवों की संख्या ११५४०६४४ दी है। जिसमें मारवाड़ के गांवो की संख्या १४ हजार दी है। (पत्र–३$\frac{१}{२}$)

२७. महेसरयां की बहोतर षांप :–

इसमें माहेश्वरियों की १३६ शाखाएं अंकित है। यथा—

"१. झुंभर, २. जाजु, ३. जुरासंध, ४. झाला, आदि।" (पत्र–२)

इसके अतिरिक्त ग्रंथ में बादशाहों की दन्त कथाएँ, पठानो की पीढियों, गोमती गोदावरी आदि नदियों संबंधी बातें, तीर्थ स्थलों का वर्णन, बात बूंदेला री, जादवां री, पृथ्वीराज चौहान के सामन्तों के नाम, परगना वसियों री विगत तथा उदयपुर के जलाशयों की विगत इत्यादि कृतियां संग्रहीत हैं।

राजस्थान सम्बन्धी विविध ऐतिहासिक जानकारी के लिये ग्रंथ उपयोगी है।

अन्त में अनेक पत्र खाली है। ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। लिपि सुन्दर है। कागज काफी जीर्ण हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है।

१०६. मारवाड़ रा परगनां री विगत

१. मारवाड़ रा परगनां री विगत, (मुहता नैणसी), २. रा० शो० सं०, ३. ६७१६, ४. ३०.५×२५ सेमी०, ५. ३०८, ६. २०–२३, ७. १८ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. यह मारवाड के बहुत बड़े भू भाग के संबंध में अनेक प्रकार की जानकारी प्रस्तुत करने वाला अद्वितीय ग्रंथ है। इसमें जसवंतसिंह प्रथम के समय के जोधपुर, सोजत, जैतारण, फलोदी, मेड़ता, सिवाना और पोकरण की विस्तृत जानकारी बडे व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत की गई है। पहले प्रत्येक परगने का इतिहास देकर फिर प्रत्येक गांव की ५ वर्ष की आमदानी, बसने वाली जातियां, फसल, जमीन की किश्म, जलाशय कुए आदि की जानकारी दी गई है। प्रत्येक परगने के गांवों के विवरण के अन्तिम भाग में सांसण स्वरूप ब्राह्मणों, भाटों, चारणों आदि को दिये गये गांवों का भी विस्तृत विवरण दिया गया है।

माईजी तथा लहुवा श्री परमेश्वर ॥ श्री

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनमः ॥ श्री म्हार जी । छालत मांहै मैं चवनपुरस्य परगने जोधपुर री—आदि सैहर मंडोवटो कहै छै । तिण री मोलतीन वात छै । मोग सील परयत मेर गो घणो कहै छै······आदि ।"

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है । ग्रंथ सभी पु हुए तथा अलग अलग हैं । जीर्ण होने के कारण कुछ पत्र किनारों से खण्डित हैं कई पत्र बहुत जीर्ण और त्रुटित हो चुके हैं ।

यह वह मूल प्रति है जिसके आधार पर इसका सम्पादन होकर रा० प्रा विद्या प्रतिष्ठान में इस ग्रंथ का प्रकाशन हुआ है ।[1]

यह ग्रंथ मारवाड़ के इतिहास, भूगोल, प्रशासन राजस्व व्यवस्था, वाली जातियों और मुगल साम्राज्य से सम्बन्ध आदि दृष्टियों से बहुत महत्त्वपूर्ण है ।

११०. जोधपुर रै नीवांणां री विगत तथा वंशावलियां

१. जोधपुर रै नीवांणां री विगत तथा वंशावलियां, २. रा० प्रो० ३. १२८७७, ४. १० × २१.५ सेमी, ५. १४, ६. ११–१६, ७. १८५८, ई० सन् १८०१, जोधपुर, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, १०. ग्रंथ में अंकित कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

१. नीवांणों री विगत :—

प्रारम्भ में जोधपुर के शासकों, रानियों आदि द्वारा कुछ जलाशय गये उसका वृत्तांत है—

"श्री जोधांणै रा निवांणा री विगत[3]—राओजाइ राठौड़ राव उपरै रासा री वास थो, पछै उजड़ हुआ तरै महाराजा श्री जसवंतसिं पिणाइ······आदि ।"

२. दिल्ली में राज कियां री विगत :—

दिल्ली में बादशाह हुए उ

(राजा युधिष्ठर से फरूकसियर तक)

---

१. प्रकाशित, सम्पादक डा० नारायणसिंह भूमिका—'मारवाड़

३. राठौड़ों री वंशावली :–

इसमें श्री नारायण से लेकर महाराजा भीवसिंह तक के राजाओं के नामोल्लेख है।

४. आंबेर रा राजा री पीढ़ियां :–

जयपुर राजा भगवानदास से सवाई प्रतापसिंह तक के राजाओं की पीढ़ियां दी हैं।

इसके अतिरिक्त विभिन्न शासकों ने गढ़ शहर आदि बसाये उसका ब्यौरा दिया है।

यह ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। ग्रंथ के पत्र सब अलग-अलग हैं, कुछ पत्र दूसरे ग्रंथ के इसके साथ मिला दिये हैं।

१११. अकबर का अमल दस्तूर री हकीकत इत्यादि

१. अकबर का अमल दस्तूर री हकीकत इत्यादि, २. रा० शो० सं०, ३. २२७, ४. १५.५ × २३ सेमी०, ५. ३८, ६. १४-१८, ७. १९वी शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ऐतिहासिक विषयों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. अकबर का अमल दस्तूर आदि :–

प्रस्तुत प्रतिलिपि में ईश्वर के प्रति पूर्ण विश्वास तथा सभी कार्य उसी की रजाबंदी से करने, राज्य के प्रबन्ध हेतु कुछ नियमों का पालन करने, प्रजा के सुख-दुख का पूरा ध्यान रखने, न्याय की श्रेष्ठ व्यवस्था करने, अपने राज्य के ओहदेदारों व छोटे-बड़े नौकरों की परीक्षा लेने, उचित व्यवहार करने आदि दस्तूर गुणों का वृत्तात है।

इससे मुगल सल्तनत की मान्यताओं तथा अनुभवों की जानकारी मिलती है।
(पत्र–८)

२. महाराजा विजयसिंह रो नित्य कर्तव्य :–

जोधपुर के महाराजा विजयसिंह के नित्य कर्तव्य दिनचर्या का उल्लेख किया गया है। (पत्र–२)

११२. याद दास्त राठौड़ों री

१. याद दास्त राठौड़ों री, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३९६३९, ४. १९ × ११.५ सेमी०, ५. १३, ६. १७-१९, ७. १९वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रारम्भ में वर्णित है कि मोटा

राजा उदयसिंह की मृत्यु के पश्चात् (वि० सं० १६५२) सोजत का परगना कब किसके अधिकार में रहा। फिर राठौड़ दुर्गादास व अन्य राठौड़ सरदारों द्वारा अजीतसिंह के विषै में की गई सेवाओं के अतिरिक्त शहजादे अकबर का भी विवरण दिया है।

प्रारम्भ—

"याद दास्त

सं० १६१२ मोटो राजा देवलोक हुवा नै राजा सूरजसिंघजी टीके बैठा तरै पातिसाह अकबर सं० १६५३ प्र० सोजत जैतारण राव सगतसिंघ मोटा राजा रौ ती नुं दी(यो) राजा सुरजसिंघजी गुजरात था ...... आदि।"

ग्रथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। पत्र सब खुले हैं, किनारों से खण्डित हैं। सोजत के इतिहास-अध्ययन हेतु उपयोगी है।

११३. राजपूत शाखाओं री विगत आदि

१. राजपूत शाखाओं री विगत आदि, २. रा० शो० सं०, ३. २७३७, ४. २.२१ × ३० सेमी०, ५. एक लम्बा पत्र, ५. लगभग ३०८, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ में इस एक पत्र का ऊपरी हिस्सा फट कर अलग हो गया है। प्रारम्भ में लिपिकार ने यह बताया है कि पृथ्वी पहले जल में समाई हुई थी और सात समुद्र थे, इसी प्रकार सूर्य चंद्रमा की जानकारी कराई है। पत्र खण्डित होने के कारण पूरा वृतात नहीं मिलता है।

प्रारम्भ—

"........लाख राहुउ-चोबे छै। तेह थी अर्घ केतक हिजै। हिवै चौरस रो मांन कहै छै.......इत्यादि।"

१. सूर्य वंशी राजा तथा सतजुग कलयुग रो वर्णन :-

१६ सूर्य वंशी राजाओं का उल्लेख किया गया और लिखा है—

"३२ हाथी रो बळ पत्री में हतो, एक वार बोलता, २१ बार पाळता, अस्त्री पतीव्रता धरम पाळती, धरम रा पग च्यार हुता, ब्राह्मण कण ही नै नवता नही, पृथ्वी में सदा धांन नीपजतो, वनास्पती १२ महिना फली फुली रेहती, मावीत पैली छोरू न मरता, सोना री मोहर चालती, लोक नै व्याधि पीडा न होती, जुठो न बोलता, बल भेद न हुतो, पार की अस्त्री सांमु जोवता नही, अस्त्री परपुरस सांमो नहीं जोवती, कळेस न हुतो, ...मनुष्य स्वर्ग मे जावता, देवता मृत्युलोक

में भावता, ""कांमधेनु कहता तरै दूध देती, काचो दूध पीवता, नै काचा फळ पावता, तदि पेट में दरद होवण लागो तदि ब्रह्माजी नै कयो, तदि ब्रह्माजी अगनि देव पैदास कीधो नै कयो—इण में पकाय नै खावो ...... ।"

त्रेता युग तथा कलयुग का भी वृतांत दिया है तत्पश्चात् विभिन्न राजपूत जातियों के शाखाओं के नाम अंकित है जो नैणसी की ख्यात से कुछ भिन्न है ।

२. परमारों की ३५ शाखाओं रा नाम :–

यहाँ परमार राजपूतों की ३८ शाखाओं के नाम इस प्रकार अंकित है—

"(१) सरेचा परमार, (२) काबा परमार, (३) काटा परमार (४) काला परमार, (५) कुंवद परमार, (६) सबला परमार, (७) डोडीया परमार, (८) कुडली परमार, (९) भाभा परमार, (१०) भाइल परमार, (११) धाधु परमार, (१२) गोगुदो परमार, (१३) घुपर परमार, (१४) मोहावत परमार, (१५) सीलवत परमार, (१६) चरडावत परमार, (१७) पांणीवल परमार, (१८) चोसा परमार, (१९) ठव्हु परमार, (२०) देवल परमार, (२१) घरसीया परमार, (२२) भीपद परमार, (२३) आवुहर परमार, (२४) वाहेगड़ा परमार, (२५) विकमाइत परमार, (२६) जोगाइत परमार, (२७) भोजाइत परमार, (२८) उजेणीया परमार, (२९) खेखा परमार, (३०) एरंड परमार, (३१) सोढ़ा परमार, (३२) मायी परमार, (३३) चांदाउल परमार, (३४) मोहित परमार, (३५) कालोरा परमार, (३६) कालमुहा परमार, (३७) जैमल परमार, (३८) वाचेडा परमार ।"

३. सोलंकियों की शाखायें :–

सोलंकियों राजपूतों की १६ शाखाओं के नाम इस प्रकार दिये है—

"(१) वाघेला सोलंकी, (२) वीरपुरा सोलंकी, (३) वाघडीया सोलंकी, (४) साहेचा सोलंकी, (५) भीनमाला सोलंकी, (६) मणाउवा सोलंकी, (७) माचाला सोलंकी, (८) आलपचा सोलंकी, (९) वाघरेचा सोलंकी, (१०) लाखेचा सोलकी, (११) रावरचा सोलंकी, (१२) वाखसेणा सोलंकी, (१३) उथमणा सोलंकी, (१४) खोडेचा सोलंकी, (१५) भमरणीया सोलंकी, (१६) चावडा सोलंकी ।"

४. चौहानों की शाखायें :–

प्रसिद्ध चौहान, राजपूतों के २५ शाखाओं के नाम इस प्रकार उद्धृत है—

"(१) सोनगरा, (२) देवड़ा, (३) हाडा, (४) खीची, (५) वंका, (६) वकर, (७) चंदेसा, (८) मादेसा, (९) सांचोरा, (१०) बालीया, (११) मोहल,

(१२) माल्हण, (१३) भादरेचा, (१४) खाडेचा, (१५) पापरेचा, (१६) वारदेचा, (१७) उदेएाचा, (१८) वालोचा, (१९) खडेचा, (२०) वोहा, (२१) उदेएाचा, (२२) उल्हेचा, (२३) सुपरचा, (२४) वडगामा, (२५) सहवाडेचा।"

५. राठौड़ों की शाखायें :–

राठौडों की शाखाएँ इस प्रकार लिपिबद्ध है—

"(१) कनोजा, (२) गोहिल, (३) गलहथा, (४) इडरीया, (५) सखोबीर, (६) घुहमीया, (७) घंघलीया, (८) मडबोला, (९) ग्रासला, (१०) कोटेचा, (११) जमहेला, (१२) मुहपाखेड़ेचा।"

ग्रंथ के अन्त में गौतम स्वामी का वृत्तांत है और एक हासिये में ३५ सवलों की सारणी बनी हुई है।

अन्तिम पंक्ति—

"मेघाच·········पु० कल्यांणजी मा० २ प्रभा कल्यादे पु० रवजी कल्यांदि मा० केसर दे पु०।"

यह पूरा पत्र एक व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। पत्र कीट-भक्षित होने के कारण कहीं पढ़ने में असुविधा होती है।

११४. महाजनों तथा राजपूतों री शाखाओं, ओहदेदारों री विगत आदि

१. महाजनो तथा राजपूतों री शाखाओं, ओहदेदारों री विगत आदि, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १६५८५, ४. २७.५ × १८.४ सेमी०, ५. १९९, ६. २०-२४, ७. वि० सं० १९२६, ई० सन् १८६९, जोधपुर, ८. नारसिंह, ९. राजस्थानी, देवनागरी, हिन्दी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ मे संग्रहीत महत्वपूर्ण कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. पातस्याओं री पुस्तक :–

इसमे दिल्ली पर राज्य करने वाले हिन्दू राजाओं तथा मुगल बादशाहों के नाम, सूबे की विगत इत्यादि अंकित है।

प्रारम्भ—

"हिन्दू मुसलमान इतना बरस राज कीयो हिंदुसतान री बादशाही मे इतनी पृथ्वी इतना सूबा जां की विगत आदि।"

२. बाल समंद का बाग में आम छै ज्यां री जात :–

१. श्रीफल नावै, २. काकडियो, ३. परबूज्यो, ४. बगियावालो, ५. इमरत्यो, ६. पतास्यो, ७. कालो, ८. सिदूस्यो, ९. पीगस्यो, [illegible], ११. ताडियो, १२. मेवाड़ो, १३. गोटको, १४. आवलोटण।

३. महाजनों की साडी बारा जात की विगत :–

१. ओसवाल, २. पोरवाल, ३. श्रीमाल, ४. श्री श्रीमाल, ५. खडेलवाड, ६. महेसरी, ७. अगरवाल, ८. वीजावरगी, ९. नरसिंघपुर, १०. हूवड, ११. नागध्रुवा, १२. श्रावगा, १३. चीतोड़ री आधी जात ।

४. पुराण उप-पुराण री विगत :–

१८ पुरान और १८ ही उप-पुरान, ४ वेद ४ ही उपवेद, ६ खटशास्त्र तथा ६ खट काव्य के नाम अंकित हैं ।

५. राजपूतों की सालां :–

इसमें गहलोतों की २५, पंवारों की ३५, चौहानों की २४ शाखाओं के केवल नाम अंकित है । (पत्र–$\frac{1}{2}$)

६. राणाजी उदैपुर का परगना को विगत :–

इसमें उदयपुर के विभिन्न परगनों में पड़ने वाले गांवों की संख्या दी है । यथा—३०१ चीतोड़ का, ३६० गोडवाड़ का, ३४० जवासरा, ५२ गरवारा गांव ।

७. कुरब इनायत सरदारों नें होवे ज्यांकी विगत[1] :–

सरदारों को दिये जाने वाले ३७ कुरब कायदों का उल्लेख है ।

८. जोधपुर रा ओदेदारों री विगत[2] :–

इसमें ८६ राजकीय ओहदों के नाम दिये है । (पत्र–$\frac{1}{2}$)

९. पठाण की छत्तीस जात को विगत :–

पठानों की ३६ शाखाओं के नाम दिये है ।

१०. राजा, राव नें राणा री खिताब हुवै ज्यांकि विगत :–

विभिन्न राज्यों के राजाओं की पदवियों का नामोल्लेख है ।

११. याददास्ती मारवाड़ का सिरदारां के रेव भाईवो जीलो पड़ उतर आंका गांवां की वा रेव की विगत संमत १९०५ की साल :–

वि० सं० १९०५ मारवाड़ के विभिन्न जागीरदारों के रेख इत्यादि का ब्यौरा दिया गया है । यथा—

---

१. प्रकाशित, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर, 'मारवाड़ रा परगनां री विगत, (परिशिष्ट ७, पृ० ४८४, ४८५)

२. प्रकाशित, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर, 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' (परिशिष्ट ६, पृ० ४८२, ४८३)

(१२) माल्हण, (१३) भादरेचा, (१४) साडेचा, (१५) मापरेचा, (१६) वारदेचा, (१७) उदेणचा, (१८) वालोचा, (१९) खडेचा, (२०) वोहा, (२१) उदेणचा, (२२) उल्हेचा, (२३) सुपरचा, (२४) वडगामा, (२५) सहवाडेचा।"

५. राठौड़ों की शाखायें :-

राठौड़ों की शाखाएँ इस प्रकार लिपिबद्ध है—

"(१) कनोजा, (२) गोहिल, (३) गलहया, (४) इडरीया, (५) सखोधीर, (६) घुहमीया, (७) धंधलीया, (८) अडबोला, (९) मासला, (१०) कोटेचा, (११) जमहेला, (१२) मुहपासेड़ेचा।"

ग्रंथ के अन्त में गौतम स्वामी का वृत्तांत है और एक हासिये में ३५ धवलों की सारणी बनी हुई है।

अन्तिम पंक्ति—

"मेघाच·······पु० कल्याणजी मा० २ प्रभा कल्यादे पु० रवजी कल्यादि मा० केसर दे पु०।"

यह पूरा पत्र एक व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। पत्र कीट-भक्षित होने के कारण कही पढ़ने में असुविधा होती है।

११४. महाजनों तथा राजपूतों री शाखाओं, ओहदेदारों री विगत आदि

१. महाजनों तथा राजपूतों री शाखाओं, ओहदेदारों री विगत आदि, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १६५८५, ४. २७.५ × १८.४ सेमी०, ५. १६६, ६. २०-२४, ७. वि० सं० १९२६, ई० सन् १८६९, जोधपुर, ८. नारसिंह, ९. राजस्थानी, देवनागरी, हिन्दी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में संग्रहीत महत्वपूर्ण कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. पातस्याओं री पुस्तक :-

इसमें दिल्ली पर राज्य करने वाले हिन्दू राजाओं तथा मुगल बादशाहों के नाम, सूबे की विगत इत्यादि अंकित है।

प्रारम्भ—

"हिन्दू मुसलमान इतना वरस राज कीयो हिंदुसतान री बादशाही में इतनी पृथ्वी इतना सूबा जां की विगत आदि।"

२. बाल समंद का बाग में आम छैं ज्यां री जात :-

१. श्रीफल नावं, २. काकडियो, ३. परबूज्यो, ४. बगियावालो, ५. इमरत्यो, ६. पतास्यो, ७. कालो, ८. सिंदूरयो, ९. पीगस्यो, १०. बावनो, ११. ताडियो, १२. मेवाड़ो, १३. गोटको, १४. आवलोटण।

३. महाजनों की साडी बारा जात की विगत :—

१. ओसवाल, २. पोरवाल, ३. श्रीमाल, ४. श्री श्रीमाल, ५. खंडेलवाड, ६. महेसरी, ७. अगरवाल, ८. बीजावरगी, ९. नरसिंघपुर, १०. हूवड, ११. नागभ्रुवा, १२. श्रावगा, १३. चीतोड़ री आधी जात।

४. पुराण उप-पुराण री विगत :—

१८ पुरान और १८ ही उप-पुरान, ४ वेद ४ ही उपवेद, ६ खटशास्त्र तथा ६ खट काव्य के नाम अंकित हैं।

५. राजपूतों की साखां :—

इसमें गहलोतों की २५, पंवारों की ३५, चौहानों की २४ शाखाओं के केवल नाम अंकित है। (पत्र–$\frac{2}{१}$)

६. राणाजी उदेपुर का परगना की विगत :—

इसमें उदयपुर के विभिन्न परगनों में पड़ने वाले गांवों की संख्या दी है। यथा—३०१ चीतोड़ का, ३६० गोडवाड़ का, ३४० जवासरा, ५२ गरवारा गांव।

७. कुरब इनायत सरदारों नं होवे ज्यांकी विगत[१] :—

सरदारों को दिये जाने वाले ३७ कुरब कायदों का उल्लेख है।

८. जोधपुर रा ओदेदारों री विगत[२] :—

इसमें ८६ राजकीय ओहदों के नाम दिये हैं। (पत्र–$\frac{3}{१}$)

९. पठाण की छत्तीस जात की विगत :—

पठानों की ३६ शाखाओं के नाम दिये है।

१०. राजा, राव नं राणा री खिताब हुवै ज्यांकि विगत :—

विभिन्न राज्यों के राजाओं की पदवियों का नामोल्लेख है।

११. याददास्तो मारवाड़ का सिरदारां के रेख माईयो जीलो पड़ उतर आंका गांवां की वा रेख की विगत संमत १९०५ की साल :—

वि० सं० १९०५ मारवाड़ के विभिन्न जागीरदारों के रेख इत्यादि का ब्यौरा दिया गया है। यथा—

---

१. प्रकाशित, सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर, 'मारवाड़ रा परगनां री विगत, (परिशिष्ट ७, पृ० ४८४, ४८५)

२. प्रकाशित, स० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर, 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' (परिशिष्ट ६, पृ० ४८२, ४८३)

१. चांपावत बभूतसिंघजी के पिडां ८७७३/गांव ६७, भायपो ५२७७५/गांव २८, पडउतर गाव २०, १४६६२५

२. श्राउवा कुशालसिंघजी रेष ४०४०० गांव २५ भायपो जिला २८२२७॥) पडउतर १३०००/३ १७॥

१२. मारवाड़ का सिरदारों की थांप ठिकाणा रो विगत :–

इसमें चापावत, कूंपावत, उदावत, मेड़तिया, करमसोत, जोधा, करणोत, जैतावत, चादावत, चौहान, भाटी, राणावत, महेचा आदि राजपूत जाति के ठिकानों के नाम दिये हैं। (पत्र–१)

१३. फुटकर बातों राजनीत प्रस्तावीक दोहा :–

इसमें अकबर बादशाह व बीरबल के किस्से तथा अन्य फुटकर राजनीति की बातें आदि लिपिबद्ध हैं। (पत्र–३५½)

१४. दिली के बादशाह् की सूबा की विगत :–

इसमे ११ सूबो की संक्षिप्त विगत इस प्रकार दी गई है—

प्रारम्भ—

"सूवो पास दिली को, फौजदार ४, परगना ६११, गांव सठसट हजार आठ से तिराणवें, सिरकार २०,

अन्त—

सूबा ११ फौजदार ४५ सिरकार १६७, परगना ३१४२, गांव ७०३०४८ जींका रूपया ३५६२६५६६।" (पत्र–१)

१५. अजीतसिंह रै परवार री विगत :–

महाराजा अजीतसिंह की संतति का नामोल्लेख है।

१६. अलंकार आसायान् प्रबोध सास्त्रम :–

दोहा—

"वरन विमल बसन वाहन विधि विदि विमल विचार
वंयूं वर वानी बनै विमल वरन विस्तार
दीनो सुगम दिपाय सब सुघराई को पंथ ॥७७६॥

इती श्री अलंकर आसया नृपबोध सास्त्रम संपूर्णम। ········लीषतं जमादार तुवर नारसिंघ जोधपुर मध्य महाराज केसरीसिंघजी की हवेली········स्व पठनारथ संमत १६२६ का मीती सावण वदि १ प्रथम सुकरवार को समास········।"

(पत्र–६३)

इनके अतिरिक्त अध्यातम प्रकाश ग्रंथ, वसिष्ट सार ग्रंथ, विग्यार्थ कौमदी आदि कृतियाँ संग्रहीत हैं। अन्त में काफी पत्र खाली पड़े हैं। ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। ग्रन्थ पर गत्ता मढा हुआ है।

११५. जैतावत राठौड़ों री हकीकत इत्यादि

१. जैतावत राठौड़ों री हकीकत इत्यादि, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४८, ४. २८.४×२१.५ सेमी०, ५. २८३, ६. १६-२०, ६. १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०, इसमे राव रिड़मल के प्रपौत्र व राव पंचायण के पुत्र राव जैता के वंशजों (कुछ) का हाल दिया है जो बगड़ी इत्यादि गावों के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

१. वार्गासंघ भगवांनदासोत श्रौर पीढ़ियों का हाल :–

बगड़ी के ठाकुर वार्गासिह के पुत्र भगवांनदास और उसके वंशजों का विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

"भगवांनदास भागसीघोत पीढ़ी बगडी..........भगवांनदासजी रै वैग्राव भटीयाणी......हीरदासोत कंवर सुजाणसिंघजी १, उदैभांणजी २, जगतसिंघजी ३

महाराजा श्री गजसिंघजी ठाकुरों भगवांनसींघजी नु' बगड़ी दीनी समत १६८४ माहा वद २ भगवांनदासजी रै दूजो ब्याव सीसोदीणी ...... ।

महाराजा गजसिंह नु' पातसाह जहारीर गढी कोट उपर'विदा किना तरै राड़ हुई.......तठै भगवांनदासजी पूरै लोहां होय नै कांम आया.......तिण भाव रौ गीत—

कवल अड़े ग्राकास जुवाल जड़े सीस कद
खड़हड़ै पड़ै हाक अनेक वांम हड़वड़ै दीली....... ॥१॥"

इसके बाद भगवांनदास के ज्येष्ठ पुत्र सुजाणसिंह व उसके वंशजों का हाल चलता है जिसमें मुख्य रूप से उनके विवाह, संतति, जोधपुर महाराजाओं की ओर से लड़े गये युद्धों इत्यादि का विवरण दिया गया है। इसमें किसी को नया गांव इत्यादि जागीर में मिला उसका भी जिक्र यथा स्थान किया गया है। अन्त में मेगसिंह हिंदुसिघोत के पुत्रों की नामावली दी है। (पत्र–७५)

२. गोइंनदास मगावत री पीढ़ियां :–

जैतावत गोयंददास की संतति, उसके द्वारा जोधपुर राजघराने में की गई सेवाओं का वृत्तांत, तत्पश्चात् उसके वंशजों का हाल दिया है।

प्रारम्भ—

"गोइंददास रै ब्याव देवड़ी रै, बेटो सुजाणसिंघ दूजो ब्याव चहुवांणजी बेटो कीसनसिंघ, तीजो ब्याव भटीयांणी रै बेटो कांनसिंघ, चोथो ब्याव सीसोदांणी रै बेटो सुन्दरदास

महाराजा श्री सूरसिंघजी हरीयामालो गांव...... संवत् १६६५ में इनायत कियो पछै महाराज श्री सूरसिंघजी सारा सीरदारा नै ले नै चडीया सो अजमेर डेरा हुवा पातसाह जहांगीर ख्वाजे साहब की जात करण नै आयो .... ।"

अन्त में भभूतसिंघ के पुत्रों के नाम दिये है । (पत्र–३१)

३. जगनाथसिंघ वागसींघोत री पीढ़ी :–

इसमें जगनाथसिंह वागसींघोत के वंशजों का हाल दिया है ।

प्रारम्भ—

"जगनाथ रै ब्याव चुंडावत अभसिंघ बगड़ी सुं उठ | सावस गांव बसायो नाव केल्याद दीनो सं० १६७७ रा महा वद ३ भगड़ा रा सीव गांव वसायो पछै महाराज श्री गजसिंघजी दिली पधारिया नै पछै सहजादो पुरम दवण मे........ ।"

अन्त में देवीसिंह के ६ कुंवरानियो के नाम अंकित है । (पत्र–११)

४. रांमसिंघ कूंमसिंघोत री पीढ़ी :–

इसमें जैतावत कूंभकरणोत के वंशजो का विवरण दिया गया है ।

प्रारम्भ—

"रांमसिंघ रै ब्याव सोलंकणी उमजी का गुड़ी की बेटी—सीवदांनसीघजी कानजी कांम आया मेरां सु झगडो कर नै ...... ।"

अन्त में सादुलसिंह कुशसिंघोत का वृत्तात है । (पत्र–१२)

५. देईदास जैतसिंघोत री पीढ़ी :–

राठौड देवीदास जैतसिंघोत के वंशजों का हाल दिया है ।

प्रारम्भ—

"देवीदास रै ब्यांव भटीयांणी रै बेटो सादुलसिंघ आसकरण, ..., दूजो
१ २
ब्याव चवोंण रै बेटो भोपतजी ...., रावजी श्री मालदेजी सूं देवीदासजी बगडी इनायत हुई । संमत १६११ रा वैसाप वद ३...... ...... ।"

अन्त में करणसिंघ मांनीसिंघोत का वृत्तांत दिया है । (पत्र–८०)

६. मारवाड़ गजट री खुलासो :–

इसमें ई० सन् १८८३ से १८८६ तक के मारवाड़ के गजट का खुलासा किया गया है । प्रत्येक दिन घटने वाली अनेक घटनाओं, रेखें इत्यादि मुकरर करने,

हासल लेने, पानी की व्यवस्था करने, विशिष्ट व्यक्तियों के मृत्यु शोक प्रकट करने, जन्म उत्सव, वर्ष गांठ इत्यादि मनाने, इनाम आदि दिये जाने, वस्तुओं के भाव आदि अंकित हैं।

प्रारम्भ—

"ता० २१ मई सन् १८८३ वैसाष सुद १४ तृतीक सोम १९३९ अफसोच सुं आ षवर दरज की जावे है वैसाष सुद ८ नै महाराज श्री भोपालसिंघजी साहबां रा कंवर जो के महाराज श्री रणजीतसिंघजी साहबां रै पोळे था छोटी अवस्था मे घांम पधार्‌या सुणया......।"

७. स्वामी दयानन्द का जोधपुर आगमन :–

प्रारम्भ—

"ता० ४ जून सन ८३ जेठ वद १४.........सांमी दयानंद सरसतीजी महाराज जेठ वद १० नै जोधपुर आया...... रात रा ६ वजे सुं ले नै आठ वजे तांई लोगां नै वाख्यांन सुणाया, बहोत आदमी सवाल करै।"

एक जगह अनाज का भाव इस प्रकार दिया है—

असाढ़ वद ५ नै समत १९३९ रा धांन री औ भाव थो तोल अंगरेजी सुं—

नांम जीनस	सेर	छटांक	
१. गेहुं	√ ।)५	१५	
२. बाजरी	√ ॥)	—	
३. मूंग	√ ।)८	१२	
४. मोठ	√ ॥)८	१२	
५. चीणा	√ ।)८	१२	
६. घी	१	१०	
७. तेल	५	१०	(पत्र–१८२)

प्रतिलिपि अनेक व्यक्तियों के हाथ से की गई है। लिखावट घसीट में व अशुद्ध है।

११६. महाराजा मानसिंहजी रै गांवों री तफसील

१. महाराजा मानसिंहजी रै गांवां री तफसील (चौपड़ा हिन्दूमल तालके फिरसत), २. रा० शो० सं०, ३. ६७३१, ४. ५४×१३.५ सेमी० (बहीनुमा), ५. १८८, ६. २०-२७, ७. १६वी शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में महाराजा मानसिंह के समय जोधपुर, सोजत, महेवा, सीवाना पोकरन, फलोदी, जैतारण आदि परगनों के गांवों की विगत दी गई है। प्रारम्भ मे जोधपुर के आस-पास के गावों के नाम उसकी रेख, उस समय वह गांव किसके पट्टे में था अंकित है। एक जगह सासण के गांवो की रेख का भी उल्लेख है।

प्रारम्भ—

"श्री नाथजी साय छै

स्वारूप श्री अनेक सकल सुभ ओपमा विराजमान श्री राज राजेश्वर महाराजाधिराज श्री १०८ श्री मानसिंह महाराज कंवर श्री छत्रसिंघजी देव वचनायत मुकांम पाव तखत गढ़ जोधपुर चौकी नवेस चोपडा हीदुमल रूघनायोत तालके फीरसत री वही ......१८६५ रा।"

एक गाव का उदाहरण प्रस्तुत है—

गांव भंवर रेष ७०००

रा० इंदरकरण अपेकरणोत पा० करणोत

रा० कीलांणसिंघ सेरसिंघोत पा० करणोत

रा० १८६४ री उनाली था सारो ही गांव

रा० कीलांणसिंघ सेरसिंघ वीसनसिंघोत पा० करणोत रै......भाव २ री रेष ८०००।

ग्रंथ ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। उस समय कौनसा गांव किस जागीरदार के पट्टे में था व उसकी रेख क्या थी इसकी जानकारी मिलती है, मानसिंहजी ने कई जागीरों में परिवर्तन किये थे इस दृष्टि से भी इस ग्रंथ की उपयोगिता है। ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य नही है।

११७. मारवाड़ के महाराजाओं, जागीरदारों रौ हाल

१. मारवाड़ के महाराजाओं, जागीरदारां रौ हाल, २. रा० शो० सं०, ३. ८१६०, ४. २४×१६ सेमी०, ५. ३३४, ६. ११-२१, ७. १६वी शताब्दी

का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, हिन्दी, देवनागरी, १०. ग्रंथ का प्रारम्भ मारवाड़ के महाराजाओं की पीढ़ियों से किया गया है। आगे विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. पांप चांपावतों रै ठिकाणों री पीढ़ीयां :–

इसमें चांपावतों के विभिन्न ठिकानों और ठाकुरो की पीढियो के नाम अंकित है। ठिकानो के नाम क्रम इस प्रकार है—गाव आऊवा, गाव रोयट, गांव आहोर, गांव पोकरण, दासपां, गांव बाकरा, गाव खारडा, गाव हरसौळाव इत्यादि ।

(पत्र–१)

२. कूंपावतों रा ठिकाणा :–

कूंपावतों के ठिकानों के ग्राम और वहाँ के ठाकुरो की वंशावली अंकित है। ठिकानों के नाम इस क्रम से है—गाव चण्डावल, गाव कन्टालिया, गाव सिरियारी, गांव चेलावास, गाव धणला और गजसिंघपुरो ।

३. पांप जैतावतां रा ठिकाणा :–

जैतावतां के ठिकानों में गाव बगडी का वृत्तात है। आउवा के बारे में लिखा है कि भैरूदासजी ने बसाया और अजीतसिंह के विखे मे जब सुरजमलोत ने किसी प्रकार की सहायता नही दी तब आउवा उससे छीन कर तेजसिंह चांपावत को दे दिया। फिर आगे पोकरन ओर आसोप का वृत्तात है। (पत्र–२)

४. पांप करनोतां रा ठिकाणा :–

दुर्गादास का वृत्तांत और करनोतों के ठिकानों का नामोल्लेख है—काणोणो, समदड़ी, वाधावास, भंवर, हीगोलो, चादसमो, भाखरी और कीटणोद। (पत्र–१)

५. पांप जोधों रा ठिकाणा :–

राठौड़ों की जोधा खांप के कुछ ठिकानों और वहां के ठाकुरों की पीढियां अंकित है—"गांव पेरवो, गांव दुगोली, गांव लोटोती और गाव लाडनू ।"

(पत्र–२)

६. पांप मेड़तियों रा ठिकाणा :–

जोधाजी के पुत्र दूदाजी द्वारा १५१८ में मेडता बसाये जाने का और मेड़ता कब-कब किसके अधिकार में रहा उसका वृत्तांत है। आगे ठिकाना रियां और आलणियावास का वृत्तात है। फिर चांदाजी द्वारा संवत १६०३ में बलूंदा बसाने तथा नवाब हुसैन अली द्वारा चूक से संवत १६४३ में चादोजी के मारे जाने का वृत्तांत है। फिर चांदोजी के वंशजों का हाल है। गांव कुड़की, गाव सेवरीयो, गांव नोषा, गांव गुलर, गांव जावळा, गांव भापरी, गांव रोयडी इत्यादि गांवो के

जागीरदारों का हाल फिर गोयंददासोत मेड़तियों व उनके वंशजों का हाल है। इस प्रकार मेड़तियों की विभिन्न सांपों का वृत्तांत चलता है। (पत्र–६$\frac{?}{?}$)

७. यांप उदावतों रा ठिकाणा :–

राव सुजाजी के पुत्र उदाजी[1] द्वारा गुदड़ी बाबा की कृपा से जैतारण पर अधिकार करने के तत्पश्चात् इनकी मासी के शाप देने पर उदा के गलित कुष्ठ होने, बाद में गुदड़ी बाबा के शाप से ही उदा के वंशज रतनसिंह के हाथ से जैतारण निकलने इत्यादि का वृत्तांत है। फिर उदावतों के ठिकानों के गांव रायपुर, खीपीयो, नीबाज, रास, पीह और जागीरदारों का हाल संक्षेप में है। (पत्र–६)

८. यांप करमसोतों रा ठिकाणा :–

इसमें गांव खींवसर के कुछ जागीरदारों के नामोल्लेख के बाद जोरावरसिंह के वंशजों का हाल दिया गया है। आगे मारवाड़ी में लिखा है—

"१८७७ रा मिगसर में भोपालसिहजी दुरजनसालजी नै गढ़ पर पकड़ कैद किया ......पटो खालसे कीयो पछै १८८२ छुटा तरै खीवसर.........रा एक एक गांव दे छोडिया........।" (पत्र–१)

६. यांप पातावतों री :–

राव रिड़मल के पुत्र पाता के वंशज पातावत कहलाये। इसमे वर्णित है कि पातावतो के ठिकानो के गांव फलोदी परगने में हैं। (पत्र–$\frac{1}{2}$)

१०. खांप रूपावतों री :–

राव रिड़मल के पुत्र रूपा के वंशज रूपावत कहलाये। रूपावत राजाओ की चाकरी नही कर सके इसलिये उन्हें गांव नही मिले और मिले वे छीन लिये गये। (पत्र–$\frac{1}{2}$)

११. यांप बालों री :–

इसमें वर्णित है कि रिड़मलजी के पुत्र भाखरजी से बाला शाखा निकली, महाराजा मानसिंह के समय मे बालों को ठिकाने मिले गांव के नाम नौवलांणा, श्रेलांणो और मोकलसर दिये हैं।

१२. यांप सुंडा री :–

आस्थान के पुत्र जोप से सुंडा शाखा निकली, कोरणा ग्राम सुंडो का ठिकाना है। (पत्र–$\frac{1}{2}$)

---

१. उदाजी का वृत्तांत वैसा ही है जैसा रामकरण आसोपा ने (इतिहास निबाज, पृ० १३) दिया है।

१३. पांप नरावत री :–

वर्णित है कि नरावतों के पहले पोकरन गांव पट्टे मे था फिर महाराजा अभयसिंह ने रूपावतों को दिया और नरावतों को नागोर परगने का गाव मंडाणा मिला। (पत्र–१/४)

१४. खांप मंडल जी :–

राव रिड़मल के पुत्र मंडल के वंशज मंडलावत कहलाये इनका प्रमुख ठिकाना भंवरांणी है। (पत्र–३/४)

१५. खांप रायपालोतां री :–

वर्णित है कि यह खांप राव जोधाजी से फंटी है। इनको खास ठिकाने नहीं मिले, नागौर के कुछ गांव मिले हुए थे। (पत्र–१/४)

१६. खांप देवराजोतों री :–

वीरमजी के ज्येष्ठ पुत्र देवराज के वंशज देवराजोत कहलाये। देवराज को सेतरावा गांव मिला फिर गांव नायड़ाउ, दीवांणीयो, लोडतो, जेठांणियो, पीपासरीयां और देचु पट्टे मे मिले। (पत्र–१)

१७. खांप गोगादे :–

वीरमजी के पुत्र गोगादे के वंशज गोगादे राठौड़ कहलाये। वर्णित है कि वीरमजी जोयो द्वारा मारे गये उसका बैर गोगाजी ने लिया, इनके प्रमुख गांव केतु, खिरजों, मुंगरो, गडो, रांईसर, सेपाळो हैं। (पत्र–१/२)

१८. पांप महेचा :–

राव मल्लीनाथ के पुत्र जगमाल के वंशज व महेवा के स्वामी महेचा कहलाये। इनका प्रमुख ठिकाना जसोल और सिणदरी हैं। (पत्र–१)

१९. पांप जैतमाल :–

सलखा के पुत्र जैतमाल के वंशज जैतमालोत राठौड़ कहलाये। इनके प्रमुख ठिकानों के गांव गंगरांणा, कोटड़िया इत्यादि है।

२०. पांप सिंधल[1] :–

ऐसा वर्णित है कि यह पांप आस्थांनजी में आकर मिलती है। इनके ठिकाना का गांव कंवरली लिखा है। (पत्र–१/२)

---

१. ओझाजी (जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० १६३ पर) ख्यात के अनुसार लिखा है कि आस्थांन के पौत्र और सीधल के वंशज सीधल राठौड कहलाये।

२१. पांप भाटी :–

भाटियों को चाकरी से भूमि प्राप्त होने का उल्लेख है। जैसलमेर के संस्थापक व हरबु सांखला के भानेज जैसोजी थे और इसमें ऐसा भी वर्णित है कि हरबू सांखला को पूछ कर जोधाजी ने जोधपुर दुर्ग की नीव रखी। आगे लिखा है—

"....... पछै जोधोजी कयो—थांरा बेटा नै मेल जो सूं बेटा तो गयो नहीं नै जैसोजी परा गया, बेटा नै पूछीयो तरै केयो—हूंतो गयो नहीं नै जैसा नै मेलियो है, तरै हरबूजी केयो—इण गढ़ रा धणी में जैसां री सीर है, जद सू जैसावता रा गांव वालरवो, चामू, रायमलवाडो, मुंडियाला वगेरै नळयेरो ठीकांणो कुरब हाय है।"

आगे भाटियो के गांव लवेरा, चांमू, बालरवा, रायमलवाड़ो, मुंडियालो, कपुरियो, तापु, भणवांणो, भेड़ महेव, थारासणी अंकित है। अन्त में उरजनोत भाटियों और उनके गांवों के नाम दिये गये है। (पत्र–२½)

२२. पांप चंवाणां री :–

इसमें लिखा है कि चौहानो के प्रथम ठिकाने सांचोर में थे और यह खालसे हो जाने पर अब ठिकाणों का गांव चीतलवाणा है तथा चतुरभुजोत चौहानों के संबंध जोधपुर राजघराने मे होते आये हैं। गांव कील्याणपुर, रापी, संपवास इत्यादि ठिकानों के जागीरदारो की पीढ़ियां अंकित है। (पत्र–१)

२३. पांप रांणावतां री, गांव :–

राणावतो के ठिकाने सांडेराव व २-३ जागीरदारों के नाम अंकित हैं। (पत्र–½)

२४. पांप सोलंखीयों रा, गांव :–

सोलखियों के ठिकाने रूपनगर का संक्षेप में वर्णन है। (पत्र–½)

२५. पांप ईदां रा गांव :–

वर्णित है कि गांव वेलवो, बालेसर, देवातु, जीयावेरी, जीजणयालो इत्यादि गांव ईंदों के पट्टे में हैं।

२६. पांप मांगलियों रा, गांव :–

ओसियाँ का बापीणी गांव और अन्य १२ गांव मांगलियों के पट्टे में हैं। (पत्र–½)

२७. देवड़ां रा गांव :–

इसमें केवल भीनमाल परगने के बड़गांव और नोसरो गाव के जागीरदार देवड़ा भोमसिंह का नाम अंकित है। (पत्र–½)

२८. खवास पासवानां रा गांवां री विगत :—

इसमें खवास व पासवान के ओहदों पर चाकरी करने वालों को दिये गये गांव अंकित हैं।

"च्यार पांप ठेट सूं पावासी में है—पीची, घांधल, पड़िहार, गेलोत पछै दुजी पांप फुटकर" ..."

आगे उपरोक्त जातियों के गावो का हाल है। (पत्र–१½)

२९. ओसवालों री पांपां (सिंघवी) :—

लिखा है कि ओसवालों मे भंडारी, मुहणोत, सिंघवी, बछावत राजाओं के चाकर रहे है। तत्पश्चात् यह वर्णित है कि सिंघवी खांप किस प्रकार निकली तथा राजघराने में प्रमुख[1] सिंघवियो ने जो सेवाये दी उनका वृत्तांत है।

३०. भण्डारीयां री खांप :—

वर्णित है कि पहले भण्डारी मेवाड़ राणा की सेवा मे थे, राव रिडमल के वहां चूक से मारे जाने पर जोधा के साथ मारवाड में आ गये। आगे भंडारियों की विभिन्न खांपों और पीढ़ियां अंकित हैं। (पत्र–½)

३१. पांप मुहणोत :—

मुहणोत गौत्र की उत्पति रायपाल के पुत्र मोवणजी से होना लिखा है तथा जब से यह चाकरी करते आये हैं। (पत्र–½)

आगे लिखा है कि पहले कोलांणी ग्राम में ब्राह्मण रहते थे उनको व्यास की पदवी नहीं थी फिर उदैसिंह महाराजा ने इनको व्यास की पदवी दी।

३२. गढ़ मंडियों री विगत :—

पहले एक कवित्त दिया गया है फिर विभिन्न दुर्गों व शहरों के नाम, कब किसने बनाये उसका ब्यौरा दिया गया है।

३३. कवत्त पीरोजसा पातसा जात मका री जावतां :—

इस कवित्त के प्रारम्भ में बतलाया गया है कि फीरोजशाह ने मक्का जाते हुए मार्ग में पाली को लूटा। इस पर आस्थांन ने खेड़ से आकर उसके साथ युद्ध किया व वि० सं० १२४८ वैशाख सुदि १५ को मारा गया। आगे कवित्तों में मारवाड के महाराजाओं, मुस्लिम शासकों, जयपुर नरेशों की पीढ़ियो के साथ कुछ घटनायें वर्णित हैं। (पत्र–२)

---

१. विस्तार के लिये देखें (ओसवाल जाति का इतिहास) पृ० ७८

३४. नागौर रै परगना कोलीया री रेख, गांव री विगत :–

३६ गांवों की रेख और नाम दिये गये हैं। आगे दौलतपुरा की रेप दी गई है। डीडवाने के संवत १८०१ से १८२५ तक की पैदावार इसी प्रकार नांवा और सांभर की आमदनी संवत् १८३८ से १८४६ तक दी गई है। (पत्र–२)

३५. राठौड़ों री पीढ़ियों री ख्यात :–

आदिनारायण से पीढ़ियाँ अंकित हैं, आगे सिहाजी का हाल दिया गया है। महाराजा मानसिंह तक के राजाओं का हाल दिया गया है। कुछ स्थलों पर महत्वपूर्ण जानकारी इस प्रकार है—

भाटी गोयंददास प्रधान द्वारा की गई व्यवस्था (सूरसिंह का काल) :–

"गोयनदासजी सारा मुलक री सलुक बांदीयी, परगनां रा हाकम, कारकुन पोतदार, वाकानवेस वगैरे जोधपुर में छत्तीस ही कारखानां री दरोगाया मुकर कीया दीवाण, बगसी, खानसांमा, याद बगसी, चौकी नवेस इताद छत्तीस ही कारखांनो ओदा रहै, परगनां ओदार है सु सारा परड़ा गोयंदासजी वादीया, सारा उमरावा मुसदीया री लुगायां जनाना में जावती सु मोकुब राखी, आगे भोमीचारा वाळी चाल ही सु सारी राजथांन री रजवार रो सुकन बांदीयो, सिरदारां रा कुरब बांदीया, आठ मिसला च्यार डावी जीवणी ......।"

अन्त में सूरसिंह द्वारा बनाये गये स्थानों का विवरण है। (पत्र–४½)

मुहणोत नैणसी की मृत्यु सम्बन्धी ज्ञातव्य :–

मुहता नैणसी के बारे में लिखा है—"सं० १७२३ हुंसी हुंसार मो० नैणसी हो जीण सुं तागीर कर व्यास पदम नाभ नुं मेलीयो सु लोक वेराजी हुवो, पातसा कनै फराद गयी, तरै लाख १ री रकम छुडाई।

स० १७२३ पोव्द ६ मो० नैणसी सुदर नै ओरंगाबाद रा डेरा कैद कीया सं० १७२४ डंड कर छोडया.........सं० १७२६ म्हाव्द १ फेर कैद कीया, पछै औरंगाबाद सुं देस में जोधपुर मेलीया सु मारग में आवता दोनों भाई पेट मार मुवा। जद सुं श्री जी मोतां नै चाकर राखण री तलाक घाली........।"

अन्य अधिकारियों को पद दिये उसके बारे में लिखा है—"सं० १७२५ में राव आसकरण नीबावत करणोत नै परदांनगी नै.........केसरीसिंघ रांमचदौत नुं दीवाणगी दीवी, देस रो काम करण ने मेलिया।

महाराजा तखतसिंघ री मातमी करावण जयपुर महाराज रामसिंघ आया तिण री विगत :—

महाराजा तखतसिंह के देवलोक होने के तत्पश्चात् जयपुर महाराजा रामसिंह शोक प्रकट करने के लिये आये, उसका हाल दिया गया है। लिखा है—

"फागुण सुद १२ जैपुर सु पदारिया नै गांव डीगाड़ी में डेरा हुवा नै उठा सु रवानै घोड़े असवार हुय मातमी रै वासते गढ उपर पदारिया.......महाराज आपरै डेरे पदारिया तरै श्रीजी साव जैपर माराज डेरे पदारीया तरै तोपां री सील्कां दु तरफी हुई.......।" (पत्र–६½)

नकल वसीयत नावां महाराज श्री तखतसिंघजी री :–

महाराजा तखतसिंह ने अपने अन्तिम समय में वसियतनामा लिखी उसकी नकल लिपिबद्ध की गई है, जैसे—

"पड़दायतीयां बीना पटा दीयोड़ी है जनि कु छव छव हजार का पटा देणा, अगाडी मेने पटा दीया है जीसमें छव छव हजार से कमती होवे उसके बराबर कर देना। ....जनानां भावा मेरां बीनां पटां दीयाड़ो जिनकु दस दस हजार का पटा मोतीसिंघजी सरसते सब कु देना।" (पत्र–३½)

यह महत्वपूर्ण ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, लिपि घसीट में है, सुवाच्य नहीं है। ग्रंथ पर कागज का गत्ता चढ़ा हुआ है।

११८. जोधा राठौड़ों री विगत (प्रतिलिपि)

१. जोधा राठौड़ां री विगत (प्रतिलिपि) २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६३६, ४. २८.३×२१ सेमी०, ५. २१६, ६. १२–१३, ७. १६ वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें राठौड़ों की जोधा खांप के कुछ विशिष्ट पुरुषों व उनके वंशजों की विगत अंकित की गई है।

१. जोधा रतनसिंघोत री विगत :–

राव मालदेव के पुत्र रतनसिंह तथा उसके वंशजों का हाल दिया है। इनको भाद्राजण का ठिकाना मिला हुआ था।

प्रारम्भ—

"ठीकांणे भादराजण री तवारीख रावजी श्री मालदेवजी रै कंवर रतनसिंघ जी जोधपुर सुं ऊठ नै अवल में सरद मूकांम गांव गोदावे आय नै मूकरर कीयो गोदा रजपूत रो ३ सुं गांव गोदावो वसायो समत १६४२ रा.......पछै....... रतनसिंघजी नाराज हुय नै गांव गोदावा सुं उदैपुर रांणा सांगाजी कनै गया सो सागाजी महेरवांन हुव नै गांव चौरासी सूं फूलीयाठी..... ...दीवी।"

इस प्रकार रतनसिंह तथा उसके वंशजों के हाल में विभिन्न सरदारों द्वारा की गई राजकीय सेवाओं का वृत्तांत दिया गया है और उन सेवाओं के उपलक्ष

जो गांव इत्यादि उनको मिले उनका भी जिक्र किया गया है। रतनसिंह के वंशजों के नाम इस प्रकार आये हैं—

रतनसिंह, सादुलसिंह, मुकनदास, उदेभाण, बीहारीदास, वागसिंह, उदेराज, उम्मेदसिंह, जालमसिंह, बखतावारसिंह।

इनके बाद बखतावरसिंह के रानियों, कुंवरों, कुवरियों के नाम उनकी शादी विवाह का हवाला दिया है। इसी प्रकार उपरोक्त ग्रन्थ सभी रतनसिंघोत जोधा सरदारों के संतति इत्यादि का विवरण अंकित किया गया है। महाराजा सूरसिंह द्वारा मुंकनदास को भाद्राजण का पट्टा देने का उल्लेख इस प्रकार है—

"सादुलसिंघजी रै कंवर मूकनदासजी महाराज श्री सूरसिंघजी कनै बंदगी में हाजर रआ जद महाराजा साहब मेहरवान होय गांव भादराजण चौरासी गांव सूं ईनायत कीवी संमत १६५३ में।"

डोरी ग्राम दिये जाने का उल्लेख—

"करणसिंघजी विहारीदासजी रा नै चद्रभाणजी महाराजा अजीतसिंघजी रा बीघा में हाजर रेह बंदगी कीवी नै दुनाडे मोहकमसिंघजी मेडता रो धणी फौज लेने आयो १७६० मे झगड़ो हुवो जठै करणसिंघजी रै लोह लागा नै चद्रभांणजी रै ही लोह लागा इण वंदगी सूं अजीतसिंघजी गाव डोरी ईनायत कीवी समत १७६५ में ......।"

चद्रभाण को देवाण ग्राम इनायत करने का वृत्तात—

"घुनाडे झगड़ो हुवो उठै चद्रभांणजी नै वीहारीदास रै लोह लागा नै तरवार आछी बजाई, इण वंदगी सु महाराज अजीतसिंहजी साहब महरबान हुय नै चंद्रभाणजी नै देवाण गाव २ सुं ईनायत कीयो वीहारीदास री अरज सुं १७६५ मे।"

इसी प्रकार महाराजा अजीतसिंह द्वारा मूकणदासजी को भंवरी ग्राम १७६५ मे, महाराजा अभयसिंह द्वारा देईदास उदैभाणोत को ग्राम गोदावो समत १७८७ मे, इनके द्वारा ही लखधीर वीहारीदासोत को नीवलो ग्राम संवत १८०६ में, महाराजा अमरसिंह के द्वारा ही अमैराज (वगजी के पुत्र) को सेलड़ी ग्राम १८४७ मे, महाराजा मानसिंह द्वारा देवीसिंह कल्याणसिंघोत को जाड़ली ग्राम १८६४ में, इनके द्वारा ही भवानीसिंघ को ग्राम सीराणा १७६० में, मा० मानसिंह के द्वारा ही जगतसिंह को रांमा ग्राम १८६४ में, महाराजा सूरसिंह द्वारा लक्षमण (लिपमणजी) को पातांराबाळा ग्राम १६५३ मे, मा० वीजेसिंघ द्वारा लालसिंह को ग्राम उमकली १८४७ मे, मा० अजीतसिंह द्वारा सगतसिंह को तोडसी ग्राम

१७६५ में, मा० मानसिंह के द्वारा गुमानसिंघ को पीयलवास खारीयो ग्राम १७६४ में, इनायत करने का उल्लेख है। इसी प्रकार मजल, सीरांणो, लुणावो, सालीयो इत्यादि किस प्रकार किस को मिले उसका वृत्तांत आगे दिया गया है। इन सरदारों से संबंधित कुछ अन्य संक्षिप्त घटनायें अंकित की गई है।

(२) जोधा प्रतापसिघोत[1] :–

राव गागा के पुत्र प्रतापसिह और उसके वंशजों का हाल संक्षेप में दिया है।

प्रारम्भ—

"राव गांगाजी रा बेटा प्रतापसिंघजी री पीडीया री विगत—

प्रतापसिंघजी रा व्याव ३

१ भाटी रामसिंघजी री बेटी हीरकंवर लवेरा।

२ भाटी उदैसिंघजी री बेटी पनेकंवर बीकमकोर।

३ देवडा सुरतांणसिंघजी री बेटी हीरकवर सीरोही।

जिणांरा बेटा कीलांणदासजी⋯ ।"

इसी प्रकार इनके वंशजों का हाल दिया है, इनको गांव इत्यादि प्राप्त हुए उसका भी यथा स्थान जिक्र किया गया है—(सिकारपुरा, छोपीया, आंटण, सुरजवेरो आदि)

(३) जोधा किसनदासोत :–

गांगा के पुत्र किसनदास व उसके वंशजों का हाल है—

प्रारम्भ—

"कीसनदास गांगावत गांव २६० सूं सोजत पटे पाई समत १६८४। कीसनदासजी नरूका कु कपुर चद री बेटी⋯⋯।"

इसमें भी इनके वंशजों ठकुरानियों संतति तथा गांव आदि मिले उसका विवरण दिया है। (गांव—राजसर, वस्ती, कांकाणा, बकपुरो, उस्तरां, जूड़, वस्तो आदि)

इसके आगे फिर जोधा प्रतापसिंघोत के वंशजों का हाल आ गया है।

(४) जोधा महेशदासोत :–

मालदेव के पुत्र महेशदास और उसके वंशजों का हाल में उनकी ठकुरानियों, कुँवर-कुंवरियो तथा गांव इत्यादि मिले उनके नाम अनुच्छेद में अंकित हैं, यथा गांव पाटोदी, साई, तिंवरी, नाजांणो, किवण, फलसूंड, घड़सी रो वाड़ो आदि।

---

१. मारवाड के परगनों की विगत, ख्यातो इत्यादि में गागा के पुत्र प्रतापसिंह का उल्लेख नही है।

प्रारम्भ—

"रावजी श्री मालदेजी रै कंवर महेसजी, महेस मालदेवोत रै सोडा अपेराजोत री बेटी उमरकोट री, कंवर रामसिंह केसोदास दुदाजी कील्याण-दासजी..... ....।"

(५) जोधा सिवराजोत :—

राव जोधा के पुत्र सिवराज और उसके वंशजो का हाल दिया है जिसमें उनके ठकुरानियों, कुंवरों, कुवरियों उनकी शादी इत्यादि का विवरण अंकित है।

प्रारम्भ—

"राव जोधाजी रै कंवर सीवराजजी,....... सीवराजजी भाटी पुरणमलजी री बेटी, दूजी सोनगारा पेमचंद री बेटी।"

गुवाड़, रामासर इत्यादि गांवों के नाम अनुच्छेद पर अंकित है। गांव कब किसको मिले यह नहीं दिया है। अन्त में प्रयागदास उसके वंशजों के नाम आदि दिये हैं।

अन्तिम भाग—

"लालसिंघ रै चवांण मोकमसिंघ री बेटी, कंवर सुरतराम हरीसिंघ
१ १

अमरसिंघ .. ....।"
१

यह किसी मूल ग्रंथ की प्रतिलिपि है जो एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है। प्रतिलिपि अपूर्ण है, लिखावट अशुद्ध है। कागज मटमैले रंग के काम में लिये हैं।

यह ग्रंथ जोधा राठोड़ों के कुछ विशिष्ट सरदारो व उनके वंशजों के अध्ययन हेतु उपयोगी है, इसमे उनके संबंध आदि कहां हुए उसका भी विवरण यथा स्थान किया गया है।

११६. राठोड़ों रा दांन पत्रों री विगत री नकल

१. राठौड़ो रा दांन पत्रों री विगत री नकल, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६५०, ४. ३३.५ × २१ सेमी०, ५. ८१, ६. ३४, ७. २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ६. संस्कृत, देवनागरी आदि. १०, इसमें विविध राष्ट्रकूट अथवा राठौड़ राजाओं के दान पत्रों व शिला लेखों की प्रतिलिपियां संग्रहीत हैं। इनकी जानकारी सूची-पत्र में इस प्रकार अंकित है—

(१) राष्ट्रकूट (राठौड़) वंश के राजा अभिमन्यु का दान पत्र, इस दान पत्र में संवत नहीं दिया है किन्तु इसकी लिपि विक्रम संवत की छठी शताब्दी की है।

प्रारम्भ—

"ओं स्वस्ति अनेक गुण गणलंक्रत य शसा राष्ट्रकुटानां तिलक सूतो ......।"

(२) दक्षिण में एलोरा की गुफा में दशावतार के मन्दिर मे खुदा हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा दंतिदुर्ग के समय का पर्वतीय शिला लेख।

(३) कोल्हापुर राज्य के सामन्दगढ से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा दंतिदुर्ग का शक संवत ६७५ का दान पत्र—यह दान पत्र इस समय लंडन नगर रायल ऐसियाटिक सोसाईटी के प्राचीन वस्तु-संग्रहालय में रक्खा हुआ है।

(४) गुजरात के सुरतनगर से ५ कोस ईशान कोण मे आंतरोली गांव जमीन खोदते समय मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा कक्क का दान पत्र शक संवत ६७६ का (वि० सं० ८१४)

(५) दक्षिण मे कलाड़सी प्रान्त के पट्टड़ कल गांव मे विरूपाक्ष देव के मन्दिर के एक स्तम्भ पर खुदा हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा धारावर्ष (ध्रुव) के समय का लेख।

(६) निजाम के राज्य में पेठणनगर (प्रतिष्ठानपुर) से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा गोविन्द का दान-पत्र शक संवत ७१६ का।

(७) राष्ट्रकूट वंश के राजा गोविद (प्रभूत वर्ष का) दान-पत्र शक संवत ७२६ का।

(८) राधनपुर से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा गोविंद का दान-पत्र शक संवत ७३० का।

(९) दक्षिण में नाशिक प्रान्त डीडोरी तालुके के वाणी गांव से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा गोविन्द (प्रभूत वर्ष) का दान पत्र शक संवत ७३० का यह दान पत्र इस समय बम्बई नगर की ऐसियाटिक सोसाइटी के संग्रह में रक्खा हुआ है।

(१०) दक्षिण में मेसोर राज्य के तुंकुर परगने के कडब गांव से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा प्रभूत वर्ष का दान पत्र शक संवत ७३५ का।

(११) दक्षिण में सुप्रसिद्ध कनेरी की गुफा में खुदा हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा अमोघवर्ष (प्रथ्वीवलभ) के समय का पर्वतिय शिलालेख शक संवत ७६५ का।

(१२) इसी गुफा में अमोघवर्ष का दो और शिलालेख शक सवत ७७५ व ७९९ के।

(१३) बम्बई अहाते के धारवाड़ जिले के नवलगढ तालुके के शिरूर गांव में खड़े हुए एक पत्थर पर खुदा हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा अमोघवर्ष के समय का लेख शक संवत ७८८ का।

(१४) गुजरात के कपड वंश से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा कृष्णराज का दान पत्र शक संवत ८३२ का ।

(१५) गुजरात में नवक्षारी नगर से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा नित्यवर्ण का दान पत्र शक संवत ८३६ का ।

(१६) दक्षिण में कोल्हापुर से १२ कोस ईशाण कोण में सांगली नाम के गांव से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा गोविन्द (सुवर्ण वर्ष) का दान पत्र शक संवत ८५५ का ।

(१७) नागपुर के निकट के वरधास्थान से ४ कोस नेऋत्य कोण के वरधा गांव से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा कृष्ण (अकाल वर्ष) के समय का दान पत्र शक संवत ८६२ का ।

(१८) दक्षिण में कलाड़गी प्रान्त के इण्डि तालुके के सालोट्गि गांव के दरवाजे के पास खड़े किये हुए एक स्तम्भ की ३ बाजू पर खुदा हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा कृष्णराज के समय का लेख शक संवत ८६७ का ।

(१९) दक्षिण में खान देश प्रान्त के तलोदातालु के करदा गांव से मिला हुआ रा० वं० के राजा आघोघवर्ष का दान पत्र श० सं० ८९४ का, इस समय यह दान पत्र बम्बई नगर की ऐसियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में है ।

(२०) दक्षिण में खेरापाटन नाम के स्थान से मिला हुआ रा० व के राजा कवकल के समय का दान पत्र शक संवत ९३० का ।

(२१) कन्नौज के गहरवालों के दान पत्र कदनपाल व गोविन्द चन्द्र के ।

(२२) पश्चिमोत्तर देश के इटावा जिले के बसही गांव से मिला हुआ कन्नौज के राजा गोविन्द चन्द्र देव के समय का दान पत्र वि० सं० ११७४ का ।

(२३) पश्चिमोत्तर देश में सीतापुर इलाके के रेवां नाम के गांव के पास जमीन खोदते समय मिला हुआ कन्नौज के राठौड़ राजा गोविन्दचन्द्र देव का दान पत्र वि० सं० ११८० का ।

(२४) काशी से मिला हुआ कन्नौज के (राठौड़) राजा गोविन्द चन्दराव का दान पत्र वि० सं० ११८१ का ।

(२५) कन्नौज के (राठौड़) राजा गोविन्द चन्द्रदेव के समय का दान पत्र वि० सं० ११८२ का ।

(२६) काशी से मिला हुआ कन्नौज के राजा गोविन्दचन्द्रदेव के समय का ताम्रपत्र वि० सं० ११८५ का ।

(२७) काशी से मिला हुआ इन्हीं का दान पत्र वि० सं० ११९६ का ।

(२८) लंडन नगर की रायल ऐसियाटिक सोसाइटी के संग्रह में रखा हुआ युवराज जयचंद्र का दान पत्र वि० सं० १२२५ का।

(२९) काशी से ३ कोस ईशान कोण में सिहवर नाम के गांव में हल चलाते समय जमीन मे निकला हुआ कन्नौज के राजा जयचंद्र का दान पत्र वि० सं० १२३२ का।

(३०) काशी से कुछ दूर वरणा नदी के तट पर एक खेत मे से निकला हुआ जयचंद देव का दान पत्र वि० सं० १२३३ का।

(३१) बरणा नदी के तट पर के खेत में मिला हुआ जयचन्द्र देव का दान पत्र वि० सं० १२३३ का।

(३२) इसी जगह मिला हुआ जयचंद्र देव का दान पत्र वि०सं० १२३४ का।

(३३) अवध में फैजाबाद के पास से मिला हुआ जयचंद देव का दान पत्र वि० सं० १२४३ का।

(३४) बडौदा शहर में एक मकान की नीव खोदते समय मिला हुआ गुजरात के राष्ट्रकूट राजा कर्क (सुवर्ण वर्ष) का दान पत्र शक संवत ७३४ का।

(३५) गुजरात में खंभात की खाड़ी के निकट मई नदी से कुछ दक्षिण मे कावी नाम के गांव से मिला हुआ गुजरात के राजा (राष्ट्रकूट) गोविन्दकट का दान पत्र शक संवत ७४९ का।

(३६) दक्षिण में खान देश के शाहडे तालुके के तोरखेड़े गांव से मिला हुआ गोविन्दराय के समय का दान पत्र शक संवत ७३५ का।

(३७) वड़ौदा से मिला हुआ राष्ट्रकूट के वंश के राजा ध्रुव का दान पत्र शक संवत ७५७ का, इम दान पत्र के पहले २ पत्र नही मिले ...... ।

(३८) वडौदा राज्य के बलेसर जिले के वागुमरा गांव से जमीन खोदते समय मिला हुआ राष्ट्रकूट के राजा ध्रुव का दान पत्र शक संवत ७८९ का।

(३९) बगमुरा से मिला हुआ राष्ट्रकूट वश के राजा कृष्ण का दान पत्र शक संवत ८१० का।

(४०) मध्य प्रान्त के वेटूल परगने के मूलताई गांव से मिला हुआ राष्ट्रकूट वंश के राजा जंदराज का दान पत्र शक संवत ६३१ का।

(४१) जोधपुर राज्य के गोडवाड़ प्रान्त में वीजापुर के पास हंडुदी नामक एक प्राचीन नगरी के खंडहर में से मिला हुआ रा० वं० के राजा धवल के समय का शिलालेख वि० सं० १०५३ का।

(४२) पश्चिमोत्तर देश के बदाउं शहर को किले के खंडहर में से मिला हुआ रा० वं० के राजा लखण पाल के समय का शिलालेख, इसमें संवत नहीं है। लिपि बारहवीं या तेरहवीं शताब्दी की प्रतीत होती है। इस समय यह लेख लखनऊ के म्युजियम में है।

प्रस्तुत रजिस्टर के गत्ते पर लिखा है कि यह नकल गौरीशंकर ने लिख भेजी। ओझाजी ने राष्ट्रकूटों (राठौड़ों) का प्राचीन इतिहास-लेखन में इस उपरोक्त सामग्री का उपयोग संभवतः किया है।

अनेक ऐतिहासिक पुरुषों और घटनाओं को सत्यापित करने के लिये यह सामग्री बडी उपयोगी है।

१२०. शत्रुशाल हाडा रो हाल (प्रतिलिपि)

१. शत्रुशाल हाडा रो हाल (प्रतिलिपि), २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६५५, ४. २७.८ × १८.५ सेमी०, ५. ३७, ६. २०–२४, ७. २० वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. हिन्दी, देवनागरी, १०. इसमें वंश भास्कर के कुछ अंशों का हिन्दी में अनुवाद दिया है, जिसमें मूलतः बूंदी के राव राजा शत्रुशाल हाडा के जीवन की कुछ घटनायें दी है, प्रतिलिपि अपूर्ण है।

प्रारम्भ—

"दूसरा मयूख शत्रुशाल चरित्र का तर्जुमा—

पहले जमाने मे राव रतजी ने शत्रुशालजी का अठवां ८ संबन्ध उदैपुर राजा जगतसिंहजी की बहन से किया था—अब शत्रुशालजी दिल्ली जाने को तैयार हुवे तो राना जगतसिंहजी ने कहला भेजा कि शादी करके फिर दिल्ली जाइये……… उन दिनों में दखन की तरफ की दुर्दशा की खबर पहुंची—लोदी खानजिहा खां ने हुकम चलाना शुरू किया था …… तब बादशाह ने शत्रुशालजी को दखन की फतह का हुक्म दिया ……आदि।"

अन्तिम—

"………विठलदासजी नही आये दुसमनों ने निंदा की, सत्रुशालजी ने सुनी न सुनी की दूसरे रोज कंवर भगवंत ……।"

प्रतिलिपि अनेक व्यक्तियों के हाथ से की गई है। कागज मटमैले रंग के हैं।

१२१. गछ व गोत्रों रो विगत आदि

१. गछ व गोत्रों री विगत आदि, २. रा० शो० सं०, ३. ५९६, ४. १७ × १३ सेमी०, ५. ७३, ६. १८–२७, ७. संवत १९१२, ई० सन् १८५५,

थोमनगर, ८. मसी चन्द, ६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के प्रारम्भ मे नासकेत ग्रौर गनीश्चर वार की कथायें दी गई है तथा ग्रन्त मे जैनियों ग्रोसवालों गच्छ गौत्रों की विगत दी है। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. जैनियों के ८४ गच्छ :–

८४ गच्छ की नामावली इस प्रकार प्रकित है—

"१. खतर गच्छ २. उसवाल गच्छ ३. जीएवला गच्छ ४. वडगच्छ ५. तपगच्छ नागोरी ६. गंगसरी गच्छ ७. फ्रेरड़ी गच्छ ८. मल्अछा गच्छ ६. ग्रानपुए गच्छ १०. उडवोया गच्छ ११. गुदविया गच्छ १२. देकरिया गच्छ १३. भानमाला गच्छ १४. मुह हामी गच्छ १५. दास हीया गच्छ १६. गच्छपाल गच्छ १७. घोघावाल गच्छ १८. मगो डिया गच्छ १६. ब्राह्मणीया गच्छ २०. जालेहरी गच्छ २१. वोकडिया गच्छ २२. मुहाहडा गच्छ २३. चीतोडा गच्छ २४. माचोए गच्छ २५. कुचडिया गच्छ २६. सिद्धा-तया गच्छ २७. रामगीणी गच्छ २८. ग्रागमिया गच्छ २६. मल धारा गच्छ ३०. माहरीया गच्छ ३१. पालीवाल गच्छ ३२. कोरटवाल गच्छ ३३. नाकिद गच्छ ३४. धर्मगोस गच्छ ३५. नागोरा गच्छ ३६. उछीतवाल गच्छ ३७. नाणवाल गच्छ ३८. साडेरवाल गच्छ ३६. संडोरा गच्छ ४०. सुरंडवाल गच्छ ४१. तोडाला गच्छ ४२. नागरवाल गच्छ ४३. सुएए गच्छ ४४. नंमावता गच्छ ४५. वाडवीय गच्छ ४६. सापाए गच्छ ४७. मंडलिया गच्छ ४८. कोटीपुए गच्छ ४६. जागडा गच्छ ५०. वापरावाल गच्छ ५१. बोरसंडा गच्छ ५२. दोवदणीया गच्छ ५३. चित्रवाल गच्छ ५४. बेगडा गच्छ ५५. विघाहए गच्छ ५६. कुनवपुए गच्छ ५७. गम्रलिया गच्छ ५८. सदेलिया गच्छ ५६. दक णए गच्छ ६०. कन्हुरसा गच्छ ६१. पूर्ण तिलक गच्छ ६२. रेवईया गच्छ ६३, धूधका गच्छ ६४. थंमण गच्छ ६५. पंचवह लीया गच्छ ६६. पलहणपुरू गच्छ ६७. गंधारा गच्छ ६८. मुगलिया गच्छ ६६. उदेहवालिया गच्छ ७०. नगरकोटिया गच्छ ७१. हुंसार कोयया गच्छ ७२. माठनेरा गच्छ ७३. मोरठिया गच्छ ७४. भीमसेण गच्छ ७५. टांकणी गच्छ ७६. कंणोजा गच्छ ७७. वाघेरा गच्छ ७८. बहिवास गच्छ ७६. सिद्धिपुरा गच्छ ८०. घोंघधे गच्छ ८१. सेवंत री गच्छ ८२. कोन्टिक गच्छ ८३. माताजीसा गच्छ ८४. वारे जावाल गच्छ।" (पत्र–२)

२. ग्रोसवालों री जातां री विगत :–

इसमें ग्रोसवालों की जाति के ४०० गौत्रों की नामावली इस प्रकार दी है—

१. सूरांणा २. नाहर ३. पारख ४. माल्हु ५. मुहणोत ६. लूणावत ७. मोहा ८. दोसी ६. दुगड़ १०. दुगरवाल ११. लोढ़ा १२. ललवांणी १३. लूंकड १४. ग्रहेता १५. सांड १६. सोनी १७. सफला १८. सोरो खजा १६. ...

२०. केलांणी २१. ककड़ २२. कुकड़ २३. सवेती २४. वेगड़ गोत्र २५. जोगड २६. षमर २७. चोधरी २८. चित्रावाल २९. पालावा ३०. लालण ३१. सेव ३२. बीरात्या ३३. कुंनड़ ३४. मुर ३५. धारीवाहा ३६. तोडरवाल ३७. गणधर ३८. गोलवेछा ३९. गुणजांण ४०. भूरा ४१. चामणस ४२. वेहड ४३. भाण ४४. पावेच ४५. धीया ४६. पालीवाल ४७. डीडू ४८. मंड ४९. डागी ५०. चडालिया ५१. चीचड़ ५२. घउर ५३. रांका ५४. करणाटी ५५. रांखेचा ५६. हीगड़ा ५७. मोरच ५८. भंडारी ५९. मंगला ६०. बुट ६१. बोराणी ६२. रेहड्या ६३. बाघरेचा ६४. घूपीया ६५. भ्राईडिया ६६. सोहोला ६७. सोहिचा ६८. ट्टा ६९. जमड ७०. दुणीवाल ७१. वागणी ७२. बावलीया ७३. बोयस ७४. वैद ७५. पटु ७६. पालडेचा ७७. पोकरवाल ७८. हेडाउ ७९. आमु ८० कूंभट ८१. पीपाड़ा ८२. धांध ८३. रोटागिड ८४. पेम ८५. महिणांणी ८६. मेड़तवाल ८७. वडहरा ८८. चागड़ीया ८९. वणवट ९०. सीसोदिया ९१. असुभगोचर ९२. थोरवाड़ ९३. ठंठव ९४. भटेवरा ९५. डागा ९६. वोहरा ९७. महेवचा ९८. बंभ ९९. धमांणी १००. मल्ल १०१. लिंगा १०२. लूणीया १०३. खंडेलवाल १०४. मासू १०५. जांमड़ा १०६. गोखमु १०७. साडेला १०८. साउसुखा १०९. सुजाण ११०. मघा १११. मंडले ११२. मुहमवाल ११३. नादेचा ११४. उबड़ ११५. हिरण ११६. सोजतिया ११७. देसल ११८. डाकुलीया ११९. दुरडा १२०. दलीवाल १२१. नाराइण १२२. निध १२३. कुहाड़ १२४. गिडीया १२५. घंघवाल १२६. बोसुंदा १२७. गांधी १२८. बुरड १२९. साबुला १३०. बगगोत्री १३१. श्रीमाली १३२. श्री श्रीमाल १३३. मडोवरा १३४. मालवीया १३५. घणू १३६. उड़ीया १३७. धवल १३८. कोग १३९. काकरिया १४०. किरणल १४१. सारीवरी १४२. खीची १४३. वोला १४४. नगरागीत १४५. खाउहड १४६. खीवसरा १४७. खेरच १४८. बलहया १४९. पुंगलिया १५०. वावेल १५१. भंगेरिया १५२. मेलडीया १५३. सरमेलगो १५४. भ्रावलीया १५५. भरहर १५६. ओचितवाल १५७. छिलीया १५८. छजलाणी १५९. छोला १६०. पठांण १६१. खरवड १६२. छाजेड १६३. पटेल १६४. भडकलीया १६५. हरसुर १६६. तिल्हेरा १६७. आडेचणा १६८. तातेड १६९. वाघेल १७०. वाघरेचा १७१. खड १७२. रवैंड १७३. फुसला १७४ फुलफगर १७५. फाला १७६. नाहटा १७७. वाघमार १७८. सुधेचा १७९ सुरसा १८०. थूल १८१. बघा १८२. चौपड़ा १८३. वाफणां १८४. चोरपेडीया १८५. चुखड १८६. दांगी १८७. नडूला १८८. काजल गौत्र १८९ साबख १९०. कटारीया १९१. कावडीया १९२. पटवा

३५५. चुड ३५६. पवार ३५७. गुलगल्या ३५८. उंवट ३५९. देवड़ा ३६०. गघरा ३६१. सोटा गोत्र ३६२. कचारा ३६३. ढीच ३६४. ढेलडाया ३६५. कांव ३६६. बोकड़ीया ३६७. धोरवा गौत्र ३६८. दल ३६९. डफरीया ३७०. फेलवाड ३७१. मुंगरोल ३७२. पंचोल्या ३७३. मेड गौत्र ३७४. निलखांण ३७५. मुंगरोल ३७६. सुरधुर ३७७. घणपाल ३७८. मरासड़ा ३७९. पाहणीया ३८०. जडमुर ३८१. पटणी ३८२. पाढीया ३८३. मकवाणा ३८४. कुंभलमेर ३८५. स्याल ३८६. जोनेरण ३८७. थांवलेचा ३८८. जेलमो ३८९. आली झड ३९०. ठाकुराई ३९१. वढ़ाल ३९२. गांवा ३९३. सुर ३९४. चंडाल गौत्र ३९५. संखवालेचा ३९६. भीलडीया ३९७. पडाइया ३९८. गोठी ३९९. मंडारी ४००. मंडसाली।"

३. घोड़ों रा रंग रा दूहा :–

घोड़ों के विभिन्न रंगों से सम्बन्धित दोहे दिये गये है।

प्रारम्भ—

"सेली समंद पीलो सिर सांवल वालस काज
सोने री मटीयो सिकज, बोर रंगो फिर वाज ॥१॥"

४. गीत ठाकुरां कल्याणसींगजी नं (आसिया बुधा कृत) :–

प्रारम्भ—

"माला में कलोक लामं मालक, वीरम रांमे लेण वपाण।
क्यावर पग कलो नव कोटां, दस देसां चावो दुनीयांण॥"

ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। ग्रंथ पर कपडे का गत्ता चढ़ा हुआ है। ग्रंथ में अनेक पत्र खाली पड़े हैं।

१२२. चौबीस तीर्थंकर व सोले सत्तियों री विगत

१. चौवीस तीर्थंकर व सोले सत्तियों री विगत, २. रा० शो० सं०, ३. ३०७५, ४. ११×२३ सेमी०, ५. १, ६. १६, ७. वि० सं० १८८९, ई० सन् १८३२, डेहरा नगर, ८. विजयगणि, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इस पत्र के एक ओर लाल स्याही से जैनियों के २४ तीर्थंकरों के नाम अंकित हैं जो इस प्रकार है—

१. श्री कृषमदेजी	२. श्री अजीतनाथजी	३. श्री संभवनाथजी
४. श्री अमीनंदनजी	५. श्री सुमतिनाथजी	६. श्री पदमप्रभुजी
७. श्री सूपार्श्वजी	८. श्री चंद्र प्रभुजी	९. श्री वधीनाथजी

१०. श्री शीतलनाथजी	११. श्री श्रेश्रेयासजी	१२. श्री वासपूज्यजी
१३. श्री वीमलनाथजी	१४. श्री अनंतनाथजी	१५. श्री धरमनाथजी
१६. श्री शांतिनाथजी	१७. श्री कुंथुनाथजी	१८. श्री अरनाथजी
१९. श्री मल्लीनाथजी	२०. श्री मुनी सूव्रतजी	२१. श्री नमिनाथजी
२२. श्री नेमनाथजी	२३. श्री पारसनाथजी	२४. श्री महावीरजी

पत्र के दूसरी ओर जैनियों के १६ सतियों के नाम इस प्रकार अंकित है—

१. ब्रांभी	२. बालीका	३. भागवती
४. राजेमती	५. द्रोपदी	६. कौसल्यास
७. मृगावती	८. मूलसा	९. सीता
१०. सुभद्रा	११. शिवा	१२. कुंती
१३. शीलवती	१४. सूलाप्रभा	१५. पदमा
१६. सुन्दरी		

........हिन मूरो कूरवृत्तवो मंगल। इति श्री सोले सतियां रा नाम संपूर्ण।

तीसरा अध्याय

ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ

१२३. कायस्थों के गौत्र, पत्री ओपमा आदि

१. कायस्थों के गौत्र, पत्री ओपमा आदि, करणीदान, उमा, गोप भाट, २. रा० शो० सं०, ३. २०६, ४. १४ × १६.४ सेमी०, ५. ११३, ६. १२-१४, ७. वि० सं० १८६१-६४, ई० सन् १८०४-७, ८. पंचोली अनोपचंद, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ में संग्रहीत ऐतिहासिक कृतियों में से कुछ इस प्रकार है—

१. कायस्थों के गौत्र :–

इसमें कायस्थ जाति के १३७ गौत्रों का नामोल्लेख इस प्रकार दिया है—

"१. मेड़तवाल, २. मीवंणी, ३. मांणक भंडारी, ४. सदेव भंडारी, ५. चोर गाडरीया, ६. दीलवाजी, ७. बसि मुरदा, ८. जोचेबा, ९ उतरोल्या, १०. राजोरिया, ११. फोजी, १२. चौबीसा, १३. सोढलनाग, १४. अंवाला, १५. धुपवास, १६. कलयोकटता, १७. गाडरिया, १८. मनाजीत वाल, १९. हरसनाग, २०. नारनोलीया, २१. ककोडनाग, २२. घीढाल, २३. कोठारी, २४. पोहमनाग, २५. नागर, २६. जूगत स्हारीया, २७. कुसिया, २८. भावरिया, २९. आनीलवद, ३०. पपरीया, ३१. महैपुता, ३२. पडहड़ वाल, ३३. कटारिया, ३४. कुरसौका, ३५. कलोलीया, ३६. टाक, ३७. मंडोवरा, ३८. नागरेवेद, ३९. असुबेद, ४०. तुहनगरा, ४१. पदणा, ४२. गोहरीया, ४३. मेसउरा, ४४. कावरया, ४५. गोवलीया, ४६. ककराणी, ४७. गजवेद, ४८. ओहवरणा, ४९. नोहवाल, ५०. छार छोल्या, ५१. गोप गीरा, ५२. नोहारीया, ५३. होद वासीया, ५४. पनत वरीया, ५५. पथरचटा, ५६. कंकोड़वाल, ५७. पडतांणी, ५८. पघुर मुप, ५९. जिणसाली, ६०. मेडवड, ६१. जीण्माल, ६२. अपडवड, ६३. कोरिया, ६४. वित्रवेद, ६५. बोहपोतीया, ६६. मुरारीया, ६७. अपुवेद, ६८. दिवांनी, ६९. ववरीया, ७०.

नेपाला, ७१. तवकली, ७२. घोड़ा, ७३. साहरा, ७४. कामीप, ७५. बरणी, ७६. पुडीयाला, ७७. उरसोलिया, ७८. कंकघर, ७६. बोहरेलीया, ८०. परबलनाग, ८१. गाडीवाल, ८२. सांडील, ८३. कठोतिया, ८४. जोलघर, ८५. ढीलवाली, ८६. मंगोडरया, ८७. माईवत, ८८. दुसबेद, ८६. सांवलेर, ९०. बीरसमदा, ६१. बोहपडरीया, ६२. जैनसामानी, ६३. गोपगीरा, ६४. देवगीरा, ६५. चंडवालीया, ६६. जलेसुरी, ६७. इंमरतनाग, ६८. गोउटा, ६६. ऊंट गीरवा, १००. संजोलीया, १०१. जोध्रा, १०२. पचीस, १०३. रतगीरया, १०४. अतावीया, १०५. अडवेसर, १०६. गुजोरीया, १०७. माहावनी, १०८. हीदकीया, १०६. सिरवही, ११०. सोरबही भूतड़ा, १११. जैन सवोडा, ११२. थीरोडा, ११३. टाक जलाधर, ११४. उप पुरिया, ११५. असुभट, ११६. दरबीदार, ११७. बकरांणीया नासीया, ११८. बवरवाल, ११६. उभरबाजिया, १२०. वीरबकहे, १२१. मूंडा, १२२. उदहीलारण, १२३. वीदरीणीया, १२४. सिरीडोया, १२५. भजाणीया, १२६. तोहनगरा, १२७. जेलेसुरिया, १२८. लाहीवीया, १२६. राकजही, १३०. कनोतीया, १३१. कनावीया, १३२. बीलहारिया, १३३. मोहपूता, १३४. सुरवही, १३५. पधरपुरीया, १३६. गउहेर, १३७. वोकरणीया।"

२. पत्री ओपमा :–

पत्र प्रारम्भ किस प्रकार किया जाता है और पुरुष-स्त्री को व स्त्री-पुरुष को पत्र में क्या उपमाएँ लिखते हैं, ये गद्य-पद्य में वर्णित है।

प्रारम्भ—

"सिध श्री सरव ओपमा तुम लायक परमाण
अव आदर तुम जांणीयो, प्यारी बोहत सुजांण ॥१॥

अठा रा समाचार श्री माताजी री क्रिपा कर भला छै। थांरा सदा भला चाहीजै, डीलां रा घणा जतन कीजै सारी बात डीलां सूं छै। अप्रंच कागद आगै दीया सु पोता हुसी। दुहा—

मास तीन दिन छव भए प्यारी तजीयां तोय
फागुण पहली आवसां ढील न जांणो कोय ॥१॥

स्त्री पुरुष को लिखती है—

"स्वस्त श्री श्रुभ सुभसुथान पत्री लिपतं बहु नेह
पुज्य हमारे हो तुमहि, परम पुज्य गुन गेह ॥१॥
तुमसे और कोई नहीं केता लिखुं बपांण,
जतन तुमारा डील रै कीज्यो प्रांण प्रमांण ॥६॥

आगे एक 'बड़ी ओपमा' का उदाहरण देखिये—

"श्री श्री स्वस्ति श्री सुभ सुथा ने सरब ओपमा विराजमांन अनेक सकळ सुभ ओपमा लायक, अनेक गुण निधांन, बोहोतर कळा सुजांण, छत्तीस विवेक निधांन, चौसट कळा सुजांण, सुरज जेहा सतेज, चंदा जेहा निरमळ, अनेक गुण सुग्यांन, चवदे विद्या निधांन, सूरवीर वचन रा साचा, आपड़ी रा निवाहण हार, प्रीतम प्रांण आधार, राज सभा सिणगार, विसाल नैत्री, सोना जेहा सुरंग, रूपा जेहा ऊजळा, मोत्यां जेहा निर्मळ, मूंग्या जेहा सरंग, फूलां जेहा फूटरा, पांणी जेहा पातळा, चूंनी जेहा रंग, गंगा जेहा निरमळ, चढ़तो तेज, वधती वेल, गुण रा सागर, समुद्र जेहा गंभीर, सर्वविवेक जांण, सर्वकळा प्रवीण, चंदन जेहा सुवास, कपूर रस शीतळ गंग प्रवाह, समुद्र री लहर, जगत रा आभरण, अनेक सकल सुभ ओपमान विराजमांन प्रीतम……प्याराजी प्रांण आधारजी राज श्री कंवरजी श्री साहिब श्री चरण कुमलायन चिरं जीवो, स्याही रा लिपणा घणा वरस अपो रहो, सुरज जेहा तपो, अठायी लिपतु अग्याकारी सदा सेवग, ढोलिया री चाकर, लिखतू घणा हेत सुं प्यारी रो मुजरो अवधारसी …… आदि।" (पत्र-४)

इसके अतिरिक्त 'किशन विलास', 'फुटकर दोहे', 'जंत्र मंत्र', 'माताजी रो छंद', 'गणेश चौथ री वात' आदि कृतियाँ संकलित हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है, अनेक पत्र ग्रंथ से अलग है। ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। सांस्कृतिक अध्ययन हेतु उपयोगी है।

१२४. वाराणसी विलास, राजस्थानी कहावतें आदि

१. वाराणसी विलास, राजस्थानी कहावतें आदि, देवकरण पंचोली आदि, २. रा० शो० सं०, ३. १२७१, ४. ४१ × २७ सेमी०, ५. ७०, ६. २५-३०, ७. १६वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, संस्कृत, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. वाराणसी विलास (देवकरण पंचोली कृत) :—

प्रस्तुत कृति का निर्माण उदयपुर के राणा जगतसिंह प्रथम के आश्रित देवकरण पंचोली द्वारा किया गया।

प्रस्तुत काव्य-कृति अपूर्ण है इसमे कुल ११ अध्याय लिपिबद्ध है। प्रथम अध्याय में उदयपुर के राणाओं और ग्रंथ रचियता का वंश परिचय दिया गया है।

प्रारम्भ—

"श्री जलंधर नाथाय नमः स्तुभ्यं। श्री गणेशायनमः

आयसजी श्री १०६ श्री देवनाथ जी गरूभ्योनमः

दूहो—

मुज आयस वळ भार प्रण पट हूंदा पाहरू ।
देवा जग दातार, तूं इण समै महेस तण ॥१॥
श्री काशी विश्वेसुराय नमः अथ काशी पंथ
श्री जलंधर नाथजी प्रसादात् लिप्यते । श्लोक ......आदि ।"

दूसरे अध्याय में देवताओं का सत लोग मे गमन, तीसरे में अगस्त्याश्रम वर्णन, चौथे में पतिव्रत को आख्यान, पांचवें में अगस्त्य व लोप मुद्रा की कथा, छठे में तीर्थों का वृत्तांत, सातवें में सप्तपुरी वर्णन, आठवें में यमलोक का वर्णन, नवें मे सूर्य लोक का वर्णन, दसवें में इंद्र व अग्नि का वृत्तात, ग्यारहवें में शिवलोक का वृत्तांत है ।

ग्यारहवां अध्याय अपूर्ण है, दसवें अध्याय की पुष्पिका मे लिखा है—

"इति श्री मत्सकल भूमंडला मंडलेश्वर श्री मन्महाराजाधिराज महाराणा श्री जगतसिंहामात्यपंचोली देवकर्ण विरचते श्रीमत्काशीपंड श्लोकार्थानुक तिनिवध व्रज वाक पथतो वाराणसी विलासे इंद्राग्नि वर्णनं नाम दशम उल्लास ॥१०॥

(पत्र–५३)

२. ओवांणा :–

इसमें ११२८ कहावतों का संग्रह है । ये कहावतें यहाँ के लौकिक जीवन और अनुभव व मान्यताओं को सूत्र रूप में व्यक्त करती हैं । सामाजिक अध्ययन के लिए इनका बड़ा महत्व है ।

प्रारम्भ—

"श्री जलंधर नाथाय नमः अथ उपाणा लिप्यते—मोटो बेलि इस्वर नै छाजै १, पंचों में परमेश्वर २, पताळ में पेसणो नै सांपा सुं डरणो ३...... "आदि ।"

(पत्र–१३)

३. शाहजहां री दिनचर्या :–

इसमें बादशाह शाहजहाँ की दिनचर्या का संक्षेप में वृत्तांत है ।

प्रारम्भ—

"पातसाहि साहिजां नित्त यण माफक रहता सो याद दाश्त लिपीजै है । आठ घड़ी लार री रात रहै जद उठणो सो उठ नै महलां विचै जळ री होद हो जिण में सिनान करणो.........आदि ।"

(पत्र–१)

ग्रंथ के अन्त में विविध विषयों के ग्रंथों की सूची दी है ।

आगे एक 'बड़ी ओपमा' का उदाहरण देखिये—

"श्री श्री स्वस्ति श्री सुभ सुथा ने सरब श्रोपमा विराजमांन श्रनेक सकळ सुभ श्रोपमा लायक, अनेक गुण निधान, बोहोतर कळा सुजांण, छत्तीस विवेक निधांन, चौसट कळा सुजांण, सुरज जेहा सतेज, चंदा जेहा निरमळ, श्रनेक गुण सुग्यांन, चवदे विद्या निधांन, सूरवीर वचन रा साचा, आखड़ी रा निवाहण हार, प्रीतम प्राण श्राधार, राज सभा सिणगार, विसाल नैत्री, सोना जेहा सुरंग, रुपा जेहा ऊजळा, मोत्या जेहा निर्मळ, मूंग्या जेहा सरंग, फूलां जेहा फूटरा, पांणी जेहा पातळा, चूंनी जेहा रंग, गंगा जेहा निरमळ, चढ़तौ तेज, वधती वेल, गुण रा सागर, समुद्र जेहा गभीर, सर्वविवेक जांण, सर्वकळा प्रवीण, चंदन जेहा सुवास, कपूर रस शीतळ गंग प्रवाह, समुद्र री लहर, जगत रा श्राभरण, अनेक सकल सुभ ओपमान विराजमान प्रीतम·······प्याराजी प्रांण श्राधारजी राज श्री कंवरजी श्री साहिब श्री चरण कुमलायन चिरं जीवौ, स्याही रा लिषणा घणा वरस अयी रहो, सुरज जेहा तपौ, श्रठाथी लिषतु श्रग्याकारी सदा सेवग, ढोलिया री चाकर, लिखतू घणा हेत सुं प्यारी रौ मुजरौ अवधारसी ······ श्रादि।" (पत्र-४)

इसके श्रतिरिक्त 'किशन विलास', 'फुटकर दोहे', 'जंत्र मंत्र', 'माताजी रौ छंद', 'गणेश चौथ री वात' श्रादि कृतियाँ संकलित हैं। ग्रंथ पर गत्ता नहीं है, श्रनेक पत्र ग्रंथ से श्रलग है। ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। सांस्कृतिक श्रध्ययन हेतु उपयोगी है।

१२४. वाराणसी विलास, राजस्थानी कहावतें श्रादि

१. वाराणसी विलास, राजस्थानी कहावतें आदि, देवकरण पंचोली श्रादि, २. रा० शो० सं०, ३. १२७१, ४. ४१ × २७ सेमी०, ५. ७०, ६. २५-३०, ७. १६वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, संस्कृत, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. वाराणसी विलास (देवकरण पंचोली कृत) :–

प्रस्तुत कृति का निर्माण उदयपुर के राणा जगतसिंह प्रथम के श्राश्रित देवकरण पंचोली द्वारा किया गया।

प्रस्तुत काव्य-कृति श्रपूर्ण है इसमें कुल ११ श्रध्याय लिपिबद्ध है। प्रथम अध्याय में उदयपुर के राणाओं श्रौर ग्रंथ रचियता का वंश परिचय दिया गया है। प्रारम्भ—

"श्री जलंधर नाथाय नमः स्तुम्यं। श्री गणेशायनमः
आयसजी श्री १०६ श्री देवनाथ जी गरूम्योनमः

दूहो—

मुज आयस बळ भार ग्रण पट हुंदा याहूरू ।
देवा जग दातार, तूं इण समै महेम तण ॥१॥
श्री काशी विश्वेसुराय नमः अथ काशी पय
श्री जलंधर नाथजी प्रसादात् लिप्यते । श्लोक·······आदि ।"

दूसरे अध्याय में देवताओं का सप्त लोग में गमन, तीसरे में अगस्त्याश्रम वर्णन, चौथे में पतिव्रत को आख्यान, पांचवें में अगस्त्य व लोप मुद्रा की कथा, छठे में तीर्थों का वृत्तांत, सातवें में सप्तपुरी वर्णन, आठवें में यमलोक का वर्णन, नवें में सूर्य लोक का वर्णन, दसवें में इंद्र व अग्नि का वृत्तांत, ग्यारहवें में शिवलोक का वृत्तांत है ।

ग्यारहवां अध्याय अपूर्ण है, दसवें अध्याय की पुष्पिका में लिखा है—

"इति श्री मत्सकल भूमंडला मंडलेश्वर श्री मन्महाराजाधिराज महाराणा श्री जगतसिंहामात्पंचोली देवकर्ण विरचते श्रीमत्काशीखंड श्लोकार्थानुक तिनिवध व्रज वाक पघतो वाराणसी विलासे इंद्राग्नि वर्णनं नाम दशम उल्लास ॥१०॥
(पत्र–५३)

२. ओपांणा :–

इसमें ११२८ कहावतों का संग्रह है । ये कहावतें यहाँ के लौकिक जीवन और अनुभव व मान्यताओं को सूत्र रूप में व्यक्त करती हैं । सामाजिक अध्ययन के लिए इनका बड़ा महत्व है ।

प्रारम्भ—

"श्री जलंधर नाथाय नमः अथ उपांणा लिप्यते—मोटो बेलि इश्वर नैं छाजैं १, पंचों में परमेश्वर २, पताळ में पेसणो नैं सांपा सुं डरणो ३······आदि ।"
(पत्र–१३)

३. शाहजहां री दिनचर्या :–

इसमें बादशाह शाहजहाँ की दिनचर्या का संक्षेप में वृत्तांत है ।

प्रारम्भ—

"पातसाहि साहिजां नित श्रण माफक रहता सो याद दासत लिपीजैं है । आठ घड़ी लार ली रात रहै जद उठणो सो उठ नैं महलां विचैं जळ री होद हो जिण में सिनांन करणो······आदि ।"
(पत्र–१)

ग्रंथ के अन्त में विविध विषयों के ग्रंथों की सूची दी है ।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुन्दर है। ग्रंथ में काफी पत्र रिक्त पड़े हैं।

१२५. गुण भाषा चरित्र तथा गज गुण रूपक बंद आदि

१. गुण रूपक चरित्र तथा गज गुण रूपक बंद आदि, गाडण केसोदास, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४१, ४. ३४.५ × २१ सेमी०, ५. १५६, ६. १६-२४, ७. १६वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के प्रारम्भ में जोधपुर के शासक महाराजा गजसिंह से सम्बन्धित कुछ फुटकर कवित्त, दोहे, श्लोक, निसांणी इत्यादि कृतियां संग्रहीत हैं।

१. गुण आठ भाषा चित्र महाराजा गजसिंहजी रौ (हेम कवि कृत) :–

महाराजा गजसिंह की प्रशंसा में अनेक कवित्त, दोहों की प्रतिलिपि यहां की गई हैं। मिलावें ग्रंथांक ११, पु० प्र०।

प्रारम्भ—

"गुण निधी गुण पत्ति गुण सागर गुणदाता।
लंबोदर दुख हरण बचन फळ सुध विधाता॥
भाल चंद गज वदन कोटि रवि शोभा कुंडल।
धूमकेत इद मेक वीर क्रांति महाबल॥ ···॥१॥" (पत्र–४६)

२. (गज) गुण रूपक बंध (गाडण केसोदास कृत)[1] :–

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनमः श्री॥ श्री मदिष्ट देवाय नमः॥ श्री गुरूभ्यो नमः॥ गुण रूपक बंध माहाराजा श्री गजसिंघजी नूं गाडण केसोदास कृत लिख्यते॥गाहा॥

देवी सुमति दायाः वाणी केरेणी हंस वाहणया।
जग जिणणी जोगमाया तस्मै सारदायनमः॥१॥"

प्रस्तुत काव्य-कृति में जोधपुर के शासक महाराजा सूरसिंह के पराक्रमी युवराज गजसिंह द्वारा लडे गये विविध युद्धों का वर्णन है। इसमें विशेष रूप से सम्राट जहांगीर के विद्रोही शाहजादा खुर्रम के विरुद्ध वि० सं० १६८१ में उसके बहादुर सेनापति भीम सीसोदीया के साथ लडे गये युद्ध का वृत्तांत दिया गया गया है। इस युद्ध में महाराजा गजसिंह के हाथ से भीम सीसोदीया के मारे जाने की घटना के साथ ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है। कवि (केसोदास गाडण) युद्धों में प्रायः

[1] १. प्रकाशित, सं० सीताराम लालस, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

महाराजा के साथ रहता था, उसने आँखों देखा हाल लिखा है अतः इसमें अंकित घटनायें बाद में लिखी गई ख्यातों से अधिक प्रामाणिक हैं।

प्रारम्भ में राठौड़ों की वंशावली पौराणिक आधार पर दी है फिर सूरसिंह से सम्बन्धित कुछ घटनाओं का जिक्र करने के तत्पश्चात् गजसिंह द्वारा लड़े गये युद्धों का वृत्तांत दिया है। महाराजा सूरसिंह व गजसिंह के इतिहास-अध्ययन हेतु कृति बहुत उपयोगी है।

अन्तिम भाग—

"सुरतांण पुरम भागौ भिड़ै, चडि चकथा चकवै
गजसिंघ प्रवाड़ो पटीयौ, वहै भीम चीतोड़वै ॥२०॥

इति श्री महाराजधिराज महाराजजी श्री गजसिंघजी रौ गुण रूपक वंध गाडण केसोदास रौ कह्यौ संपूर्ण ॥ श्लोक शुभम् ॥"

महाराजा गजसिंह के इतिहास अध्ययन हेतु ही नहीं उस समय की वेशभूषा, खानपान युद्ध कौशल आदि की जानकारी के लिए भी उपयोगी है। (पत्र–११०)

प्रतिलिपि दो व्यक्तियों के हाथ से की गई है। पत्र मटमैले रंग के हैं। ऊपर गत्ता चढ़ा हुआ है।

१२६. वीरगीत संग्रह, रस गुलजार आदि

१. वीर गीत संग्रह, रस गुलजार आदि, वदनजी मीसण आदि, २. पु०प्र०, ३. ३६, ४. १६.५ × २८ सेमी०, ५. १६१, ६. १२-१६, ७. वि० सं० १८६७, ई० सन् १८२१, हरण, ८, अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में संग्रहीत कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. अमलदारों की आपत बत्तीसी :-

कवित्त—

"प्रथम जनम पंचमै वरस देखै पावण विधि
पंच द्रण पूगतां जागि अमलांह लीयो जदि
बारह ग्यारह विचा पाण धारण करियौ थो .... ॥१॥"

(६ छप्पय)

२. निसांणी राव राजा विसनसिंघजी री :-

प्रारम्भ—

"कल चहुवाणां मुकट मणि अवधाण अढ़र
राव राणा राइया सुरताणां सादूर

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुन्दर है। ग्रंथ में काफी पत्र रिक्त पड़े है।

१२५· गुण भाषा चरित्र तथा गज गुण रूपक बंद आदि

१. *गुण रूपक चरित्र तथा गज गुण रूपक बंद आदि, गाडण केसोदास,* २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. १५६४१, ४. ३४.५ × २१ सेमी०, ५. १५६, ६. १६-२४, ७. १९वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. ग्रंथ के प्रारम्भ में जोधपुर के शासक महाराजा गजसिंह से सम्बन्धित कुछ फुटकर कवित्त, दोहे, श्लोक, निसांणी इत्यादि कृतियां संग्रहीत है।

१. गुण आठ भाषा चित्र महाराजा गजसिंहजी रो (हेम कवि कृत) :–

महाराजा गजसिंह की प्रशंसा में अनेक कवित्त, दोहों की प्रतिलिपि यहा की गई है। मिलावें ग्रंथांक ११, पु० प्र०।

प्रारम्भ—

"गुण निधी गुण पत्ति गुण सागर गुणदाता।
लंवोदर दुख हरण वचन फळ सुध विधाता॥
भाल चंद गज वदन कोटि रवि शोभा कुंडल।
धूमकेत इद मेक वीर क्रारंति महाबल॥ ···॥१॥" (पत्र–४६)

२. (गज) गुण रूपक बंध (गाडण केसोदास कृत)[1] :–

प्रारम्भ—

"श्री गणेशायनम. श्री॥ श्रो मदिष्ट देवाय नमः॥ श्री गुरूभ्यो नमः॥ गुण रूपक बंध माहाराजा श्री गजसिंघजी नूं गाडण केसोदास कृत लिख्यते॥गाहा॥

देवी सुमति दायाः वाणी केरेणी हंस वाहणया।
जग जिणणी जोगमाया तस्मै सारदायनमः॥१॥"

प्रस्तुत काव्य-कृति में जोधपुर के शासक महाराजा सूरसिंह के पराक्रमी युवराज गजसिंह द्वारा लड़े गये विविध युद्धों का वर्णन है। इसमें विशेष रूप से सम्राट जहांगीर के विद्रोही शाहजादा खुर्रम के विरुद्ध वि० सं० १६८१ में उसके बहादुर सेनापति भीम सीसोदीया के साथ लड़े गये युद्ध का वृत्तात दिया गया गया है। इस युद्ध में *महाराजा गजसिंह के हाथ से भीम सीसोदीया* के मारे जाने की घटना के साथ ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है। कवि (केसोदास गाडण) युद्धों में प्रायः

---

१. प्रकाशित, सं० सीताराम लालस, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर

महाराजा के साथ रहता था, उसने आँखों देखा हाल लिखा है अत इसमें अंकित घटनायें बाद में लिखी गई ख्यातों से अधिक प्रामाणिक हैं।

प्रारम्भ में राठौड़ों की वंशावली पौराणिक आधार पर दी है फिर सूरसिंह से सम्बन्धित कुछ घटनाओं का जिक्र करने के तत्पश्चात् गजसिंह द्वारा लड़े गये युद्धों का वृत्तांत दिया है। महाराजा सूरसिंह व गजसिंह के इतिहास-अध्ययन हेतु कृति बहुत उपयोगी है।

अन्तिम भाग—

"सुरतांण पुरम भागौ भिड़ै, चडि चकया चकवै
गजसिंघ प्रवाड़ो पटीयो, वहै भीम चीतोडवै ॥२०॥

इति श्री महाराजधिराज महाराजजी श्री गजसिंघजी रौ गुण रूपक वंध गाडण केसोदास रौ कह्यौ संपूर्ण ॥ श्लोक शुभम् ॥"

महाराजा गजसिंह के इतिहास अध्ययन हेतु ही नहीं उस समय की वेशभूषा, खानपान युद्ध कौशल आदि की जानकारी के लिए भी उपयोगी है। (पत्र–११०)

प्रतिलिपि दो व्यक्तियों के हाथ से की गई है। पत्र मटमैले रंग के हैं। ऊपर गत्ता चढ़ा हुआ है।

१२६. वीरगीत संग्रह, रस गुलजार आदि

१. वीर गीत संग्रह, रस गुलजार आदि, वदनजी मीसण आदि, २. पु०प्र०, ३. ३६, ४. १६.५ × २८ सेमी०, ५. १६१, ६. १२-१६, ७. वि० सं० १८६७, ई० सन् १८२१, हरण, ८, अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में संग्रहीत कृतियों का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१. अमलदारों की आपत बत्तीसी :-

कवित्त—

"प्रथम जनम पंचमै वरस देखै पावण विधि
पंच अण पूगतां जागि अमलांह लीयां जदि
वारह ग्यारह विचा पाण धारण करियौ थो ······ ॥१॥"

(६ छप्पय)

२. निसांणी राव राजा विसनसिंघजी री :-

प्रारम्भ—

"कल चहुवाणां मुकट मणि अवपाण अढ़र
राव राणा राइयां सुरताणां सादूर

रहीमत कीमत हीदवां स वहूत बघोतर
कटीया दोप अनेक तें लटीया गौर भंगर ॥१॥"

अन्तिम—

"तू सारी विधि समझीया बुधि बेरा आगर,
आज अवनी चंदणो ग्रहणो ग्रहराज तणी पर
दूजा रतन दीवाण श्री इळ उतन उजागर,
जमी साज सुरेस ज्यूं विसनेस नरेसुर ॥३२॥"

३. गीत सावझड़ो भाला जालमसिंघ को मीसण वदनजी कहे :–

यह झाला सरदार वह है जिसने झालावाड राज्य की स्थापना की और जो अपने समय का बड़ा राजनीतिज्ञ माना जाता था।

प्रारम्भ—

"चीतौड़ जोधपुर जैपुर चावै आय समाझ विरोध उपावै
अरज जीकां री कोटे आवै सुलजै जदि जालिम सुलझावै ॥१॥

अन्तिम—

दसे रीझ चीज इक दावै इलपत बीजा जोड़ न आवै,
गुण पौरूष थारो कुण गावै इता कहेतों छेह न आवै ॥२७॥

मीती वैशाष वदि १ समत १८६७ शाके १७३१ ·······मंगल दिने प्रमदा नक्षत्र चित्रा घाटिका २४ गत लषी ग्राम हरण मध्य।"

४. रस गुलजार (वदनजी मीसण कृत) :–

इसमे राव सीहा से महाराजा मानसिंह तक के राठौड़ राजाओं का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। अनेक दोहे कवित्त (जिनकी संख्या नहीं दी है) अंकित हैं, फिर उनका अर्थ वचनिका लिख कर किया गया है। महाराजा मानसिंह के राज्य-काल का हाल कुछ विस्तार से दिया है। कृति अपूर्ण जान पडती है।

प्रारम्भ—

वचनका ग्रंथ महाराज मानसिंघजी को
रस गुलजार वदनजी मीसण रो कह्यौ, गाथा—
परसी कर घर पूर सुडाडंड लाल सिनूरं,
नले दोज ससि नूर, जय गणपति गज बदन गणेसुर ॥१॥"

प्रारम्भ में नाथजी की स्तुति आदि की गई है फिर दूहा दे कर अर्थ लिखा है यथा—

दूहा— "जिण जल उपजियो जगत सोन जि रूप समाय।
व्यापक विश्व सुठाम, विचि नाम जलंधर नाथ ।।
वचनका— जिकरण जलंधर नाथ रैं प्रवार की वपत में देवनाथ सरीवो सिध दरसायो, जिकण देवनाथ रा वरदान सूं मानसिघ मारवाड़ रो राज पायो।"

राव सीहा के आगमन का हाल भी दिया है। यथा—

"एकण समै सोहो सेत (रामोत) कनवज सूं द्वारीकानाथ री जात्रा करण नूं आयो उण वपत सोलंकी मूलराज रपायच आप रा बापरा मारण रो व्रतांत सीहा नूं सुणायो...... .. ।"

अन्तिम भाग—

"भवार वपत में असी रजपूती येकले मानसीग रषाई छै, असी रीत सत साहस सु हीडत परै छै जकांरी मदत पुदाय करै छै।" (पत्र–५४)

प्रस्तुत ग्रंथ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। प्रारम्भ की कृतियां कुछ सुवाच्य जरूर हैं पर अन्तिम भाग अशुद्ध है।

ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मंढ़ा हुआ है।

१२७. विजय विलास (वारट विशन सिंह)

१. विजय विलास (वारट विशनसिंह), २. रा० शो० सं०, ३. ४५, ४. २१.८×२३ सेमी०, ५. ६६, ६. १८, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. अज्ञात, ९. राजस्थानी, देवनागरी (पड भाषा के उदाहरण भी हैं), १०. प्रस्तुत काव्य जोधपुर के शासक महाराजा विजयसिंह से सम्बन्धित है। इसमें केवल एक पहला और अन्तिम पत्र लुप्त हैं।

प्रारम्भ—

"उजल गिर आवास, वास उजला विराजै उजल हंस आरूहण
गहर उजली गिराजै, वीणा प्राच वायणी सबद गायणी सुमंगल ।।८।।"

इसमें जोधपुर के शासक महाराजा वखतसिंह और विजयसिंह का हाल अंकित है जिसमें वखतसिंह का वृत्तांत कुछ विस्तार से देकर विजयसिंह व जयप्पा सिंधिया के बीच हुए युद्ध का हाल दिया है।[1]

---

१. आसोपा (मारवाड़ का मूल इतिहास, पृ० २४२) के अनुसार संवत १८११ में महाराजा रामसिंह जय आपा सिंधिया को ६० हजार सेना सहित मारवाड़ पर ले आया, महाराजा विजयसिंह भी ४० हजार सेना लेकर सामने गए। सं० १८११ की आश्विन वदि १३ को गांव गंगारणा में भयंकर युद्ध हुआ इसमें महाराज की पराजय हुई। महाराजा भाग कर नागौर गए।

प्रारम्भ में महाराजा का यश वर्णन है, फिर मराठों से लड़े गये युद्धों का विस्तार से वर्णन किया गया है। उदाहरणार्थ कुछ दोहे छप्पय उद्धृत हैं—

दोहा—

"आवै दीपणी ओग्रठो, जोजम सादन जाय।
घड़ पड़तां लड़तां घड़ां, ग्रापो दीयां वडाय॥

छप्पय—

करै मिसल फारण भंग धारणां धमंगे
बाहर आय अवीह लोक तेडीयो लड़ंगे
पाळा चढ़ीया ब प्रवळ मिळै येढ माता रा
ग्रंमल ग्रंसधर ग्रोप सवळ प्राहुणा सतारा
डेरा ग्रनेक रंगा दिये छिपै भालि वादल छलां
कळहळां साद है गै करै एम सेन मिळ ग्रावलां॥१६॥

अन्तिम भाग—

त्रय वाहक रिया सुर तरा धकचालक रिण पड़ीयो घरा
हलव चलां दुय भड है·······ग्रादि।"

प्रस्तुत ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध हुग्रा है। लिपि मोटे अक्षरों में एवं सुवाच्य है। यह किसी अन्य ग्रंथ की प्रतिलिपि है जिसका ग्रनुमान बीच-बीच में छोड़े गये खाली स्थलों से होता है। महाराजा विजयसिंह के इतिहास ग्रध्ययन हेतु कृति महत्वपूर्ण है। इसमें कर्ता का नाम नहीं दिया है। इस ग्रंथ की एक प्रति खीवसर ठाकुर साहिब के पास भी है परन्तु वह भी ग्रपूर्ण है।

ओझाजी के भी 'विजय विलास' ग्रंथ की एक ग्रपूर्ण प्रति देखने में ग्राई थी उन्होंने इसके रचियता का नाम वारट बिशनसिंह दिया है। देखें जोधपुर राज्य का इतिहास (द्वितीय खण्ड, पृ० ७६३)।

१२८. ग्रजीत चरित्र, बाल कृष्ण दीक्षित

१. ग्रजीत चरित्र, बाल कृष्ण दीक्षित, २. पु० प्र०, ३. ४६३ (संस्कृत सूची), ४. ११×२२ सेमी०, ५. ६२, ६. ५, ७. १६वीं शताब्दी का मध्य, ८. ग्रज्ञात, ६. संस्कृत, देवनागरी, १०. जोधपुर के शासक महाराजा ग्रजीतसिंह के समय में इस ग्रंथ का निर्माण किया गया, इसमें 'ग्रजीत विलास' की भांति प्रारम्भ में उक्त महाराजा के पूर्वजों का वृत्तांत संक्षिप्त रूप में दिया है फिर महाराज गजसिंह व जसवंतसिंह का विवरण तथा ग्रन्त में ग्रजीतसिंह के प्रारम्भिक जीवन की

घटनाओं का वृत्तांत सन्निविष्ट है। इस प्रकार इस रचना के कुल १० सर्गों में से अन्तिम केवल ४ सर्गों में ही अजीतसिंह का विवरण अंकित है।

प्रारम्भ—

"श्री तवान्येनमः ॥ श्री गणपतयेनमः ॥
वंदेह जगतां शुभाय जननी भक्ते शितार्थ
प्रदामार्तानाथ दयापरायणमनः
संसार तापापहांम् सर्वोपद्रवनाशीनी भगवती दवानु कंपाकरी
मोकानेकतनू धरां हरिहर ब्रह्मादिमि सस्तुता ॥१॥"

अन्तिम भाग व पुष्पिका—

"......गगद्या सरितो वाहंति परितो यावद्रामंडल
श्री महाराज शिरोमणे तव यशस्तावत् सदा वर्धताम ॥४६॥
इति श्री दीक्षित बालकृष्ण कृतो महाराज अजीत चरित्रे
महा काव्ये अज दुर्ग नागपुर जयो दिल्ली पति संधि
राज्या लिपेक कवि सुक्ति रचनं नाम दशम सर्ग ॥१०॥ श्री"

प्रस्तुत ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। लिपि सुवाच्य है। प्रत्येक पत्र पर पत्र संख्या अंकित है। पत्र सब खुले हैं।

१२६. राज विलास

१. राज विलास, ग्यानी वोडा, २. पु० प्र०, ३. ३८, ४. १७.५ × २४ सेमी०, ५. ४५, ६. १५, ७. १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८. अज्ञात, ६. राजस्थानी, व्रज, देवनागरी, १०. प्रस्तुत काव्य कृति जोधपुर के शासक महाराजा मानसिंह से सम्बन्धित है, इसमें कुल तीन अध्याय हैं, प्रारम्भ के दो अध्याय में महाराजा के राज प्रासाद (महल, दरवाजे) तथा न्याय-व्यवस्था इत्यादि का वर्णन करते हुए राज्य-शोभा का चित्रण किया है। तीसरे अध्याय में विवाह महिमा वर्णित है जिसमें महाराजा के विवाहोत्सव बरात व रानियों इत्यादि का वृत्तांत सन्निविष्ट है। इस प्रकार ५१७ दोहे, चौपाइयां आदि लिपिबद्ध हैं। ग्रन्थ मानसिंह की राज्य-व्यवस्था, वैभव, रीति-रिवाज आदि की जानकारी हेतु उपयोगी है।

प्रारम्भ—

"श्री मह गणधिपतयेनमः ॥ अथ श्री महाराज श्री मानसिघजी रौ राज विलास लिप्यते ॥

दोहा—

श्री गनपति को नाम जो सुमरत होय कल्यांन
जाके पद जुगत मत हां सदा जु मंगल जांन ॥१॥

छंद—

एक दंत को जु ध्याय, हीय मांहि ग्यान थाय
तीन लोक के मु नाथ, तांहि वंदि जोर हाथ ॥२॥"

उदाहरण के लिये कुछ दोहे, चौपाइयां उद्धृत है—

चौपाई—

ताके निकट सोह वर थानू,
चाकेलांव नाम वर जानू।
चंद्र दिस सोभत कोट सोहाए,
बुरज वने ते वरनि न जाए ॥१६॥
तोप रेपळा राजत तेऊ,
गिने न जाय वुध उर जेउ।
धांन तेल के घृत भंडारा,
भरे सकल तां जय जय कारा ॥२०॥

दोहा—

रानीसर तिह नाम है, अति अथाघ जल पूर।
घाट मनोहर राज ही, कोट चहुं दिस भूर ॥२२॥

चौपाई—

उदैपोल नाम ते दीन्हा,
ताके निकट बुरज वा कीन्हा,
सूरज सांमी पोल प्रकासू,
किह विध उपमा कह मुप जासू ॥३६॥

दोहा—

सिरे पोल कौ कहत मुप, अनंद उर न समाय।
लोहपोल ते नाम है सबसां इधक सोभाय ॥४८॥

चौपाई—

पटरांनी भटयांनी राजत,
ताकै निकट देवड़ी भ्राजत
और सदन सदा मुप दाई

तां राजत वरजी भाई ॥१५६॥
चोर जुवारी लंपट होवे
तिनकै द्रष्ट काल सम जावै
जो को होय नग्र में चोर
तिन को बांध मारावै भोर ॥१५७॥

दोहा—

जीवणदास जू नाम है गेहलोत तिह जात ।
करत न्याय ते चोंतरै नरपति के सिर हात ॥१६०॥

चोपाई—

ताके दांम मागते राजे
हुकमीचंद विप्रय भ्राजे
मुसरप ओधो न्रप तिह दीनां
अपनां जान सपोधर कीनां ॥१६१॥"

अन्तिम कुछ दोहे दिये जा रहे हैं, जिनमें रचना-काल इत्यादि अंकित है—

"ग्यांन प्रबंध प्रकास पुन श्री न्रप मांन विलास
नरपति की रचना कही कही जुक्ति प्रकास
ग्यानी थोड़ो जानियो सब दासन को दास
मांन चरित्र सुपसां कहे नाथ जु पूरे आस ॥१५८॥
संवत अठारे सततइयासी वर होय
मिगसर म सइ सुकल दिन बुधा अष्टमी सोय ॥१५६॥
मैं अजांन मत आपनी, कही ग्यांन जुत वात
बकसत सुत अप्राद को, सकल कवी पितु मात ॥१६०॥
इष्ट देव इम नाथ के, आद अंत सुष सेय
ताके चरन प्रताप ते आव गवण न होय ॥१६१॥"

पुष्पिका—

"इति श्री महाराजधिराज श्री मांनसिंघजी री राजविलास बिवाह महिमा वरन नाम तृतीयो विलास संपूर्ण ॥ श्री रस्तु ॥ कल्यांकमस्तु ॥ सुभं भवंतु ।"

(पत्र—३३)

ग्रंथ में इसके अतिरिक्त 'नाथजी री भजन विलास' (१२५ दोहे), 'ज्ञान प्रकाश' (४२ दोहे), 'नाथजी री नाम माला' (१०५ दोहे) तथा लक्ष्मीनाम कृत

भजन विलास आदि कृतियां लिपिबद्ध हैं। यह ग्रंथ मानसिंह के राजसी ठाट और तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से अध्ययन योग्य है।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, प्रारम्भ में लिखावट के अक्षर कुछ मोटे हैं, लिपि सुवाच्य है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मढ़ा हुआ है।

१३०. केहर प्रकाश[1]

१. केहर प्रकाश, राव वखतावर, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. ३४९१९, ४. ३५ × २७ सेमी०, ५. ११०, ६. १९, ७. वि० सं० १९४२, ई० सन् १८८५, उदयपुर, ८. जोसी चुत्रभुज, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. यह पृथ्वीराज चहुवान के वंशजों में देवगढ़ बाहरिये के स्वामी भीम के पुत्र केसरीसिंह और जांगलु के शासक सांखला मण्डलीक के कनिष्ठ भ्राता जला की प्रेम पात्री वैश्या से उत्पन्न हुई सुन्दर लड़की कमला की प्रेम कथा है।

प्रारम्भ मे विषय सूची अंकित है।

"श्री गणेशायनमः श्री शारदायेनमः श्री चतुर्मुंजायनमः श्री गुरूभ्योनमः॥ अथ कवि वखतावर राव कृत केहर प्रकाश ग्रंथ लिख्यते ॥ छपै ॥

श्री लम्बोदर शिवासुतण, सुर नरां सहायक।
करण मंगल कोट दुख हरण विरदायक ॥ ......॥१॥"

पुष्पिका—

"श्री महाराजधिराज महाराजा जी श्री श्री १०८ श्री फतहसिंहजी विजय राज्ये लिपि कृत जोसी चुत्रभुज श्री उदयपुर निवासी। संवत १९४२ वैशाख सुक्ला ३ गुरुवासरे पठनार्थ चिरंजीव मादोसिंघजी मेतावसिंघजी जसराजजी पैंत्रव कसोर सिंघजी गमानसिंघजी गोमंदसिंघजी श्री रस्तु॥"

ग्रंथ एक ही एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है, लिखावट सुन्दर है। ग्रंथ पर गत्ता नही है। युद्ध के तौर-तरीकों, विविध शस्त्रों इत्यादि के प्रयोग, अनेक प्रकार की विद्याओं आदि की जानकारी हेतु ग्रंथ बहुत उपयोगी है।

१३१. अभय विलास

१. अभय विलास, सांदू पृथ्वीराज, २. पु० प्र०, ३. १, ४. २८.५ × २९ सेमी०, ५. २८, ६. २०-२२, ७. १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८. अज्ञात,

---

१. प्रकाशित, सं० राव मोहन, उदयपुर

६. राजस्थानी, देवनागरी, १०. इसमें जोधपुर के शासक महाराज अभयसिंह के राज्यकाल का वर्णन है। इसका प्रारम्भ अभयसिंह के जन्म से न होकर कन्नौज के राजा जयचंद से होता है तथा अजीतसिंह तक राठौड राजाओ का संक्षिप्त विवरण दिया है (पत्र-६) तत्पश्चात् महाराज अभैसिंह के प्रारम्भिक राज्य-काल की कुछ घटनाओं का वृत्तांत अंकित है जिसमें अहमदाबाद की चढाई मुख्य है। लिपिकार द्वारा कृति पूर्ण लिपिबद्ध नही की गई है। ग्रंथ का प्रारम्भ गणेश स्तुति से हुआ है।

प्रारम्भ—

"गणेश स्तुति काव्य लिषते—

उजल दत सुमेक गिज दत सुडाडंड प्रचंडयं

भ्रंगं गुंज कपोलं लालो लसत्त संम गंध धारा वहं ...आदि।"

जोधपुर के संस्थापक राव जोधा पर लिखा छंद द्रष्टव्य है—

"जिन न्रिपट पाट तपि जोधराव,

उदार चित पौरप अमाव,

पित वैर लगि धरि धप अपार,

दल रान सीस पेरत दुधार,

जिन करीय कुंभ हु अनत जंग,

पीछोल आंनि पाया पमंग.........आदि।"

अभैसिंह का जन्म संवत इस प्रकार अंकित है—

"सतरै जु सत्त समत प्रकास,

गुनसट हि वर्ष मगसर हि मास

वदि चतुरदस नि तिथ सनिवार

नपित्र बिसाप सुभ लगन सार..... ...आदि।"

बीच-बीच में ऋतु वर्णन के अतिरिक्त त्योहार इत्यादि का वर्णन भी किया है। उदाहरण स्वरूप होली के त्यौहार सम्बन्धी दो दोहे उद्धृत है—

"सकट गुलाल अबीर सरस, अरू केसर म्रिग मद

होरी पेलत फाग न्रिप, आयें बाल समंद ॥१॥

अतर गुलाव न कुंभ कुंभ, अरू घनसार अबीर

कल कंचन पिचकार करि, निज हौदन भरि नीर ॥२॥"

अन्तिम भाग इस प्रकार लिपिबद्ध है—

"छन्द हनुफाल

....

विच विच सु मांनिक कृतं,
जनुं प्रदित उदित करुंत,
पुपराज पीत प्रकास,
मनुं करत सुर गुर मास,
मनि नील दमक निहोवय,
चित हरत सुर न जोय,
सर मुक्त लुंब सनीर,
भाई मनु हुं उडगन भीर,
गनि त्रिप न मुष गहरा
....(अपूर्ण)"

छंद संख्या अंकित नही है। अभयसिंह के समय के अध्ययन के लिए ग्रंथ उपयोगी है।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिपिबद्ध किया गया है। प्रारम्भ के पत्र फटे हुए हैं तथा ८वें पत्र का कुछ हिस्सा अनुपलब्ध है। अन्त में काफी पत्र रिक्त पड़े हैं। लिपि सुवाच्य नही है। ग्रंथ पर कपड़े का गत्ता मंढ़ा हुआ है। कागज मटमैले रंग के हैं जो हाथ के बने प्रतीत होते हैं।

१३२. छत्रपता-रासो (प्रतिलिपि)

१. छत्रपता-रासो (प्रतिलिपि संग्रह), कासी छंगाणी, २. रा० शो० सं०, ३. ८३, ४. ३३.८×२१.५ सेमी०, ५. ११४, ६. १६-२४, ७. १९वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, औरंगाबाद, करणपुरा, ८. कासी छंगांणी (म० अनूपसिंह का समसामयिक), ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. प्रस्तुत ग्रंथ में बीकानेर के राजा कर्णसिंह तथा अनूपसिंह के राज्यकाल का इतिहास वर्णित है। प्रारम्भ में राव सीहा से जोधा तक वंशावली दी है तत्पश्चात् राव बीका से राजा करणसिंह तक राठौड़ राजाओं की मुख्य उपलब्धियों का वृत्तांत अंकित है। प्रत्येक राजा के गद्दीनशीनी के संवत दोहे के रूप में देकर फिर घटनाओं का उल्लेख किया है। संवत ठीक नहीं दिये हैं। राजा कर्णसिंह और अनूपसिंह के समय की घटनाओं के संवत ठीक दिये हैं।

प्रारम्भ—

"॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्री सारदासहाय ॥

कवित्त—

नमो नाथ इम वदन, रदन ईक सदन युद्ध गुप ।
गवरनंद गणपत, दते रिध हत दरिद्र दुप ।।
प्रवल पिंड पळपंड सूंड सिंदूर समुजल ।
फरस पाण अधि हणि माण वप कोट सउजल ।। ....आदि ।"

राजा कर्णसिंह का वृत्तांत उनके तख्तनशीनी से प्रारम्भ हुआ है, यथा—

दूहा—

गोल्हैसे अठयासिये, रासा हरो नरेस ।
राजा पाट विराजियो, कमधपत करणेस ।।"

अमरसिंह राठोड़ द्वारा बीकानेर की सीमा का ग्राम जाखणिया हस्तगत करने पर कर्णसिंह और अमरसिंह के बीच हुए युद्ध (मतीरे री राड़) का विस्तृत वर्णन दिया है । यथा—

प्रारम्भ गाहा—

"धुवीया जोध अधिगो,
सोलहवे न्याण समते
भिड अमरेसर भगो
जंप गुणंदिढीयं जेहा ।।३०।।

दोहा—

नागपुरे बीकानगर, जायणी विच संध ।
उण उपर अहरसीय, करनो अमर कमध ।।३१।।"

युद्ध होने का कारण इस कवित्त में स्पष्ट रूप से उद्धृत है—

कवित्त—

"साहिजहा पतसाह रीझि नागौर संमपै ।
देवाराम उदराव, अमरेसर थपै ।।
ताम्रपटा वांटीया, अमर मोटे छत्रपति ।
अधिपति रीझि अळाय दीधि भोपत भूपती ।।
तिण वार अपे मंडणोत ने ले जायणीयो पटे दीयो ।
कळह रौ बीज अमरे कमंध उण वेळा आरोपीयौ ।।३३।।"

युद्ध में भाग लेने वाले विभिन्न योद्धाओं के नाम खांपानुसार दिये हैं । उदाहरण के लिए कुछ दोहे द्रष्टव्य है—

"मनहरदास महाबळी भोपत तणो प्रसंग।
बळभद सुत बीरम प्रबल, जुडि जीपै रिणजंग ॥३६॥
नींबावत भोपत प्रगड़ केसव सुत मुळ भांण।
चत्रभुज चवरंग रंचण, जैमलोत घण जांण ॥४०॥
रिणवट बेळा रामचन्द्र तेजसीयोत मताव।
लायां भडां उथेलणो, प्राक्रो साह निवाव ॥४१॥
किसनदास गुजसे कुवल, पंचायत पप मुघ।
रिणछोड़ा दयाल री जिय पारथ रिण जुध ॥४४॥
दुरगां कमंध दयाल री, रूपावत कुळ रूप।
पत्री भ्रम पालिग परो, भुजा सराहे भूप ॥४५॥

छंद जात मोतीदाम (युद्ध वर्णन)—

डूबे रिण जंग वहै पगधार
पछाड़ पडे सर सेल्ह अपार
वड़ाबड़ अथग नीनाल बन्दूक
राठोड उभै रिण भाचवि रूक
धमाधम सेल्ह पड़े धमरोड़
फूटे भड अंग बगतर फोड़.........आदि।"

युद्ध काल—

सोल्हे से न्याणवे, आसू सुदि चवदस।
जुध प्रथम जापणीयो सोहड़ कीयो सरस ॥५६॥"

तत्पश्चात् दोनों के बीच युद्ध होने का विवरण दिया गया है। युद्ध में भाग लेने वाले विभिन्न योद्धाओं के नाम, युद्ध की तैयारियां, युद्ध-विभीषिका तथा दोनों ओर से वीरगति प्राप्त होने वाले योद्धाओं के नाम अंकित हैं। इसका प्रारम्भ यहाँ से हुआ है—

"सुणी बात ईम सोहमेल, मुड़िया भड़ अमरेस
बीका पूंजा बालीया कीध फते करनेस ॥५७॥
विक्रमपुरी आवी खबर, राका दिन अधरात।
रास मंडल मभि रामचन्द्र सुणी सु बोली बात ॥५८॥"

खांपों के नाम इस प्रकार अंकित है—

कवित्त (कर्णसिंह के योद्धाओं की खांपें)—

"बीका बीदा जोधवंश, कांधिल उजवाळा।
भाटी सोनिगराणि, भणां पमांण मुजाळ ॥

मंडलावत रिणधीर, कमंध रूघा रिण मंडण,
उदावत वाघोड़ पत्री ग्ररीयां घड़ पंडंण ।।
चहुवाण गोगली सापली, पाहू भ्रजे वाघडे ।
पटतीस वंस मणमंग भड़ पांप पांप आया पडे ।।६२।।

ग्रमरसिंह के योद्धाओं की खांपें—

"कूंपावत कमधज, चवां चांपा रिणचाळा ।
जोघा माल दुजोण, वदां रूपां विगताळा ।।
मेड़तीया मछरीक नरा ऊहड पूमाणा ।
भाटी करमसीयोत पता केक बखाणा ।।
सझि रूप दळां सोनिगरा, धीग निहचा धारीया ।
उमराव राव अमरेस रा, प्रबळ जोध पधारीया ।।६८।।"

फिर इन सरदारों के नाम ग्रादि भी दिये हैं तथा युद्ध में काम ग्राये योद्धाओं की सूची (दोहों में) ग्रंकित है ।

इस युद्ध में भी कर्णसिंह की विजय हुई, इसका समय इस प्रकार ग्रंकित है—
कवित्त—

"सोल्हेसे नंन्याण मास काती वद ग्यारस
ग्रमरे करन अधिप दळां मातो वीरा रस········ ।।१६।।"

कर्णसिंह की जवारी (औरंगाबाद सूबे का एक प्रांत) पर चढ़ाई तथा धरमाट के युद्ध का वृत्तांत है, फिर ग्रौरंगजेब के उत्तराधिकारी बनने इत्यादि घटनाएँ वर्णित है, यथा—

"औरंग दिल्ली ग्रावीयो घणा करे गजगाह
माथे छत्र मंडावीयो, हुई बैठो पतसाह ।।१६४।।"

राजा कर्णसिंह के विद्यानुरागी होने का भी उल्लेख कवि ने किया है—

"वेद पुराणह भागवत, जोतिक ग्रागम तत्त
गुण पिंगल संगीत रस, मेदालिग भुजपत्त ।।३२।।
औरंग धुर हींदू ग्रसुर ईम अपे सह कोई
राजा करने सरिखो कळि मझि हुवो न कोई ।।३३२।।"

मृत्यु संवत—

"सतरे से छावीस तेण संवत महिपत
धवल पछ ग्रासाढ़ चौथ दिन········ ।।३३३।।"

कर्णसिंह के सतियों आदि का उल्लेख कर, फिर अनूपसिंह के राज्याभिषेक, विवाह, बादशाह द्वारा उसकी औरंगाबाद में नियुक्ति तथा महाराजा द्वारा लड़े गये युद्धों इत्यादि घटनाओं के संवत इस प्रकार अंकित है—

"सतरे इकतीस मझि, हुय कळहळ चहु कूण ।
धूध गिनीमें मंडीया धर दपण धकधूण ।।४०६।।
सेन फिरे सिवराज री, कर घूमर केकांण ।
चौथ लिये चौरंग रचे भळे मुगलाण ।।४१०।।
सतरे से तेंतीस मझि नौरंग साह नरेस ।
बीजापुर उपर प्रबळ मुहिम थपी मुगलेस ।।४४०।।
सतरे से पेंतीस ताम सूबा दलेले ।
प्रबळ धाक पठाण हुकम नह कोई उथेले ।।४५५।।
अठतीसे आनूपसिंघ ले सूबो बळवंत ।
औरंगपुर उवारीयौ सरहरे सामंत ।।४६६।।
सतरे से गुणताल मझि गांजण धरा गनीम ।
आजंम संभू ऊपरै हौसल रची मुहीम ।।४६५।।
संमत चालीसे संमरस हुय पतसाह प्रफुल ।
औरंग आलम ने कही करौ मुहीम कबूल ।।५०८।।"

कवित्त—

"सतरै से इकताल, मास वैसाप निरमळ ।
धवल पछ तिथ त्रीज वळे ससिवासर निरमळ ।।
दत सुमत गणेस दई सरसत सु वांणी ।
किव अनूप कुळअंन ग्रंथ कासो छांगाणी ...... ।।५३५।।"

अन्तिम दोहा—

"सती मिळे आसीस किव, भूप अंना कुळ भांण
कोड जुगां लगि राज कर, बीकहरा बीकाण ।।५३६।।

इस प्रकार उक्त महाराजा के वि० सं० १७४१ तक ही घटनाएं अंकित हैं ।

अन्त में इसी कवि द्वारा रचित 'बारा मासा' कृति और एक गीत (पवास किसना दास रौ) की प्रतिलिपि दी गई है । पुष्पिका इस प्रकार अंकित है—

"श्रुभ भूयात कविता छागाणी कासी
लिपंत ग्रौरंगाबाद करणपुरा मध्ये लि०
छागाणी कासी ।"

प्रतिलिपि एक ही व्यक्ति के हाथ से की गई है। राजा कर्णसिंह व उनके पुत्र अनूपसिंह के राज्यकाल की घटनाओं के अध्ययन हेतु उपयोगी है। ओझा आदि लेखकों ने बीकानेर राज्य के इतिहास लेखन में इसका प्रयोग नहीं किया है।

१३३. विरद सिणगार तथा वीरमांण

१. विरद सिंणगार तथा वीरमांण, करणीदान, बादर ढाढी, २. रा० प्रा० वि० प्र०, ३. २६६४५, ४. १४.५ × १६ सेमी०, ५. ८६, ६. ८-१३, ७. वि० सं० १९३४-१९५८, ई० सन् १८७७-१९०१, धुदाडा, ८. शिवरांम, शिवनारायण, ९. राजस्थानी, देवनागरी, १०. विवरण-क्रम इस प्रकार है--

१. विरद सिणगार (करणीदांन कृत) :-

यह 'सूरज प्रकास' का संक्षिप्त रूप है। मिलावें ग्रंथाक २०६, रा०शो०सं०। प्रारम्भ मे एक दोहा अंकित है जो ग्रंथांक २०६ में नही दिया है।

प्रारम्भ—

नराताल ऐहमद नगर, नर हिन्दू'र नवाब ।
अभो विलंद भिड़िया उमर, ज्योरा एह जबाव ।
श्री सरसत गणपतति नमस्कार ।
दीजिये मुज वर बुद उदार ...... ॥१२॥

पुष्पिका—

"अभैसिंघजी रौ विरद सणगार संपूर्ण संवत १९३४ रा वर्ष मिति दुतीयक जेष्ठ वद ७ लिपंत दवे शिवनारायण धुनाड़ा मध्ये ।" (पत्र–२२)

२. वीरमांण राव वीरमदेजी रौ (बहादर ढाढी कृत) :-

इसमें राव वीरमजी राठौड़ का शौर्य-वर्णन है। इसमें मारवाड़ मे राठौड़ों की राज्य-स्थापना के पहले हुए संघर्ष पर प्रकाश पडता है।

प्रारम्भ—

दोहा—

"मालो राजस नगर मह, शोभत जैत शिवांण,
यांन पेड़ वीरम थर्प, जुग जाहर घण जांण ॥१॥"

नीसांणी—

सुत च्यारू सलपेसरे, कुळ में किरणाल,
राजस वंका राठवड़ वर वीर वडाला, ...आदि ।

पुष्पिका—

"इति श्री गुण वीरमांण संपूर्ण संवत १९५८ रा पोस वद १ ने लिपिकृत राव सीवरांम ।" (पत्र–६४)

ग्रन्थ दो व्यक्तियों के हाथ से लिपिवद्ध किया गया है। ग्रन्थ पर कपड़े का गत्ता चढ़ा है। ग्रन्थ में अनेक पत्र रिक्त भी पड़े हैं।

— × —

शुद्धि पत्र

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्धि	शुद्ध पाठ
२	३१	१५'१८१४	१८१४-१५
४	२६	५.	३.
६	२७	गहाराजा	महाराजा
१३	२६	(न)	(ब)
१४	२७	(क)	(प)
१२०	१६	वा	का
१३५	१६	(६)	(५)
१७७	२६	१८.	१७.
१८२	१	२९	२६
१८६	२८	४२.	४३.
१९२	२०	६६.	६७.
३३१	२३	कुत	कृत



* जन्म : सन् १९३०, माळूंगा ग्राम (जोधपुर)
* शिक्षा : एम.ए., एल-एल.बी., पी-एच डी.
  (राजस्थान विश्वविद्यालय)
* संस्थापक निदेशक · राजस्थानी शोध संस्थान,
  चौपासनी, जोधपुर (१९५५)
  (जोधपुर विश्वविद्यालय से मान्यता
  प्राप्त शोधकेन्द्र)
* सम्पादक : शोध पत्रिका 'परम्परा' (१९५६ से
  वर्तमान तक
* सम्पादित ग्रन्थ . इतिहास की सामग्री—बीस ग्रंथ
  प्राचीन राजस्थानी साहित्य—पचास ग्रंथ
* ग्रन्थ लेखन : डिंगल गीत साहित्य, राजस्थानी
  साहित्य कोष व छंद शास्त्र आदि
* राजस्थानी के युग-प्रवर्त्तक मूर्धन्य कवि
  ग्यारह काव्य कृतियां प्रकाशित
* केन्द्रीय साहित्य अकादमी तथा अनेक संस्थाओं
  से पुरस्कृत व सम्मानित
* शोध-निर्देशक : इतिहास व राजस्थानी विषय
  (जोधपुर विश्वविद्यालय)
* प्रोजेक्ट निर्देशक : भारतीय इतिहास अनुसंधान
  परिषद्, नई दिल्ली
* महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश (फोर्ट
  जोधपुर) के सम्मान्य निदेशक